श्रीसत्यनामबिहारबृन्दावन ॥

भूमिका ॥

दो० हरिगुरु सन्त अखण्डहैं, साखी वेद पुराण ।
बृन्दाबनभजु हृदय से, निश्चय हो कल्याण ॥

बिहारबृन्दाबनपुस्तकका ग्रन्थकर्ता अधीनता और नम्रता पूर्वक बिनय करता है कि इस मोक्ष बिहार का अवलोकन सब मतवादियोंको योग्यहै क्योंकि प्रथमतो इस ज्ञानरूपी उपबनमें निज करके भाग दूसरे में बहुतसे मतोंकी बाटिका प्रफुल्लितहैं और दूसरेजो शिक्षारूपी पुष्पप्रथम और तृतीयभागमें बिकसे हुयेहैं उनके अवलोकन से अनुरागियों को सुगन्धित होना सब मतोंके अनुसार योग्यहै हां चौथेभागकी बिहार अद्वैत ज्ञानाकांक्षी कोही सन्तुष्टता और आनन्द का हेतु होगा और ज्ञान चाहने वालोंको दिब्यदृष्टिकी त्रिबिध समीर से बड़ा आनन्द प्राप्त होगा और उसज्ञान का अमोलफल हाथ लगेगा परन्तु जिसका दर्पणरूपी चित्त सब प्रकार से शुद्ध और प्रकाशित नहीं है और जिसमुमुक्षुका अन्तःकरण और भागों के बचन देखकर आरूढ़ और उत्कण्ठित नहीं हुआहै और हृदयरूपी नेत्रज्ञानकी ओर खुलेनहीं हैं उसको चौथे भाग और भूमिकाके देखनेसे अमृत प्राप्त होना कठिन है किन्तु

कठिन पीड़ा उत्पन्न होनेका भयहै इस हेतुसे बिज्ञापन कियागया और पांचवें भाग का देखना मानो ध्यान और वैराग्य बाटिकाका विहार करना है परन्तु उस दशामें जब कि अभ्यन्तरी दृष्टि और सत्यप्रेमहो और इतनी बिनय करनी और आवश्यक है कि साधारण वार्तिक पदों के कारण इसका देखना बहुत सुगम है परन्तु ध्येयका प्राप्तहोना अहर्निश के अभ्यास बिना नहीं होसक्ता क्योंकि मनका तृप्त होना दिन रात्रि के भोजन बिना कठिन है और जोकि इसमें केवल मोक्ष के विषय का वर्णन है कोई क़िस्सा कहानियां झगड़ा या केवल गानाआदि नहीं निस्सन्देह इसमें मन मारेही पर अक्षयफल लाभ होगा और जब बिहारबृन्दावनका सम्पूर्ण अवलोकन होगा तो जैसा आनन्द चाहिये वैसाही प्राप्त होगा आगे अपनी अपनी इच्छा है और जो मेरी विनय अयोग्य होय तो अपराध को क्षमा करके उस उपवनमें जैसी इच्छा हो वैसे विचरिये मुझे निश्चय है कि किसी प्रकार इसका अवलोकन लाभ से रहित न होगा॥

बिहारबृन्दावनशान्तवेदका सूचीपत्र ॥

दो॰ रामलखो निज आपमें, देख्यो निरखि निहार ।
बृन्दाबन में सांवरो, कीन्हों शब्दबिहार ॥ १ ॥

तीसरा भाग ॥

विषय पृष्ठ

चौथा भाग ॥

विषय   पृष्ठ

पांचवां भाग॥

शब्दावली का सूचीपत्र॥

पहिला भाग॥

दूसरा भाग॥

तीसरा भाग॥

विषय पृष्ठ

दूसरा भाग ॥

तीसरा भाग ॥

चौथा भाग ॥

पांचवां भाग ॥



श्रीगणेशाय नमः ॥

१ॐ सद्गुरुप्रसादि श्रीवाहगुरू सद्गुरू राम अनादि आदि
गुरवे नमः युगादिगुरवे नमः सद्गुरवे नमः
श्रीगुरुदेवाय नमः ॥

बिहारवृन्दावन शान्तवेदका

प्रथम भाग

दो० करौं बन्दना दण्डवत, नानकशाह महबूब ।
दशोंदिशामें रमिरहे, व्यापकजलथल डूब ॥
वृन्दावन जहँ परगटे, सतगुरु नानकशाह ।
सहजै उनकी बनगई, शब्द रहे लवलाह ॥

चौ० गुरु महिमासन्तनसबकीन्ही । शास्त्रवेदएहीसिखदीन्ही ॥
रोम रोम जिह्वा हो जावै । नहिं जस गुरु तस वर्णन आवै ॥
रवि शशि ये सब जगदरशावा । घटका भेद गुरूसे पावा ॥
गोपीग्वाल कृष्ण घटमाहीं । गोवर्द्धन लीला त्यहि ठाहीं ॥
रामअयोध्यातन बिच देखा । गङ्गायमुना सरस्वतिलेखा ॥
सरयू चारि धाम दरशावा । गुरुबिन भेद कोई नहिं पावा ॥
सब रचना कर्ता दिखलाई । कर्ताको गुरु दीन्ह चिन्हाई ॥
पूरण सबमें एक प्रकासा । स्वइप्रकाश घटअन्तर वासा ॥
कसकसगुरुउपमाकहिजाई । वृन्दावन चौरासि छुड़ाई ॥

दो॰ वाहगुरू जो चितधरैं, सो नर बड़े कुलीन।
या जग में निर्भय रहैं, पावैं मुक्ति प्रवीन॥

स॰ सन्तसताजिनसूझपरा तिनमारगसार बिहार लयोहै। आपनरूपअरूपपछानि लियोजबकालबिडारिदयो है॥ जो ममता नहिं छांड़तभूत परेत मशान समान भयो है। देखत देखत बूझत नाहिंन कौन इहां थिर बास पयो है॥ शाह फ़क़ीरसबी घरबार तियागि चले कछु साथ लयो है। मायिकरूप कुरूपाबिषय सब लाग भयानक भेषमयो है॥ नादबिसारिदियो मनहीं अनजाननमानत शोग नयो है। मोक्षस्वरूप कहै बृन्दावन ज्ञानबसन्दर ताव तयो है॥

चौ॰ इकसुमिरनाजिह्वाते होई। दूजाश्वास सुमिरनी सोई॥
तीजे सुरति नाद सों लावै। सोई शब्द ब्रह्म कहलावै॥
अक्षरको नहिं नाम बतावा। नहिं अक्षरके पार लखावा॥
क्षर अक्षर नहिं अक्षर भाई। सार शब्द इन पार लखाई॥

दो॰ सबरचना ब्रह्माण्डकी, छिपी धरी घट माहिं।
बाहरलखि भीतर लखौ, सत्य पुरुष को पाहिं॥

छं॰ कञ्जा कमल के दाहिने सुरती लगाओ प्रेमसे।
जैसे पपीहा स्वाति कारण मुख पसारे नेमसे॥
कइभांति उठती शब्दकी ध्वनि होरही घनघोरहै।
अपनी सुरत को थिरकरो झिंगा सुनो जहिं शोरहै॥
पाछे से घण्टा शङ्ख है चित जोड़के उसको सुनो।
जब बांसुरीधुनि सुनिपड़ै तहँध्यान धरसुर्तसे गुनो॥
अब और सबको छोड़कै ध्वनि ओंमें राचेरहो।

इसबीचमेंजोतीकिभिलमिलकोनिरखिआनँदगहो॥
शोभाजोबृन्दाबनकेमण्डलरहसकीअतिसोहनी ।
सतनामसो हंसावरा छबि क्या कहूँ चितमोहनी॥
दो० चिन्ताछोड़ जो अड़ रहे, सुरतशब्द में राख।
गुरू सहायक होत हैं, सन्तों की है साख॥

ककहराप्रारम्भः॥

चौ० यकओंकारसद्गुरुपरसादा । कैसेहोयगुरूगुणबादा॥
ओं नमः सिद्धङ्ग जो कहिके। पढ़ो ककहरागुरुपदलहिके॥
ककाकाहूकाकुछद्रोह न कीजे। शीलक्षमाको मनमें लीजे॥
करिये दया राखि सन्तोषा। सद्गुरुरामबृन्दाबनघोषा॥
खखाखेमकुशलतुमसबकीचाहो। प्रेमप्रीतिहरआननिबाहो॥
आदरभावसभीविधिसरिये। दीन होय बृन्दाबन करिये॥
गगागोबिन्दभजनसाधुकीसेवा। चितसे करोतोपावोमेवा॥
भूखे प्यासे की प्रतिपाला। बृन्दावनहोजगउजियाला॥
घघाघरअपनातुमघटबिचजानो। लाखकहैकोइएकनमानो॥
ध्यानकरो बृन्दावन माहीं। अलखपुरुषकीहैपरिछाहीं॥
ङङाअङ्गमलीनबिमलहोतेरा। नादअनहदघटराखबसेरा॥
ध्यान ज्ञान से नाम कहोगे। बृन्दावनसुखअलखलहोगे॥
चचाचोरीजूआनिन्दाचाई। अप्रसंताप खल दुष्ट बुराई॥
ठगडाकू बटपार कुकर्मी। बृन्दावन वच सबसे धर्मी॥
छछा छूछा तू जप ओं सोहं। कटजावै चौरासी मोहं॥
मनोकामना पूरण होवैं। बृन्दावन निज अमिय बिलोवैं॥
जजायामअष्टतुमनामरटोरे । बढ़ो दिन २ पलक्षणनघटोरे॥
सुनो प्रेमसे होरहि बानी । बृन्दावन सन्तन पहिचानी॥
झझाझांझझन्कारझनाझनझनकै।बीनबांसुरीसुरचँगखनकै॥

मृदँग सितार मँजीर तमूरा। बृन्दावन का काम है पूरा॥
ञञाञेवैं सुनो साध तुम साधू। सन्त ह्वै जाय मिटै अपराधू॥
आपसे आप खुलैं सब द्वारे। भली कही बृन्दावन प्यारे॥
टटाटाबर ऊंटघोड़ गज हाथी।सुखपाल चण्डोलपालकीराथी॥
दलबादल से खटल बटोरे। बिना नाम बृन्दावन थोरे॥
ठठा ठाकुरलोकनहीं कोइबूझै। जहांरहैं वहँ तुम्हैं न सूझै॥
मेरा बासा हरघट माहीं। बृन्दावन से बोले साहीं॥
डडाडोलोफिरोचलो तुमदौड़ो। द्रव्यनामकी हरक्षण जोड़ो॥
परमारथ पर नेह लगावो। बृन्दावन पूरण सुख पावो॥
ढढाढब ऐसा अपने मन राखो। जो कोइ बूझै तुरतहि भाखो॥
मीठा बचन कहो तुम प्यारे। बृन्दावन गुरुध्यान लगारे॥
णणाणोणा ईंटसे मन्दिर छाया। पक्काकर पाथर लगवाया॥
मणी जड़े औ हीरा मोती। बृन्दावन योंमुक्ति न होती॥
ततातुरतहिनाममहाकल्याना। यवभरि देइ सुमेरु समाना॥
किंचित अथवा प्रीति से देवो। बृन्दावन मनचीता लेवो॥
थथा थिरराखो मन चञ्चलता से। हियाके लोचन उघरैं जासे॥
काम क्रोध मोह अहंकारा। लोभ छुटे बृन्दावन प्यारा॥
ददा दान पुराय भूखे को दीजे। जातिकुजातिबिचारनकीजे॥
भूख प्यास सबकी यकजानो। बृन्दावन सबघट सममानो॥
धधा धर्मधुरंधर जबहिं कहावो। परनारी से नेह न लावो॥
रहो अधीन करो हरिदरशन। सत्य बचन बोले बृन्दावन॥
ननानामकसुमिरणसाधुकीसेवा। गुरु आनन्द रहैं कुलदेवा॥
विपय क्षीण सब मन के तेरे। सत्य लोक बृन्दावन नेरे॥
पपा पापीकासँग कभी न कीजे। मेल मिलाप तरक करदीजे॥
इसमें तेरी होय भलाई। सद्गुरु राम बृँदावन गाई॥

फफा फूल भले उजाड़में फूले। बृथा गयेनमुनिन शिरझूले॥
भेष बनाय जगत को लूटा। बृन्दाबन नहिं बन्धन छूटा॥
बबावैर विरोध महादुखदाई। बिन त्यागे सुख कबहुँनपाई॥
यासे बैर बैर से कीजै। बृन्दाबन पूरण सुख लीजै॥
भभा भर्मदोषजञ्जालबिनासा। सत्य होय जो सद्गुरु दासा॥
बस्त्रमात्र को ऐसा जानो। एक रुई बृन्दाबन मानो॥
ममा मनसा पूर्णसाधुकी संगत। मत बैठो झूंठों की पंगत॥
सन्त बचन ते सन्त बनावै। सद्गुरु राम परम पद पावै॥
कछु यामें बिगड़ै नहिं तेरा। सद्गुरु राम घट राख बसेरा॥
शोच बिचार न मनमें लावो। एक नाम बृन्दाबन ध्यावो॥
रराराटो तुमनाम होयकल्याना। जपतरसिन्धु लहर समाना॥
एकी एक एक है एकी। दृष्टी होय तो देख बिवेकी॥
ललालछन येहीनामगुणगावो। राखो मनमें ना बिसरावो॥
शील क्षमा संतोष हो पूरा। बृन्दाबन जगमें सो शूरा॥
ववावाहगुरू जो नामलखाया। चार युगोंका जाप जपाया॥
वासुदेव हरि गोविंद रामा। बृन्दाबन सब पूरणकामा॥
शशाशब्दध्यानराखोमनमाहीं। सुखसंपति आनँद जो चाहीं॥
विनाशब्द मनथिर नहिं होता। बिन थिरहुयेबादसब खोता॥
षषा षष्ठम पद है सार प्रकासा। अन्तःकरण चार आभासा॥
चेतनका आभास बखानो। सो चेतनकोइ बिरलाजानो॥
ससा साधुवही जिनतनमनसाधा। ज्ञानप्रकाश मिटै सब बाधा॥
बिन साधे कुछ हाथ न आवै। सद्गुरु बिना राह नहिं पावै॥
हहा हंसगती गति तेरी होवै। सद्गुरु राम हृदय में जोवै॥
मुक्ति पदारथ निश्चय पावै। सत्य नाम बृन्दावन ध्यावै॥
जो यह ककहरा कहै सुनावै। मनोकामना पूरण पावै॥

बृन्दाबन गुरु नाम जो लेवै। लोक सत्यअरुमुक्ति को सेवै॥
जो नर सद्गुरु राम धियावै। चार पदारथ निश्चय पावै॥
सद्गुरु राम है नाम अमोला। भेदसार कोइ बिरलै तोला॥
सद्गुरु राम मूल है मन्त्र। कलियुगमाहिंलखायहयन्त्र॥
बृक्ष बीजसे है नहिं न्यारा। बीज बृक्ष में भेद अपारा॥
जिन यह बचन हमारा माना। अलखरूप सहजे करजाना॥
बृन्दाबन यह देश निनारा। बूझैगाकोइ गुरुमुख प्यारा॥

दो० सद्गुरु रामके चरणमें, सदा रहो तुम लाग।
यह सुखतो उनकोमिलै, जिनके बड़े हैं भाग॥
करों बीनती शीशधरि, अधम उधारण पास।
यह माँगन मैं माँगहूं, मम हिरदय तुम बास॥

चौ० मैं आधीन दीन गति मोरी। तुमदयालु शरणागततोरी॥
दयासिन्धु कृपालु कहावो। काल जाल से मोहिं बचावो॥
भूल भरमसे रहो भुलाई। जन्म जन्म चौरासी पाई॥
महादुखी अरु दीन रहाई। संशय मोहिं रहो लपटाई॥
बिषसागर में अमृत ढूंढ़ा। सुखसागर का सार न बूझा॥
बुद्धिहीन मायारस पीते। जन्म अनेकन यहि बिधि बीते॥
मनवशहोयविषय नहिंत्यागा। भजनबन्दगीसेनिशिदिनभागा
खान पियन में चित्तरचाया। निष्फल सारा जन्म गवाँया॥
मान बड़ाई मनमें राखी। दिनदिनभईकुमतिकीसाखी॥
भेद न जाना सद्गुरु रामा। मुक्ति पदारथ को निजधामा॥
मनवश कियो न शब्द पयाना। या जगको सांचाकरिमाना॥
गुरुआज्ञा निशिदिन बिसराई। झूंठे सुखसे रह्यो लोभाई॥
दो० सुरत शब्द बिसरायके, फांसी गले डलाय।

बृन्दाबन क्या होतहै, नाहक अब पछिताय ॥
बीतीका क्या शोच अब, आगेकी सुधि धार ।
बृन्दाबन तन मन अरप, चाहै होवन पार ॥

चौ० सद्गुरुराममैंशरणतुम्हारी । जसचाहोतसलेहुउबारी ॥
कहँलग कहूं भूल भइ भारी । कहत २ जिह्वा मोरि हारी ॥
महापराधी निडर कुचीला । नहिं जानी माया की लीला ॥
अब मोको आपन करिलीजे । सुरतशब्द को मेल करीजे ॥
गुरुआज्ञा अमृतकरिजानी । निशि दिनचरणकमललवआनी
व्यापक एकसकल सुस्थाना । ऐसी निश्चय होय निदाना ॥
विधिनिषेध में भेद न होई । दुबिधा दुरमतिचित से धोई ॥
आशा पूरण करो दयाला । हम हैं तुम्हरे बाल गोपाला ॥

दो० बिनती करन न जानहूं, ऐसो बुधि को हीन ।
बृन्दाबन शरणागती, दीनन को मैं दीन ॥

अथ वाहगुरुनामा ॥

यहदुनियाजाय[1] क़याम[2] नहीं दोरोज़में यहांसे जानाहै । क्यों मालखज़ाना जमाकिया किस वास्ते तम्बूतानाहै ॥ क्यों दाम[3] में दुनिया के आया सौदाई[4] है दीवानाहै । होसाफ़ निकल इस फन्दे से एजान अगर[5] मरदानाहै ॥ सबकाम[6] त्यागजपनाम बिश्वंभरवाहगुरू कहुबृन्दाबन । बसमुक्तिमिले सुख चैनवढ़े अरु पाकरहै सारा तन मन ॥ क्योंहिरस[7] हवा में जाके फँसा ऐदिलक्यातुझकोसौदा[8] है । है खौफ़[9] कीजा[10] धोखेकी जा इसजापे निहायत[11] खटका है ॥

जगह १ स्थिर २ जाल ३ पागल ४ जो ५ काम आदिक ६ ईर्षा ७ पागलपन ८ डर ९ जगह १० बिलकुल ११ ॥

कुल्ल[1] अमर[2] हैं दुनिया बेजा[3] सबछोड़ तुझे यह ज़ेबा[4] है। इस काम में सबकुछ बेहतर[5] है गर[6] अक़ूल[7] से तुझको बहरा[8] है॥ सबकाम त्याग जप नाम बिश्वंभर वाहगुरू कहु बृन्दाबन। बस मुक्ति मिलै सुखचैन बढ़ै अरु पाकरहै सारातनमन॥ बेसूद[9] ऐदिल[10] ख़्वाहिश[11] ज़र[12] और हेच[13] है आरायश[14] तन मन। बेकार[15] है ख़ूबोंकी[16] उल्फ़त[17] बेरङ्ग[18] है-गुल[19] गश्ते[20] गुल्शन[21]॥ बेफ़ायदे[22] असपो[23] फ़ील[24] शुतर[25] बेहासिल[26] तामीरे[27] मसकन[28]। गर अक़ूल है यकज़र्रा[29] तुझको दिनरात जपाकर यह सुमिरन॥ सब काम त्याग जपनामबिश्वंभर वाहगुरू कहु बृन्दाबन। बस मुक्तिमिलै सुखचैनबढ़ै अरु पाक रहै सारा तन मन॥ भवसागर घोर कठोर हुआ नहिं सूझत वारापारा है। संगी जहां एक नहिं अपना तहँ ना कुछ और अधारा है॥ नइया झँझरी पानी गहरा कम्पित डिगमिग मँझधाराहै। स्वामी मेरे पार लगावैं दूसर कौन सहाराहै॥ सबकाम त्याग जप नाम बिश्वंभर वाहगुरू कहु बृन्दाबन। बस मुक्ति मिलै सुखचैन बढ़ै अरु पाक रहै सारा तनमन॥ मंज़िल दूर राहहै अटपट शिरपर बोझाभाराहै। काम क्रोध मद घेरलियो है भागा कहीं न उबाराहै॥ जब क्षीण मलीन भयो तनमन कोई सुनै न तेरी पुकारा है। क्षण में तन धन लूटैं तेरा ताते अब

सब १ काम २ बुरे ३ भला ४ अच्छा ५ जो ६ बुद्धि ७ लाभ ८ निष्प्रयोजन ९ मन १० इच्छा ११ धन १२ तुच्छ १३ बनाना १४ बुरा १५ स्त्री १६ प्यारा १७ बिरथ १८ फूल १९ सैर २० बाग़ २१ निष्प्रयोजन २२ घोड़ा २३ हाथी २४ ऊंट २५ निष्प्र-योजन २६ बनाना २७ मकान २८ थोड़ी २९॥

यही बिचारा है ॥ सबकाम त्याग जप नाम बिश्वंभर वाहगुरू कहु बृन्दाबन। बस मुक्ति मिलै सुखचैन बढ़ै अरु पाकरहै सारा तनमन ॥ दुर्लभ जन्म भयो यह तेरो क्यों वाहगुरू नहिं गाता है। पछितैहै फिर अवसर चूके मन मायामें भरमाता है ॥ जब काल भुअंगम आअडसै तब कोई संग न जाताहै। हो हुशियार[१] ज़रा उठ बैठो सुनो सुगम[२] यक बाता है ॥ सब काम त्याग जप नाम बिश्वंभर वाहगुरू कहु बृन्दाबन। बस मुक्ति मिलै सुख चैनबढ़ै अरु पाक रहै सारा तन मन ॥ जो दूरकी कहने वाले हैं और इस कूचे[३] में रहते हैं। वह तलख़[४] बहुत कुछ कहते हैं गो[५] रंज[६] मुसीबत[७] सहतेहैं ॥ जब कहते हैं हक़[८] कहते हैं गो बहरे[९] अलम[१०] में बहते हैं। जोमर्द हक़ीक़त[११] बीं[१२] हैं अयदिल वह हरदम यह ही कहतेहैं॥ सब काम त्याग जप नाम बिश्वंभर वाहगुरू कहु बृन्दा-बन। बस मुक्ति मिलै सुख चैन बढ़ै अरु पाक रहै सारा तनमन ॥ जो कल करनाहै आज करो अब जल्दी करना अच्छा है। घड़ी में कुछ है घड़ी में कुछ है कलको किसने देखाहै ॥ तू दिलमें अपने शोच ज़रा इबलीस[१३] तो दुश्मन[१४] सबका है। मैदान यही और गोय[१५] यही अब झटपट आ क्या अरसा है ॥ सब काम त्याग जप नाम विश्वंभर वाहगुरू कहु बृन्दाबन। बस मुक्ति मिलै सुखचैन बढ़ै अरु पाक रहै सारा तनमन ॥ घटमें तेरे बसाहै अनहद सुना करो तुम आठो याम[१६]। सुनते

सावधान १ सहज २ गली ३ कड़ुआ ४ माना ५ दुःख ६ आपदा ७ सत्य ८ समुद्र ९ दुःख १० सत्य ११ ज्ञाता १२ काल १३ बैरी १४ गेंद १५ पहर १६ ॥

सुनते अलख लखोगे सन्त बतावें इसको नाम॥ ध्यानहै जिसका वही मिलैगा नहीं है इसमें ज़रा कलाम[1]। मिथ्या भर्म वही तू खुद[2] है मुझको भाताहै यह काम॥ सब काम त्याग जप नाम बिश्वम्भर वाहगुरू कहु बृन्दाबन। बस मुक्तिमिलै सुखचैन बढ़ै अरु पाक रहै सारा तनमन॥ होंठ बन्दकर नैन मीचले कान रोक[3] गुज़रै[4] अज़[5] आज[6]। ख्याल[7] सहसम[8] तरफ़[9] रास्त[10] के मुक़ाबिल[11] अबरू[12] सुन आवाज़[13]॥ सोहंद्वार इसी में सब कुछ और जुगतको कहिये साज[14]। यही मारफ़त[15] यही हक़ीक़त[16] इसी पै मुझको हैगा नाज़[17]॥ सब काम त्याग जप नाम बिश्वम्भर वाहगुरू कहु बृन्दाबन। बस मुक्ति मिलै सुखचैन बढ़ै अरु पाक रहै सारा तनमन॥ गर[18] ऐश[19] की तुझको ख़्वाहिश[20] है तो जन्नत[21] है तेरी मंज़िल[22]। बगर[23] तमन्ना[24] नहीं है तुझको दर्पण सा रख अपना दिल॥ महव[25] ज़ातचूंमौज[26] ब[27] दरिया[28] नूर[29] में नूरसे है वासिल[30]। तसबीह[31] यही और ज़िक्र[32] यही और वहीहै अपना आबो[33] गिल[34]॥ सब काम त्याग जप नाम बिश्वम्भर वाहगुरू कहु बृन्दाबन। बस मुक्तिमिलै सुख चैन बढ़ै अरु पाक रहै सारा तनमन॥ कुल्लमुहीत[35] वाहिद[36] था हक़्क़ा कोई न था मुक़ाम[37] और चीज़। पैदायश[38] तेरी

संदेह १ आप २ बन्द ३ रहित ४ से ५ ईर्षा ६ ध्यान ७ तिल ८ ओर ९ दाहीं १० बराबर ११ भौंह १२ शब्द १३ बनावट १४ उपासना १५ ज्ञान १६ मान १७ जो १८ विषय सुख १९ चाह २० वैकुण्ठ २१ जगह २२ जो २३ इच्छा २४ ले २५ लहर २६ बीच २७ नदी २८ जीव २९ मिलाप ३० माला ३१ स्मरण ३२ पानी ३३ मिट्टी ३४ व्यापक ३५ एक ३६ स्थान ३७ उत्पत्ति ३८॥

कहां से आई अपने दिल में करो तमीज़[१] ॥ अनल[२] हक़[३] है क़ौल[४] हक़ीक़त[५] यही समझ हर क़लब[६] अ-ज़ीज़[७]। बिर्द यही सुमिरनमें यही और यही गुज़ारिश[८] अयदिलनीज़ ॥ सब काम त्याग जप नाम बिश्वम्भर वाहगुरू कहु बृन्दाबन। बस मुक्तिमिलै सुखचैन बढ़ै अरु पाक रहै सारा तनमन ॥ नफ़्स[९] अम्मारा[१०] अज़बस[११] नाक़िस[१२] मुती[१३] जो होगा इसका तू। दो-ज़ख़[१४] मिलै आगके खम्भे सड़े बदन आवै बदबू ॥ बिच्छू भौंरे सांप छिपकली तनमेंलिपटैंस्याहहो रू[१५]। पनाह[१६] रख अय हक़ताला[१७] यही है दिलमें गुफ़्तो[१८] शुनू[१९] ॥ सबकामत्याग जपनाम बिश्वम्भर वाहगुरू कहु बृन्दाबन। बसमुक्तिमिलैसुखचैनबढ़ै अरुपाकरहै सारा तनमन ॥ जिसकूचे[२०] में जो जाताहूं सुनताहूं वहांचरचा है यही। अफ़सोस वह दुनिया तजताहै समुझाओ चलोअच्छाहै यही ॥ ख़ूबहुआ वहलाखकहै तक़दीर[२१] का यहां लिक्खाहै यही। कहै गोकियगाना[२२] बेगाना[२३] परदिलको मेरे भाताहै यही ॥ सबकाम त्याग जपनामबिश्वम्भर वाहगुरू कहुबृन्दाबन। बस मुक्ति मिलै सुख चैन बढ़ै अरु पाक रहै सारातनमन ॥ इन लोगोंकी गर[२४] सुनतेहो यह काम सरासर बदतर[२५] है। है हाल यहां गुमराही[२६] का हुशियार[२७] रहो इसजा डर है ॥ इसकाम में जल्दी लाज़िम[२८] है तजवीज़ वही

बिवेक १ अहं २ ब्रह्म ३ वाक्य ४ ज्ञान ५ मन ६ प्यारा ७ प्रार्थना ८ मन ९ धोखादेनेवाले १० बहुत ११ बुरा १२ दास १३ नरक १४ मुख १५ रक्षा १६ भगवान् १७ कहना १८ सुनना १९ गली २० प्रारब्ध २१ अपना २२ दूसरा २३ जो २४ बुरा २५ भूल २६ सावधान २७ उचित २८ ॥

अच्छी गरहै। ज़िनहार[१] किसी की अब न सुनो जो दिलमें समाई बिहतर[२] है॥ सब काम त्याग जप नाम बिश्वम्भर वाहगुरू कहु बृन्दावन। बसमुक्ति मिलै सुखचैन बढ़े अरु पाक रहै सारा तन मन॥ फ़हमाइश[३] मना जो करतेहैं उनके दिल[४] बातिल[५] में है यही। सब दुनिया तो है इसतर[६] में सख्त[७] बला[८] मुशकिल में यही॥ और क्योंकर हम यह तरक[९] करें है अपने तो आबो[१०] गिल[११] में यही। है विर्द[१२] तो अपने अब भी यही और धुन है अपने दिल में यही॥ सब काम त्याग जप नाम बिश्वम्भर वाहगुरू कहु बृन्दावन। बस मुक्ति मिलै सुखचैन बढ़े अरु पाकरहै सारा तन मन॥ बेफ़ायदह नासह बक्काहै सुनताहूं किसीकी कब मैं भला। क्या जाने कोई इस लज्ज़त[१३] को जो कुछ कि उठाया दिलने मज़ा[१४]॥ किसतरहसे मैं मुश्ताक़[१५] नहूं अफ़लाक[१६]से आती है यह सदा[१७]। मैं कान से अपने सुनताहूं फ़रमाता[१८] है खुदरब्ब[१९] मेरा॥ सब काम त्याग जप नाम बिश्वंभर वाहगुरू कहु बृन्दाबन। बस मुक्तिमिलैसुखचैनबढ़े अरु पाकरहै सारा तनमन॥ यह नासह[२०] कुछ दीवानाहै क्या फ़ायदा इन तदबीरों[२१] से। हम पन्द[२२] उसीको कहतेहैं जो पन्दहो पुर तासीरों[२३] से॥ यहां ज़र्फ़[२४] नहीं अपना ऐसा जो बहस[२५] करैं बेपीरों[२६] से। बृन्दाबन नानक

कभी १ भला २ उपदेश ३ मन ४ झूठे ५ आनन्द ६ कठिन ७ आपदा त्याग ९ पानी १० मिट्टी ११ याद १२ स्वाद १३ आनन्द १४ प्रेमी १५ आकाश १[illegible] आवाज़ १७ आज्ञा १८ भगवान् १९ उपदेश करनेवाला २० यत्न २१ उपदेश २[illegible] लाभ २३ मन २४ चरचा २५ निगुरोंसे २६॥

गुणगावो क्या हासिल[1] इनतक़रीरों[2] से ॥ सब काम त्याग जपनाम बिश्वंभर वाहगुरू कहु बृन्दाबन। बस मुक्ति मिलै सुखचैन बढ़ै अरु पाक रहै सारा तन मन ॥

(इति वाहगुरूनामा)

अथ बारहमासा प्रारम्भः ॥

अषाढ़मास बर्षा रुती जियरा करत कलोल। सद्गुरु राम कृपालने दिया रत्न अनमोल १ श्रावणसतचित भेद लखि पायो आनँदरूप। पिया मिलन जब होइया भया भिखारी भूप २ भादोंकी कालीघटा रैन अँधेरी देख। डरे जीयरा पर लखा जल थल साहिब एक ३ क्वार कुंआरी जो सखी सतसँग बिमुख रही। काम क्रोध सखियां मिलीं बिपदा बहुत सही ४ कार्त्तिक कौतुक जो लखा तकादृष्टि भरपूर। अपने घट में साइयां लखै सोई है शूर ५ अगहन अगसबजरगयो शीतलभयो शरीर। सुरतशब्द मेलाभया मिटी कर्मकी पीर ६ पौष प्यास जातीरही शान्त सरोवर बास। परमारथके कारणे भयो पिरेमीदास ७ माघमास सरसों खिली भयो वसन्ती घाम। निरख निरख शोभारुती पूरण होगये काम ८ फागुन फाग ऐसो रचो तनमन दियो भुलाय। बाजन बाजा बजरहे सुन सुन जिय हर्षाय ९ चैत मास में चेतले संवत भयो नवीन। जो तू अबकी चूकिया चौरासी गलदीन १० मास वैशाख आये सखी प्रेम भक्ति चितराख। देश विदेश घर घर बने पूरण तेरी साख ११

लाभ १ बातों २ ॥

ज्येठ महीना दिन बड़ा सतसँगकरो अघाय। सद्गुरु रामका जापकर बृन्दाबन पद पाय १२ इति॥

होली—होली को साज कहोरी शब्द में सुर्तरँगोरी॥

टेक—जगगोलाल गुलाल नहीं है कालने घेर धरोरी। नहीं प्रकाश तिमिर छायो है दीदों में पानी भरोरी॥ सखी अन्धाधुन्ध मचोरी १ सत्संग दुर्लभ है मेरे भाई शब्द कि डोर गहोरी। मन अपने में देख विचारो बिन अभ्यास मरोरी॥ शब्द नहिं हाथ लगोरी २ विषयभोग में मन को लगायो दूना ज़हर पियोरी। मायाकी धूर उड़ावनवाली माया ने धोखा दियोरी॥ फूल शिंगार फंसोरी ३ विषरस भांग के घूंट पिये हैं आपन सुध बिसरोरी। सन्त कृपालु दया सद्गुरुकी बृन्दाबन सत्य लखोरी॥ भाग से फाग मिलोरी ४॥

होली—पलपलमें शब्दसे रचनारी मानयेही धन अपनारी॥

टेक—दूसर धन सब देहके संगी इन संगन चलनारी। देहगये तू नहीं नशैहै जीव अमर रहनारी॥ आगे भोग है करनी १ जबलग जीव मुक्ति नहिं पावै छुटै न कर्म कलपनारी। स्थूलगये सूक्षम रहो भाई दुखसे कभी न तरनारी॥ आवागमन में फिरनारी २ मृत्यु समय जहां आशा होवै वहां बासा मिलनारी। जो जग माहिं सुर्तरही याकी आशा तन धरनारी॥ कपटजाल में पड़नारी ३ सतसङ्ग में जो जीव रचैगा आशा हरिचरणारी। बृन्दाबनपरपञ्च विनाशा सुखसागर मिलनारी॥ हंसा हो रहनारी ४॥

वसन्त—जागो जागो सखीरी टुकउठवैठो आयेवसन्तसोहावनरी॥

टेक—आश यही सब निश्चय मोको पिया मिलन मन भावनरी। सुख होइ है दुख जइहैरी सजनी चलोरी पिय को मनावनरी १ अनहदशब्दसुनोमेरी सजनी करवती अङ्गललावनरी। सेवा पिउप्यारी बृन्दाबन सुफल दरश गुरु पावनरी २॥

बसन्त—सन्तमिलन यह बसन्त सखीरी॥

टेक—प्रेम बिरह मन फूलै डालै रूप बिराट लखोरी। सेवा सुमिरन ज्ञान ध्यानको रङ्ग रङ्ग फूल खिलोरी १ भ्रमर लुभानै कोकिल बोलै अनहद शब्द सुनोरी। बृन्दाबन यह बसन्त सोहावन आनँदप्रेम चखोरी २॥

होली—सुमत क्यों न हो तु कुमत मत मेरी॥

टेक—यहि जगमें कोउ काहूको नाहीं मत कर मेरी तेरी। अब क्या भूला फिरत अनेला अनहद शब्द सुनोरी १ ए मत बौरी सुमत तू होजा पिउप्यारेकी चेरी। जीव अनेकन पियाके कारण देश बिदेश फिरेरी २ फिर नहिं पाया जन्म गँवाया उदय अस्त लैहेरी। बङ्कनालसे चढ़ त्रिकुटीतक भँवर गुफ़ाजायघेरी ३ अबक्यापूछौज्ञानकी बातैं अन्तको एकभयोरी॥ ए मत बौरी गुहारलाय बृन्दाबनघरहेरी ४॥

शब्द—आग लगै होली जलबलजाय। पियाबिन होली मुझे न सुहाय॥ प्रेम बिरहमें माती फिरतहूं ऐसोहै कोई देवताय। तड़फ तड़फ लज्जित चक्रितहूं नहिंकोइ होत सहाय॥ पञ्चबैरी मिल छल बल राखो अन्त चले अकुताय। बृन्दावनप्यारी गुरुपद पर सहजै दियोलखाय॥

होली—होली होला होरही तू कहां पड़ी सोवैरी।

टेक—साईंने अपना वेष रचोहै कैसा कैसा रङ्ग मचोरी।

सबमें मिलाहै आप छिपाहै सुफल जन्म क्यों खोवैरी १ सहज निहारा प्रीतम प्यारा करले दर्शन नयन उघारा। चन्द्र सूर्य तारे उजियारे फिर काको तू जोवैरी २ काम क्रोध लोभ को भखले दया धर्म संतोषको चखलेरी। प्रेम भक्तिकी निश्चय करले मनकी मथानी बिलोवैरी३ गावो प्यारे पद है सांचा जले दोष लकड़ी जस आंचा। नाम अलख बृन्दाबन वांचा होनी होय सो होवैरी ४॥

शेर- ॥ तेरीही ज़ात[1] को बक़ा[2] है मुदाम[3]। होंगे फ़ानी[4] तमाम ख़ासो[5] आम ॥ तेरेही रहम[6] से ठिकानाहै। और जो कुछ कहूं फ़िसाना[7] है ॥ क्यों न हाफ़िज़[8] हो और तू मौजूद। अपने बन्दों के पास ऐ माबूद[9] ॥ तू ग़फ़ूरुल[10] रहीम[11] है या रब। हम गुनहगार हैं सरासरसब ॥ तुझको है शर्म पास है इसका। नहन[12] अक़रब जो तूनेफ़रमाया ॥ ज़ात तेरीमें अर्ज[13] हस्ती[14] है। नेस्त[15] असले[16] बुलन्द[17] पस्ती[18] है ॥ इल्म[19] है औ सरूर[20] वाफ़ी[21] है। वहदहू[22] ला[23] शरीको[24] काफ़ी है ॥ अर्जो[25] जौहर[26] यह हरदो वाहिद[27] है। बेखुदी[28] सिर्फ़ इसकी शाहिद[29] है ॥ यह जो कुछ दीखने में आता है। बेखुदी में निशान पाताहै ॥ कौनसी शै[30] से तेरीहो तशरीह[31]। एक ज़ंजीर दूसरी तसबीह[32] नाक़िसुलअक़्ल[33] में जो नापूंहूं। तश्त[34] काग़ज़ में

स्वरूप १ स्थिर २ सदा ३ नाश ४ सर्व ५ दया ६ कहना ७ रखवाला ८ भगवान् ९ क्षमाकरनेवाला १० दयालु ११ पास १२ स्वरूप १३ अस्ति १४ मिथ्या १५ जड़ १६ आकाश १७ पृथ्वी १८ ज्ञान १९ आनन्द २० पूरा २१ एक २२ नहीं २३ सदृश २४ स्वरूप २५ गुण २६ एक २७ अहंकारत्याग २८ साक्षी २९ चीज़ ३० विस्तार ३१ माला ३२ तुच्छबुद्धि ३३ थाल ३४ ॥

बहर[1] डालूंहूं ॥ लेकफिरशान उसकी देखूंहूं। दोमें उस एकही को पेखूं हूं ॥ हां बका[2] औ फ़ना[3] शुमार[4] में दो। मतलब हर दोका एकही तो हो ॥ एकक-हनाभी दो करै क़ायम। गोमगो[5] छोड़कुल्ल है दा-यम[6] ॥ कौन तुझ बिन है काबेमें रौशन। है तुही बसपनाह[7] बृन्दाबन ॥

टी०—व्यापक आदिवस्तु अर्थात् पुरुषका स्वरूपअस्ति आदिक है और ज्ञाता है सोई चराचर को प्रकाशक है और जोकि वह पूर्ण है उसका स्वरूप ऐसे आनन्द से भरा है कि दुःखका लेश नाममात्रभी न कभी हुआ है न है और न होगा और एक अद्वितीय अनन्त है सब संसार का वही एक उत्पन्न करनेवाला है उसकी तरफ़ से सब मनुष्य और पशुओंकी उत्पत्ति एकही तरह पर है और सबके अङ्ग एकही सूरतपर हैं जो हर एक झुण्डका उत्पन्नकरनेवाला पृथक् २ होता तो यह नहीं होसक्ता था कि सबमनुष्यों की उत्पत्ति एकहीतरह पर होती हां पीछे २ मतों के आचार्यों की बुद्धिसे बाज़े २ काम और चलनों में अन्तर ज़रूर हुआ है हिन्दुओं का पहिनावा और तरह का मुसलमानों का और तरह का परन्तु ईश्वरकी तरफ़से कुछ अन्तर नहीं इस से ईश्वर एकही है और सबदेहों के तत्त्वभी एकही हैं और जो ईश्वरकी आदि का खोज कीजिये तो हवाको मुट्ठी से नापना है और जो अन्तका ढूंढ़िये तो समुद्रको चुल्लू से ख़ालीकरना है जब कोई आदि नियत करोगे तो

समुद्र १ विधि २ निषेध ३ गिनती ४ अन्यबीच ५ सदा ६ रक्षा ७ ॥

उससे पहिले भी तो कुछ होगा जो कोई अन्त कहोगे तो उसके पीछेभीतो कुछ रहेगा इससे वह जात अर्थात् पुरुष अनादि अनन्त है हां संसार का मूलनाश निस्सं-देह है और ईश्वर में रूप और गुणका कहनाभी जबहै जब मनुष्यको ऐसी दृष्टिहै कि एक ईश्वर है और दूसरा संसार है परन्तु जब मनुष्यों में से अनात्म अर्थात् अहंबुद्धि जातीरही तो रूप और गुण दोनों एकही हैं और यह सब तमाशा उसी समयतक दिखलाई देताहै जबतक द्वैतता है जागनेकी दशा में एक दो दीखते हैं और जब मनुष्य सोता है तब एक है न दो है इसी तरह मूल अर्थात् अविद्या अहंके नाश होनेपर एक दोष का भी अभाव है॥

दो० अहंकार की बासना, करौ नाश तुम जोय।
अहंबासना बीज है, जन्म धरावै सोय॥

और जोकि केवल पुरुष को नित्यता है इससे कौनसी ऐसी दूसरी वस्तु है कि जिससे उसको बोध क-रानेके लिये दृष्टान्त दें क्योंकि ईश्वर माला के स्थाना-पन्न है जिसके स्मरण करने से उद्धार होताहै और जो कुछ कि उत्पन्न हुआ है वह जंजीर के स्थानापन्न है उसको पैर में डालने से बँधुआ होजाता है इससे वह ईश्वर दृष्टान्त के योग्य नहीं मैं अपनी मूर्खतापर बहुत लज्जितहूं कि तू यह क्या अपनी बुद्धिमानी छांड़ता है कहीं समुद्र भी कागज़ के थालमें समासक्ता है परन्तु फिर जो विचार से देखताहूं तो मालूम होताहै कि जो कुछ कहा जायगा वह उससे ख़ाली न होगा॥

और एक कहो या दो असल में एकही है एक २ दो जगहहोकर दोहुआ इससे दोमें वह एक ठीक ठीक मौजूद है जो नित्य कहा तो पुरुषही है और जो अनित्य कहा तो अनित्यता संसार को है फिर भी केवल पुरुष ही रहा ॥

दो० आदि अन्त निर्मलसदा, पुरुषरूप है जोय ।
मधबिकार भासत कछू, अज्ञानीको सोय ॥

परन्तु एक कहनाभी द्वैतता में दाख़िल है क्योंकि एक कहनेवाला दूसरा हुआजाता है ॥

दो० अहंकार को धारके, कछु बनता यह जोय ।
तब सब इसको आपदा, आन परापतहोय ॥

इससे एक न दो जो कुछ है सो है सत्यतो यह है कि काबे में भी वही है और बृन्दाबन भी उसीका है प्रकट वही अप्रकट वही और आदि अन्तभी वही जो अनुराग है तो सब अनुरागियों का वही एक प्यारा है क्योंकि सब अनुरागियों का अनुराग मालिक की तरफ़ है और मालिक सबरूप में प्रकट होसक्ता है हां किसी ने एकान्त में पाया और किसीने चौड़ेमें किसीने बिना वस्त्र और किसीने वस्त्रसमेत देखा किसीने बोलते देखा और किसीने चुप देखा झगड़ा केवल मतों की भिन्नता में है मूल में तो वह एकही प्यारा है पर सच्चा प्रेम अवश्य है ॥

चौ० प्रेम उठै जब उरके माहीं । नेमाचार रहै कुछ नाहीं ॥
नयनों से जलधार बहाई । निशिबासरबृहअग्निजराई ॥
पिय बिछोहकी पीरसतावे । परबस इतउत कछु न सुहावे ॥

हाय हाय करि रैन बिताई । बिना नीर जस मीन रहाई ॥
कबहूं जस बावर होजाई । क्षण रोवे क्षण करै हँसाई ॥
कबहूं रुदनकरै दिनराती । कबहूं बैठि बज्र कर छाती ॥
गुरुबिन प्यारालगै न कोई । धन परिवार देखि दुख होई ॥
दो० बिरहप्रबलदल साजिकै, घेरलियो म्वहिं आय ।
नहिं मारै छांड़ै नहीं, तड़फ़ तड़फ़ जियजाय ॥

हां जिन्हों ने देखा नहीं और देखनेवालोंके मुखसे सुनाहै या कुछ अपनी बुद्धिमानीसे गढ़त गढ़ी है तो और बात है परन्तु यद्यपि ऐसा होजाय तो आश्चर्य भी नहीं (झुट्ठलखेलेसच्चलहोय) अर्थात् संसारी झूठा प्रेम सच्चे प्रेम का प्रकाश करदे इतनी और बिनय करताहूं कि जो इस ग्रन्थ के पदोंमें अशुद्धता प्रतिष्ठित अवलोकन करनेवालों के दृष्टिपड़े तो परमार्थ पर दृष्टि करके उस पर ध्यान न करें क्योंकि पदों की रचना और बात है और परमार्थका रङ्ग अन्य बात है मेरा केवल यह अभिप्राय है कि अनुरागीलोग यहां पर आनन्द और वहां पर मोक्ष प्राप्तकरें हां अपनी सामर्थ्य भर सुगम और संक्षेप पद पदार्थ लिखेगये किन्तु बहुधा दृष्टान्तों में भी संक्षेप कियागया है और इच्छा करके तो कोई कड़ा और दुर्बचन या किसीकी निन्दा या तोड़ फोड़ नहीं की और जो होय भी तो लाभ और प्रयोजनसे रहित न होगी उसको ऐसा समझना चाहिये कि जैसे बागमें घास फूस और कांटे भी होते हैं परन्तु वह घास घास नहीं और कांटा कांटा नहीं किन्तु बाज़े अमुक कठिन रोगके वास्ते वह घास और

कांटा गुणकारी औषध आनन्द की देनेवाली होती हैं॥

शेर–नेकखूबां[1] अदब नयाज़ि[2] शआर[3]। है वह खुश रङ्ग[4] फूल खुशबूदार[5]॥ नेक खसलत[6] हमेशा खुशदिलहै। बेतरद्दुद[7] अज़ीज़[8] हर दिलहै॥ औज[9] हस्ती[10] काजोसरूर[11] हैगा। वहमवद्दब[12] के बस हजूर[13] हैगा॥ बेनयाज़ी[14] तोशानमौला[15] है। आदमीको नयाज़ अदना है॥ इन कलामों पै गर तु आमिल[16] है। दीन दुनियाका ऐश हासिल है॥

टीका–जो मनुष्य सज्जन और नेक चलन है और अदब और आधीनता रखताहै वह अमलमें ऐसे फूल के समान है कि जिससें रङ्ग और सुगन्ध दोनों बर्त्तमान हैं ऐसा मनुष्य आपभी आनन्द में रहताहै और दूसरों के भी आनन्द का कारण होता है और सबको प्यारा लगता है और हर जगह उसका शिष्टाचार और मान होताहै और जोकि उसका मन संसारके बिषय से बचा रहता है उसको परमार्थ में भी अवश्य पहुंच होजाती है तात्पर्य यह है कि ऐसे मनुष्यों को दोनों हाथ लड्डू है॥

दो० सज्जन सबके मीतहैं, ताको मतो अगाध।
बृन्दावन जाके दरश, क्षमा होहिं अपराध॥

शेर–चाहिये तुमको बोलो मीठा बोल। खर्च कौड़ी न हो वले अनमोल॥ जो तुझे और में बुरा दीखे। चाहिये तुझको तू न वह सीखे॥ गुस्सा[17] दबताहै खुशज़बानी[18] से। आग बुझतीहै जैसे पानीसे॥

सज्जन १ दीनता २ सूमावं ३ अच्छारङ्ग ४ सुगन्धित ५ अच्छास्वभाव ६ निस्संदेह ७ प्यारा ८ बड़ाई ९ संसार १० आनन्द ११ दौरती १२ साम्हने १३ बेपरवाह १४ भगवान् १५ बरतनेवाला १६ क्रोध १७ मीठा बोल १८॥

जोइ न इक़रार[1] को निभाते हैं। बोलो तुम झूठ यह सिखाते हैं॥ लाख दुश्मन[2] का ख़ौफ़[3] तू मत कर। गरडरै तो ख़ुशामदीसे डर॥

टीका—देखिये मीठा बोलना कैसा अच्छा है कि अपने को तो किसी प्रकार की हानि नहीं और दूसरे को आनन्द प्राप्त हो इसके सिवाय मित्रता उत्पन्नकरे निस्संदेह मीठा बोलना कोयलके शब्दके समान है और कठोर वचन ऐसा है जैसे कौवेकी आवाज़॥

कहिये कोयल क्या देदेतीहै और कौवा क्या लेलेताहै परन्तु कोयल का शब्द सुनकर चित्तको आनन्द होता है और कौवेकी आवाज़ बुरी लगती है इसी स्थानसे प्रकट है कि संसारमें शरीरभाव करके तो मनुष्य एकहैं परन्तु स्वभावमें एक दुष्ट और दूसरा सज्जनहै और प्रसिद्धहै कि दूसरे का बुरा बोलना अत्यन्त बुरा मालूम होताहै इससे आपको बुरा बोलने से बचना उचित हुआ और देखिये कि जो कोई दूसरा क्रोधमें है और तुम मीठाबोल बोलो तो निस्संदेह उसका क्रोध जाता रहेगा परन्तु यह समझना अवश्य है कि मीठा बोलने से यह प्रयोजन नहीं है कि तुम झूठे वचन बन्धन करदो या ख़ुशामद के वचन कहो यह दोनों बातें तो अत्यन्त ही बुरी हैं॥

जो झूठा इक़रार करताहै वह दूसरेको सिखलाताहै कि तुमभी मुझसे झूठे इक़रार करो जबहीं पूरापड़ैगा बाज़े आदमियों का यह स्वभाव होता है कि निष्प्रयोजन कुछ न कुछ इक़रार कर देते हैं और जिससे

वचनबन्धन १ शत्रु २ डर ३॥

इक़रार करते हैं उसको बहुधा बृथा दुःख और क्लेश होताहै यथा किसी मनुष्य से तुमने इक़रार किया कि मैं आज शाम को ज़रूर आऊंगा अब वह मनुष्य शामको तुम्हारे आनेकी आशा में रहा किन्तु वह अपने कई हरज करके तुम्हारी राह देखता रहा और तुम गये नहीं कहिये क्या फल हुआ (आशामरैनिराशाजीवे) इसीको निरर्थक पाप कहते हैं॥

खुशामदी केवल ज़ाहिर में तो खुश करदेता है परन्तु असलमें तो लोक परलोक दोनों का नहीं रखता किसीने खुशामद अर्थात् झूठी प्रशंसा की तो खुशामद मिथ्या होती है इससे खुशामद जिसकी की और वह निर्बुद्धि हुआ तो उसकी बातें सुनकर चित्तमें अत्यन्त प्रसन्न हुआ और समझलिया कि निस्संदेह मैं ऐसाही हूं जैसा यह कहता है॥

कहिये अब किधरके रहे जो कुछ अपने में कमी अर्थात् लघुताका ध्यान होता तो आगे बृद्धि करने को और प्रवृत्त होते और अब परिश्रम करने और दुःख सहने की क्या आवश्यकता रही जब बातोंही बातों में आकाश में पहुँचे अब ध्यान करलीजिये कि ऐसे मनुष्य किस कामके रहे॥

शेर—जो जवानी[1] में बारकश[2] होंगे। वह ज़ईफ़ी[3] में क्यों न खुश होंगे॥ एक तक़सीर[4] जो छिपाते हैं। दो क़सूर अपने शिरपै लाते हैं॥ जो कि सुस्ती की-सबा[5] फेरेहै। जान को उसके रोग घेरै है॥ जब मिलै

अरथाईं १ मेहनती २ बुढ़ापा ३ अपराध ४ माला ५॥

चीज़ मुफ़्त या सस्ती। क्यों न उस पर तमा[1] रहै हस्ती॥ दुश्मनी[2] इल्म[3] से किसीको नहीं। बेवक़ूफ़ोंका इसमें ज़िक्र[4] नहीं॥

टीका—प्रसिद्ध है कि जिस आदमी ने अपनी जवानी में मेहनत की है उसने बुढ़ापेके वास्ते पूंजी पैदा की है अब बुढ़ापा सुगमता से व्यतीत होताहै जवानी में एक दिनके परिश्रमसे जो कार्य होजाता है वह बुढ़ापे में एक महीने के परिश्रम से नहीं बनता और जो दुःख कि तरुणाई में परिश्रमके कारण सेरभर मालूम होता है वह बुढ़ापे में मनभर से भी अधिक मालूम होता है॥

अपराध का छिपाना अत्यन्त बुरा है देखिये प्रथम तो यह कि जो अपराध को छिपाते हैं वह एक और दूसरा अपराध बढ़ाते हैं क्योंकि अपराध का छिपाना भी तो अपराधही है दूसरे जब कोई अपराध छिपाया जाता है तो ऐसा विदित होताहै कि कोई बहुत बड़ा अपराध होगा जो इसने छिपाया है इसलिये अपराध का अङ्गीकारही करना उत्तम है॥

सुस्त अर्थात् आलसी आदमी ऐसा है कि जैसे लूला लँगड़ा होताहै किन्तु लूले लँगड़े से भी बराबरी नहीं होसक्ती क्योंकि लँगड़े के तो पैर नहीं जो चलै परन्तु उनके तो भगवान् की दयासे हाथ पैरभी मौजूद हैं परन्तु हिलाते नहीं॥

एक दृष्टान्त है कि एक आलसी अर्थात् सुस्त कहीं एक वृक्षके नीचे पड़ाथा उसकी छाती पर उस वृक्षसे

लालच १ शत्रुता २ विद्या ३ चर्चा ४॥

मेवा आपड़ा अब आप मेवा तो खाना चाहते हैं परन्तु उठाने का आलकस है उस समय कोई ऊंटवाला जाता था आपने ऊंटवाले से कहा कि भाई एक काम हमारा करते जाओ ऊंटवाले ने दया करके अपने ऊंटको ठहराया और उतरकर उनके पास आया आपने कहा कि यह मेवा मेरे मुँहमें डाल दो ऊंटवालेने कहा कि वाह तुमसे यह भी काम नहीं होसक्ता था तो आपने ऊंटवाले से कहा कि वाहजी तुमतो बड़े सुस्त हो इतनेसे काममें भी तकरार करतेहो देखिये यह दशा सुस्त आदमियों की है॥

जबकि मनुष्य को कोई बस्तु मुफ़्त या सस्ती मिले तो बहुत शोच समझकर लेनी चाहिये शोचले कि कुछ दालमें कालाहै लालच को दूर करे लालच ऐसे समय पर हँसै है कि मेरे जालमें आया॥

विद्या केवल लिखनेही पढ़नेही को नहीं कहते विद्या का अर्थ है जानना, इससे अच्छे बुरेका जानना भी विद्या ही है और इसके विपरीत जो निर्बुद्धिता है उस को मूर्खता कहते हैं क्योंकि विद्या बिना रहना असावधानी है॥

शेर—अच्छी पोशाक अपनी दुश्मन है। गर्चे दर्ज़ी को रोज़[1] रोशन है॥ चिड़िया पहिंचानतेहैं रङ्गोंसे। आदमी को कलाम[2] ढङ्गोंसे॥ बेवकूफ़ों कि दिल्लगी देखो। झूठी उम्मेद[3] का शगालपेखो॥ बेवकूफ़ों का दिल ज़बांपर है। उनका हमराज़[4] तो ज़ियां[5] पर है॥

दिन १ बात २ आशा ३ साथी ४ हानि ५॥

सौ किताबों का ढेर रक्खा हो। बेपढ़े किसतरह से पक्का हो॥

टीका—जो मनुष्य कि धजकी पोशाकके शौक़ीन वह अपने साथ निस्संदेह शत्रुताही करते हैं अग दर्ज़ीका घर अवश्य भरते हैं देखिये प्रथम तो मज़दू बहुत देनी पड़ती है और जो ज़रा किसी प्रकार का खो दर्ज़ीके सीने में होगया या ज़रा ढीला कसा होगया त अत्यन्त दुःख उत्पन्न हुआ और कपड़े के फाड़ने व इरादा करके दर्ज़ीका सीना चाक किया चाहते हैं ज कुछ बुद्धि आगई तो खैर नहीं तो गुस्से में कपड़े व फाड़डाला अब दूसरा तैयार कराते हैं और जो उस कपड़ेको पहना तो प्रायः समय दिलतङ्ग रहताहै दूस सजधज के कारण हर समय कपड़े की रक्षा करते नज़ाकत से पांव उठाते हैं और एक ढङ्गके साथ हा हिलाते हैं तात्पर्य यहहै कि दाम खर्च करके तन औ मनके लत्ते और चीथड़े करडालते हैं॥ मनुष्यक इज्ज़त सजधज और अच्छी सूरतपर सम्बन्धित नहीं मनुष्यकी चाल ढँग वार्त्तालाप देखी जाती है हां प की प्रतिष्ठा रङ्ग और खूबसूरतीही से होती है॥

अज्ञानी मनुष्य अपने समय को वृथा खोते है और वृथाही दुःख उठातेहैं काम तो उनसे कुछ होत नहीं झूठी २ आशा और यत्न बाँधते हैं वह पूरे होत नहीं इससे दुःखी होते हैं॥

अज्ञानियों के चित्तमें कुछ विचार नहीं होता जो दिल में आया विना शोचे समझे कहडाला जो दूसरे

ने कोई बात कही और उसको प्रत्यक्ष करना न था परन्तु अज्ञानी बिना प्रकट किये नहीं रहता किसवास्ते कि उस बातके रखनेको उसके दिलमें जगह नहीं फिर कहांरक्खे मुखमें लाकर निकाल देताहै ॥

यह सब ख़राबी मूर्खताई के कारण होती है बाहर की तो दोनों आंखें खुली हैं पर भीतरकी बन्द इसी से ऐसे मनुष्य बन्दरके समान हैं ॥

शेरें—बोलना सच उसे न भावैहै । मग़ज़[1] को जिस के भूत खावे है॥ जोय[2] में रास्ती[3] में न्हाते हैं । जान औ तन दोनों ज़ोर पाते हैं ॥ बेइमानों ने पाल रक्खा चोर । बेइमानी खुवावै लाखकिरोर ॥ बाज़ग़फ़लत[4] अगचें छोटीहै । लेकिन बुनियाद[5] उसकी खोटी है ॥ जब कि ग़ाफ़िल हुआ है चौकीदार । करदिया उसने चोरको हुशियार ॥

टीका—झूंठ बोलना या झूंठ को पसन्द करना यह काम शैतानकाहै अब जिसको सच न भावे तो जानना चाहिये कि इसके कपालमें भूत प्रेत घुसे हुये हैं ॥

मनुष्यमें बेईमानी ऐसे चोरके समान है कि अपना घर लूटके दूसरेके हवाले करदे मनुष्यताका धर्म ईमान्दारी अर्थात् सत्यता पर है सब काम नियतसे होते हैं और जिसमें कि ईमान्दारी नहीं वह आदमी नहीं इससे जब कि मनुष्यता जातीरही तो सब कुछ जातारहा ॥

चौकीदारों की एक ज़राही ग़फ़लत हज़ारों रुपये की हानि करासक्ती है जो देखिये तो चौकीदारने कुछ

शिर १ नदी २ सचाई ३ चूक ४ जड़ ५ ॥

ऐसा बुरा नहीं किया केवल सोगया परन्तु उसके सोने से द्रव्य उठगया ॥

अब जो चौकीदार न होता तो अच्छा था क्योंकि जहां चौकीदार रहताहै वहां संदेह होताहै कि कुछ तो है जो चौकीदार खड़ा कियाहै ॥

शेरे—गर किसी को सलाह देनीहो । देखलो वह सलाह ऐसीहो ॥ सिर्फ़ ज़ाहिरमें चिकनी चुपड़ी न हो । असल में फ़ायदा भी रखती हो ॥ बात तो थी बड़ी नसीहतकी । पर हुई वह बड़ी फ़ज़ीहतकी ॥ क्योंकि नादान उसको जानान कह । चांदकी जगह शिर बताया कह ॥ आज़मायश बिदून जोहै कलाम । रोटी बिनपेट कद भरैगा नाम ॥

टीका—किसी मनुष्यने कहा कि चाँदके दर्शनसे चित्त और दृष्टिमें शीतलता आती है किसी नादानने चाँद के स्थानापन्न शिरका शब्द कह दिया अब जिस मनुष्य ने सुना उसको शिरके देखने का शौक़ हुआ अब अपने शिरको तो देख नहीं सक्ता तो दूसरेके शिरको देखताहै इसमें जो जुईं दृष्टि पड़ी उसको दिल्लगीके तौर पर पकड़कर मारडाला देखिये कैसी भूल है कि पुण्य के बदले पाप का भागी हुआ ॥

इसलिये अज्ञानी के कहने पर अमल करना भी हानि का कारणहै बाज़े मनुष्य क़िस्से कहानी दृष्टान्त सीखलेते हैं परन्तु अमल किसी कहने पर नहीं इससे परीक्षा में एक बात भी नहीं आई अब ऐसे सीखने से क्या हुआ कुछ प्रयोजन निकलता है पेट रोटी खाने

से भरताहै केवल रोटी के नाम लेने से नहीं भरता ॥

शेर—असल[1] में आदमी जो है सच्चा। ज़ाहरीको वह जानता कच्चा॥ नेकखू[2] आलिमों[3] से बेहतर[4] है। नेक चलनों को इल्म जौहर[5] है॥ वल[6] अशराफ़[7] पाक[8] मसकन[9] है। जैसे आईनह[10] साफ़रौशन[11] है॥ जिस्म[12] दिल जिसके दोनों हैं माकूल[13]। देखिये रोशनी में रक्खा फूल॥ साफ़ दिलका वतीरा[14] यह होता। और की बेहतरी में जी खोता॥

टीका—जिस आदमी का चलन नेक है वह निस्संदेह पढ़े लिखेसे अच्छा है जो चलन अच्छा न हुआ और विद्या बहुतसी पढ़ली वह ऐसाहै जैसे झूंठा मोती हां जो विद्या भी होय और चलन भी अच्छा हो तो क्या कहना है वह खुतन देशकी कस्तूरी है॥

जिस मनुष्य के तन मन दोनों अच्छे हैं वह ऐसा है कि जैसे रोशनी में फूल रक्खा चमकता है॥

जो शुद्ध चित्त मनुष्य हैं वह दूसरे की बृद्धि में प्रसन्न होते हैं उनको ईर्षा नहीं होती समझ लेते हैं कि उस मनुष्यकी-बृद्धि ईश्वर की इच्छासे हुई है और जो उसकी बृद्धि हुई है तो उससे कभी न कभी अपने को कुछ लाभही होगा ऐसे मनुष्य दूसरों की बृद्धि के लिये अपने तन धन की भी न्योछावर करदेते हैं॥

और बाज़े मनुष्य दूसरों की बृद्धि में दुःखी और उदास होते हैं किन्तु हावका भरा करते हैं॥

पासप १ सज्जन २ परिडत ३ अच्छा ४ शोभा ५ दिल ६ सज्जन ७ शुद्ध ८ जगर ९ दर्पण १० प्रकाशित ११ तन १२ ठीक १३ राह १४॥

अब इस अज्ञानताको देखिये कि प्रथम तो काम ईश्वर की इच्छा से बिरुद्ध हुआ कि जो ईश्वरने किया उसके किये में अपने चित्तको उदास किया दूसरे जितना अपने को प्राप्त था औ उससे प्रसन्नता प्राप्त थी उस आनन्द को अपने हाथसे खोया कहावत है कि (पराये अशुभ के वास्ते अपनी नाक कटाई) देखो तुम्हारे पास सौरुपयेकी जमा थी तुम उसके बल से आनन्द में बैठे थे किसी ने आकर कहा कि फ़लाने के पास दोसौ रुपये हैं जो तुमको यह वचन सुनकर डाह आई तो तुम्हारा आनन्द जो सौ रुपये में पारहे थे जातारहा ॥

तीसरे डाहकरनेवाला नाम पाया अब इसरोग की क्या अच्छी औषधि है कि न दाम ख़र्च होवे और न कुछ पीसा पासी करनी पड़े और आरोग्यता अच्छे प्रकारसे होजाय और सहजमें जमाभी हाथ लगजाय॥

चार मनुष्य बराबर के भागी होते हैं एक तो वह जो रुपया ख़र्च करके शुभ कर्मकरे दूसरा जो उसमें तन धन से शरीक हो ॥

तीसरा वह जो ख़र्च करनेवाले की हिम्मत बँधावे अर्थात् प्रसन्नता सहित उसकी बड़ाईकरे चौथा वह जो ऐसे कामको देखकर चित्तमें प्रसन्नहो इसी प्रकार पाप के कामों में भी जानलेना चाहिये कहिये अब इसमें क्या ख़र्च है जो चित्तमें प्रसन्न होजाय और चौथाई का भागी बने यहां भी सुख और वहां भी आराम ॥

शेर—जिनको लिखने का पुरूला[१] आया न ढंग। वह दवातो क़लमसे करते हैं ज़ंग[२] ॥ कुफ़्ल[३] जो बीच कामके रहता। ज़ंग चढ़नेसे वह बचा रहता ॥ बात जिसपर अमल न करनाहो। फ़ायदा सीखने से फिर क्याहो ॥ काम अपनेको जिसने पहचाना। लोग कहते हैं उसको है दाना[४] ॥ वक़्त हर कामका मुक़र्ररकर। वक़्तपरकाम हो ताकि बसर[५] ॥

टीका—देखिये लिखना तो एक अक्षरभी नहीं आता परन्तु छूरी सम्पूर्णदिन हाथमें मौजूद लिखनेके नाम तो कभी एक पत्र भी नहीं लिखते परन्तु दश पांच क़लमकी ख़राबी तो ज़रूर आजाती है और प्रतिदिन दवातका सूफ़ और स्याही बदलाजाताहै सचहै (नाच न जाने आँगनटेढ़ा। लिखे न पढ़े नाम मुहम्मद फ़ाज़िल)

जब कि ताला काममें आता रहताहै उसपर मोर्चा लगनेकी नौबत नहीं आती है इससे यह प्रयोजन है कि जो बस्तु काममें आती रहेगी वह बनीरहेगी और उससे कुछ प्रयोजन भी निकल सक्ताहै ॥

जिस राहको न चलना उसके कोस बृथा क्यों गिनना जिस कामको नहीं करना उसके सीखने में बृथा क्यों समय को व्यतीत करना मनुष्य को उचित है कि जो काम अपने ज़िम्मेका है उसमें यत्न करेगा तो लाभ उठावेगा देखिये टहलुआ जो सेवकाई में प्रवीण होगा तो उसकी बढ़ोतरी संभव है और जो मालिकके कामों में दख़लदेगा और जो काम मालिकके हैं वह

पुष्ट १ लड़ाई २ ताला ३ बुद्धिमान् ४ पूरा ५ ॥

कियाचाहेगा तो ख़राबही होगा जैसे कौवा हंसकी चाल चला तो अपनी भी भूला और जो काम ख़िदमतगार के हैं वह मालिकसे नहीं होसक्के मालिकका एकघण्टा दश पांच रुपये की क़ीमत रखताहै ख़िदमतगार का एक घण्टा एक पैसे दो पैसेके बराबर होताहै इससे मालिकको एक घण्टा अपने काममें लगाना उचित होगा मनुष्यको चाहिये कि अपने कामोंके समयको विभाग करें और जो समय जिस काम का नियत कियाहै उस समय उस कामको अवश्य करना चाहिये जो ऐसा नियत न होगा तो कभी समय पर काम न होगा और जब समय पर काम न हुआ तो वह काम कभी पूरा न होगा किन्तु हौले २ उस काम का करनाभी बन्द होजायगा इस निमित्त बृद्धों ने बहुधा नियम किया है क्योंकि बिना नियमके अज्ञानियोंसे कुछभी न होसकेगा ॥

शेर—यह ग़रूर[१] एकतरहकी घास है बस । ज़हर[२] रखती है जिसकी हर एक नस ॥ कूड़े करकटमें आप लहरावै । बाग़में ढूंढ़िये तो कबपावै ॥ बेमहल[३] बोलना छलकना है । सच है आब[४] को पटकना है ॥ गुफ़्तगू[५] उसकी सबके आवै पसन्द । वक़्ख़ामोश[६] कहना कर दे बन्द ॥ हो न शरमिन्दह बेतमीज़ी[७] पर । दौलतमन्दों से वह तो है बेहतर ॥

टीका—सच है ग़रूर बहुत कठिन विषभरी घास है किसी और ज़हरका खाना आदमीको संसारसे उठाता है परन्तु इसका विष ऐसा बुरा है कि लोक परलोक

अहंकार १ विष २ असमय ३ पानी अर्थात् शोभा४ कहना ५ चुप ६ मूर्खता७ ॥

दोनोंसे खोताहै यहां धिक्कार खिलाता है वहां नरक की आग में जलाताहै यहां नीचा दिखाताहै वहां शूली पर चढ़ाताहै यहां सज्जन पुरुषोंसे अलग कराताहै वहां यमदूतों से जा मिलाता है वास्तव में यह घास नीचों के हृदय में जो कूड़े करकट के समान है उत्पन्न होती है सज्जनों का हृदय बाग़के बराबर है उसमें उसका पता भी नहीं यह अहंकारही आदमी की ज़बानको ख़राब करता है आता तो कुछ नहीं परन्तु घमण्ड का अन्त नहीं समय बोलने का है नहीं और बोल उठते हैं॥

वास्तव में ऐसे बोलने से अपनी आब खोनी है दूसरे समझलेते हैं कि सूरत बहुत अच्छी परन्तु सीरत के नाम ख़ैरआफ़ियत और जिस मनुष्य में अभिमान नहीं उसकी बात चीत बहुत अच्छी जबकि चुप रहने का समय आवे तो चुप होजाताहै अपनी प्रशंसा नहीं करता जो कोई अस्तव्यस्त बात निकलजाय तो फिर लज्जित होता है इससे सौभाग्यता के चिह्न मुखपर चमचमाते हैं और अज्ञानियों की यह दशा है कि अपराध भी करें और लज्जायुक्त भी नहों चोरी और सीना ज़ोरी॥

शेर—ख़र्च करनेको जब बढ़ाओ हाथ। अपनी थैली से पहिले करलो बात॥ दरजे औसत[१] से जो गुज़रते हैं। साफ़नेकी[२] से वह उतरते हैं॥ जबकि देनाहै जल्द तू दे दे। याही जल्दी जवावमें उसके॥ जिसने पाया है नेक ख़िदमतगार। मिलगया मुफ़्तसोहबती

मुषाफ़िक़ १. भलमनसई २॥

ग़मख़्वार ॥ सच्चे नौकरकी क़द्र[1] क्यातोलो। अपने घरकी फ़सील तुम बोलो ॥

टीका—थैलीसे बातकरनेसे यह अभिप्रायहै कि मनुष्य अपने घरमें देखले जितनी पूंजी बर्तमान हो उसके अंदाज़ से ख़र्चकरे और जो अधिक ख़र्च करेगा तो प्रगट है कि या तो उधार लानापड़ेगा या चोराना पड़ेगा॥

ऐसे ख़र्च करनेवाले को उदार नहीं कहाजाता इसका नाम बृथा ख़र्च करनेवाला है उदार वह है जो कंजूस नहीं है अपने सामर्थ्यके मुवाफ़िक़ ख़र्च करता रहता है परन्तु जो अपने अधिकारसे गुज़रजाता है वह बेशक नेकी से झगड़ा करता है॥ ऐसे मनुष्यों के पास नेकी नहीं ठहर सक्ती जबकि अधिक ख़र्च किया तो बेशक ईमानमें फ़रक़ आवेगा वही बृथा कहलाते हैं सच है कि जितनी चादर हो उतना पैर फैलाना चाहिये नहीं तो निस्संदेह चादरमें नुक़सान आवेगा या पैरमें गरमी सरदी असर करेगी इससे अधिक पैरफैलाने से क्या मिला॥ जो ख़िदमतगार नेक हैं वह वास्तवमें ग़मख़्वार दोस्तके बराबर हैं जैसे शहरपनाहसे शहर की रक्षा होतीहै उसी तरह नेक ख़िदमतगार घर का रक्षक होताहै सच्च है आदमी बहुत कम मिलता है॥

शेर—जबकि इनसान[2] गुस्सह करताहै। वादहन[3] आंखको झपकता है॥ जड़तु गुस्से की जान नादानी[4]। ज़ाहिरा इसमें होती हैं हानी॥ है ग़लत जो हँसीको जाने दलील। खिलखिलाना करेगा उसको

अधिकार १ आदमी २ खुलामुंह ३ अनजानता ४॥

ज़लील ॥ जो बचा चाहो हां क़सूरों[1] से । करले परहेज़वहफ़ितूरों[2] से ॥ रुपया लालची को आना है । बल्कि कुछ घरसे उसके जाना है ॥

टीका—प्रत्यक्ष है कि गुस्सेवाले को दूरन्देशी अर्थात् भविष्य बिचार नहीं रहता जो चाहता है सो बक उठताहै इससे दृष्टि बन्द हुई और मुंह खुला और जो गुस्सेवाले की सूरतको देखिये तो भी ऐसीही दशा होजाती है कि मारे क्रोधके आंखें तो बन्दकरलेताहै और जीभ टरटर चलीजाती है और गुस्साकेवल अनसमझी से उत्पन्न होताहै और अपनी बहुत हानि करताहै ॥

बाज़े मनुष्यकी ऐसी रीति होजाती है कि जब कोई उसको सच बात कहनी है तो कहनेके बदले हँस देता है वह अपनी हँसी और खिलखिलाने को यह समझता है कि इससे बिदित होजायगा कि मुझको स्वीकार हुआ परन्तु यही मिथ्याहै और एकनिर्बुद्धिता की रीति है उठने बैठनेकी एकमूर्खता देखिये कि अपराध करते हैं और प्रतिष्ठा चाहतेहैं यथा देवदत्त यज्ञदत्तकी मुलाक़ात करनेगया अब यज्ञदत्त अपने मकानमें गद्दी तकिया लगाये बैठाहै देवदत्त कि जिसका चित्त बहुत अहंकारीहै यज्ञदत्तके पास पहुंचा अभी सलाम बन्दगी भी पूरी नहीं हुई कि आप बराबर तकियेके जा बैठे और उम्मेदवार हैं कि यज्ञदत्त आपकी शिष्टाचारी कुछ बढ़करके कहिये अब आपको शिरपर बैठावे या कड़ियोंसे टांगदे या खूंटीसे लटकादे क्या करे ॥

अपराध १. झूंट २. ॥

इसके सिवाय अब हज़ूर अपने काम और चालाकियोंकी प्रशंसा करनेलगे और आशा रखते हैं कि यज्ञदत्त बढ़कर तारीफ़करै॥ देखिये अपने मुंहसे हीरालाल बनगये अब क्या बाक़ी रहा हां अब यज्ञदत्तको ईंट पत्थर कहने को जगह निस्संदेह छोड़ी जब हज़ूर पधारनेलगे तो खड़े देखते हैं कि पहिले यज्ञदत्त सलाम करले तो मैं सलामकरके चलूं यह अहंकार है या क्या चाहिये था कि जो यज्ञदत्त गद्दीपर बैठा था तो आप गद्दीसे नीचे बैठते तो यज्ञदत्त प्रतिष्ठापूर्वक अपनी गद्दी पर बैठाता तो देवदत्तकी प्रतिष्ठा और यज्ञदत्तकी प्रसन्नता होती जो देवदत्त अपनी प्रशंसा आप नहीं करता तो यज्ञदत्त करता अपूर्व आनन्द दोनों को मिलता॥

शेरं—जब किसी दुख ज़रर[१] का ख़ौफ़[२] आवै। कर तुहिम्मत वह ख़ौफ़ डरजावै॥ ज़्यादह उस दुखसे उस का डरमारै। फिर वह दुख आपभी पकड़झारै॥ जो सहारे हैं दुखको राज़ीसे। हराते वह शेर बाज़ीसे॥ हासिदों[३] का न कर तू फ़िक्र[४] ऐमरद। वह हसद[५] खुद[६] बनावै उसको ज़रद[७]॥ हासिदी बुग़[८] कार कीनाहै। जिस किसीका स्याह[९] सीना[१०] है॥

टीका—बहुधा देखने में आया है कि बाज़े आदमी मरने से पहिलेही रोना पीटना मचादेते हैं और जिस बातका डर करतेहैं वह देखनेमें नहीं आती इससे बृथा कुछ समयतक दुःख सहतेहैं यह वही कहावत है कि पानी न देखा और मोज़ा उतारनेलगे और जो दुःख

हानि १ डर २ डाहकरनेहारे ३ चिन्ता ४ डाह ५ आप ६ पीला ७ बैर ८ काला ९ हृदय १०॥

आगया तो अब दुःख सताताहै देखिये एक दुःख दो बार उठाया जो हिम्मत करके उस समय डरको हटायाजाता तो डरके दुःखसे तो बचजाते और जो मनुष्य दुःख को प्रसन्नतासे सहते हैं वह वास्तव में शेरको हरादेते हैं जब दुःख आवे तो मनुष्य को समझना चाहिये कि जो सुख न रहा तो दुखभी नहीं रहेगा॥

वास्तवमें डाहकरनेवालों की ओरका संदेह चित्त में लाना कुछ आवश्यक नहीं उनकी जानको वह डाह आप चरा करतीहै डाह करनेवालेको मृतकके समान समझना चाहिये डाहकरनेवाले पर पश्चात्ताप होताहै कि आप दुःख पाताहै और दूसरोंका बुरा चाहता है उसकी यह इच्छा रहती है कि और भी मेरे समान होजायँ किन्तु यह कि जो किसीकी प्रशंसा होतीहै तो वह चाहताहै कि उसकी हँसी होय॥

हां जो ऐसी डाह होय तो हानि भी नहीं कि मनुष्य ऐसा चाहै कि जैसा दूसराहै वैसा मैं भी होजाऊं क्योंकि इसमें दूसरे का बुरा तो न चाहा अपनेही घरमें आगलगीरही और जो प्रारब्ध अच्छा हुआ तो अपने उदयके लिये शुभ कर्ममें लगगये ऐसी ईर्षा भली है॥

शेर—जागते जिसको स्वपना देखना हो। चौसरोगंजफ़ेका शग़ल[1] करो॥ जुये बाज़ीका जिसको शौक़ हुआ। शरईपंजऐब से वह मुआ॥ पहिले लेताहै चोर पाख़ाना। बाद मिलता हरामका खाना॥ फिर गधेकी सवारियां चढ़ते। देखा बहुतोंको जूतियां पड़ते॥ पैरमें

---

[1] खेल॥

बेड़ी टोकरी धरते । आक़बत[1] में बनाके गुल[2] झड़ते ॥

टीका-देखिये जिससमय मनुष्य चौपड़ और गंजीफ़ा खेलताहै जो बाज़ी जीता तो ऐसा होजाताहै कि मानो उनके हाथ कुछ बड़ापदार्थ आया अत्यन्त प्रसन्न फूले नहीं समाते परन्तु प्रत्यक्षमें तो यही देखनेमें आया कि धरती में हाथ रगड़नेपड़े और आंखें नीची करनी पड़ीं और जब उठे तब हाथ झाड़के उठे परन्तु उन के चित्तसे पूछिये तो मानों बादशाहत उनके हाथलगी असल में तो काठके खिलौने या कागज़ के टुकड़ेही को बादशाह होना नाम रक्खागया था परन्तु खिलाड़ी ने वह बादशाहत अपनेहींको मानी परन्तु क्या हुआ कहीं जन्म दरिद्री का भी पेटभरा है हां जागते हुये स्वप्न में पड़ना है ॥

दो० धरि सिरहाने ठीकरा, सोय रहा कङ्गाल ।
स्वप्न में राजा भया, जागत वही हवाल ॥

कहो जो इतनी देर अपने स्वामी का अर्थात् अपने ईश्वर का भजन स्मरण करते या भक्तमार्ग की पुस्तकों को देखते या किसी औरही का काम करदेते या अपना ही कुछ संसारीकाम करते तो क्या दरिद्रीही बने रहते नहीं सच्चे बादशाह होते ॥

और जिनके गलेमें हारका हार पड़गया उनकी ओरसे तो हाथही धो बैठिये (काटो तो लोहू नहीं) ॥

एक ज़रासे दम भरके झूठे आनन्दके लिये अमोल कदम खोकर बेदमहो बैठे और जो कुछ भी मनमें तरी

परलोक १ फूल २ ॥

रहगई तो नीची गरदन करके रोऊं रोऊं सूरत बनाकर टपटप आंसू बहाये भले कर्म फूटे ॥

शेर—नशेबाज़ोंकीराह मतसीखो। उनकी सुहबत[1] को तरक[2] करदीजो॥ दमलगाना जिगर जलाना है। दम नहीं मुंहपर दुम लगानाहै॥ नशह पीना ख़राब करता है। दिलको ग़मसे कबाब करताहै॥ सूंघना इ-तर[3] का अज़ाब नहीं। पर करैगा ख़राब तेरे तईं॥ क्योंकि बुनियाद ख़र्च ऐशकी है। पस जड़ मरज़[4] की बिलाशक[5] है॥

टीका—जिससमय में यार ने दम लगाया और धुयेंको ज़ोर से ऊपर को मुंहकरके छोड़ा तो ऐसा मालूम हुआ कि मानों इनके पेटमें से मुंहकीराह दुमनिकल खड़ीहुई अब डरलगा कि कहीं सींगभी न निकल आवें परन्तु॥

चौ॰ समरथको नहिं दोष गुसाईं। रबिपावकसुरसरिकीनाईं॥

शेर—जिसने दौलत ज़मीनमेंदाबी। जीतेजी जान ग़ोर में ढांपी॥ रीस करने को राहमें पड़ना। अपने हाथों से आपही मरना॥ अन्धेलूलेपै जोकि हँसते हैं। हँस के नाहक़[6] वला[7] में फँसते हैं॥ बेवक़ूफ़ों का यह वतीरा[8] है। मालखोना गोया जख़ीरा[9] है॥ देना दु-नियामें सुर्ख़रू करता। गोया बैकुण्ठका गिरो धरता॥

टीका—उस दिनरात गढ़ेलेही में सूमकी चारपाई है जो चरते हैं तो वहां जो लीद करते हैं तो वहां मरनेके पीछे चारपाई तो गई पर काली २ सूरत और लम्बी २ दुम करके सुकड़ सुकड़ा कर वहांही मौजूद हैं ऐसी

संग १. त्याग २ सुगन्ध ३ बीमारी ४ निस्संदेह ५ वृथा ६ आपदा ७ ढंगढ ढेर ८ ॥

औंधीमति भगवान् किसी को न दे कि होते हुवाते अपना कालामुँह और नीले हाथ पैर करावै ॥

अन्धेलूलेपर हँसना मानों ईश्वरपर हँसना है कहावत है कि (मिटिये दोष कि कुम्हारै दोष) जब ईश्वर पर हँसे तो नाहक़ हँसकर बड़ी आफ़तमें फँसे अब मृत्युसामने खड़ी है नहीं असमर्थकी दया करके सहायता करें उनके अच्छे होनेकी ईश्वरसे प्रार्थनाकरें कि दोनों का लाभ है ॥

देखिये गज़भर ज़मीन है उसपर कोई दूसराभी दावा करताहै अब आप कहते हैं कि सारा घर फूंक दूंगा परन्तु ज़मीन न दूंगा अब फ़ौजदारियां और कचहरियां होनेलगीं परन्तु ऐसे लोग अपने बचनके बड़े सच्चे होते हैं वास्तव में अपने हाथसे दिनदुपहरी अपने घर में आग लगाते हैं अब दिनरात क़ानून क़ानून पुकारते हैं उसको दे इसको दे इसकी हथेली गरम कर उसकी हथेली गरम कर बँधुओं के समान कचहरियों में खड़े हैं सचपूछो तो घरही में आग नहीं लगाते किन्तु अपने तनकी झोपड़ीको भी फूंक देते हैं वाहरे पक्केपन क्यों न हो तन धन जातारहे पर गज़भर धरती न छोड़ी किसी ने सच कहाहै कि (आंखके अन्धे गांठिके पूरे) ऐसे ही होते हैं छटांकभरका तो नुक़सान सहना बुरा समझा और दो चार मनका बोझा बहुत ख़ुशी से उठाते वास्तव में निस्संदेह ऐसे मनुष्य लट्टू हैं इससे ज़ियादा और मूर्खता क्या है ॥

दो०—जोकि औरत पराई को देखैं। नाम वद और

नरक को वह पेखैं ॥ बिच्छू छूने से डङ्कमारै है। फ़ाहिशा[१] की नज़रही जारै है ॥ औरत और शीशह दोनों ख़तरे[२] में। छूना क्या आपडाल झगड़े में ॥ ऐश[३] दुनियाके गरकिये हैं तरक[४]। मिलगई है बिहिश्त[५] छूटा नरक ॥ गाली और मरना कहाहै अज़ाब[६]। करदिया हाथ और ज़बांको ख़राब ॥

टीका—व्यभिचारिणीस्त्रीसे बचौ और नहीं तो बिच्छू ने खाया ॥

दो० नारी नाहीं नाहरी, नख शिख सेती खाय।
जीते सोखे रुधिरको, मुये नरक लैजाय ॥

बाज़े कहतेहैं कि देखनेमें क्या हानिहै हम कुछ उससे संग तो नहीं करते फिर यही समझके उससे बोलते भी हैं फिर कहते हैं कि बोलनेसे कुछ हुआजाताहै ॥

तात्पर्य यहहै कि हौले २ देखते भालते कुयें में गड़पसड़प ॥

उचित है कि कीचड़से बचेही रहना अच्छाहै इसी प्रकार नेक औरतकोभी जोखम है कुसङ्गियोंके पास न खड़ीहो जैसे भापसे दर्पणमें झाईं आजातीहै ऐसे ही स्त्री की इज्ज़त बात की बातमें जाती रहतीहै गाली देना और मारना सबदशा में बुरा है और अपना बदला आपीलेना सबतरह अयोग्य है ॥

शेर—जो मज़म्मत[७] सुने हैं औरों की। कानमेंरखे ख़ानभौंरोंकी ॥ बद[८] यगानेसे नेक बेगाना। आक़िलों[९]

व्यभिचारिणी स्त्री १ जोखम २ विषय ३ त्याग ४ बैकुण्ठ ५ पाप ६ निन्दा ७ बुरा ८ बुद्धिमान् ९ ॥

ने उसे भलाजाना ॥ है दया और दिया यह दोनों एक। जब दिया तब करी है दया अनेक ॥ सब्र[१] वालेको रोज़ ज़्याफ़त है । उसका खाना बिदून आफ़त है ॥ दमक करके भरोसा कौन बसे । जबकि दमभर न खुद है सब्र इसे ॥

टीका—ज़्याफ़त अच्छे भोजनको कहते हैं और अच्छा भोजन वह कि जिससे चित्त प्रसन्न हो इससे संतोषी मनुष्यके आगे जो खानेको आया उसी में धन्यवाद करताहै कहिये ज़्याफ़त हुई या नहीं ॥

और जो असंतोषी हैं और चटोरे हैं वह खाते चले तो जातेहैं चित्त नहीं भरता देखिये कुत्तेको चाहे जितना पेटभर खिलादो पर नीचे पृथ्वी में देखा भाली और सूंघा सांघी करता जायगा ॥

मनुष्य को उचितहै कि दूसरेकी पत्तलको न देखे हां अपनीही पत्तलकी मक्खियां उड़ावे नहीं तो न यह रहेगी और न वह मिलेगी ध्यानका स्थान है कि मनुष्य ऐसे निर्मूल गढ़के ऊपर तोपें चढ़ारहा है कि जिसके ठहरने का एक दमभरका भरोसा नहीं मनुष्य इस संसारके आनन्द भोगसें ऐसे उन्मत्त होजातेहैं कि जिसका अन्त नहीं और मरने का तो नाम उनके चित्त से अत्यन्त बिस्मरण होजाता है और यह नहीं जानते कि मौत दोनों कानों से अत्यन्त बहरी है जब आवेगी तो कुछ न सुनेगी सारी हाय हाय बृथाही जायेगी ॥

ध्यान कीजिये कि एक दिन जाना है इससे चलने

सन्तोष १ ॥

के मार्ग के सामान की चिन्ता क्यों नहीं होती और जबतक इसकी चिन्ता नहीं है तबतक अच्छा काम बनना कठिन है क्या हुआ जो बड़े आदमी होगये ऐसे हाथीसे तो चींटीही भली ॥

शेर—जबकि हाकिम खिलाफ़[1] अद्ल[2] करै। ज़ुल्म[3] का बोझा अपने शिरपै धरै ॥ बख़्श[4] दो साफ़ साफ़ हो न क़ैद[5]। बदले लेनेकी छोड़दो तुम क़ैद ॥ मतकरो जल्दी यार रचनेमें। हां करो जल्दी बद[6] से बचनेमें ॥ अच्छे कामों में असली[7] देर न कर। बद[8] अमलतर्क कर अबेर न कर ॥ अनपढ़ा नेकख़ूब अच्छा है। इल्मवाला कसैला कच्चाहै ॥

टीका—वास्तवमें जो हाकिमकी ओरसे न्याय न हुआ तो उसने अपनेही साथ तो अनीति की क्योंकि यहां बदनाम हुआ और वहां ईश्वर का चोर हुआ एक दृष्टिसे तो यह सत्य है कि भलाई औरके साथ और बुराई अपने साथ करनीचाहिये और दूसरीदृष्टि से यह कि-(भलाई अपने साथ और बुराई दूसरोंके साथ) देखिये पिछले कहनेसे यह तात्पर्यहै कि ईश्वरने मनुष्य को इसवास्ते बनाया है कि—भले काम और भक्तिकरके वैकुण्ठका सुख प्राप्त करें ॥

अब जो मनुष्यने इसके विपरीत किया तो अपने साथ बुराई की या नहीं इससे ऐसा चाहिये कि अपने साथ भलाई करो जो स्वर्ग में पहुंचो और बुराई करो अपने मनके साथ अर्थात् जो मन चाहे वह न करो

लगा। १ नीति २ अनीति ३ क्षमा ४ नष्टि ५ तुरा ६ करनी ७ बुरा ८ ॥

मनपर सवार रहना चाहिये मनको अपने ऊपर सवार न करना चाहिये यह चञ्चलमन और है और तुम इससे पृथक् हो ॥

देखलो तुम कहते हो कि मेरा मन दुःखी सुखी है तुम अपने को मनका स्वामी बनाते हो कि मन तुम्हारा है जो तुमसे पृथक् नहीं होता तो यों कहना था कि मैं मन दुःखी सुखी हूं सो कोई नहीं कहता ॥

जो कोई अच्छा काम करना है तो उसकी नींव उसी समय डाल देनीचाहिये कि कदाचित् भूल न जाय और जो किसी आवश्यकता से किसी बुरीबात में संयुक्त होनाहै तो टालबाल अवश्य है कि कदाचित् वह विलम्ब होनेके कारण टलजाय ॥

जिस मनुष्यमें विद्या है और चलन अच्छा नहीं रखता वह अनपढ़ नेकचलन से सबतरहसे बुरा है ॥

शेर—जो बुज़ुर्गों[1] के ख़िदमती[2] होंगे। बेतरद्दुद[3] वह जन्नती[4] होंगे॥ जोकि रखते हैं इल्म[5] से बहरा। जानलो बसहुआयहीपहरा॥ लोहा तरताहै काठकी हमराह[6]। नेकसुहबत[7] में तरगये गुमराह[8]॥ हां ज़बां अपनीबस करो तुमक़ैद। क़ैद तुमकोकहीं करावैनज़ैद॥ हाथ अपने को रोक कर रक्खो। बसमज़ा[9] ज़िन्दगी का तुम चक्खो॥

टीका—हाथ रोकने से यह प्रयोजन है कि दूसरे के मालपर ध्यान न करो पराया अंश ऐसा है कि जैसे

बड़ों १ सेवक २ निस्संदेह ३ वैकुण्ठवासी ४ विद्या ५ साथ ६ सत्संग ७ भूलेहुये ८ सुख ९ ॥

आस्तीन के भीतर सांप परन्तु सुनने में ऐसा आयाहै कि घूस खानेवाले अपनेको हलालखोर समझते हैं और जो रिशवत नहीं लेते उनको बदनाम करते हैं अज्ञानी और अभागे और तुच्छ कहतेहैं और अपनेको प्रारब्धवान् और बुद्धिमान् और प्रतिष्ठित समझते हैं उनका वर्णन है कि ईश्वरकी इच्छा बिना कुछभी मिल सक्ता है हमारा लेनाहै सो लेते हैं और कुछ मुफ़्त भी तो नहीं लेते जिसका कामकरतेहैं उससे लेते हैं हमको बहुतसी युक्तियां करनी पड़ती हैं हाकिम को सूधी राह दिखलानी पड़ती है जब कुछ हाथ आताहै कहिये यह हलालख़ोरी है या नहीं। हां साहब निस्संदेह परन्तु बेद, शास्त्र, कुरान, अंजीलआदि यह तो रिशवत लेने को ईश्वरकी इच्छाके बिनाही निषेध करते होंगे क्योंकि कहतेहैं कि शुद्ध धान्य खाना चाहिये और न्याय करनाचाहिये कि शेर और बकरी एकघाट पानीपीवैं हक़ पराया नान का उस सूअर उस गाय परन्तु ईश्वर अपनी इच्छा को इन घूस खानेवालों के कान में कह जाते होंगे वाहरी प्रारब्ध कि ईश्वरभी मिलजाय और हराम का माल भी हाथ लग जाय और बाज़े २ हिन्दुओं में से ऐसा भी कहते हैं कि हमने पहिले जन्म में दिया था सो अब पाते हैं उनसे यह प्रश्न है कि तुमने अगले जन्ममें कैसे दिया था पुण्य कियाथा या जिस मनुष्य से अब तुम लेते हो उस मनुष्यको उसी प्रकार दिया था प्रथम तो अपने किये पुण्य को फेरना बड़ाही अयोग्य है और इसके विशेष दानका बदला तो

ईश्वर से प्रकट होकर मिला करताहै अब जो लेनेवाले ने ज़बरदस्ती और छल करके लिया था सो तुम बदले में ज़बरदस्ती और छल करके लेतेहो तो आप हमको अब इतना समझा दीजिये कि यह क्योंकर निश्चय हो कि पहिले जन्म में तुमसे उस मनुष्य ने ज़बरदस्ती लिया था सो अब तुम लेतेहो शायद ऐसा हो कि तुम्हीं अब ज़बरदस्ती लेतेहो क्योंकि ज़बरदस्ती से लेना तुम्हारेही मुखसे साबित है मेरी बुद्धिसे तो चोरी करना जुआ खेलना आदि इस रिशवत लेने से बहुत अच्छाहै ये रिशवत लेनेवाले लोग दिन दुपहरी आंख में धूल डालतेहैं और सबसे बढ़के जो अपराध है सो यह कमातेहैं और जोकि इनकी कमाई भ्रष्ट होतीहै इससे औरोंको भी दुःखदायी होतीहै और उनको तो जीते जी नरक मिलगया हरामका माल हराममें गया खूब अय्याशी अर्थात् भोगकिया और अच्छी पोशाक पहनी पेचवान हुक्का लगाया धूमधाम से व्याह किया और मकान बनाया सवारियोंपर चढ़ दोचार हरामखोरों का पेटभरा कि जिससे वे आसामी ढूंढ़कर लावें परन्तु उनको यह नहीं मालूम कि॥

दो० कबीर–दुर्बलको न सताइये, जाकी मोटी हाय।
बिना जीवकी खालसे, सार भस्म होजाय॥

बाज़े साहब कहतेहैं कि क्याकरें रिशवतके बिना तो कामही नहीं चलता १० रुपये महीनाके नौकर घरमें दश आदमी किस प्रकार रोटी खायँ और प्रतिष्ठा रक्खें उनसे पूछा जाय कि जिसको केवल ५ रुपया

महीना मिलता है और १२ आदमी घरमें हैं उनका भरण पोषण कैसे होताहै यह मनुष्यों पर अपूर्वभूल का परदा पड़ाहुआहै उस अपनी प्रतिष्ठा को जो १० रुपये के रखने के योग्य थी उसको २० रुपयेवाले के बराबर रखना चाहते हैं क्या दश पांच रुपये में बिवाह नहीं होसक्ता क्या नारियल, गुड़गुड़ी, कलीपीना हुक्का पीना नहीं है क्या पृथ्वी और बानकी खटियापर सोना नहीं है क्या सिंहासनपर मरना और क्या भूमि पर क्या दालरोटीसे पेट नहीं भरता क्या मोटा कपड़ा फाड़े खाताहै क्या छप्पर रहनेको नाहीं करताहै क्या पैरों चलना बीमार करता है वाह एक ज़रासी समझकी कसर है नहीं तो दिनरात इसी में परम आनन्द से व्यतीत होसक्ताहै और दिनरातकी चिन्ता और काटा बनारी दूर होती है ॥

जिसका हिसाब साफ़है उसको हिसाव देने में क्या भय है और घूस की सम्पत्तिसे धनवान् हुआ चाहतेहैं वह हज़ार रिशवत लें और हज़ार शिर मारें एक न एक दिन ऐसी आपड़ती है कि सब कसर निकलजाती है और कंगालही दीखतेहैं और उनकी टोकरी में तिनके झाड़ू दृष्टि पड़तेहैं (बरस दिनमें सख़ी सूम दोनों बराबर) होजाते हैं और देखिये क्या प्रतिष्ठा मनुष्य की रक्खी रहतीहै हां वह बड़ा इज़्ज़तवालाहै जो अपने हक़[१] को अपने काम में लाताहै बाज़े कहतेहैं कि हज़ारों घूसखाते हैं उनको कुछभी नहीं होता उनके पेटतकमें शूल उठता

---

[१] शुद्धधान्य १ ॥

ईश्वर से प्रकट होकर मिला करताहै अब जो लेने-वाले ने ज़बरदस्ती और छल करके लिया था सो तुम बदले में ज़बरदस्ती और छल करके लेतेहो तो आप हमको अब इतना समझा दीजिये कि यह क्योंकर निश्चय हो कि पहिले जन्म में तुमसे उस मनुष्य ने ज़बरदस्ती लिया था सो अब तुम लेतेहो शायद ऐसा हो कि तुम्हीं अब ज़बरदस्ती लेतेहो क्योंकि ज़बर-दस्ती से लेना तुम्हारेही मुखसे साबित है मेरी बुद्धिसे तो चोरी करना जुआ खेलना आदि इस रिशवत लेने से बहुत अच्छाहै ये रिशवत लेनेवाले लोग दिन दुपहरी आंख में धूल डालतेहैं और सबसे बढ़के जो अपराध है सो यह कमातेहैं और जोकि इनकी कमाई भ्रष्ट होतीहै इससे औरोंको भी दुःखदायी होतीहै और उनको तो जीते जी नरक मिलगया हरामका माल ह-राममें गया खूब अय्याशी अर्थात् भोगकिया और अच्छी पोशाक पहनी पेचवान हुक्का लगाया धूमधाम से ब्याह किया और मकान बनाया सवारियोंपर चढ़ दोचार हरामखोरों का पेटभरा कि जिससे वे आसामी ढूंढ़कर लावें परन्तु उनको यह नहीं मालूम कि॥

दो० कबीर—दुर्बलको न सताइये, जाकी मोटी हाय।
बिना जीवकी खालसे, सार भस्म होजाय॥

बाज़े साहब कहतेहैं कि क्याकरें रिशवतके बिना तो कामही नहीं चलता १० रुपये महीनाके नौकर घरमें दश आदमी किस प्रकार रोटी खायँ और प्रतिष्ठा रक्खें उनसे पूछा जाय कि जिसको केवल ५ रुपया

महीना मिलता है और १२ आदमी घरमें हैं उनका भरण पोषण कैसे होताहै यह मनुष्यों पर अपूर्वभूल का परदा पड़ाहुआहै उस अपनी प्रतिष्ठा को जो १० रुपये के रखने के योग्य थी उसको २० रुपयेवाले के बराबर रखना चाहते हैं क्या दश पांच रुपये में विवाह नहीं होसक्ता क्या नारियल, गुड़गुड़ी, कलीपीना हुक्का पीना नहीं है क्या पृथ्वी और बानकी खटियापर सोना नहीं है क्या सिंहासनपर मरना और क्या भूमि पर क्या दालरोटीसे पेट नहीं भरता क्या मोटा कपड़ा फाड़े खाताहै क्या छप्पर रहनेको नाहीं करताहै क्या पैरों चलना बीमार करता है वाह एक ज़रासी समझकी कसर है नहीं तो दिनरात इसी में परम आनन्द से व्यतीत होसक्ताहै और दिनरातकी चिन्ता और काटा बनारी दूर होती है॥

जिसका हिसाब साफ़है उसको हिसाब देने में क्या भय है और घूस की सम्पत्तिसे धनवान् हुआ चाहतेहैं वह हज़ार रिशवत लें और हज़ार शिर मारें एक न एक दिन ऐसी आपड़ती है कि सब कसर निकलजाती है और कंगालही दीखतेहैं और उनकी टोकरी में तिनके झाड़ू दृष्टि पड़तेहैं (बरस दिनमें सख़ी सूम दोनों बराबर) होजाते हैं और देखिये क्या प्रतिष्ठा मनुष्य की रक्खी रहतीहै हां वह बड़ा इज़्ज़तवालाहै जो अपने हक़[1] को अपने काम में लाताहै बाज़े कहतेहैं कि हज़ारों घूसखाते हैं उनको कुछभी नहीं होता उनके पेटतकमें शूल उठता

शुद्धधान्य १॥

ही नहीं कोई एक दो की शायद कभी ख़राबी आगई तो आगई नहीं तो ख़ैर ऐ साहब! यहां के हाकिमों को दलानों कमरेही के भीतरकी बस्तु दीखती है और किसीको रिआयत[१] भी हो जाती है परन्तु ईश्वरको तो सम्पूर्ण दीखता है ॥

एक दृष्टान्तहै कि किसी उस्ताद[२] ने अपने दोशागिर्दों[३] को दो कबूतर दिये और कहा कि जहां कोई न देखै वहां इनको मारलाओ एकशागिर्द तो कोठरी में घुसकर मारलाया और उस्तादके सम्मुख रखदिया और दूसरे शागिर्दने इधर उधर फिरकर कबूतर जीता फेर लाकर उस्ताद के आगे रखदिया उस्ताद ने पूछा कि क्यों नहीं मारा उसने उत्तरदिया कि आपने ऐसा कहाथा कि जहां कोई न देखे वहां मारियो तथापि कोई स्थान मुझको ऐसा नहीं मिला क्योंकि ईश्वर सब स्थानपर देखनेवालाहै उस्ताद यह सुनकर उससे बहुत प्रसन्न हुये ॥

अब देखिये कि जो रिशवत लेनेवाले की चोरी यहां के हाकिमों को नहीं मालूमहुई तो क्या हुआ परन्तु ईश्वर से तो नहीं छिपसक्ती और बाज़े निर्लज्ज ऐसे भी कहतेहैं कि ख़ैर वहां का कुछ संदेह नहीं कौन जाने क्या होगा दूसरा तो न जानेगा अबतो आनन्द से गुज़रती है अब कहिये कि यह बोलियां महानीचोंकी हैं या नहीं और उनसे पूछिये कि वह मरकर कहां जायँगे यहांहीं तो रहेंगे क्या अष्ट मोहरी में कीड़े नहीं रहते साहब

रालावाली १ गुरू २ चेला ३ ॥

उनको दूरजानेका दुःख कदाचित् न होगा घरके घरही में कुलबुलायाकरेंगे बाज़े साहब कहते हैं कि हम जो रिशवत लेतेहैं वह पुण्य कर देतेहैं देखिये इतने तो गलेकाटे और दो चारका पेटभरा भाई यह रिशवत लेनेवाले अपना ही गला नहीं काटते दो चार खून और भी करते हैं जिससे रिशवत लेते हैं उसको अध-मरा करडालते हैं और बादशाहको कलङ्क लगाते हैं और अन्य दाता हाकिमों को गालियां दिलवाते हैं और जो वास्तवमें रिशवत नहीं लेते हैं उनको बद-नाम करदेते हैं एकमछली सारे जलको भ्रष्टकरे॥

ऐसा बृत्तान्त सुनने में आया है कि एक मुख़बिर ने किसी धर्मज्ञ तहसीलदार के बिषय में साहबकल-क्टरसे रिशवत खानेकी इत्तिला की साहबकलक्टरने तहसीलदार को बुलवाकर कहा कि हमने सुनाहै कि तुम रिशवत लेतेहो तहसीलदारने जवाबदिया कि हां हुजूर सच है यह सुनकर साहब कलक्टर बहुत घब-राये और संदेहमें पड़गये उस समय तहसीलदारने विनय किया कि हुजूर कुछ संदेह न करिये अभिप्राय उसका यह है कि जो मनुष्य वास्तव में रिशवत लेतेहैं उनको बुलाकर पूछिये सबका यही जवाब होगा कि कभी न लिया न लेते हैं जो मैं भी यही जवाब देता तो मैंभी उसी समूहमें संयुक्त होता इस वास्ते मेरा क-हना उनसेविपरीत अवश्य हुआ साहब कलक्टर बहुत प्रसन्न हुये और रुख़सत किया परन्तु साहब जिनके मुख में रुधिर लगगया है वह हज़ार कहो कब सुनते

हैं (कहीं बूढ़े तोते भी क़ुरान पढ़ते हैं) जो नई पौद में इस समुद्रके पानी से सिंचाई होय तो निश्चयहै कि फल मीठा हो और मुझको तो यह सब लोग अत्यन्त बुराकहैंगे सो मैं आपही कहताहूं कि मैं दीवाना हूं संसार के आनन्दको दुःख समझा है ॥

वलीकी कहावत है ॥

रेखता—हमनसे मतमिलो लोगो हमन ख़फ़ती दिवाने हैं। खुशी की राह छोड़ी है दुखी में आ समाने हैं॥ हमन दिन रैन रोतेहैं सुगमसे जान खोते हैं । शुलीकी सेज सोते हैं बिरहके यह निशाने हैं॥ तजी ख़िदमत वज़ीरी की पाई लज्ज़त फ़क़ीरीकी । चढ़े किस्ती सबूरीकी फ़क़रके ये मकानेहैं ॥ मेरा हक़ यार ओ जानी पिया हरनामका पानी । कि अक्सर होयँगे फ़ानी वली रामेसमाने हैं ॥

शब्द—अरे रँग जोइ लागा सोइ लागा ॥

हंसा की गति हंसा जानै मर्म न जानै कागा १
घायल की गति वह क्या जानै जा तन घाव न लागा २
बिरहीकी गति वह क्या जानै खाय सोइ नहिं जागा ३
सूरश्याम ज्यहि रङ्ग न जागा सो नर निपट अभागा ४

शेर—सबसेसूरत उन्हों कि है बरहम[1] । शौक़ शीशे से जिनको है हरदम ॥ जो न होवै बुरी तो क्यों देखैं । काले वालों के रङ्ग क्यों पेखैं ॥नेकसुहबत[2] में चलके जो जावैं। आमका पेड़ पैरको गावैं ॥ दूसरोंके दुःखमें जो होवें खुश। हैं क़साई कहावैं मर्दुमकुश[3] ॥ रहम[4]

अस्तव्यस्त १ सत्संग २ मनुष्यमारनेवाला ३ दया ४ ॥

करना बड़ीही न्यामत[1] है। न करै जो उसीकीशामत[2] है॥

टीका—अच्छा साहब कहिये जो उन्होंकी सूरतमें दोष नहीं है तो क्यों बारबार दर्पणमें अपनी सूरत को देखते हैं पश्चात्तापहै कि बृथा समय खोते हैं क्या एक दो बार का देखना तमाम दिनमें काफ़ी नहीं होसक्ता और इसमें यह बड़ीभारी हानि है कि जिनको शृङ्गार करनेका शौक़ होजाताहै फिर उनसे और कोई अच्छा काम नहीं हो-सक्ता उसीमें अपना बड़प्पन समझकर प्रसन्न रहते हैं॥

सत्संग में जानेवाले के चरण को आम का बृक्ष कहनाचाहिये क्योंकि जब सज्जन और बृद्धोंके सत्संग में गया तो उसमें निस्संदेह मिष्टफल उत्पन्न होगा॥

जो दूसरा दुःखमेंहै और उसे अपनेको प्रसन्नता हुई तो निस्संदेह निर्दयता अर्थात् क़साईपन है चाहिये कि ऐसी युक्तिकरै कि उसके दुःखमें न्यूनता होय न कि उसके दुःखकी बृद्धिकरे यद्यपि क़साई पशुको मारताहै परन्तु शीघ्रही जीव निकाल डालताहै पशुको अधिक समय तक दुःखभोगना नहीं पड़ता परन्तु ऐसे मनुष्य जो दूसरेके दुःखको बढ़ाया चाहते हैं वह मनुष्यको अधिक मरा रखते हैं यह मारडालने सेभी अत्यन्त बुराहै॥

दया करनेसे यह प्रयोजन नहीं है कि अपराधीको दण्ड न दो जो चोरको दण्ड न दिया जायगा तो न्याय न होगा और जब न्याय न हुआ तो अनीति हुई इससे दया का प्रयोजन है कि दया न्यायपूर्वक हो जैसे ईश्वर को दयालु और न्यायकर्ता कहतेहैं मनुष्यको भी

पदार्थ १ अभाग्यता २॥

इन दोनों गुणोंसे संयुक्त होना चाहिये और यह बात उस समय प्राप्त होगी जब कि मनुष्यके चित्त में यह इच्छा होय कि संसार प्रसन्न रहै ऐसे आदमी से दया न्यायपूर्वक देखने में आवेगी जैसे समझवाला मनुष्य अपने पुत्र पर दया न्यायसहित करै है ॥

शेर—अगर्चे बहुत तल्ख़[1] यह पन्द[2] है। पर अंजाम[3] को फ़ायदेमन्द है ॥ इसे गोश[4] दिल से सुनो ऐ मेरी जां। इसीसे बशर[5] को है अमनो[6] अमां ॥ अगरचे दवा तल्ख़ देवे हकीम। तो बीमार पर है वह बारे[7] अज़ीम[8] ॥ शफ़ा[9] उस दवासे जो बीमार पाय। तो फिर वह हज़[10] न क्योंकर उठाय ॥ यह बृन्दावन ऐशाफ़िये[11] हर मरज़[12]। हो नुक़से में उसके असर अलगरज़ ॥

टीका—आशय इसका यह है कि साफ़ और कड़ा बचन यद्यपि बुरालगताहै परन्तु लाभकारक बहुतहै और लल्लोचप्पोकी बात प्रत्यक्षमें तो प्यारी लगतीहै परन्तु मूलमें तो अत्यन्तही बुरी होती है जैसे इन्द्रायण का फल देखनेमें तो बहुत शोभायमान और स्वाद में अत्यन्त कडुवा और साफ़कहना मिश्रीके समान है देखनेमें तो कड़ी और मुख में डालने से आपी आप घुलजाती है मुखभी मीठा है और अन्तःकरण को भी गुणदायक हो ॥

अब कुछ ग़ज़लें और रेख़ता और शब्द लिखेजाते

कडुई १ उपदेश २ अन्त ३ कान ४ मनुष्य ५ बचाव ६ अहसान ७ बड़ा ८ आराम ९ आनन्द १० अच्छाकरनेवाला ११ रोग १२ ॥

हैं आशा रख प्रार्थना करताहूं कि कृपाकरके मेरी विनय पर ध्यान कीजिये कि अक्षय धन प्राप्त हो ॥

ग़ज़ल—गुरतेग़ बहादुर ने बनाये हैं सभी काम। काटे हैं जगत फन्द लखायाहै गुरूनाम १ हैडाल भरे में वो गुल[1] याद सनम[2] से। झुकदेते हैं पत्थर कि एवज़[3] पिस्तो बादाम २ रहते हैं अलग हालत दरवेशी[4] में मसरूफ़[5]। दुनिया की ख़राबी से हुये फ़ारिग़[6] मा-दाम[7] ॥ ३ सोते हैं जहां ख़ाक अदम[8] साफ़ बिछाहै। रहते हैं शबो[9] रोज़[10] बड़े ऐशो[11] आराम ४ काबेमें फिरैं शैर करैं बृन्दाबन की। हस्ती[12] के सबक़ लेतेहैं अमृतसे भरा जाम[13] ॥ ५ ॥

रेख़ता—गुरुकी टहल करता नहीं मनमतसे तू डरता नहीं गुरुकी रज़ा जानी नहीं सेवक हुआ तो क्या हुआ १ रागी अलापे रागको भरता सुरन और ग्रामको। अन-हद की धुन जानी नहीं रागी हुआ तो क्या हुआ २ ध्यानी जो धरता ध्यान है तनको किया जो ख़ाक है। सोहं शबदकी गम नहीं ध्यानी हुआ तो क्या हुआ ३ ज्ञानी जो करता ज्ञान है वैराग्य शम दम ना हुआ। सुरती अहं ब्रह्मास्मि कहता फिरा तो क्या हुआ ४ साधू जो पढ़ता पोथियां बाना जो रखता पन्थका। तन मन न साधा आपना साधू हुआ तो क्या हुआ ५ गिरही जो रखताहै गिरह दो की खुला रखता नहीं। भूखा पि-यासा फिरगया गिरही हुआ तो क्या हुआ ६ बिरकत

फूल १ प्यारे २ बदले ३ फ़कीरी ४ लिप्त ५ छुटगये ६ सद ७ संसारका अभाव ८ रात ९ दिन १० आनन्द ११ सत्यता १२ प्याला १३ ॥

जो रमता देशमें इन्द्रीक सँग छोड़ा नहीं। मालिक लखा नहिं आपमें भरमत फिरा तो क्या हुआ ७ बिरही जो बन बन में फिरा और देश बृन्दाबन फिरा। देखा नहीं घट आपना बिरही हुआ तो क्या हुआ ८॥

रागकाफ़ी—तू चेला है तुझे यह आपा शूल। जाल कालमें फांस लाखमें यही नरक का मूल १ इसी जगत् को इसी कुगतको देखरहा तू भूल। बारबार तुझको समझाया मत तू यामें फूल २ अब निज गहो शरण सद्गुरुकी अब की रचो न धूल। सुरतशब्दमें राखके बृन्दाबनघटझूल ३॥

ग़ज़ल—गौर कर ऐसा रतन[1] अनमोल फेंका जायगा। क्या भला मुशके[2] खुतन इस तोल तोला जायगा १ अक्ल सारी गुम हुई ऐसी समझ क्यों कर हुई। देख क्या तन जब[3] को इस डौल नापा जायगा २ तानके चादर करोड़ों इस जहांसे चलदिये। यादरख यह लाख चौरासी हि भोगा जायगा ३ यह दमोंकी डांक क्या बेनाम सुमिरण जायगा। हाय चेहरा मुहर काली जमसे छापा जायगा ४ तुमको जो कुछन्याज़[4] है याढंगहै आरामका। वाहगुरू कहनेसे तू बिलकुल सफ़ा बचजायगा ५ तुझको नरतन मिसल बृन्दाबन मिला बड़ी भाग्य से। क्या अबस[5] दर्शन बिना इसतौर छोड़ा जायगा ६॥

रेख़ता—करूंतजवीज़क्याइसकी कि अपना हालभूला हूं। न क्षत्री शूद्र मैं हूंगा व ब्राह्मण वैश्य मैं ना हूं १ न

श्वास १ कस्तूरी २ श्वास ३ दीनता ४ व्यर्थ ५॥

लङ्का और भरतखण्डसे न काबुल श्यामसे मैं हूं। न कशमीरी न पंजाबी न ब्रह्मा चीन से मैं हूं २ न पूरब से न पश्चिम से न उत्तर से न दक्षिणसे। न देवत और लक्ष्मी से न बैकुण्ठी न स्वर्गीहूं ३ बनाघर हरजगह मेरा जहां आराम बहुतेरा। सिवा इक वाहगुरुबिन अब नहीं कुछ और जानूं हूं ४ न बृन्दाबन न काबे[1] से न हिन्दू और मुसल्मां हूं। न धरती आशमां[2] से हूं न दिनसे रातसे मैं हूं ५॥

शब्द—रागकाफ़ी—सुन सुन मन तू अनहद सन घट-भीतर में हो रही धुन॥

किंगरीबीन पखावज घण्टा हो अस्थिर तू तामें गुन १ ओं सारकेवारेपारे मुरली मधुरमधुर धुन सुन २ दृग दुर्बीन पार पदपरसत कर्म भर्म सब जर भयभुन ३ बृन्दा-बन पूरणगुरु दरशत मिटिगये आवन जावन पुन ४॥

ग़ज़ल-दर्दभी देखा बेदर्दी देखली उसयारकी। शकल[3] जो रब[4] ने दिखाई देखली हरबार की १ शिरके अन्दर है सदाये[5] यार की बानाज़ुकी। गोश[6] को जब बन्दकर आवाज़ सुन खुश प्यारकी २ उसके दर[7] पर झांझ नक्कारे नफ़ीरी बाजते। साजसारे बांसुरी और वीन सारँग सारकी ३ दिलके अन्दरनाम उसका रमरहा बाकर्रफ़र[8] वन्द लब[9] को जबकिया सुमिरण कि फेरा फार की ४ हठरहे दुनिया केलहवों[10] लाब से ऐवागादिल। मान है यह खुश्क[11] कूआं बावली

मुसल्मानोंकातीर्थ १ आकाश २ दशा ३ भगवान् ४ शब्द ५ कान ६ दरवाज़ा ७ बहुत ज़ोरसे ८ होट ९ खेलकूद १० सूखा ११॥

रह[१] खार[२] की ५ झूठा आलम[३] होगया सच्चा कहो क्यों कर ये क्या। चुटकी तूने डालदी जादू सा अंबार[४] की ६ नगर बृन्दाबन के अन्दर सांवरा प्यारापिया। टुक निगाहे[५] गौरसे[६] सूरत जो देख उसयारकी ७॥

तिल्लाना—सुरतिया थारे घरजाय लो॥

घर बिछुरत रही भूल तनमन संग चित्तबुद्धि और अहंकार मोह वश सुखी दुखी बहु होय लो १ कृकिट कृकिट कुटल न चेत नाम तालिड़लिड़ धालिड़लिड़ लिड़धासिमिट सिमिट पगनूर फिर्कुटी तक बाजातृ तृतीस तूगा ना गायलो २ आगे चल सुन जहां धुन रसाल सुन सुन मनमें हरष पात तारा गगन बिच दरशे चलत पवन सननना सननना नन। बृन्दाबन जहँ लेत धीर तहां सहज गइया पाय लो ३॥

राग सोरठा—जाना जी थारो भेस भासे झूरो झूरो॥

मानमनी की चादर ओढ़े तुमसे हुआ भय पूरो १ शील धर्म तुम सबही त्यागे कैसी मति हुई मूढ़ो २ परमारथ की बाटनहेरी लोगे शिरपर कूड़ो ३ चलचल हर बृन्दाबन ढूंढ़ो नरतन जात है धूरो ४॥

ग़ज़ल देश—कीजिये सब्र[७] नहीं बात है घबराने की। अब ज़रूरतही बड़ी क़ल्ब[८] को समझाने की १ सबको तलख़ी[९] को ऐजान कड़वी हि न जान जब कि उम्मेद[१०] तुझे शीरीं[११] ही फलखाने की २ है

रास्ता १ कांटा २ प्रपंच ३ ढेर ४ दृष्टि ५ विचार ६ संतोष ७ मन ८ कड़ुवाहट ९ आशा १० मीठे ११॥

हक़ीक़त[1] में यह दुखदरद भला तुमको अज़ीम[2] यह हिरासानी[3] की माजून[4] नहीं खानेकी ३ समझो बूझो गे ज़रा अस्ल हक़ीक़त इसकी । यह समझ होगी दवा मुल्क अमां[5] पाने की ४ बेरज़ा उसके कभी कुछ नहिं होता पेदिल । फिर लहीं जाय वहां पैरके फैलाने की ५ अपने अल्लाह[6] को तुम आदिल[7] मुंसिफ़ समझो । पसरज़ाउसकी सहीबहुनहीं मिटजानेकी ६ अपने मालिकको अगरहाज़िरनाज़िर[8] जानो । क्या ज़रूरत है रही बृन्दाबन जानेकी ७ ॥

शब्द-रागकाफ़ी । तूमदमातारेमाता प्यारेवाहगुरुनहिंगाता ॥

रैन दिवस इसतनके कारण नयेनयेरङ्ग बनाता । क्षण क्षण मौत पड़ी शिर खेलै ताको भय नहिं लाता १ नित दुख सहै शरम नहिं पावै मारैं यमकी खाता । मतिभङ्ग हुई जातेरे तेरी ऐसी कौन पिलाता २ धनसंपति बादरकी छाहीं सो तू हिरस बढ़ाता । फल इसका कुछ और नहीं है नाहक जिगर जलाता ३ मनोराजका खेल बनाकर देख देख मुसकाता । एकक्षण बीते भयो कांगला यों आराम न पाता ४ बालूभीति रँगी बहुरंग से बृन्दाबनकहि गाता । गिरे अचानक बादहिं जाने अब क्याकरै बिधाता ५ ॥

रागकाफी-चिंता वा घट बसियोरी जो घट साधु द्रोही होवे ॥

देखि साधुको हाथ न जोड़े देनेको कुछ नाहीं री । ऐसे नर कूकर सम जानौ हटियो मती हटाई १ कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी खावै नहीं खिलावै री । दिनमें रात

वास्तव १ बड़ा २ घबराहट ३ औषध ४ रक्षा ५ भगवान् ६ नीतिवाला ७ दर्शित ८ ॥

करी है घुग्घू हिलियो मती हिलाई २ भूखेकी कुछ त्रास न लावे देखो बड़े कसाई री । पानीमें ज्यों आगलगीहै बुझियो मती बुझाई री ३ भजन सुनै तो प्रीति न लावै वाहगुरू नाहिं गावे री । बृन्दाबन ऐसे घट भीतर रहियो छिपी छिपाई री ४ ॥

रागबिहाग—भजनबिनमाती होइयां सखियां ॥

रूपबनाया बनदा नाहीं चाम बिना क्या हडियां १ श्वासा धुकधुक निशिदिन खोया वाहगुरू नाहिं जपियां २ अब पछतावे जब क्यों सोया लुटगई तेरी हटियां ३ सुरत बिसारी फलदा नाहीं मेवा झड़ झड़ परियां ४ स्वप्न नगर बृन्दाबन पाया क्षण में सर्वस छुटियां ५

तिल्लाना—सत्सङ्ग मनरङ्ग फलपाई ॥

मञ्जु सुरतको पावै अनहद सुनत शब्द झनझन झनन १ पल पल पर पिया गुण सुन पागी छाकरही पदमाहीं । मुहर मुहचङ्ग शब्द सुनि हर्षित सारीमसारीम सन सन सनन २ उठत शोर घनघोर मधुरिया जीवपुरुष सब वाही । मैल कर्म बृन्दाबनछूटी कटत जालहमहमहनन ३ ॥

शब्दरागरामकली ॥

निशिदिनबाजेबजैंरसाल जपतपपूजारहानकाल ॥

गङ्गा यमुना संगम नित्य अर्चा पूजा स्वार्थ हित्य । बढ़ावैं बेड़ी डालैं इनको सुख नहिं तीनों काल १ प्रेम अखाड़ेमें नहिं खेला नामभक्तजी बड़ासुहेला । छापातिलक पिताम्बर धोती शिरपर राखें नाहक बाल २ घर छोड़ैं और वनमें जावैं इच्छा अग्निपड़ी भड़कावे ।

स्वांग दिखाकर बनफल खावें क्यों त्यागी तुम रोटी दाल ३ काम क्रोध मोह नहिं त्यागी मूड़ मुड़ाय भये बैरागी। चादर रँगके भेष बनाया पहिरो धोई तन की खाल ४ भये गृहस्थी पाप कमावें भूखे कभी न टूकड़ पावें। भजन बन्दगी नेक न जानें कौड़ी कौड़ी जोड़ें माल ५ निशि दिन चिन्ता मनमें आनै पैसे को भगवान बखानै। सुतदारासे नेह बढ़ावें इनका नाम धरो बिकराल ६ तनको क्षणक्षण निरख निहारैं मरने की नहिं बात बिचारैं। तेल फुलेल सुगन्ध लगावें इनको कहिये शशा सियाल ७ दुख सुख दोनों अन्तर व्यापैं ब्रह्मज्ञानी नाम अलापैं। कर्ताको भूठाकर गावैं जगत बतावैं ख्वाबख़याल ८ अन्तरवृत्ती क्षण नहिं जोवें ब्रह्माकार कहो कस होवें। ऐसे ज्ञानी कलियुगमाहीं इनकी कुछ मत पूछो फाल ९ देख २ कलियुग की रीती गुरु से पलपल बिनती कीती। वाहगुरू धनिधनि हौ नानक सब दुख सहज दियाहै टाल १० इस तनको बृन्दावन जानो घट अन्तरदर्शन पहिंचानो। सुख आराम जो तुमको चहिये अपनी सुरत गगनपर डाल ११॥

शब्द-रामकली—जकड़ सुरत गुइयां शब्दसुन। धधकत घटमें धुन रसालरहियां परखैयां करतहौ १ जहां भाँभ मँजीरा बाजत है वहीसुरत अड़ियां। नादका स्वाद लहो तुम ठहर वहियां तुरतइयां तरतहौ २ झलक ज्योति झिलमिल निहार दृग सूर्य किरण गहियां। मधुर २ मुरली ध्वनि होवे हरषइयां फिरखैयां करत हौ ३ बृन्दावन घटमें निहार शब्दरस लहियां सुरत

करी है घुनघू हिलियो मती हिलाई री २ भूखेकी कुछ त्रास न लावे देखो बड़े कसाई री। पानीमें ज्यों आगलगी है बुझियो मती बुझाई री ३ भजन सुनै तो प्रीति न लावे वाहगुरू नाहिं गावे री। बृन्दावन ऐसे घट भीतर रहियो छिपी छिपाई री ४ ॥

रागबिहाग-भजनबिनमाती होइयां सखियां ॥

[illegible] बनदा नाहीं चाम बिना क्या हडियां १ [illegible] निशिदिन खोया वाहगुरू नाहिं जपियां २ [illegible] क्यों सोया लुटगई तेरी हटियां ३ [illegible] नाहीं मेना झड़ झड़ पारियां ४ [illegible] में [illegible] कुटियां ५

[illegible] कलवाई ॥

[illegible] अनहद [illegible] झनझन झनन १ [illegible] २ [illegible] बृन्दावन [illegible] जालहमहमहनन ३ ॥

[illegible] ॥

[illegible] ॥

[illegible] अर्चा पूजा स्वार्थ हित्य। [illegible] इनको [illegible] नाहिं [illegible] काल १ प्रेम [illegible] नामभक्त जो [illegible]। [illegible] २ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

करी है घुग्घू हिलियो मती हिलाई २ भूल्नेकी कुछ त्रास न लावे दुखो बड़े कमाई री। पानीमें ज्यों आगलगीहै बुझियो मती बुझाई री ३ भजन सुनै तो प्रीति न लावे वाहगुरू नहिं गावे री। वृन्दावन ऐसे घट भीतर रहियो छिपी छिपाई री ४ ॥

रागविहाग—भजनबिनमार्ती होइयां सखियां ॥

रूपबनाया चनदा नाहीं चाम बिना क्या हडियां १ श्वासा धुकधुक निशिदिन खोया वाहगुरू नाहिं जपियां२ अब पछतावे जब क्यों सोया लुटगई तेरी हटियां ३ सुरत बिसारी फलदा नाहीं मेवा झड़ झड़ परियां ४ स्वप्न नगर वृन्दावन पाया क्षण में सर्वस लुटियां ५

तिल्लाना—सत्सङ्ग मनरङ्ग फलपाई ॥

मञ्जु सुरतको पावे अनहद सुनत शब्द झनझन झनन १ पल पल पर पिया गुण सुन पागी छाकरही पदमाहीं। मुहर मुहचङ्ग शब्द सुनि हर्षित सारीमसारीम सन सन सनन २ उठत शोर घनघोर मधुरिया जीवपुरुष सब वाही। मैल कर्म वृन्दावनछूटी कटत जालहमहमहनन ३ ॥

शब्दरागरामकली ॥

निशिदिनबाजेबजैंरसाल जपतपपूजारहानकाल ॥

गङ्गा यमुना संगम नित्य अर्चा पूजा स्वार्थ हित्य। बढ़ावैं बेड़ी डालैं इनको सुख नहिं तीनों काल १ प्रेम अखाड़ेमें नहिं खेला नामभक्तजी बड़ासुहेला। छापातिलक पिताम्बर धोती शिरपर राखैं नाहक बाल २ घर छोड़ैं और बनमें जावैं इच्छा अग्निपड़ी भड़कावे।

स्वांग दिखाकर बनफल खावें क्यों त्यागी तुम रोटी दाल ३ काम क्रोध मोह नहिं त्यागी मूड़ मुड़ाय भये वैरागी। चादर रँगके भेष बनाया पहिरो धोई तन की खाल ४ भये गृहस्थी पाप कमावें भूखे कभी न टूकड़ पावें। भजन बन्दगी नेक न जानैं कौड़ी कौड़ी जोड़ैं माल ५ निशि दिन चिन्ता मनमें आनै पैसे को भगवान बखानै। सुतदारासे नेह बढ़ावें इनका नास धरो बिकराल ६ तनको क्षणक्षण निरख निहारैं मरने की नहिं बात बिचारैं। तेल फुलेल सुगन्ध लगावें इनको कहिये शशा सियाल ७ दुख सुख दोनों अन्तर व्यापैं ब्रह्मज्ञानी नाम अलापैं। कर्ताको झूठाकर गावैं जगत बतावैं ख्वाबख़याल ८ अन्तरवृत्ती क्षण नहिं जोवें ब्रह्माकार कहो कस होवें। ऐसे ज्ञानी कलियुगमाहीं इनकी कुछ मत पूछौ फाल ९ देख २ कलियुग की रीती गुरु से पलपल बिनती कीती। वाहगुरू धनिधनि हो नानक सब दुख सहज दियाहै टाल १० इस तनको वृन्दावन जानो घट अन्तरदर्शन पहिंचानो। सुख आराम जो तुमको चहिये अपनी सुरत गगनपर डाल ११ ॥

राग-नामकली—जपकर सुरत गुइयां शब्दसुन। चन्द्रकान्त घटमें धुन ग्वालरहियां परखैयां करतहो १ जहां झांझ मँजीरा बाजत हैं वहीसुरत अड़ियां। नादका स्वाद लहो तुम ठहरे वहियां तुरतइयां करतहो २ अनन्त ज्योति झिलमिल निहार इस सूर्य छिनक नहियां। मधुर २ मुरली ध्वनि होवे हरखइयां सिखैयां करत हो ३ वृन्दावन घटमें निहार शब्दरूप लखियां सुन

दी। सुनमें चढ़ाओ असराइयां ऐसैयां करतहो ४॥

प्रबन्ध–निरखहैं निज घामी निरतनिर्णय ॥

तें अगाध ध्वनि सिन्धु मथन सुन लखघर जाकर अनूप किरणम् । धुरत किये कर्मदुरन जायक निज स्वरूप मन गुरु पुरज्ञानी जानी जब लखि ध्यानी रस अलखानी नव जानी सत शरणम् तोड़फन्दम् १ चित-ससातपदपन्थ जो बन घन लहैं ध्वनिनागर जरानमर-णम् । लखिमुनिये कर्मसहायकपग त्रिलोकि मन्दिर धुरधामी स्वामी निजमन्त्र जानी हो अकामीवे अरामी कीन्ह रूपं वृन्दावन तुरत तरणम् २ ॥

होली–ऐसी होली खेल जामें सतसङ्गरङ्ग रंगोरी ॥

झनझनकार सुनो मेरी प्यारी सूरत शंख गहोरी । ध्यान गुलाल मलो या तनमें तो शब्द केरङ्ग छकोरी १ होत अवाज़ गगनतेरे में नाद को साज बनोरी । चित से चिन्ता नाघसखीरी । तो यकरस ठाटठटोरी २ नेती धोती जप तप पूजा कितनो भांति करोरी । मनममता छूटनको नाहीं तो अनहद शब्द सुनोरी ३ षटशास्त्र विद्या बहुसीखी तो पण्डित नाम धरोरी । मानमनी की चादर ओढ़ी तो नाद की आदढकोरी ४ वाचक ज्ञानको माल भयो जब वृन्दावन योंहीं जन्म वहोरी । सारशब्दगहि जकड़ो यतसे तो सत्पद नाम मिलोरी ५॥

होली–फ़रगननमठ धावरी सूरत बनजाई ॥

कञ्जकमल को धारके अनहद बजाई । झिंगा शब्द झनकार की परखो ध्वनिमाहीं १ शंख मृदङ्ग ध्वनि घोर सुन आगे चलजाई । पूरबवासी चाँदके पश्चिम

नहिं भाई २ ज्योतिस्वरूपी देख के मुरली सुन आई। इस मन्दिर के पारसे परमातम पाई ३ सोहंशब्द पहिचान के तहां सुरत लगाई। बृन्दाबन घट जो लखैं हंसा होजाई ४॥

यकताला—मेरे अनहदकी लाग दूसरा न कोई॥

मनका संग भूलधार सुरतसार खोई १ अवराग तारै फैल रहीं मुक्ति कौनभांति होई २ ज्योतिभानु छबि निहार ओंपारहोई ३ बृन्दाबन सोहं माहिं सुरत नित समोई ४॥

तथा—सत् चित् आनन्द नित पारब्रह्म होई॥

अहंकार बपुको धार जीव मान खोई १ अहंममके त्याग जीव भास नाश होई २ बिधि निषेध एकसार समझै सम सोई ३ बृन्दाबन जगत भास कलपत पुनि होई ४॥

टप्पा—मेडेहाल रहं दिया वे भर्म जाल॥

सत्संग की गल जब दरशावैं दूरभयो भ्रमकाल १ यह जग झूठ सत्यकर दीखै थे अनहद हुआ तम्बूपाल २ यह दुख सानूं सत्य दिखावै वे ज्योंलागी स्वप्न भाल ३ वाहगुरू से नेह लगावै वेले आराम कमाल ४ बृन्दाबन मनोराज दिखावैं वे झूठा इन्दरजाल ५॥

कमोद—लहोरे धुरपरन यतन अरे नित मीता॥

काम क्रोध मद लोभ को मारो जारो अहंमोह की छाना। ध्वनिरसाल परखी झनकारा अमर भये रस पीता १ श्याम श्वेत दृग कमल मझारा रमना राम स्रवनतेन्यारा। बृन्दाबन दर्श परश [illegible] हरष हरषीता २॥

ठुमरी—पल क्षणमें तोरी चाकरियां वाहगुरु नित जपत रहूं॥
मन से कहो लगो साधन सों शम दम शरधा जाकड़ियां । भजन बन्दगी सार यही है उई लहर बहर की बादरियां १ तनसे करो टहल साधनकी दया धर्म नहिं आकड़ियां । क्षमा गरीबी हार सही है लई सबरकी चादरियां २ धनसे भरो पेटभूषणको भजनकरो निशि वासरियां । काम क्रोध मद छोड़दियो है मिलै गुरु तोहि हाजरियां ३ मीठावचन कहो या मुखसे सुख होइ सबकी खातिरियां । वृन्दाबन यों मुक्तिमिली है खुलगई दिलकी आँखनियां ४ ॥

तिल्लाना खम्माच—जी यह गुरुसुमिरन वेलाहै ॥
कुछ कहो तो उसके ढङ्गढाल क्या रङ्ग रूप कुछ और पता । देखा जो किस धारणसे हां पाना बड़ा दुहेलाहै १ क्या जल थल बीज वृक्षमें या चांद सुरज कोइ तारेमें । या सुन्न पताल पवनमें या पूरण देखा सारेमें॥ या नैननासिकानाभी में या हृदयगगनमें पाया है । कर्मउपासनयोग ध्यान से किसमारग कहोसुहेला है २ वह एक अनेकछिपा है अयांकहिं रामरहीम वह कहलाता है । कहिं सोताहै कहिं बैठा है कहिं खड़ा हाथ से देता है ॥ कोइ सतचितआनँद मानै है कोइ श्वेत बहुरङ्गीठानैहै । कोइ रङ्ग न रूप बतावताहै जब आपहि आप अकेला है ३ पेखा जो सबमारगसे फेर फार खा आते हैं । ज्यों पोस्ती माजूमाते हैं आखिर सारूप होजाते हैं ॥ यह कर्मउपासन योग ध्यानन मनको निश्चल कर लावेंगे । ज्यों दर्पण सम्मुख रक्खा है जो

आपहि दर्शन मिलतहि ४ ज्यों बालकको समझातेहैं पढ़ अक्षर पण्डित कहलाते हैं । जल थल हृदय बीच दिखाया मन बुद्धि एकाग्र होजातेहैं ॥ अबकलियुगकर्म योगनहिंबनता सर्व उपायन में मुख्य सुमिरन सुनता । नार्ग नाम अमृत पिलाया राम नाम का हेला है ५ एक सुमिरन होय जिह्वाते दूजा ध्यान से होताहै । तीजे सुरत नाद में लागी यह शब्दब्रह्म कहलाताहै ॥ समीप दृष्टा रूप पावहि ज्यों आनन्द होताहै । वृन्दावन [illegible] है ६ ॥

[illegible]

[illegible]

डगरियारे ६ वृन्दावन मनको समझ याकर गीतलसेरी जिगरियारे ७ ॥

एमन—इस चला गिराकर गागरी ॥

भाई बन्धु कुटुम सब रोवैं चल्या भीत सब त्यागरी १ हाहाकार जबहि मन उपजा देहधरो जब आगरी २ जग चलना आंखों से देखे आगन चेत अभागरी ३ धन परिवार कुटुम अरु देही यह नहिं जावे साथरी ४ यादकरो वृन्दावन जाना गुरुचरणनसों लागरी ५ ॥

धुरपद—तेरेमाहिं शब्दसार जामेंपढलेदीदार ॥

ताहि माहिं सुरत गाढ़ जमें जापो नामको १ आपा छोड़ संकोतोड़ सुरतमोड़गुरुसे जोड़ यहीहै सुपन्थचलो जासे होवैकामको २ गङ्गाहनगरमाहिंन्हायव्रतकोसँवारैं तेरीहैनाम सों निस्तारदेखनिरखरामको ३ जालतोड़ भस्मछोड़करमखोड़मोड़फोड़ वृन्दावनकराहिलोरपायो निजधामको ४ ॥

शब्द—तालकहरवा—इहां तिल वहां तिल दोनों एक होयरे ॥

श्यामा तिलकी पावेताली जो तू सुरत लगायरे । उलटे नयनन निरखत रहियो सो तिल तुझे दिखायरे १ नाल बङ्ककी खिड़की देखै झीनारस्ता अन्दरपेखै । वहां तू पल २ सुरतजमैयोजबदेखेगाज्योतिरे २ ऐसीविधि से सुरतचढ़ावै जो चाहै सो पायरे । जो इच्छा सिद्धीकी होवै वह तुझको मिलजायरे ३ जो तू चाहे मुक्ताहोवन आगेसुरतबढ़ावरे । वृन्दावनका पैंड़ा न्यारा सतसत कहिदी गायरे ४ ॥

अड़िल—तुम्है दीनदयालु लखावै अगम को ॥

जाको इन्द्री मन नहिं पाय कहावै अगम सो । गुरु ह काट जान कालके फन्दको ॥ अरे हरि वृन्दावन अगामी याँनि कालको फन्द जो १ जो कोई पूछे फिर गमकर्ता कौन है । सनन्दनादिकुमन जो चिन्मयरूप है ॥ यहाँ ब्रह्मानन्द बखानै नाम को भेद है । अरे हरि वृन्दावन जो अनन्यधाम बुद्धिके माँह है २ जब वह चैतन्य है सो आत्मा निजरूप का । पहिचान जब होत नयो निहचै जो ॥ [illegible] । यह होय जो चित्स्वरूप [illegible] । अरे हरि वृन्दा- [illegible]

[illegible]

डगरियारे ६ बृन्दाबन मनको समझ याकर शीतलमेरी जिगरियारे ७ ॥

एमन–दम चला गिराकर गागरी ॥

भाई बन्धु कुटुम सब रोवें चलया मीत सब त्यागरी १
हाहाकार सबहि मन उपजा देहधरो जब आगरी २
जग चलता आंखों से देखे आपन चेत अभागरी ३
धन परिवार कुटुम अरु देही यह नहिं जावे साथरी ४
यादकरो बृन्दाबन जाना गुरुचरणनसों लागरी ५ ॥

धुरपद–तेरेमाहिं शब्दसार जामेंपठलेदीदार ॥

ताहि माहिं सुरत गाढ़ जमें जापो नामको १ आपा छोड़ मैंकोतोड़ सुरतमोड़गुरुसे जोड़ यहीहै सुपन्थचलो जासे होवैकामको २ गङ्गाहैनगरमाहिंन्हायव्रतकोसँवारे तेरीहैनाम सों निस्तारदेखनिरखरामको ३ जालतोड़ भस्मछोड़करमखोड़मोड़फोड़ बृन्दाबनकरहिलोरपायो निजधामको ४ ॥

शब्द–तालकहरवा–इहां तिल वहां तिल दोनों एक होयरे ॥

श्यामा तिलकी पावेताली जो तू सुरत लगायरे । उलटे नयनन निरखत रहियो सो तिल तुझे दिखायरे १ नाल वङ्ककी खिड़की देखै झीनारस्ता अन्दरपेखै । वहां तू पल २ सुरतजमैयोजबदेखेगाज्योतिरे २ ऐसीबिधि से सुरतचढ़ावै जो चाहै सो पायरे । जो इच्छा सिद्धीकी होवै वह तुझको मिलजायरे ३ जो तू चाहे मुक्ताहोवन आगेसुरतबढ़ावरे । बृन्दावनका पैंड़ा न्यारा सतसत कहिदी गायरे ४ ॥

अड़िल—गुरुहै दीनदयालु लखावे अगम को ॥

जाको इन्द्री मन नहिं पाय कहावै अगम सो । गुरु दे काट जाल कालके फन्दको ॥ अरे हांरे बृन्दाबन चौरासी योनि कालको फन्द जो १ जो कोई पूछै फिर गमकर्ता कौन है । सन्तबतावेसुरत जो चैतन्यरूप है ॥ यही बेदान्त बखानै नाम को भेदहै । अरे हांरे बृन्दाबन जो चैतन्यभास बुद्धिके मांह है २ जब वह चैतन्य अंश लखा निजरूप को । बुद्धीका जड़ अंश गयोवहडूबजो ॥ अब शङ्का यह होय जो चैतन्यभूलता । अरे हांरे बृन्दाबन क्या ब्रह्मलगाई शूलता ३ बुद्धीके संयोग भई यह भूल जो । जब आपनपौ लखा रहा नहिं शूलसो ॥ बुद्धी में प्रकाशहै चैतन्य अंशका । अरे हांरे बृन्दाबन है मूल धर्म जो बुद्धिका ४ मूल बुद्धिका धर्म कहा किसराह से । जड़में धर्म अधर्म होत किसभांतिसे ॥ पोथी जुआहोत दीप प्रकाशते । अरे हांरे बृन्दाबन दीपरहा निर्लेप शुभाशुभ कर्मते ५ इम चैतन्य प्रकाश जो बुद्धीभास है । है कर्ता पर लिपै न कर्तबफांसहै ॥ आगे पूरणभेद नहीं परमाद है । अरे हांरे बृन्दावन यह बन्धन और मोक्ष रजू में सर्प है ६ ॥

शब्द—मनसे देखो निरखनिहार ॥

भर्मभुलाय जालमें फँसियो बूझकरो जवहै निरवार १
विना बीज वृक्षा कस उपजै बिनवृक्षा बीज न देखा। कर्म विना देह नहिं सिरजै बिनदेही कर्म कस लेखा २
ज्ञान नहीं ज्ञाता बिन कहिये विन ज्ञाता ज्ञान न होई। ज्ञाता कहां ज्ञान बिन हुये अब मन मत भ्रम होई ३

ध्यान शून्य ध्याता बिन होगा बिन ध्याता ध्यान कस ठानों। ध्याता नहीं ध्यान बिन हुये अब गुरुमत कस जानो ४ घन नहिं बना बिन निहायके बिन निहाय घन किम बनियां। जब नहीं निहाय कहां घन दीखै सारभेद नहिं चीन्हयां ५ ईश्वर जगत्की आदि बखाना जगत् त्याग मुक्त तुमजाना। जबलग आदि त्याग नहिं होई त्याग जगत् कसमाना ६ धन्यगुरू अस भेदबतायास-बकोकहि अनादि चिन्हाया। सच्चा नहिं जिन ब्रह्म अ-सत्य ठहराया बृन्दावन गुरुपद दरशाया ७॥

होली भैरवी—सम्पतरत्न सखी यह चलीरी॥

श्वास गये नलमठ भये रीते ढहेगढ़ यकक्षण न लगीरी १ मातपिताबन्धु सब रोवत अब यह सुन्दर देहजलीरी २ मरगयेलोगसबै अस गावत कहो मर-रहागलफांस डलीरी ३ मरकरजायसोईबड़भागी जो मररहा ओछे कर्मबलीरी ४ जीते सुरत शब्दमें रखते वह बृन्दावनगये गगन गलीरी ५॥

शब्द—जो नहिं रामनाम भयो चेरा॥

सो तुम जानो निपट अभागी जाय पड़े यम घेरा १ करि अस्नान नामके सागर पायो सीताराम न देरा २ धनि लक्ष्मण धनि भरत शत्रुहन धन्य सिया जिन रामवरहेरा ३ धन्य अयोध्या है बृन्दावन जिनमें च-रण रामने फेरा ४॥

शब्द—गुरु कही भली यक बातरी॥

विपत पड़ेपै जो तू रोवत शोचत नहिं वाकी आदि री १ बहुतन की यह कहनहुई है प्रालब्धकी ठाटरी २

जोतू प्रालब्ध नहिं मानै तो उपजाया दुःख आपरी ३ जो मालिककी मरजी गावै मान इसै तो न्यायरी ४ जो मालिक मुंसिफ़ नहिं माना तासे कहा बसायरी ५ इनमें कोइ कारण तू ठान रोनेको नहिं साखरी ६ कोई गली बृन्दाबन जावो करो सबर मत हायरी ७ ॥

रागजयतश्री–काहे आपनपौ बिसरायो ॥

जोजोभर्मकियो बालकसम तिनसे आप डरायो १ धीर न धरै भर्मसो फँसियो बहुता रोगलगायो २ अन-हुआभय हृदय बिचधारण दूरकरनकोचाहो ३ यतन सहज शोचै मनअन्दर जो श्वानछाहँ भौंकायो ४ लख बृन्दाबन ज्ञान अञ्जन बिन नाहक़ धूममचायो ५ ॥

रागगौरी–प्यारे विषयन मत लपटानो ॥

लोभ मोह बिसरो घरधनको मानो विषढुलकानो १ क्षेम कुशल आपनि तुम चाहो भजनकरो भगवानो २ भूख प्यासको सहै तू मीता जब तू सत्यपिछानो ३ निशिदिन आठपहर तुम जागो रहो शब्दलौलानो ४ बृन्दाबन यह भेल दुर्लभहै कोई शूराजानो ५ ॥

रागबसन्त–लख प्रथम वचनको कर बिचार ॥

जब पावे सत्य सत्यसार १ कई भांति देखो रँग रँग कोई ज्ञान उपासन कर्म धर्म सबजीवनको भिन भिन गुसार बाणीसे काज सबको तू निहार २ एक पिता दो पुत्रको बुझात जस उमर बिद्या बुद्धि तस सुझात एक को कहत तू जा बज़ार दूजेसे तू बाहर पग न धार ३ पहले की सीख दूजे दीन्हीं काट पर देखो होत दोनों की लाभ अधिकारी प्रतिबचनसार अबमन झगड़ो पिता

कीसाख ४ रोचक भयानक तीसर यथारथ माताकी कहनमें लीनोंआत इनको भेद जोले सँहार बृन्दावन वह होवे जलदपार ५॥

रेखता—चढूंकिसभांति गगनापर गलेज़ंजीर ज़ंडाली। है अगरकोई छुड़ादेवै सवाब उसको बड़ाहोगा १ अरे प्यारे तू कहु मनसे तुझे मैं सैर दिखलाऊं। ज़रा ऊपर को तू देखै तो महलों बास सुख होगा २ नवेंतक साथ पहुंचेगा वहीं उसका मरन होगा। तू दशवें द्वारमें जाके अवर से पायगा चोगा ३ हज़ारों जाप पूजाहो यहपद मिलना कठिनहोगा। वही दशवें में जबपहुँचे बड़ा आराम तबहोगा ४ बुलानेको तेरेरागी जहां इकदेश बृन्दावन। खड़े होंगे अजब धुनसे उन्हींका संग तू लेगा ५॥

टप्पा—नामरस पीजेरी अब मत भूलो राम॥

भूलैभूल कुजातभयोहै तेरी मति भई श्याम। श्वासा श्वास तरंग उठावै यह बिधि आठो याम॥ मनकीगति इस रंग पिछानो जैसे गिरगिट चाम। त्रिकुटीमध्ये बास लियोहै जब पाया आराम॥ घटअन्दर सागर लहरावै जहँ बृन्दाबन धाम॥

शब्द—ताल कहरवा—दहांकर वाहांकर दोनों एक होयँरे॥

झुक झुक गुरुके सम्मुखचालो शिररखियो झुकाय रे। चरणों में जब शिरतूडालै मतलीजो उठायरे १ जब गुरुकी आज्ञा तू पावै बैठा तू होजायरे। बैठा बैठा तकता रहियो गुरुसे नेह लगायरे २ जब गुरु तुझसे क्षेम कुशल पूछै कहु गुरुकृपा सहायरे। जो गुरु तुझपर दृष्टी

डारै अब कहु जो तुझ भायरे ३ आज्ञालैकै जब तू लौटै चरणों शीश नवायरे। बृन्दाबन पीछामतदीजो सीधा ही हटआवरे ४ ॥

शब्द–श्यामसुन्दर छबि मोहिं सुहाई ॥

मुरली ललित मनोहर सुन्दर धारे अधर बजाई १ मोरमुकुट पीताम्बर सोहै लटक लटक दृगसैन बुझाई २ देखरूप वृषभानदुलारी छके नयन तन सुधि बिसराई ३ करत किलोल काम बनमाहीं बृन्दाबन घर-बजत बधाई ४ ॥

लटका–देखो एकनारी निहारी न जाय ॥

देखत देखत सूरत बदलत तासों सूरजहूं लजाय १ आवत जावत दृष्टि न आवत ऋषि मुनि तक भरमाय २ चलत फिरत औसारे भरमत विषयन को धरखाय ३ छल बल करि वह रूप बनावत बृन्दाबन हरजन बचजाय ४ ॥

लटका–ज़ालम गज़ब ज़माना बड़ोंकी छोट न माना १ अपनी अक्ल बड़ीकर मानैं दोज़ख़ गये दिवाना २ लाज शरमको दूरकियोहै अपने मनकीठाना ३ गाफ़िल पड़े रहैं ग़फ़लत में सुधि बुधि सब बिसराना ४ नेकीसे पर-हेज़ करैंहैं राहबुरी भलजाना ५ बृन्दाबन विषयन सुख चाहैं इनकी मत बौराना ६ ॥

रागकल्याण–नामरस पीजैजी पीजैजी पीजै ॥

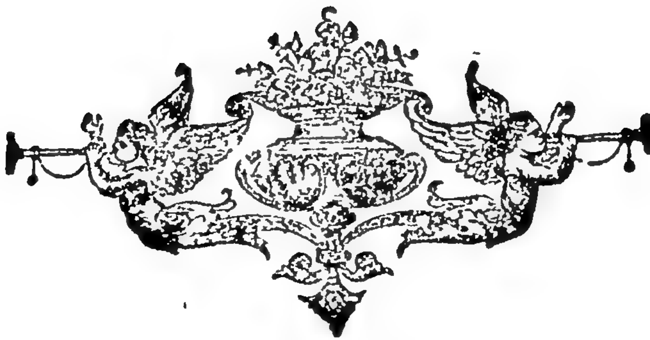
मानसरोवर घाट बनो है झट झट गोता लीजै १ करि अस्नान अहं खो बैठे शीतल अंग करीजै २

शशिउजियार चहूंदिशिदीखै आनँद पलपलकीजै ३
शब्दकिओर सुरतको राखौ सुनने में शब्दसुनीजै ४
वाहगुरू दरशो बृन्दावन अब अन्तरवृति कीजै ५

फ़सल पहिली तमाम जपलो हरनाम ।
पूराहोवै काम कौड़ी लागै न दाम ॥

प्रथमभागः समाप्तः ॥

इति ॥



१ ॐ सद्गुरु प्रसादि ॥

वाह गुरू सद्गुरू राम अनादि ॥

ग्रंथविहारबृन्दावनशान्तवेदका ॥

दूसरा भाग ॥

इसभाग में षद्शास्त्र और सन्त और वैष्णवमत और ईसाई और इस्लाम और सूफ़ी और नास्तिक और जैन का सिद्धान्त और संसारकी मुक्ति और उत्पत्तिके विषय हैं ॥

पूर्व मीमांसाके अनुसार ॥

१ प्रश्न—मुक्त होना क्या है और किस यत्न से मुक्ति प्राप्त होती है ॥

उत्तर—स्वर्गकी प्राप्तिको मुक्ति कहते हैं वेदमें जो वचन बिधिका लिखाहै उसके माननेसे स्वर्गहोताहै आज्ञा यह है कि मन्त्र सहित यज्ञ और पूजन आदि करना और जो वेद ने निषेध किया है उससे अलग रहना यथा ब्राह्मणको मारना और कलंजन खाना आदि और जिस बात को वेदने नहीं आज्ञादीहै और निषेध कियाहै तो उसके करनेसे न अदृष्ट अर्थात् पुण्य है और न पापहै ॥

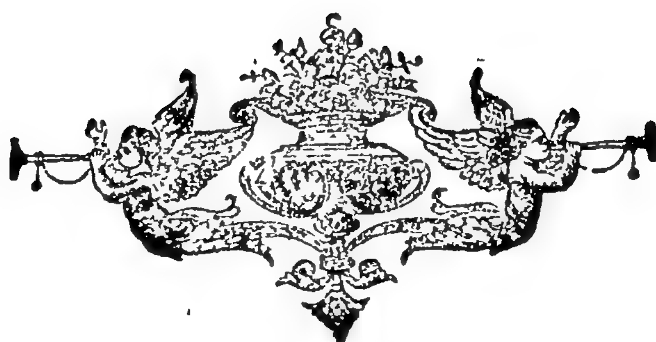
पूर्व मीमांसा का सिद्धान्त है कि मुक्तहोने को ज्ञान की आवश्यकता नहीं है क्योंकि निषेध और काम्य कर्मका त्यागकिया ॥ संचित कर्मोंका नाश नित्य नैमित्तिक कर्मों से हुआ ॥ बस जन्म न धरनापड़ा जन्मका न धरनाही मोक्ष है मोई स्वर्गहै इसीको स्वरूपावस्थिती कहतेहैं और लोकरूप स्वर्ग पुराणका मतहै ॥

शशिउजियार चहूंदिशिदीखै आनँद पलपलकीजै ३
शब्दकिओर सुरतको राखौ सुनने में शब्दसुनीजै ४
वाहगुरू दरशो बृन्दावन अब अन्तरवृति कीजै ५

फ़सल पहिली तमाम जपलो हरनाम ।
पूराहोवै काम कौड़ी लागै न दाम ॥

प्रथमभागः समाप्तः ॥

इति ॥



॥ ॐ सद्गुरु प्रसादि ॥

वाह गुरू सद्गुरू राम अनादि ॥

ग्रंथविहारबृन्दावनशान्तबेदका ॥

दूसरा भाग ॥

इसभाग में षट्शास्त्र और सन्त और वैष्णवमत और ईसाई और इस्लाम और सूफ़ी और नास्तिक और जैन का सिद्धान्त और संसारकी मुक्ति और उत्पत्तिके विषय हैं ॥

पूर्व मीमांसाके अनुसार ॥

१ प्रश्न—मुक्त होना क्या है और किस यत्न से मुक्ति प्राप्त होती है ॥

उत्तर—स्वर्गकी प्राप्तिको मुक्ति कहते हैं बेदमें जो बचन बिधिका लिखाहै उसके माननेसे स्वर्गहोताहै आज्ञा यह है कि मन्त्र सहित यज्ञ और पूजन आदि करना और जो बेद ने निषेध किया है उससे अलग रहना यथा ब्राह्मणको मारना और कलंजन खाना आदि और जिस बात को बेदने नहीं आज्ञादीहै और निषेध कियाहै तो उसके करनेसे न अदृष्ट अर्थात् पुण्य है और न पापहै ॥

पूर्व मीमांसा का सिद्धान्त है कि मुक्तहोने को ज्ञान की आवश्यकता नहीं है क्योंकि निषेध और काम्य कर्मका त्यागकिया ॥ संचित कर्मोंका नाश नित्य नैमित्तिक कर्मों से हुआ ॥ वस जन्म न धरनापड़ा जन्मका न धरनाही मोक्ष है सोई स्वर्गहै इसीको स्वरूपावस्थिती कहतेहैं और लोकरूप स्वर्ग पुराणका मतहै ॥

नित्यकर्म सन्ध्या तर्पण है नैमित्तिक ब्रत आदिकहैं॥ और जो प्रायश्चित्त कर्महै वह इस जन्मके या पहिले निषेधकर्मों को दूरकरतेहैं बिशेष सुख जो देहके वियोग से प्राप्तहोता है सोई स्वर्ग है॥

२ प्रश्न—मैं क्याहूं और यत्न अपने आधीन है या प्रारब्ध के या ईश्वर के आधीन है॥

उत्तर—तू जीव है और चैतन्य और अचैतन्य है इन्द्रियों के साथ मिलकर दुःखी सुखी रहताहै अदृष्ट के अनुसार और यह स्वरूप बासनाके अनुसार हुआ इन्द्रियों से अलग करना और बेदके बाक्योंके अनुसार बिधि कर्म में लगाना यह यत्नहै सो तेरे और अदृष्ट के आधीन है जीव सब भिन्नहैं ब्यापकहैं॥

३ प्रश्न—सृष्टिका कर्ता कौन है और कहां है और क्या है और माया क्याहै॥

उत्तर—जगत्का कर्ता जीवको अदृष्टहै और अदृष्ट जो अनादि रूप बासना सोई माया या प्रकृति कहलाती है सुषुप्ति से जागकर कहता है मैं सुखसे सोया याते जीव चैतन्यहै और मैं कुछ न जानताभया याते जड़है यह भट्टमीमांसकका मतहै॥

४ प्रश्न—जगत् कैसे और कहांसे और कब उत्पन्न हुआ और सत्य है या असत्य है स्वप्नसृष्टि और जगत् में क्या भेदहै किसको भासता है॥

उत्तर—जगत् अनादि और सत्यहै और स्वप्नसृष्टि असत्य है दोनों जीव को भासते हैं पृथ्वी जल तेज आदिरूप जगत् है॥

५ प्रश्न—दुःख सुख किसे होता है और क्यों होता है और मरने के पीछे जीव कहांजाता है॥

उत्तर—दुःख सुख जीव को होताहै अदृष्ट के अनुसार और मरनेके समय अदृष्टके अनुसार बासना होती है और बासनाके अनुसार दूसरी देह मिलतीहै॥

६ प्रश्न—परलोक क्याहै सत्यहै या नहीं॥

उत्तर—स्वर्ग और नरक सत्य है यह पुराणादिकका मत है बहुत से मीमांसक स्वर्ग नरक लोकरूपकरके नहीं मानते सुख दुःखकी अवस्थाको जो इस जगत्में होवे उसीको स्वर्ग नरक कहते हैं मीमांसक मूर्तिपूजा को साधारण कर्म समझे हैं॥

७ प्रश्न—नाम क्या है और कौन नाम सर्वोपरि है और नाम नामी अभेद है या क्या और शब्द क्या है और सब में उत्तम कर्म कौन हैं॥

उत्तर—सबनाम बराबरहैं बेदबाक्य मुख्यशब्दहै और यज्ञ सब कर्मोंसे उत्तम कर्महै और पूर्वमीमांसाका यह सिद्धान्तहै कि मन्त्रही देवरूप है जो एकदेवताका होना समझाजाय तो जब लाख आदमीने एकहीसमय स्वाहा कहा तो एक देवता उसीसमय सबके पास कैसे पहुँच सक्ताहै और मन्त्र सबके पासहै इससे मन्त्रहीदेवता है और जीव सब अलग अलगहैं ईश्वरका अभावहै और जो वेद में देवताओंका होना और उनका वर्णन है सो रुचि बढ़ानेको कहानियों के समान है॥

दो० कर्म प्रधान मिमांसा, भाष्यो निजमत जोय।
वृन्दावन सब देवको, मान्यो मिथ्या सोय॥

न्याय और वैशेषिक शास्त्रके अनुसार ॥

१ प्रश्न—मुक्तिहोनाक्याहै और किसयत्नसे मुक्तिहोतीहै॥

उत्तर—२१ दुःखोंका अत्यन्ताभाव अर्थात् सदैवका नाश मुक्तिहै और शरीरसम्बन्ध के अभावते २१ दुःख का नाश होवैहै (२१दुःख ये हैं) ६ इन्द्रियां—घ्राण १ रसना २ चक्षु ३ श्रोत्र ४ त्वचा ५ मन ६ और ६ इन्द्रियोंके ६ ज्ञान व ६ बिषय और सुख १, दुःख २, शरीर ३ ये २१ दुःख कहातेहैं और मोक्ष प्राप्ति होने के वास्ते कर्मउपासना ज्ञान के हेतु और आत्माको ७ या १६ पदार्थका ज्ञान साक्षात् मोक्षका हेतु गंगास्नान यज्ञ आदि यह कर्म हैं परमात्मामें मनलगाना उपासनाहै बैशेषिक और न्यायशास्त्रवाले नीचे लिखीहुई बस्तुओंको पदार्थ कहते हैं और लिखाहै कि सारा प्रपंच इन ७ और १६ पदार्थों में है ॥

७ पदार्थ वर्णन ॥

द्रव्य १ गुण २ कर्म ३ सामान्य ४ बिशेष ५ समवाय ६ अभाव ७, पृथ्वी १ जल २ तेज ३ वायु ४ आकाश ५ काल ६ दशौदिशा ७ आत्मा ८ मन ९ ये नवौ द्रव्य हैं, रूप १ रस २ गन्ध ३ स्पर्श ४ संख्या ५ प्रमाण ६ पृथक्त्व ७ संयोग ८ बिभाग ९ परत्व १० अपरत्व ११ गुरुत्व १२ द्रवत्व १३ स्नेह १४ शब्द १५ बुद्धि १६ सुख १७ दुःख १८ इच्छा १९ द्वेष २० प्रयत्न २१ धर्म २२ अधर्म २३ संस्कार ये २४ गुणहैं २॥

उछलना १ नीचे गिरना २ खींचना ३ फैलाना ४ चलना ५ ये पांच कर्म हैं ३ ॥

पर १ अपर २ ये दो सामान्य हैं ४॥

प्रमाणका भेदक विशेषहै ५ नित्य सम्बन्ध समवाय है सो गुण गुणी जाति व्यक्ति क्रिया क्रियावान् अवयव अवयवी में रहै है ६ अभाव चारि प्रकार का है एक जो पहिले न रहा हो दूसरा अब जो न हो तीसरा जो त्रिकालमें न हो चौथा अन्योन्य अभाव जैसे घट का अभाव पटमें और पटका अभाव घट में ७॥

१६ पदार्थ वर्णन॥

प्रमाण १ प्रमेय २ संशय ३ प्रयोजन ४ दृष्टान्त ५ सिद्धान्त ६ अवयव ७ तर्क ८ निर्णय ९ बाद १० जल्प ११ बितण्डा १२ हेत्वाभास १३ छल १४ जाति १५ निग्रहस्थान १६॥

न्यायमत में भ्रान्ति ज्ञान आत्माको संसारका हेतु है सो ज्ञान से दूरहोवै है देह आदिक सर्व प्रपंच से आत्मा भिन्न है भ्रान्ति के दूरहोनेसे राग द्वेष धर्म अधर्म और शरीर सम्बन्ध रूप जन्म का अभाव होवै है॥

मन मोक्षकालमें भी बनारहै है पर अदृष्ट जोकि संसार का कारण है सो होता नहीं इसमें मन आत्मा का संयोग नहीं होता पदार्थों के ज्ञानसे जीव आत्मा का भिन्न होना विदित होताहै॥

२ प्रश्न—मैं क्या हूं और यत्न मेरे अधीन या ईश्वर के या प्रारब्ध के है॥

उत्तर—तू जीव आत्मा है और व्यापक है औ धर्म अधर्मवाला है यत्न ईश्वरके अधीनहै, नैयायिक पृथ्वी अप तेज वायु इन चारों तत्त्वोंको नित्य अनित्य मानते

तीनों अनित्य हैं पर जब ज्ञानगुण होवे तब तो जीव चैतन्यहै और जब ज्ञान गुण नहीं है तो जड़है श्रवण मनन ज्ञान के साधन हैं मूर्तिपूजा साधारण कर्म है॥

५ प्रश्न—दुःख सुख किसे होताहै और क्यों होताहै और मरने के पीछे जीव कहां जाताहै॥

उत्तर—दुःखसुख अदृष्टके अनुसार जीवको होता है जैसा अदृष्टहोताहै वैसाही शरीर पाताहै बैशेषिकमत समयको प्रधान करताहै कि जब जिस बातका समय आताहै तब वह काम होजाता है (समय एव करोति बलाबलं) समय पर जोर और कमजोर होना और सबबातें होतीहैं जब समय आता है तब होताहै यह न्यायशास्त्र का सिद्धांत नहीं है परन्तु और बातों में न्यायशास्त्र और बैशेषिक मत मिलता है॥

६ प्रश्न—परलोक क्या है सत्य है या असत्य है॥

उत्तर—परलोक अर्थात् नरक स्वर्ग सत्य है॥

७ प्रश्न—नाम क्या है और कौन नाम सर्वोपरि है और नाम नामी अभेद है या क्या और शब्द क्याहै और सब में उत्तम कर्म कौन हैं॥

उत्तर—ॐकारादिक नाम सर्वोपरि हैं परमेश्वर की शक्तिहैं नाम नामी भिन्ननामी वाच्य नाम वाचक गंगा-स्नानादि उत्तम कर्म हैं (नित्यसुख आविर्भावमुक्त) वैशेषिकमत॥

दो० न्याय वैशेषिककोमतो, ईश्वर व्यापक होय।
वृन्दावन इकीसदुख, नशैमुक्तिकहि सोय॥

पातंजलि और सांख्यशास्त्र के अनुसार ॥

१ प्रश्न—मुक्त होना क्याहै और किस यत्न से मुक्ति प्राप्ति होती है ॥

उत्तर—प्रकृति और पुरुषकी साम्य अर्थात् समाधि अवस्थामें होजाना अर्थात् जड़कार्यका लयहोजाना अपने कारणमें और चैतन्यका चैतन्यमें यह मुक्ति है चित्त में बन्ध मोक्ष है चित्त शुद्धहोय तो ज्ञानी होय और जब ज्ञानी हुआ तो मुक्त है अब चित्त का निरोध निकृष्ट अधिकारी की क्रिया है अर्थात् अष्टांगयोग से होती है उत्तम अधिकारी को प्रथम वैराग्य उसके पीछे अभ्यास यत्नहै—अभ्यास उसको कहते हैं कि अपनेको जड़ से असंग चिन्तवन करता रहै—अभ्यास दो प्रकारका है एक निजानन्दी दूसरा परानन्दी जब ऐसा अभ्यास किया कि मैं असंग चैतन्यहूं यह निजानन्दी कहलाता है और जो इस प्रकार अभ्यासकरै कि ईश्वर चैतन्य असंग है उसको परानन्दी कहतेहैं सो दोनों प्रकारसे एकही प्रयोजन निकलताहै जातिभेद नहीं है किन्तु व्यक्तिभेद है क्योंकि ईश्वर चैतन्य से यह अपने को भिन्न नहीं समझता जिसने पहिले अष्टांगयोग किया है और फिर वैराग्यहुआ है उससे अभ्यास वड़ी सुगमतासे बनता है पातंजलि और सांख्यशास्त्रका यह सिद्धांतहै कि पुरुष और प्रकृति दोनों बनेरहते हैं ज्ञान के होनेपरभी प्रकृति का नाश नहीं होता परंतु प्रकृतिका ऐसे अभाव होजाता है जैसे दो मनुष्य सोये एककी खबर दूसरेको नहीं होती

समझैगा तो ऐश्वर्यकी चाह न होगी और वैराग्य उत्पन्नहोगा ॥

३ प्रश्न—सृष्टिका कर्ता कौन है कहां है और कैसा है और माया क्या है ॥

उत्तर—पुरुष और प्रकृतिका संयोग जगत् का कर्ता है माया और प्रकृति एकही है उसका स्वरूप रज, तम, सत्त्व है, अनादि है, उसका नाश कभी नहीं होता प्रकृतिको पूर्व चेष्टाहुई रजोगुणकी आधिक्यता प्रकृति का परिणाम है संयोग का कारण अविद्या है ॥

४ प्रश्न—जगत् क्या है कहांसे और कब पैदाहुआ सत्य है या असत्य है स्वप्नसृष्टि और जगत् में क्या भेद है और किसको भासता है ॥

उत्तर—जगत् सत्य है पर अनित्य है और आत्मा के साथ जगत् का संग मिथ्याहै चैतन्य और प्रकृतिके संयोग से भासता है अनादिहै चित्त में भासताहै जगत् और स्वप्नसृष्टि में बहुत भेद नहीं क्योंकि स्वप्न जिसका फल जाग्रत्में होजावे वह स्वप्न सत्यहै पर अनित्यहै जगत् प्रलयकालमें प्रकृतिमें ऐसे लय होताहै जैसे वर्षा ऋतुके पीछे मेंडुक पृथ्वीमें लय होताहै ॥

५ प्रश्न—दुःख सुख किसे होताहै और क्यों होताहै और मरनेके पीछे जीव कहां जाताहै ॥

उत्तर—दुःख सुख चित्तको होताहै और अदृष्टके वश वृत्तिके अनुसार जन्म मरण होताहै और वृत्ति धर्माधर्म के अनुसार होतीहै और दुःख सुख ज्ञानाज्ञान अंतःकरण का धर्महै और चैतन्य प्रकृतिसे भिन्नहै प्रकृति पुरुष

के भोगके लिये अनेक कर्म करतीहै यद्यपि प्रकृति जड़है तथापि काम करनेकी सामर्थ्य रखती है जैसे दूध जड़ पदार्थ है परंतु गाय के स्तनों में आपसे आप इकट्ठा होजाताहै और उसका दही होजाताहै इसीप्रकार प्रकृति जड़है परन्तु कार्यकरने को समर्थहै जगत्का उपादान कारण प्रकृति है ज्ञान अज्ञान दुःख सुख अन्तःकरणका धर्महै आत्मा का नहीं और अन्तःकरण प्रकृतिजन्यहै ॥

६ प्रश्न—परलोक क्याहै सत्यहै या क्या ॥

उत्तर—परलोक स्वर्गादिक सत्यहै पर अनित्यहै ॥

७ प्रश्न—नाम क्याहै और कौन नाम सर्वोपरि है और नाम नामी अभेदहै या क्या और शब्द क्याहै और सबमें उत्तम कर्म कौनहै ॥

उत्तर—ॐकारादिक नाम सर्वोपरि हैं नाम नामी अभेद है और भेदभी है अधिकार के अनुसार शब्द आकाश का गुणहै ॥

दो० सांख्यपतंजलि असकह्यो, चैतनसदाअसंग ।
बृन्दाबन परकृत्ति ने, रच्यो यह सारा ढंग ॥

वेदान्तशास्त्र के अनुसार ॥

१ प्रश्न—मुक्तिहोना क्याहै और किसयत्नसे मुक्ति प्राप्त होती है ॥

उत्तर—अपने स्वरूप में लय होना अर्थात् अपना को जानना मुक्तिहै कर्म और उपासनासे मन निर्मल और निश्चल होताहै॥ फिर बेदान्तका श्रवण, मनन, निदिध्यासन से ज्ञानहोताहै अर्थात् अपने निजस्वरूप सच्चिदानन्द का प्रकाश होता है यही मुक्ति है ॥

कर्म दो प्रकारके होते हैं एकसकाम दूसरानिष्काम सकाम वहहै जिसमें फलकी इच्छाहोवै सकामकर्म से फलकी प्राप्ति होती है इसे मजदूरी कहतेहैं॥ निष्काम कर्म वहहै जिसमें फलकी इच्छा न होवे उससे मनकी शुद्धता होतीहै उपासना से मन निश्चल अर्थात् एकाग्र होताहै जो कर्म उपासना से बैकुण्ठादिक की इच्छा रखते हैं उनको देवशरीर मिलता है पर देवता को मुक्त नहीं कहसक्ते क्योंकि देवशरीर में भी भय आदिक दुःख बनारहता है बहुत पुण्यके फलसे देवशरीर मिलताहै सो नाशवान् है तथाच क्षीणे पुण्ये मृत्युलोके वसन्ति॥

२ प्रश्न—मैं क्याहूं और यत्न अपने अधीन या प्रारब्ध या ईश्वर के है॥

उत्तर—सो सत् चित् आनंद स्वरूपहै निर्बिकार है व्यापकहै महावाक्य बेदका तत्त्वमसियत्न अपनेअधीन है सूर्य प्रकाश करताहै परन्तु जब अपनी आंखें खोलै तो दीखता है सत्य उसे कहते हैं जो तीन काल अर्थात् सदैव एकरस बर्तमान और निश्चलरहै चित् अर्थात् चैतन्यहै जाननेवाला है ज्ञानस्वरूपहै आनंदरूप अर्थात् सदैव सुखस्वरूपहै तत्त्वमसि इसका यह अर्थ है कि तू वही है अर्थात् जीव ब्रह्महै जैसे बाध्य समानाधिकरण लक्ष्यलक्षण और बिशेष्य बिशेषण करके बुद्बुदे और समुद्रकी एकता है इसीप्रकार जीव ब्रह्म की भी एकताहै समुद्रमें जहाज़ चलताहै बड़े २ मगरमच्छ रहतेहैं और मुक्ता पैदा होते हैं और बड़ाहै और बुद्बुदे में यह बातें नहीं हैं परन्तु जहाज़, मगरमच्छ,

मोती आदि सागरका स्वरूप नहीं हैं सागर से अलग हैं इससे इन बस्तुओं का बाध्य करके देखाजाय तो बुद्बुदाभी जल है और जो सागर के जल में लक्षण है वही बुद्बुदेमें भी बर्तमानहै अर्थात् मधुरता, शीतलता, द्रवता और बिशेष्य बिशेषण यहहै कि बुद्बुदा सागर का है और फिर सागर होसक्ताहै इसीप्रकार सत् चित् आनंदरूप करके जीव, ब्रह्मकी एकता है ब्रह्मका रूप सत् चित् आनन्द है वह जीव में भी पायाजाता है जीव भी तीनकाल सत्य है और चैतन्यहोना प्रकट ही है और चैतन्यमात्र सदैव आनन्दस्वरूप है दुःख अंतःकरणका धर्महै चैतन्यका नहीं इससे जीव, आत्मा और ब्रह्मकी एकता सिद्धहुई ॥

६ प्रश्न—सृष्टिका कर्ता कौनहै और कहांहै और कैसा है और माया क्या है ॥

उत्तर—जगत् का कर्ता ईश्वरहै व्यापकहै सच्चिदानंद है और वही ईश्वर अकर्ता है जैसे सूर्य और चुम्बकपत्थर कर्ता अकर्ता दोनोंहैं वही चैतन्य ब्रह्महै और वही चैतन्य ईश्वरहै और वही चैतन्य जीवहै जैसे एक स्त्री पिताके घर बेटी कहलाती है और सुसरालमें बहू और नानाके घर दुहिती कहलाती है परन्तु है वह एक ही माया अनिर्वचनीयहै सत्य असत्यसे विलक्षण है और वास्तव में ब्रह्महीं माया है सूर्यका प्रकाश सबकार्य करताहै परन्तु सूर्यमें किसी कार्यका लेशमात्रभी नहीं होता मायाको जो सत्यकहैं तो सत्य नहीं क्योंकि ज्ञान के होतेही नाश होजाती है और जो असत्य कहैं तो

कर्म दो प्रकारके होते हैं एकसकाम दूसरानिष्काम सकाम वहहै जिसमें फलकी इच्छाहोवै सकामकर्म से फलकी प्राप्ति होती है इसे मज़दूरी कहतेहैं॥ निष्काम कर्म वहहै जिसमें फलकी इच्छा न होवे उससे मनकी शुद्धता होतीहै उपासना से मन निश्चल अर्थात् एकाग्र होताहै जो कर्म उपासना से बैकुण्ठादिक की इच्छा रखते हैं उनको देवशरीर मिलता है पर देवता को मुक्त नहीं कहसक्ते क्योंकि देवशरीर में भी भय आदिक दुःख बनारहता है बहुत पुण्यके फलसे देवशरीर मिलताहै सो नाशवान् है तथाच क्षीणे पुण्ये मृत्युलोके वसन्ति॥

२ प्रश्न—मैं क्याहूं और यत्न अपने अधीन या प्रारब्ध या ईश्वर के है॥

उत्तर—सो सत् चित् आनंद स्वरूपहै निर्विकार है व्यापकहै महावाक्य बेदका तत्त्वमसियत्न अपनेअधीन है सूर्य प्रकाश करताहै परन्तु जब अपनी आंखें खोलै तो दीखता है सत्य उसे कहते हैं जो तीन काल अर्थात् सदैव एकरस बर्तमान और निश्चलरहै चित् अर्थात् चैतन्यहै जाननेवाला है ज्ञानस्वरूपहै आनंदरूप अर्थात् सदैव सुखस्वरूपहै तत्त्वमसि इसका यह अर्थ है कि तू वही है अर्थात् जीव ब्रह्महै जैसे बाध्य समानाधिकरण लक्ष्यलक्षण और विशेष्य बिशेषण करके बुद्बुदे और समुद्रकी एकता है इसीप्रकार जीव ब्रह्म की भी एकताहै समुद्रमें जहाज़ चलताहै बड़े २ मगरमच्छ रहतेहैं और मुक्ता पैदा होते हैं और बड़ाहै और बुद्बुदे में यह बातें नहीं हैं परन्तु जहाज़, मगरमच्छ,

मोती आदि सागरका स्वरूप नहीं हैं सागर से अलग हैं इससे इन बस्तुओं का वाध्य करके देखाजाय तो बुद्बुदाभी जल है और जो सागर के जल में लक्षण है वही बुद्बुदेमें भी बर्तमानहै अर्थात् मधुरता, शीतलता, द्रवता और बिशेष्य बिशेषण यहहै कि बुद्बुदा सागर का है और फिर सागर होसक्ताहै इसीप्रकार सत् चित् आनंदरूप करके जीव, ब्रह्मकी एकता है ब्रह्मका रूप सत् चित् आनन्द है वह जीव में भी पायाजाता है जीव भी तीनकाल सत्य है और चैतन्यहोना प्रकट ही है और चैतन्यमात्र सदैव आनन्दस्वरूप है दुःख अंतःकरणका धर्महै चैतन्यका नहीं इससे जीव, आत्मा और ब्रह्मकी एकता सिद्धहुई ॥

१ प्रश्न—सृष्टिका कर्ता कौनहै और कहांहै और कैसा है और माया क्या है॥

उत्तर—जगत् का कर्ता ईश्वरहै व्यापकहै सच्चिदानंद है और वही ईश्वर अकर्ता है जैसे सूर्य और चुम्बकपत्थर कर्ता अकर्ता दोनोंहैं वही चैतन्य ब्रह्महै और वही चैतन्य ईश्वरहै और वही चैतन्य जीवहै जैसे एक स्त्री पिताके घर बेटी कहलाती है और सुसरालमें बहू और नानाके घर दुहिती कहलाती है परन्तु है वह एक ही माया अनिर्वचनीयहै सत्य असत्यसे विलक्षण है और वास्तव में ब्रह्महीं माया है सूर्यका प्रकाश सबकार्य करताहै परन्तु सूर्यमें किसी कार्यका लेशमात्रभी नहीं होता मायाको जो सत्यकहैं तो सत्य नहीं क्योंकि ज्ञान के होतेही नाश होजाती है और जो असत्य कहें तो

दीखती है इससे सत्य असत्य दोनों कहना नहीं बन सक्ता इस हेतुसे माया अनिर्वचनीय है ब्रह्म में माया और माया में ब्रह्म दोनों एकरस ब्यापक हैं जैसे दिन में रात ब्यापक है जब दिन होताहै तब रात्रिका पता नहीं मिलता इससे दिनमें रात्रि ब्यापकहै जो दिनमें रात्रि न होती तो दिन ब्यतीत होतेही रात्रि कहां से आजाती है कहीं गठरी बँधी रक्खी थी जो आगई और जब रात्रि है तो दिनका पता नहीं इसीप्रकार जब ब्रह्मदृष्टि है तब माया का पता नहीं और जब माया करके उपहित दृष्टि है तो ब्रह्मदृष्टि नहीं पड़ता परन्तु वर्तमान है ॥

४ प्रश्न—जगत् क्या है कहांसे और कब उत्पन्नहुआ सत्य है या असत्य है स्वप्नसृष्टि और जगत् में क्या भेद है और किसको भासता है ॥

उत्तर—जगत् अहंकार से उत्पन्नहुआ प्रवाहरूप अनादि है असत्यहै जगत् और स्वप्नसृष्टिमें अल्प और दीर्घकालका भेद कहनेमात्रका है और अज्ञान करके बुद्धिको भासताहै छः बस्तु अर्थात् ब्रह्म, ईश्वर, जीव और अबिद्या और अबिद्या का चैतन्य से सम्बंध और अनादि बस्तुका भेद यह षट्बस्तु स्वरूप से अनादि है अर्थात् सदैव से है ॥ जाग्रत् जगत् और स्वप्नसृष्टि में ऐसा कुछ भेद नहींहै जैसे स्वप्नमें बिनासामग्री देश-काल रचना होती है इसीप्रकार जाग्रत् जगत् भी है ब्रह्ममें देशकाल और सामग्री का लेशभी नहीं है जैसे स्वप्न के समय स्वप्नसृष्टि सत्य दीखती है और सत्य जानकर व्यवहार करता है इसी प्रकार अज्ञानकाल

में जगत् भी सत्यसा विदित होता है परन्तु जब स्वप्न से पुरुष जागता है उससमय स्वप्नसृष्टिका पता नहीं मिलता इसी प्रकार ज्ञानअवस्था में जगत् नहीं है इस से स्वप्नसृष्टि और जाग्रत् जगत् दोनों मिथ्या हैं अर्थात् असत्यहैं परन्तु ऐसाकहना खड्गकेसमान है जो अज्ञानी ने ऐसा बचन मुखसे कहा तो साफ़ अपना गला काटा पहिले खूब पटेबाज़ी होले तब तरवारपर हाथलगावै॥

५ प्रश्न—दुःख सुख किसे होताहै और क्यों होता है और मरने के पीछे जीव कहां जाता है॥

उत्तर—दुःख सुख अंतःकरणका धर्महै चैतन्यने संग-दोष करके अपनेमें मानाहै कर्मके अनुसार दुःख सुख होताहै और ज्ञानीका जीव गमन नहीं करता अर्थात् जहांका तहां स्थितहै इसनिमित्त कि उसकी बासना क्षय होगई और अज्ञानीका जीव आशा के अनुसार गमन करता है जो कुछ हांड़ी में होताहै वही टपकता है (जहां आशा तहां बासा कर्मानुसारिणीबुद्धि) अर्थात् कर्मकेअनुसार उसको आशा होती है उसके अनुसार गमनकरताहै मन, चित्त, बुद्धि, अहंकारको अंतःकरण कहते हैं सो जड़ है मूल में चारों एकही हैं परन्तु चार नामहैं जब मननकिया तो मन नाम हुआ जब चिन्तवनकिया तो चित्त नाम हुआ और जब निश्चयकिया तो बुद्धि नाम और जब आपामाना तो अहंकार नाम हुआ फ़ारसी में उसकानाम ख़याल, गुमान, यक़ीन, ख़ुदी कहतेहैं जीवका यहरूप है कि अन्तःकरण और अन्तःकरण में कूटस्थका आभास और कूटस्थ जीव

कहलाता है कूटस्थ इसे कहतेहैं कि जो चैतन्य का भाग अन्तःकरणके समीप है और जिसकाभास अन्तःकरणमें पड़ेहै और ज्ञानी के अन्तःकरणका अभावहै इससे आभासकूटस्थ में लयहुआ जैसे दर्पणमें स्वरूप बनताहै और जब दर्पण मुखके सन्मुख से पृथक्हुआ तो वह प्रतिबिम्ब जो दर्पणमेंथा असलस्वरूप में लय हुआ इस निमित्त कि दर्पण में वह परछाहीं फिर नहीं रहती और अज्ञानीकी यहदशाहै कि अज्ञानी के बासनारहती है इस कारण उसका जीव स्थितरहा और कर्मके अनुसार जीव ने गमनकिया इसके बिशेष अज्ञानी को संचितकर्म भी भोगने हैं और ज्ञानी के संचित कर्म सब भस्महोगये क्योंकि संचितकर्म अज्ञान के सहारेथे जब अज्ञान दूरहुआ तब संचितकर्म भी दूर हुये जैसे परछाहीं बृक्षके सहारे होती है जब बृक्ष न रहा तो परछाहीं भी जातीरही ज्ञानी के संचितकर्म ज्ञानके होतेही दूरहुये प्रारब्धकर्म को भोगकिया क्रियामान का अभिमान नहीं हुआ इससे अब बासना किस प्रकार रहसक्ती है॥

६ प्रश्न—परलोक क्याहै सत्यहै या क्या॥

उत्तर—बास्तव में परलोक कुछ नहीं है अज्ञान में लोक परलोक दोनों सत्य हैं जैसे स्वप्न में स्वप्नसृष्टि परन्तु ज्ञान में न लोक है न परलोक है जो कोई कहै कि स्वप्नसृष्टि और यह जगत् किस प्रकार बराबर हो सक्ता है स्वप्न में जाग्रत् की बस्तुओं का ध्यान आता है सो जगत् की वस्तु सब सत्यहै और स्वप्न की असत्य

ऐसा कहना अत्यन्त मिथ्या है इस निमित्त कि स्वप्न में बस्तुओं का ध्यान नहीं होता परन्तु सब बस्तु आप वर्तमान होती है क्योंकि इस जगत् के सदृश सब व्यवहार सत्य समझकर करताहै इससे जब कि बस्तु बर्तमान हुई तो बिदित हुआ कि बस्तु नवीन बनाईगई है क्योंकि जगत् की बस्तु उस समय कोई भी न काममें आई और न जगत् की बस्तुओं का ध्यान कहसक्के हैं क्योंकि ध्यान के समय जिस बस्तुका ध्यान होगा वह बस्तु कुछ समीप नहीं आजाती और भोगने छूने में नहीं आती अपने स्थानपर रहतीहै और स्वप्नमें सब बस्तु भोगनेमें आती है हां स्वप्न संस्कारजन्य है जैसे संस्कार मनमें रहते हैं वैसा स्वप्न दीखताहै सो माया-कृत बस्तु बनी है और सच्ची दीखती है इस हेतु से जाग्रत् जगत् और स्वप्नसृष्टि में भेद कदाचित् नहीं है वह दोनों बराबर बर्तमान हैं इसीप्रकार परलोक भी कल्पनामात्र है ॥

७ प्रश्न—नाम क्या है और कौननाम सर्वोपरि है और नाम नामी अभेद है या क्याहै और शब्द क्या है और सबमें उत्तम कर्म कौनहै ॥

उत्तर—सत् चित् आनन्द यही नाम है नाम सापेक्षक है अर्थात् दूसरे की इच्छासे है माया की अपेक्षा से उसको सत् चित् आनन्द कहागया और जब जगत् को असत्यकहा तो ब्रह्मको सत्यकहा और वास्तव में उस में नाम कहा और शब्द आवाज़ है और आकाशका गुण है उपासनामें अपने २ इष्ट के अनुसार नाम का

जप है पर रामनाम बहुत प्रसिद्ध है सबसे उत्तम कर्म साधु सन्त और गुरुकीसेवा करनाहै, शब्द चार प्रकार का होता है परा, पश्यन्ती, मध्यमा, वैखरी—पराशब्द नाभिमें है जैसे ब्रह्म, पश्यन्ती हृदय में जैसे सबल ब्रह्म, मध्यमा गले में जैसे कार्यरूप, वैखरी जो मुख से निकली जैसे स्थूल ॥

दो० जीव ब्रह्म की एकता, सिद्ध कियो वेदान्त ।
बृन्दाबनजगस्वप्नसम, मायालखो भरान्त ॥

सन्तोंकेमतके अनुसार ॥

१ प्रश्न—मुक्तिहोना क्याहै और किसयत्नसे मुक्ति प्राप्त होती है ॥

उत्तर—श्रुति का सत्य शब्द के आगे होना अर्थात् ९ द्वार से चढ़कर सत्यलोक में पहुँचना मुक्ति है सत्य शब्द का मण्डल प्रकाश सहितहै और ऊपरहै अनहद के श्रवण करने से सत्य शब्दकी प्राप्ति होती है। जब मुक्त होताहै हां प्रथम संतों ने बाणीका पाठ नामका स्मरण स्वामी की ओर प्रेम और प्रीति और भक्ति और जगत्से वैराग्य साधु गुरुकी सेवा और फ़क़ीरोंका सत्संग मालिक से प्रार्थना कहाहै परन्तु शब्दका ध्यान सबसे ऊपरहै इसको कोई २ जानता है और उपासनाका जो अन्तहै वही ब्रह्मज्ञानकी आदि प्राप्ति है गुरुनानक साहब, कबीर साहब, दादू साहब, पल्टू साहब, जगजीवन साहब, दरिया साहब, तुलसी-दासजी और चरणदासजी आदि इन सब संत और महात्माओं ने यही मार्ग रक्खा है और नादके ध्यान

की महिमा शिवजीने अत्यंत की है कि जितने मार्ग मुक्त होने के हैं सबमें नादकी उपासना उत्तममार्ग है और हंसनाद नाम उपनिषद् में शिवजी ने गौरी से इसको बहुत बर्णनकिया है और मोक्षकी प्राप्ति कही है और दशप्रकारके अनहद शब्द कहे हैं पहिला चिन शब्द दूसरा चिनचिनझिङ्गा शब्द तीसरा घण्टे का शब्द चौथा शङ्ख का शब्द पांचवां बीन का शब्द छठां ताल का शब्द सातवां बांसुरी का शब्द आठवां मृदंग का शब्द नवां नफ़ीरी का शब्द दशवां बादलकीसी गरज॥

शब्दकी पहिचान॥

पहिला शब्द सुनै तो सब देहके रोमाञ्च उठखड़े हों दूसरे शब्दसे देह में आलस्य आवे तीसरे में प्रेमकी अधिकताहो चौथेके सुननेसे ब्रह्मांडमें से सुगन्ध आवे पांचवेंके सुननेसे अमृत उतरने लगै छठा सुने तो गले से नीचे अमृतआवे सातवां सुने तो अंतर्यामी होजाय आठवां सुने तो सम्पूर्ण भीतर बाहरके नाद सुनपड़ें नवां सुने तो गुप्त होनेकी सामर्थ्य होजाय दशवां सुने तो सब वासना क्षय होकर परब्रह्म होजाय उसका नाम ॐकार है और अपने को ॐकार जाननाही परममुक्त होजानाहै सन्तोंने पांच शब्द कहेहैं इनमें ऊपरके दश शब्द आजाते हैं और दो शब्द सेवाय कहे हैं॥

२प्रश्न—मैं क्याहूं ? और यत्न अपने या ईश्वरके या प्रारब्ध के आधीन है ?

उत्तर—तू जीवहै मन और सुरत मिलाहुआ है नव द्वारसे सहस्रदलकमल तक जो आकाशका नाकाहै वहां

तक मनहै आगे केवल सुरतहै सो गुरुशब्द जो घटमें होरहा है उसके आश्रय त्रिकुटी में चढ़ दशवें द्वारमें पहुँचकर शून्य सरोवरमें स्नानकरके हंसदशाको प्राप्त होताहै सुरत चैतन्यरूप है श्यामकंज में तेरा बासहै और तेरा प्रतिबिम्ब और भास सम्पूर्ण शरीरमें है कर्तव्य सन्त गुरुके स्वाधीनहै फ़ार्सी में नादकी उपासना को सुल्तानुल्अज़कार कहतेहैं॥

दो० तीनबन्द लगाय के, अनहद सुनै टकोर।
नानकसुन्नसमाधिमें, नहीं सांझ नहिं भोर॥

बैत—चश्मबन्दोगोशबन्दोलबबन्द। गरनयाबीसिर्रे-हक़ बर्मन बिख़न्द॥ और सन्तों ने जो नादका भेद पाया है वह ऊपरके दश शब्द में नहीं है उसका भेद भेदी ही जाने और बिदून सन्तके या सन्तके दासके उसका प्रकाश नहीं होसक्ता॥

३ प्रश्न—सृष्टि का कर्ता कौन है? और कहां है? और कैसा है? और माया क्या है?

उत्तर—शब्द सृष्टि का कर्ता है वही शब्दकर्ता पुरुष है सिरजनहारहै उसकी इच्छा कुदरत और मायाहै गुरु नानकशाह का वचन है॥ शब्दोधरतीशब्दोआकाश। शब्दोशब्दभयापरकाश॥ सिगरीसृष्टि शब्दके पाछे। नानक शब्द घटे घट आछे॥

४ प्रश्न—जगत् क्याहै? और कहांसे? और कब पैदा हुआ? सत्यहै या असत्यहै? स्वप्नसृष्टि और जगत्में क्या भेदहै? और किसको भासताहै?

उत्तर—सत्यपुरुषकी इच्छासे निरञ्जन उत्पन्न हुआ

और निरञ्जनसे जगत् पैदाहुआ सत्यलोककी अपेक्षा से यह प्रपञ्च असत्य है और नवद्वारमें जो सुरत है उसको भासताहै स्वप्नसृष्टि मनकी रचीहुई है और यह जगत् निरञ्जनका रचाहुआहै मनका स्वभाव चञ्चलहै और नादपर आसक्त है जैसे मृग नादपर आसक्त होजाताहै जब नादको सुनताहै तब अपने देहको भी भूलजाताहै ऐसेही मनभी नादपर मोहितहै जब नाद सुनताहै तब बशीभूत होजाताहै और मन किसी सहारे बिना ठहरता नहीं इससे और कोई सहारा ऐसा नहीं है जैसे शब्दका सुनना, इसमें मन लगजाताहै और जगत्को भूलकर मालिकको पाताहै वज़नशाह फ़क़ीर का क़ौलहै ॥

चौ० रेखाविन्दक्या कहिहैं न्यारे। मूंददेखतूदशों दुवारे ॥
सुनि पड़िहै अनहदका बाजा। परजासेहै जैहै राजा ॥

दो० सबहि साज तनमें बजैं, मचाहै कैसा राग।
वजह न जाको सुनिपड़ै, बड़ेहैं वाके भाग ॥

५ प्रश्न—दुःख सुख किसे होता है? और क्यों होता है? और मरनेके पीछे जीव कहां जाताहै?

उत्तर—दुःखसुख उस जीवको जो नवद्वारमें है उसको होता है कर्मके अनुसार और जीवका गमन आशाके अनुसार होताहै ॥

६ प्रश्न—परलोक क्याहै? सत्यहै या क्या है?

उत्तर—परलोक जहां सत्य शब्दहै ऊपरहै सत्य है आनन्दका भराहुआहै मायाकी हदसे ऊपरहै ॥

७ प्रश्न—नाम क्या है? और कौन नाम सर्वोपरिहै?

और नामनामी अभेदहै या क्या? और शब्द क्याहै? और सबमें उत्तम कर्म कौनहै?

उत्तर—सोहं सत्यनाम है और यही नाम सर्वोपरि है शब्द व्यापक है और एक स्थानी भी है यथाधिकार और सबमें उत्तम कर्म साधु गुरुकी सेवा और सत्संग और नादकी उपासनाहै देखिये प्रथम नादहै पीछे वेद है क्योंकि नादसे वेदकी उत्पत्ति कहीहै अब कलियुग में कर्म नहीं बनसक्ता इस निमित्त कि अब न तो ऐसी अवस्थाहै और न सावकाशी है परन्तु कर्म और युगों में बनसकै या इस युगके लिये जो मार्ग सन्तोंने निकाला है अर्थात् साधुगुरुकी सेवा नामका स्मरण और नाद की उपासना सुगमहै देखिये जैसे बादशाही सड़कें सब बन्दहैं और अँगरेज़ी सड़कें जारीहैं बादशाही सड़कों पर न खानेको मिलता है और न बसने को सराय है और न रक्षा है और अँगरेज़ी सड़कों पर सब कुछ बर्त्तमान है इससे बादशाही सड़कों पर जाना हानि-कारक होताहै और इससे विशेष चैतन्यकी सेवा इतनी बढ़केहै कि हज़ारों वर्षकी जड़की सेवा एक ओर और चैतन्यकी सेवा एक दिनकी बराबर है॥

दो० तीर्थ नहाये एक फल, साधु मिले फलचार।
सतगुरुमिले अनेकफल, कहैं कबीर बिचार॥

शास्त्री ज्ञान विद्याके सदृशहै अनहद शब्दका सु-नना और नामका स्मरण अमल है अमलके बिना विद्यासे क्या लाभ है जैसे बीजक तो पालिया पर धन नहीं मिला तो बीजकसे क्या लाभ हुआ खाली अन-

समुझे तीर्थव्रत पूजासे शिरमारो परन्तु कुछहाथ थोड़े ही आताहै बहुधा मनुष्य इसीको उपासना और भक्ति समझते हैं परन्तु भक्ति और ही वस्तु है और भक्ति कईप्रकार कीहै जो भक्ति नेमसहितहै वह निकृष्ट भक्ति है और जो प्रेमसहित है वह मध्यम है और जो ज्ञान-सहितहै वह पराभक्ति है अपने स्वामी को जलसमान सारे व्यापक देखै और अपने को जलमें हिमसमान देखै वह ज्ञानसहित पराभक्ति है दया, दान, भक्ति के मित्रहैं भूखेको खिलाना महापुण्यहै ॥

दो० पराभक्ति जिनके अचल, पायो पद निर्बान।
उष्णयोगहिमजलहुआ, मिटिगयोआवनजान॥

चौ० शान्तसरोवरमज्जनकीजे। जत की धोती तनपैलीजे॥
ज्ञानअँगौछा मैल न राखो। धर्मजनेऊ सत्य मुखभाखो॥
मस्तकतिलक दयाका दीजे। प्रेमभक्ति का अचमन कीजे॥
जो जन ऐसा कार कमावै। माला कण्ठी सकल सुहावै॥
गायत्री सो जो गणती खोवै। तर्पणसो जो तमक न होवै॥
संध्यासो जो सन्धि पहिचानै। मन पसरे को घटमें आनै॥
ऐसी संध्या मेरे मनमानी। कहुनानक किन गुरुमुखजानी॥

दो० सन्तमतासतनामलख, सहजमुक्तिको पाय।
बृन्दावनजगतरण को, सुरतशब्दसो लाय॥

वैष्णव मतके अनुसार॥

१ प्रश्न—मुक्तिहोना क्या है ? और किस यत्नसे मुक्ति प्राप्त होती है ?

उत्तर—ब्रह्मसाकार गुणातीत के समीपहोना मोक्ष है और मोक्ष उनकी कृपासे होतीहै जब उनकी कृपा होती

है तब यह पूजा जपतीर्थ आदि सुकर्म निष्काम करता है तब मोक्षको प्राप्त होताहै अर्थात् वैकुंठमें वास करता और आनन्द भोगता है और दुःख सब जातारहता है अथवा प्रकृतिसम्बन्ध त्यागपूर्वक शुद्ध सत्य शरीर आविर्भाव मुक्तिहै वैकुंठीशरीरप्रकृति सत्यसे भिन्न सत्य है क्योंकि अनित्य नहीं है ॥

२ प्रश्न—मैं क्याहूं ? और यत्न मेरे या ईश्वरके या प्रारब्ध के आधीन है ?

उत्तर—तू जीवहै, अणुहै, चैतन्य है, इंद्रियोंके साथ मिलकर दुःखी सुखी रहताहै और यह स्वरूप वासना के अनुसार हुआ इन्द्रियों से पृथक् करना और परमात्मा में नवधा भक्ति आदि से मनलगाना यह कर्त्तव्य है सो तेरे और परमात्माकी कृपाके आधीन है जीवकाज्ञान गुण शरीर प्रमाण संकोच विकाशवालाहै॥

नवधाभक्ति के अंग ॥

कीर्त्तन १ श्रवण २ अर्चन ३ वन्दन ४ स्मरण ५ पादसेवन ६ दास्य ७ सखिभाव ८ आत्मनिवेदन ९ ॥

३ प्रश्न—सृष्टिका कर्त्ता कौन है ? कहांहै ? और कैसा है ? और माया क्या है ?

उत्तर—सृष्टिका कर्त्ता ईश्वरहै व्यापकहै और साकाररूप वैकुंठ में भी है माया ईश्वरकी इच्छा है अधिक माया जीव की अविद्या है ॥

४ प्रश्न—जगत् क्याहै ? कहांसे और कब पैदाहुआ ? सत्य है या असत्य है ? स्वप्नसृष्टि और जगत् में क्या भेदहै ? और किसको भासता है ?

उत्तर—जगत् ईश्वरकी इच्छा से पैदाहुआ है तत्त्व सूक्ष्मरूप मायामें रहे स्थूलतत्त्व अनित्य है सूक्ष्मतत्त्व सत्य है जगत् स्वप्नसृष्टि दोनों सत्य हैं पर अनित्यहैं और दोनोंका रचनेवाला ईश्वरहै मनके पाप पुण्यका भोग स्वप्न में होताहै ॥

५ प्रश्न—दुःख सुख किसे होताहै? और क्यों होताहै? और मरने के पीछे जीव कहां जाताहै?

उत्तर—दुःखसुख जीवको होता है देह के साथ प्रीति करने से और वासना के अनुसार जीवका गमन होता है (या मतिस्सा गतिर्भवेत्)॥

६ प्रश्न—परलोक क्या है? सत्य है या क्या?

उत्तर—वैकुण्ठ परलोक है प्रकृतिमण्डलके ऊपर है अनेक प्रकार का है अनादिसिद्धहै और सत्यहै, नित्य है, प्रकृतिमण्डलके अन्दर जो जगत्है सो अनित्यहै ॥

७ प्रश्न—नाम क्याहै? और कौननाम सर्वोपरिहै और नाम नामी अभेदहै या क्या? और शब्द क्याहै? और सबमें उत्तम कर्म कौनहै?

उत्तर—विष्णु भगवान्के सम्पूर्ण मुख्यनाम सर्वोपरि हैं नामसे नामीका लक्ष्य होताहै और नामनामी अभेद सहीहै जब ऐसा नाम कहा कि दूध है तो नाम लेनेसे दूधकाही ज्ञान होताहै पत्थरका नहीं होता वेदने और बहुतसे महात्माओं ने राम नामकी बड़ी महिमा कीहै राम नाम प्रथमतो बोलने में सुगम है राम नाम में ईश्वर और माया दोनों का जपहै (रा) और (म) के अनन्त गुण हैं रामनाम जन्म मृत्यु दोनोंसमय कहा

जाता है और हज़ारों लाभ हैं रामायण में कहा है।

चौ० मेरेमत बड़नाम दुहूते। किये योग जेहि निजवसबूते।

[गुरु नानकशाह का बचनहै]

सुमिरो सुमिरि २ सुखपाओ। कलिकलेशतनमाहिंमिटाओ।
सुमिरोजासुविश्वम्भरएकी। नामजपतअगणितीअनेकी।
वेदपुराणस्मृतिशुद्धआखर। कीन्हे राम नाम इक आखर।
किनकाएकजिसजीवबसावै। ताकी महिमा गनी न आवै।
काँखी एकहि दरश तिहारो। नानक उन संगमोहिं उधारो।
सुखमनि सुखअमृतप्रभुनाम। भक्ति जनों के मन विश्राम।
जाप ताप ज्ञान सब ध्यान। षष्ठशास्त्र सुमिरत विख्यान।
योगअभ्यासकर्मधर्मकिरिया। सकल त्यागवन मध्ये फिरिया।
अनेक प्रकार किये बहु यत्ना। पुण्य दान होमै बहु रत्ना॥
शरीर कटाय होमै कराती। बरत नेम कीन्हें बहुभांती॥
नहींतुल्यरामनामबिचार। नानकगुरुमुखनामजपियेइकबार॥

गुरुमुख होकर एक बारभी नामका कहना बहुत है औरजो गुरुमुख नहीं है तो ख़ैरआफ़ियत बुद्धिमानी से तो हाथ धो बैठे परन्तु तोते कीसी टैं टैं दानेके लालच है अब आनन्द कहां हां रामनाम कहनेवाला तोता उस तोते से अच्छा है जो कुछ नहीं बोलता "कामका ना काजका ढाईसेर नाजका" भला पाहिलेने दाना तो बीना गुरुमुख वहहै जो मन सुख नहीं है इस समयमें ऐसा मनुष्य कहांहै॥

चौ० नाकुछजन्मे ना कुछ मरे। आपन चरित आपही करे॥
जो जो होय सोई सुख माने। भूला काहे फिरै अयाने॥
कौन वस्तु आई तेरे सङ्ग। लिपटरह्यो तिहलोभि पतङ्ग॥

राम नाम जप हृदये माहिं। नानक पतसेती घर जाहिं॥

दो० नवधा भक्ती आदि जो, करै पुरुष चितलाय।
बृन्दाबन वैकुण्ठ में, भोगै सुख अधिकाय॥

श्वासवालोंके मतके अनुसार॥

१ प्रश्न—मुक्तिहोना क्या है? और किस यत्न से मुक्ति प्राप्त होती है?

उत्तर—अपने को जानना मुक्ति है, ज्ञान से जाना जाता है॥

२ प्रश्न—मैं क्याहूं? और यत्न अपने या ईश्वरके या प्रारब्ध के आधीनहै?

उत्तर—तू श्वासहै ब्रह्म समुद्रकी लहरहै प्राण तू नहीं है श्वास और प्राण में बहुत भेद है, तेरे और गुरुके आधीन यत्न है॥ श्वास का हंस आवे और जाय है। सद्गुरु पूरा मिलै तब भेद लखायहै॥

३ प्रश्न—सृष्टि का कर्त्ता कौनहै? और कहांहै? और कैसाहै? और माया क्याहै?

उत्तर—ब्रह्मही कर्त्ताहै और अकर्त्ता भी है जैसे चुम्बक पत्थर उसकी शक्ति मायाहै ब्रह्मभी श्वासका स्वरूप रखता है सब स्थानों पर पवनके समान व्यापकहै परन्तु पवन नहीं है क्योंकि पवन उसको कहते हैं जो चलतीहै और जो आकाश में चेष्टा करने से विदित हो वह ब्रह्महै॥

४ प्रश्न—जगत् कैसे और कहांसे कब उत्पन्नहुआहै? सत्यहै या असत्यहै? स्वप्नसृष्टि और जगत् में क्या भेदहै? और किसको भासताहै?

उत्तर—जगत् कुछहुआ नहीं है भ्रम है और भ्रमही भासताहै जगत् और स्वप्नसृष्टि बराबर है॥

५ प्रश्न—दुःख सुख किसे होताहै ? और क्यों होता है ? और मरने के पीछे जीव कहां जाताहै ?

उत्तर—अज्ञानसे दुःख सुखहै मरने के पीछे आशाके अनुसार देह रखताहै॥

६ प्रश्न—परलोक कहांहै ? सत्यहै या क्या है ?

उत्तर—परलोक कल्पनामात्र है॥

७ प्रश्न—नाम क्याहै ? और कौन नाम सर्व्वोपरिहै ? और नाम नामी अभेदहै या क्या ? और शब्द क्या है ? और सबमें उत्तम कर्म्म कौनहै ?

उत्तर—रामनाम सर्वोपरि है साधु गुरुकी सेवा उत्तम कर्म है॥

दो० श्वास मतेका भेद यह, अजपा जाप करै।
बृन्दाबन जग भरम जो, सहजै आप टरै॥

मुसल्मानोंमें वेदांती सूफ़ीमत के अनुसार॥

१ प्रश्न—मैं क्याहूं ? और यत्न अपने अधीन या ईश्वर के या प्रारब्धके हैं ?

उत्तर—तू कुछ नहीं है और अपने असत्य अपनपौ को दूर करना यही कर्त्तव्य है ऐसा जानना कि ईश्वर के सिवाय और कुछ नहींहै और इसप्रकार भी कहा जा सक्ताहै कि मेरे सिवाय और कुछ नहीं है सबकुछ मैंहींहूं और यत्न अपने स्वाधीनहै और मूल यत्न केवल यह है कि अनात्म अहंताको दूरकरना मस्जिद तैयारकराना बादशाहोंका काम है रोज़ा और निमाज़रखना अप-

राधियोंका काम है हज्जकरना अर्थात् तीर्थाटन करना देशाटवी मनुष्यों का कामहै रोटी खिलाना दर्दमन्दोंका कामहै परहेज़ करना रोगियों का काम है और स्नान करना अपवित्रलोगोंका कामहै इबादत करना बन्दोंका कामहै एकान्तमें रहना क़ैदियोंका कामहै भयभीतरहना लड़कोंका कामहै प्रेमकरना प्रेमीका कामहै सेवाकरना सेवकलोगोंका कामहै। जीवत्वका त्याग मरदोंका काम है बुद्धिमान्‌को एक इशाराही बहुतहै परन्तु स्मरणरहै कि यह साधारण काम नहीं॥

ग़ज़ल—बेख़ुदी[1] तूने यह चासनी[2] पहिले चखाई। किसीआरज़ू[3] के दिलमें नहीं अबरही समाई ॥ १ ॥ न हज़र[4] है न ख़तर[5] है न रज़ा[6] है न दुआ[7] है। न ख़यालबन्दगी[8] है न तमन्नाय[9] ख़ुदाई[10] ॥ २ ॥ न मुक़ामगुफ़्तगू[11] है न महल जुस्तजू[12] है। न वहां हवास पहुंचै न ख़िरद[13] कोहै रसाई[14] ॥ ३ ॥ न मकां है न मकीं है न ज़मांहै न ज़मीं[15] है। दिल बे नवाने मेरे वहां छावनीही छाई ॥ ४ ॥ न विसाल[16] है न हिजर[17] है न सरूर[18] है न ग़म[19] है। जिसे कहते हैं ख़्वाब[20] ग़फ्लत वह नींद मुझको आई ॥ ५ ॥

२ प्रश्न—मुक्तहोना क्याहै और किस यत्नसे मुक्ति प्राप्त होती है?

उत्तर—सबको एक समझना और द्वैतताको भूलना येही मुक्तिहै द्वैतता दूर करनी यही यत्न है॥

अपनपौ का त्याग १ मिष्टान्न २ कामना ३ संदेह ४ डर ५ आशा ६ आशीर्वाद ७ सेवकाई ८ आशा ९ ईश्वरता १० कहनासुनना ११ ढूंढ़ना १२ बुद्धि १३ पहुँच १४ प्रपंच १५ मिलाप १६ वियोग १७ आनन्द १८ दुःख १९ सुषुप्ति २० ॥

ग़ज़ल—जिधर देखताहूं जहां देखताहूं । खुदाई[१] का जलवा[२] मियां[३] देखताहूं ॥१॥ न तन[४] देखताहूं न जां[५] देखताहूं । तुम्हीको निहां[६] और अयां[७] देखताहूं ॥ २ ॥ यह जो कुछ कि पैदाहै सब ऐन[८] हक़[९] है । कि यक-बहरे[१०] हस्ती [११] रवां[१२] देखताहूं ॥३ ॥ अगर कोई जाने जहां[१३] ग़ैर[१४] हक़[१५] है । सो मैं उसको धोखा गुमां देखताहूं ॥ ४ ॥ कहूं किससे राज़े[१६] हक़ीक़त[१७] नयाज़ । यह आलम[१८] सरापा[१९] गुमां[२०] देखताहूं ॥ ५ ॥

जब कि ऐसा कहा कि (वहदहू[२१] लाशरीकु[२२] लाइ-लाह[२३] इल्लिल्लाहु) इससे अब दूसरी चीज़ किसतरह कही जावै इससे (ला इलाह इल्लिल्लाहु) तक बेखुदी और आलममाकूलहै आगे मुहम्मदुर्रसूलिल्लाहु हुई और आलम मनकूलहै लाइलाहइल्लिल्लाह के ये अर्थ हैं कि नहीं है कुछ सिवाय खुदाके यह अद्वैत ज्ञानहै और आगे मुहम्मद अब द्वैत सिद्धहुई ॥

२ प्रश्न—सृष्टिका कर्त्ता कौनहै ? कहां है ? और कैसा है ? और माया क्याहै ?

उत्तर—उत्पन्न करनेवाला और उत्पत्ति एक है जैसे रोशनाई जबतक दवात में है तबतक स्याही कहलाती है और वही जब काग़ज़पर लिखने में आई तो कोई उसको स्याही नहीं कहता उसका नाम लेखहोगया परन्तु वास्तवमें जो लेखहै वह सब स्याहीही है इससे

ईश्वरता १ प्रकाश २ ज़ाहिर ३ शरीर ४ प्राण ५ गुप्त ६ प्रकट ७ यथार्थ ८ सत्य ९ नदी १० जिंदगी ११ बहना १२ प्रपंच १३ भिन्न १४ सत्य १५ भेद १६ असली १७ प्रपंच १८ नखशिखपर्यंत १९ मिथ्या २० एक अद्वैतता २१ नहीं मिला हुवा है २२ सिवा ईश्वर के २३ ॥

सब एकही वस्तुहै वह उत्पन्न करनेवालाहै वही उत्पत्ति माया अर्थात् ईश्वरताभी वहीहै अच्छा बुरा भी वहीहै ॥

शेर—इसे ब्राह्मण और उसे शेख़ मानैं।
यह आपुस का झगड़ा यहां देखता हूं ॥

ग़ज़ल—यारको हमने जाबजा देखा। कहिं ज़ाहिर कहीं छिपादेखा ॥ कहिं मुम्किनहुआ कहीं वाजिब । कहिं फ़ानी कहीं वक़ादेखा ॥ कहिं बोलावले वह कहिके अलस्तु। कहिं बन्दा कहीं ख़ुदादेखा ॥ कहिंबेगानह बस नज़र आया। कहिं सूरतसे आशनादेखा ॥ कहिहै बादशाहतख्तनिशीं। कहिं कासा लिये गदादेखा ॥ कहिं रक़्क़ास और कहीं मुतरिब । कहिं वह साज़ बाजता देखा ॥ कहिं वह दरलिबास माशूक़ां । बरसरेनाज़ और अदादेखा ॥ कहिं आशिक़ नयाज़की सूरत । सीनःबिरियां व दिलजलादेखा ॥

४ प्रश्न—जगत् कैसे ? और कहांसे ? और कब उत्पन्न हुआ ? सत्य है या असत्यहै ? स्वप्न, सृष्टि और जगत् में क्या भेद है ? और किसको भासता है ?

उत्तर—सब एकही है ॥

५ प्रश्न—दुःख सुख किसे होताहै ? और क्यों होताहै ? और मरने के पीछे जीव कहां जाता है ?

उत्तर—जोहै वहीहै अपने कर्मों के अनुसार स्वरूप रखताहै ॥

६ प्रश्न—परलोक कहांहै ? सत्य है या क्या ?

उत्तर—स्वर्ग और नरक द्वैतताके भ्रममें सत्य है ॥

७ प्रश्न—नाम क्याहै ? और कौननाम सर्वोपरिहै ?

और नाम नामी अभेद है या क्या ? और शब्द क्या है ? और सब में उत्तम कर्म कौन है ?

उत्तर—दो समझने में ईश्वरका नाम बड़ा है सन्त महात्माओंकी सेवा उत्तम कर्म है ॥

दो० मत सूफ़ीका तुमलखो, निर्गुण सरगुणएक।
बृन्दाबन मतवेदांत जो, जीवब्रह्म दोउएक ॥

ईसा और मुसलमानीमतके अनुसार ॥

१ प्रश्न—मुक्त होना क्याहै ? और किस यत्न से मुक्ति प्राप्त होतीहै ?

उत्तर—सदैवकी प्रसन्नताही मुक्तिहै परन्तु उसका ठीक ठीक वर्णन नहीं होसक्ता कि वह प्रसन्नता किस प्रकार की है परन्तु प्रसन्नता है और ईश्वरकी आज्ञा प्रतिपालन करना जो इंजीलमें लिखी है और ईसामसीह पर विश्वास लाना कि वह हमारा अपराध क्षमा करानेवाला है जिसने हमारे अपराधों के बदले में शूलीपर मनुष्योंके सदृश दुःख सहा ईसाई मतवालोंको प्रथम इंजीलपर विश्वास लाना बहुत योग्य है कि इंजील ईश्वरके वचनहैं प्रलयके दिन सूर अर्थात् बांसुरी बजाई जायेगी कि सब क़बरों से उठकर ईश्वर के सम्मुख जायँगे जिन्होंने उत्तम कर्म्म कियेहैं यथा भूखे प्यासे को दिया है या पड़ोसी की सहायता की है या पराई स्त्रीगमन या चोरी या बहुत शराब नहीं पीहै और ईश्वरकी प्रार्थना कीहै और ईसापर निश्चय लायेहैं वह स्वर्ग में सदैवके रहनेको भेजजायँगे वह मुक्तहुये जिन्होंने इस के विपरीत काम कियाहै वह सदैवके लिये नरकको भेजे

जायँगे परन्तु हम यह प्रणकरके नहीं कहसक्के कि स्वर्ग और नरक और जीव सदैव बनेरहैंगे ईश्वर को सामर्थ्यहै जब चाहै सबको नाश करदे चाहे सदाको बना रक्खै अगले अपराध जो ईश्वर की आज्ञाभंग मनुष्य ने किये उसको ईसामसीहने शूलीके दुःखपाने के बदलें क्षमा करायेहैं सो किसी और दूसरे ने ऐसा नहीं किया है सो और मतवालों के गुनाह पहिले न क्षमाहोंगे न मुक्तहोंगे मुसलमानोंके जवाब ईसाईमतके सदृशहैं केवल इतना अन्तरहै कि वह पैग़म्बरको खुदाका भेजा हुआ कहते हैं और पैग़म्बर खुदाके रूबरू क़यामतके दिन अपनी उम्मतको बख़्शावेंगे इस हेतुसे पृथक् जवाब नहीं लिखे और इंजील के स्थानापन्न कलामुल्लाह और हदीसके हुक्मकी तामील को कहते हैं और शराब पीना इनके मतमें अत्यंत निषेधहै॥

२ प्रश्न—मैं क्याहूं ? और यत्न अपने आधीन या प्रारब्ध या ईश्वरके है ?

उत्तर—तुम देह और जीव अर्थात् रूह मिले हुयेहो और जीव और देह दोनों ईश्वरके उत्पन्न कियेहुयेहैं ईश्वरके अंश नहीं हो परन्तु यह नहीं कहसक्के कि जीव किस प्रकार उत्पन्न हुआहै और कैसाहै परन्तु सत्य और असत्यकी विवेचना जीव करसक्काहै और यत्न तुम्हारे आधीनहै और ईश्वरकी अनुग्रह भी चाहिये। जैसे बाज़े शास्त्रों से पायाजाताहै कि हरवस्तुका तत्त्व बीजरूप होकर अनादिहै परन्तु ईसाई मतमें यह बात नहीं प्रमाणिक है किन्तु यह बात कि किसी तत्त्व

के बिना ईश्वरने अपनी सामर्थ्यसे सब वस्तु उत्पन्न की हैं कुछ उपादानकारणकी ईश्वरकी शक्तिके आगे आवश्यकता नहीं है ॥

३ प्रश्न—सृष्टिका कर्त्ता कौनहै ? और कहां है ? और कैसा है ? और माया क्याहै ?

उत्तर—ईश्वरने सृष्टि उत्पन्न की है और वह सौरहै। इससे अधिक कुछ नहीं कह सके माया ईश्वरकी सामर्थ्यहै पहिले ईश्वरने आकाश और पृथ्वीको उत्पन्न किया फिर आज्ञा हुई कि प्रकाश उत्पन्नहो प्रकाशहुआ अन्धकार और प्रकाशमें अन्तरहुआ और पशु, पक्षी, जीव उत्पन्न हुये और ईश्वरने कहा कि मनुष्य हमारे स्वरूप का उत्पन्नहो और जलचर और जंगली और वायवी जीवोंपर हुकूमतहो तब आदम और स्त्री हव्वा उत्पन्न हुई ईश्वर ने एक बाग़ अदनस्थान में तैयार किया और उनको आज्ञादी कि सब वृक्षोंके फलखाना पर एक गेहूं का वृक्ष जिसके खाने से अच्छे बुरे का ज्ञान होता है उसको मतखाना परंतु एक सर्प्प ने हव्वा को बहकाकर उस वृक्ष का फल खिलाया और हव्वाने आदम अपने पतिको खिलाया एकदिन खुदा बाग़ में आये और इस आज्ञाभंगतापर आदम और हव्वाको बाग़में से निकालकर शापदिया कि स्त्री को सन्ततिहोने का क्लेश और पुरुषको परिश्रमकरना होगा तब पेटभरेगा (मुसल्मान यह नहीं कहते कि खुदा बाग़में आये और आदमी खुदाकी सूरतका है)॥

४ प्रश्न—जगत् कैसे ? और कहां से ? और कब पैदा

हुआ ? सत्य है या असत्यहै ? स्वप्नसृष्टि और जगत्में क्या भेद है ? और किसको भासता है ?

उत्तर—ईश्वरकी रचनामें हमको क्या गम्य है उसके गुप्तभेदको हम किस प्रकार पासक्तेहैं हम अपराधी हैं थोड़ी बुद्धि पाई है । तुमको यह जगत् भासता है और सत्य है संसार का सब कारख़ाना ईश्वरकी आज्ञा से छःदिनमें तैयार हुआहै । ईश्वर देखता भी है बोलता भी है पापीपर क्रोध भी करताहै और शाप भी देताहै ॥

५ प्रश्न—दुःख सुख किसे होता है ? और क्यों होता ? और मरने के पीछे जीव कहां जाताहै ?

उत्तर—दुःख सुख तुमको होताहै और ईश्वरकी इच्छा यही है उसमें हमको क्या गम्य है हमको उससे केवल दया और क्षमा मांगनी चाहिये और मरनेके पीछे जीव नींद में रहताहै प्रलयके दिन किसी प्रकारकी देह तैयारहोगी और जीव देह मिलकर कर्म्म के अनुसार दण्ड पावेंगे परन्तु यह बात केवल ईसाई मतवालों के लिये है और मतके विषय में नहीं कह सक्ते कि किस प्रकार न्यायहोगा परन्तु मुसलमानलोग इसको नहीं मानते वह प्रलयके दिन सबका न्याय एक तरह होना कहते हैं और ईसाई और मुसलमानी मत में आवागमन नहीं मानते प्रतिदिन नवीनजीव दुनियांमें भेजे जातेहैं और जैसी ईश्वरकी इच्छा होती है वहां वह जीव आकर उत्पन्न होताहै और ईश्वरकी इच्छानुसार दुःख सुख पाता है और जीवकी सामर्थ्य नहीं है इसका ठीकठीक विचार करले किसी २ को दुःख और

किसीको सुख कैसे दिया इस भेदको ईश्वरही जाने॥

६ प्रश्न—परलोक कहां है ? सत्यहै या क्याहै ?

उत्तर—स्वर्ग और नरकहै और सत्यहै परन्तु स्थान नहीं बतासक्ते॥

७ प्रश्न—नाम क्याहै ? और कौन नाम सर्वोपरि है ? और नाम नामी अभेदहै या क्या ? और शब्द क्या है ? और सबमें उत्तम कर्म्म कौनहै ?

उत्तर—ईसामसीह और खुदाका नाम बड़ाहै और मुसल्मानी मतमें सबसे बड़ानाम अल्लाह का है और सबसे उत्तम कर्म्म निष्काम बन्दगीहै॥

दो० ईसाई और मुहमदी, आवागमन न ठान।
बृन्दाबनयहअसकह्यो,सबजीवनयेपहिचान॥

नास्तिक मतवाले जो कर्त्ता नहीं मानते
उनके मतके अनुसार॥

१ प्रश्न—मुक्त होना क्याहै ? और किस यत्नसे मुक्ति प्राप्त होतीहै ?

उत्तर—बन्धन से छूटनेको मुक्ति कहतेहैं बन्धन केवल यह बात है कि अनेक प्रकारके वचनों में फँसा रहना जब श्रेष्ठ गुरु मिलै तब उसके वचनरूपी बन्धनसे छूटे जब मुक्तिहोय अब गुरुमतका पाना यत्नहै वह गुरुमत जब आवै जब मनमति छोड़े मनमति क्याहै कि ब्रह्म जीव ईश्वर जगत् मन से उत्पन्न होताहै शास्त्र कहता है कि ब्रह्म जगत्का बीजहै जो बीजका त्याग ना करोगे तो वृक्ष कैसे अलग होसक्ताहै इसकारण ब्रह्म और ईश्वर जगत् दोनोंका त्यागकरो और शास्त्र ईश्वरको

प्रेरक कहताहै सो ईश्वर दीखता नहीं और असल प्रेरक को समझता नहीं। कि कौनहै असल प्रेरक वचन को कहते हैं वचन सुनकर ईश्वरको खोजताहै और ईश्वर कुछ है नहीं इससे वचनही प्रेरकहै जब वचन का बन्धन टूटै तब मुक्कहोय॥

२ प्रश्न—मैं क्या हूं? और यत्न अपने आधीन या प्रारब्ध के या ईश्वर के है?

उत्तर—तुम जीव और रूपहो और जीव और रूप एक है जैसे सूर्य और सूर्यकी किरण, और यत्न तुम्हारे आधीन है जीव आप कुछ भिन्न वस्तु नहींहै चारतत्त्व के मिलनेसे एक स्वरूप बनजाताहै वह जीवहै सो जीव तत्त्व भिन्न २ होने पर जातारहा जैसे तेल, बत्ती, दिया, अग्नि मिलता है जब किसी चीज़ का वियोग हुआ प्रकाश जाता रहा॥

३ प्रश्न—सृष्टिका कर्त्ता कौन है? और कहां है? और कैसा है? और माया क्या है?

उत्तर—सृष्टिका कर्त्ता कोई नहींहै आप अनादि काल से एकही चली आतीहै तूने ऐसा सुनाहै कि कोई कर्त्ता है परन्तु कर्त्ता कोई मिला नहीं माया कुछ नहीं है॥

४ प्रश्न—जगत् कैसे? और कहांसे? और कब पैदा हुआ? सत्यहै या असत्यहै? और स्वप्नसृष्टि और जगत् में क्या भेद है? और किसको भासता है?

उत्तर—जगत् आपही अनादि कालसे चलाआता है जलसे जल मिट्टीसे मिट्टी और इसीप्रकार सब उत्पन्न

होते रहतेहैं और नाश होजाते हैं उपजना नाशहोना इसीका नाम जगत्है॥

५ प्रश्न—दुःख सुख किसे होताहै ? और क्यों होताहै ? और मरनेके पीछे जीव कहां जाताहै ?

उत्तर—जगत्ही दुःखसुखहै और जीव ऐसेही मरते और उत्पन्न होतेरहते हैं आवागमन नहीं होता॥

६ प्रश्न—परलोक कहांहै ? सत्यहै या क्या ?

उत्तर—परलोक कुछ नहीं है॥

७ प्रश्न—नाम क्याहै ? और कौन नाम सर्वोपरि है ? नाम नामी अभेदहै या क्या ? और सबमें उत्तमकर्म्म कौनहै ?

उत्तर—सबनाम जगत्केहैं गुरुमत सबमें बड़ा है और गुरुकी सेवा सब कर्मोंसे उत्तमकर्म है॥

दो० नहिंकर्त्ता कोइ जगतका, सिरजै विनशै आप।
बृन्दाबन यह नासती, कह्यो पुत्र बिन बाप॥

जैनधर्म के अनुसार॥

१ प्रश्न—मुक्तहोना क्या है ? और किस यत्नसे मुक्ति प्राप्त होती है ?

उत्तर—कर्मके बन्धनसे छूटना मुक्तिहै परन्तु मुक्ति उस समय होगी जिससमय काल, ईश्वर, प्रारब्ध, स्वभाव, आत्माका परिणाम संयुक्तहोकर वर्त्तमानहोंगे अब पंचमकालहै इस समय मुक्ति नहीं होसक्ती यत्न यहहै कि कुदेव और कुगुरु कुधर्मका त्याग उसको मिथ्यात्व कहते हैं जीवकामारना, झूठबोलना, चोरीकरना इत्यादिकका त्याग इसको अवृति कहतेहैं क्रोध, मान, माया,

लोभ इनके त्यागको कषाय कहते हैं मन, वचन, काया का निरोधकरना इसको योग कहतेहैं इन त्यागोंका अभिप्राय यहहै कि रागद्वेषका अत्यंत अभाव होजाय सप्तभंगमत जैनका है जब आठप्रकारका कर्म केवल ज्ञानसे नाशहोय जब जीव ऊपर चढ़कर मोक्षशिला पर जायहै यह मुक्ति है ॥

२ प्रश्न—मैं क्याहूं ? और यत्न अपने आधीन या प्रारब्धके या ईश्वर के है ?

उत्तर--तू अजर अमर संयोगी वियोगी यत्न तेरे और प्रारब्धके आधीन है जीव असंख्यात परदेश-वाला है ॥

३ प्रश्न—सृष्टिका कर्त्ता कौनहै ? और कहांहै ? और कैसाहै ? और माया क्याहै ?

उत्तर—सृष्टि चार प्रकारकी है अनादि अनन्त अर्थात् आदि अन्त करके रहितहै १ आदि है और अन्त नहीं है २ आदि नहीं अन्त है ३ आदिभीहै और अन्तभी है ४ ॥

सृष्टि और कर्त्ताका मानना अधिकारी के प्रति है चारि परमाणु से जगत् होताहै नैयायिकों की रीतिके अनुसार सृष्टिकी उत्पत्ति ईश्वरकी इच्छासे कहीहै ॥

४ प्रश्न—जगत् कैसे ? और कहांसे ? और कब उत्पन्न हुआ ? सत्यहै या असत्यहै ? स्वप्नसृष्टि और जगत्में क्या भेदहै ? और किसको भासताहै ?

उत्तर—सत्यभी है और असत्यभी है अधिकारी के प्रति और संयोगी जीवको भासताहै ॥

५ प्रश्न—दुःख सुख किसे होता है ? और क्यों होता है ? और मरनेके पीछे जीव कहां जाता है ?

उत्तर—अज्ञानी को संसारमें शुभअशुभ कर्म्मके अनुसार जन्महोगा और जो पूरा ज्ञानी नहीं है कुछ अज्ञान रहगया उसको वैकुण्ठ मिलैगा ॥

६ प्रश्न—परलोक कहां है ? सत्यहै या क्या ?

उत्तर—परलोक सत्य भी है और असत्य भी है अधिकारीप्रति ॥

७ प्रश्न—नाम क्या है ? और कौन नाम सर्वोपरि है ? और नाम नामी अभेद है या क्या ? और सबमें उत्तम कर्म्म कौन है ?

उत्तर—सबसे उत्तम कर्म्म दया, दान, धर्म्म और पारसनाथकी पूजाहै आत्मा देहसे भिन्नहै पर देहके बराबरहै जो बड़े शरीरका जीव छोटे शरीर में आया तो उतना जीव घटगया अर्थात् संकोच होगया जैसे गर्म पाहन पर बूंद संकोच होजाती है और ठण्ढेपर फैल जाती है ॥

दो० जैनधर्म असचीन्हिआ, कलियुग मुक्ति न होय।
बृन्दाबन जीवन दया, कहां धर्म्म मुख सोय ॥

प्रकटहो कि वेदांतकी चर्चामें भी कहीं २ बाज़े मतों का वर्णन आया है कर्म उपासना और ज्ञानकी गति भली प्रकार वहां विदित होगी ॥

दो० वहुतपन्थ अरु मतनके, लिखे जवाब सवाल।
वृन्दाबन चितसों पढ़ै, मिलै मुक्ति तत्काल ॥

अथ ग्रन्थकर्त्ता का सिद्धान्त ॥

छंद—बिन रूपरेखा सारपद जिसको कहा पूरण सभी। यह बूझि जिनको मिलगई पानाथा सो पाया अभी ॥ उस एकमेंधुन जो रही सूक्ष्मस्वरूपी लेखिये। मनचित सभी अस्थूल उत्पतिरूप अब जो देखिये ॥ स्थूलसूक्षम रूप पुनि सबको अनादीजानिये । नित्य उत्पति जस मनुष्य की जगत ऐसे मानिये ॥ शब्दके अभ्यास से वृत्ती एकागर कीजिये । चारसाधन जो कहे सो तुम सुगमसे लीजिये ॥ देखो जो वृत्ती साधके फिर अन्तमें परकाशहै । जबलग न यह थिरहोयगी पावै नहीं अवकाशहै ॥ सत्सङ्गसेवा साधुकी अरु नामका जपजापहै । बुद्धि निर्मल और निश्चल देखिये सब आपहै ॥ ज्ञान के उपरान्तभी जीवन्मुक्ति सुखकारने । वृत्ती एकागर नादसे सुख सबलिया है साधने ॥ हंसनाद जो है उपनिषद महिमा शब्दकी गारही । सन्तोंका यह सिद्धान्त है वृन्दाबन सत्यसत्यकही ॥

अलिफ़नामा ॥

अलिफ़ एकहै साईं मेरा । सबके भीतर करै बसेरा॥ सानी[1] उसकाहुआनहोवै । मिलै उसे जो आपको खोवै ॥ १ ॥ बे बुनियाद[2] दुई[3] तुमजानो। गदा[4] शाह[5] में दो नहिं ठानो ॥ हर एक नफ़्स[6] है ज़िक्र[7] उसीका । वृंदावन नहिं और किसीका ॥ २ ॥ पे पकड़ो तुमपैर पिया के। है क्या मुमकिन[8] वस्फ़[9] हूं जाके ॥ पंद[10] पीरकी रासिख[11] प्यारे । वृन्दावन कुल[12] कार[13] सवारे ॥ ३ ॥

मजाज़ीय दूसरा १ बिना जड़ २ [illegible] ३ फ़क़ीर ४ बादशाह ५ दम ६ ध्यान करना ७ होना ८ खूबी ९ उपदेश १० सत्य ११ सब १२ काम १३ ॥

ते तेराहै मुरशद[१] कामिल[२]। उसके हुक्मपर हो तू आ-
मिल[३]॥ शरै[४] बताई तुमको रासिख़। तरक कराये
क़ारथेनासिख़[५]॥४॥ से साबित[६] रहोक़दम[७] क़दमपर।
ख़याल तू रखले अपने दमपर॥ आज़म[८] इस्म[९] इसी
को जानो। सुनोकानदे पूरामानो॥ ५॥ ज़मजीम जहां
चाहै वह हाज़िर[१०] पैदा[११]। पिन्हां[१२] मख़फ़ी[१३] माहिर[१४]
वृंदावन और काबा[१५] उसीका। सही[१६] जान नहिं दावा
किसीका॥ ६॥ चे चून[१७] चरासे न्यारालेखा। हांनाहीं
दोनों बिचदेखा॥ बजुज़[१८] ख़मोशी[१९] नहिंकुछ कहना।
रज़ा[२०] जो उसकी उसीपैरहना॥७॥ हे हदीस[२१] पर क़ा-
दिर[२२] हो रे। हस्बमुनासिब[२३] मनसब[२४] लोरे॥ सख़ुन[२५]
जो बोलो हो वह सच्चा। छोड़ो कलमा[२६] सख़्त[२७] और
कच्चा॥ ८॥ खे ख़राब[२८] यह दुनियां दूं[२९] है। मक्कारा[३०]
है पुर[३१] अफ़सूं[३२] है॥ दाम[३३] में इसके गर[३४] तू आवै।
फ़सकर मंज़िल[३५] दोज़ख़[३६] जावै॥९॥ दाल दिला[३७]
दम[३८] उसका भरिये। कर्म[३९] जहां तक होसके करिये॥
इस्से बेहतर[४०] और नहीं है। वृंदाबन यह चश्मा[४१]
कहीं है॥ १०॥ ज़ालज़लील[४२] कराय जहालत[४३]।
वनीहुई सबखोय असालत[४४]॥ इनकी सोहबत[४५] से तू
बचरे। जिन्हें नहीं मालूम अलिफ़ वे॥ ११॥ रे रईस[४६]

गुरू १ पूरा २ आज्ञामाननेवाला ३ उपदेश ४ बुरे ५ पक्के ६ पग ७ बड़ा ८ नाम ९ मौजूद १० प्रकट ११ छिपा १२ ढँकाहुआ १३ खुलाहुआ १४ तीर्थमुसल्मान १५ सतका १६ माया १७ सिवाय १८ चुप १९ हुकम मौज २० पुराण आदिक २१ काबलवान् २२ वाजबी २३ अधिकार २४ बात २५ पद २६ कड़ा २७ बुरी २८ अच्छी २९ झूंठी ३० भरी ३१ जादू ३२ जाल ३३ जो ३४ स्थान ३५ नरक ३६ मेरेमन ३७ भरोसा ३८ दया ३९ भला ४० स्रोत तालाव ४१ तुच्छ ४२ अज्ञान ४३ पहलास्वरूप ४४ संग ४५ चौधरी, अमीर ४६ ॥

क़ैसर[१] सुल्ताना[२]। ज़ोरावर[३] अक़लीम[४] सिताना[५]॥ आख़िरकार[६] उसी से मतलब। होगे इकदम में सब ग़ायब[७]॥ १२॥ जे ज़रफ़[८] निगाह[९] उन्हींकी होगी। माबूद[१०] इबादत[११] मेंहैं योगी॥ ज़ाहिर में गरदुनियादार। खुदाकरेगाबेड़ापार॥ १३॥ जे ज़वाल[१२] हरशै[१३] में होगा। ग़ाफ़िल[१४] मस्त[१५] तु मैं[१६] में होगा॥ खोवेगा तू मिलीहुई को। पछतावे फिररहानइकदो॥ १४॥ सीन शरीर[१७] सल्तनत[१८] शाही। ऐश[१९] सरूर[२०] मरातिबमाही[२१]॥ औज[२२]करामत[२३]जाहो[२३]हशमत[२३]। मिलै तुझै जो राखै क़िस्मत [२४]॥ १५॥ सीनशुरू[२५] परकल्मा रबका[२६]। इससे काम हुआहै सबका॥ बेख़ुद[२७] क्यों हो ज़रा तो सोचो। यही वक़ है तुम कुछ बो दो॥ १६॥ स्वाद सनमू[२८] से चाहो मिलना। रज़ाय मुरशिद से नहिं हिलना॥ किसी अमर[२९]में इजाज़त[३०] देवै। बजा[३१] लाओ वो जो कुछ कहवै॥ १७॥ ज़्वाद-ज़मीर[३२] उसी से लो तुम। दिल अपना दिल्दार[३३] को दो तुम। मरतबा[३४] अज़हद[३५] अफ़ज़ूं[३६] हो। बूक़लमू[३७] और गूनागूं[३७] हो॥ १८॥ तो ताहिर[३८] है ज़ात[३९] खुदाकी। सक्लएकसे एकजुदाकी॥ सूरत सीरत[४०] उस्कीवा[४१] है। आख़िरकार तो वही ख़ुदा

बादशाह १ बादशाह २ बलवान् ३ देशखण्ड ४ जीतना ५ अन्तको ६ नाश ७ गहरी ८ दृष्टि ९ बन्दगीवाले १० बंदगी ११ अवनति १२ पदार्थ १३ भूलाहुआ १४ मतवार १५ मदिरा १६ तख्त १७ राजाई १८ भोग १९ आनन्द २० राजाई के निवास २१ बड़ाई २२ ऐश्वर्यता २३ भाग २४ आरम्भ २५ ईश्वर २६ भूला हुआ २७ प्यारा २८ काम २९ आज्ञा ३० करो ३१ भेद ३२ प्यारा ३३ अधिकार ३४ बेअन्त ३५ अधिक ३६ भांति भांति ३७ शुद्ध ३८ स्वरूप ३९ स्वभाव ४० एकांदाई ४१॥

है ॥ १९ ॥ जो ज़ाहिर औ़र बातिन[१] इकसां[२]। चल तू राह ख़ुदा पर तरसां[३] ॥ गर तू ऐसा आपको रक्खै। मज़ा[४] ज़ीस्त[५] का तूही चक्खै ॥ २० ॥ ऐन ऐब[६] तफ़ाहुस[७] मतकर। सरज़द[८] होय सभीसे अक्सर ॥ मतलबयेही यारकी यारी। ई[९] नुक़्ते[१०] दरदिल[११] ख़ुददारी[१२] ॥ २१ ॥ ग़ैमग़रूर[१३] न कर तू प्यारे। मुअ़ल्लिम[१४] उलमल-कूतसे रहो तुम न्यारे ॥ तौक़[१५] मलामत[१६] लातन पाया। किब्र[१७] का कल्मा आगे आया ॥ २२ ॥ फ़ेफ़ि-तना[१८] और फिसाद[१९] किसूसे। बचारहे तू जंगओज़ू से ॥ ज़बानशीरीं[२०] से तुम बोलो। चाहे फ़ील[२१] को बाल से खोलो ॥ २३ ॥ क़ाफ़ क़रार जो करते बेहतर। अदा[२२] करो तुम मुन्सिफ़[२३] होकर। मददग़ैब[२४] से पावो प्यारे। दुश्मन[२५] दूर होयँगे सारे ॥ २४ ॥ काफ़ करामत अज़्मत[२६] लीजै। रियाज़त[२७] और सख़ा-वत[२८] कीजै ॥ मोहताजों[२९] को चाहिये देना। तुझे चाहिये नामका लेना ॥ २५ ॥ गाफ़गिला और शिकवा करना। बेहूदा बेफ़ायदेबकना ॥ रीबत[३०] चुग़ली[३१] और नम्मामी[३२]। करपरहेज़[३३] ये है बदनामी ॥ २६ ॥ लामलबों[३४] परनाम इलाही[३५]। दिलकी दूरहोय सब स्याही[३६] ॥ गोस[३७] अयन[३८] से सुनो वा देखो। कैसा दिल्वर[३९] सदा[४०] है पेखो ॥ २७ ॥ मीममुस्तकिल[४१]

अन्तर १ अभेद २ भयसहित ३ स्वाद ४ जीना ५ अवगुण ६ ढूंढ़ना ७ उत्पत्ति वारम्बार ८ यह ९ बात १० अपने दिलमें ११ रक्खे १२ अहंकार १३ काल १४ माला १५ बुराई १६ म्लेच्छता १७ झगड़ा १८ लड़ाई १९ मीठी २० हाथी २१ पूरा करो २२ न्यायी २३ परलोक २४ बैरी २५ बड़ाई २६ स्मरण २७ दया दान २८ कंगाल २९ बुराई ३० पीठपीछे बुराई ३१ चुगली ३२ बचाव ३३ होठों ३४ ईश्वर ३५ कलौंस ३६ कान ३७ सति ३८ प्यारा ३९ आवाज़ ४० एकके ४१ ॥

राह खुदापर। रहोखुदारा खुदा है रहवर ॥ पावोगे तुम इलहागैबी[१]। बहुतखूब लै शायेरैबी ॥ २८ ॥ नून निगहबां[२] खालक़[३] सबका। हरकोई राखै आसरारब का ॥ क्यों नहिं ढूँढ़ो उसको प्यारे। वृन्दाबन दशबार पुकारे ॥ २९ ॥ वाव वही[४] नाज़िल[५] है उनको। हुक्म खुदा है मुक़द्दम जिनको ॥ ऐसे शख़्स[६] मुकर्रिब[७] बारी[८]। हुये अज़ीज[९] ज़खुश[१०] किरदारी ॥ ३० ॥ हे होश करो तो ध्यान में आवै। दुईजाय फिर वही रहावै ॥ वृन्दाबनकी अरज़ यही है। जो कुछ है सो वही वही है ॥ ३१ ॥ लाम अलिफ़ लाइल्लह[११] वोहै। बहर कैफ़[१२] मालिक हर दो है ॥ ये दुनिया दोरोज़की मानो। क़ायम एक खुदाही जानो ॥ ३२ ॥ हमज़ा हमराहै कुछ नाहीं। है उस्को जो सबकेमाहीं ॥ मेरा तेरा ये दुखदाई। बिन समझे सुख कबहुँनपाई ॥ ३३ ॥ ये याद इब्तिदा[१३] कीजे। क़तरा[१४] आब[१५] येहां सुनलीजे ॥ आखिरकार इन्तहा[१६] आई। बिनायाद दुर[१७] आब[१८] गँवाई ॥ ३४ ॥ वड़ी ये यही यादहै दिल में। तेरानाम है आबो[१९] गिल[२०] में ॥ वृन्दाबन जो पढ़ै अलिफ़ बे। खालक़[२१] उस्को रहम अतादे[२२] ॥

शब्द—होली ॥

होलीआई मोको भाई रामदोहाई पियामिलिहैं। मनोकामना पूरण होई साईजीसे जीमिलिहैं ॥ हँसहूं

आकाशवाणी १ रक्षक २ पैदा करनेवाला ३ उतरे ४ बढ़कर ५ मनुष्य ६ निकटवर्ती ७ ईश्वर ८ प्यारा ९ सुकर्म १० नहींकुछ सिवा ईश्वरके ११ सबभांति से १२ पहिली १३ बूंद १४ पानी १५ अंत १६ मोती १७ झलक १८ पानी १९ माटी २० ईश्वर २१ दयाकरे २२ ॥

खेलहूं करहूं ठठोली बालम पियारेजी मिलि हैं ॥ दर्शन से भर्म भयनहीं मुझको सद्गुरुरामजी पूरण मिले हैं ॥ बृन्दाबन बलिहारी पियाकी आपसे आप आपसे मिलिहैं ॥

होली–बृन्दाबन ऐसीहोलीखेल जासेहोवैपियासंगपूरामेल॥

टेक–लगनलगी जैसे तियातेल । सुरतशब्द मिल करतकेल १ असमिलिहोयँदोनोंएकरंग । येहीराहरहे सदासंग २ लखयोजनसुखइंद्रसेबढ़के। कामधेनुकलप-बृक्षसे चढ़के ३ चिंतामणिसे अधिक अमोला। सांच बचनबृन्दाबनबोला ४ ॥

शब्द–रागकाफ़ी ॥

सद्गुरुरामकहो मेरेप्यारे रहोसबमें और सबसे न्यारे ॥ पापकटैभर्मदोषमिटै उतरैशिरसेभारे । होय सुनोजसफूलसोहावनहोजनजनकेदुलारे॥ आनँदकंद अमीरस बरसै देखो नयनउघारे। बृन्दाबन जो सद्गुरु प्यारे सद्गुरुरामअधारे ॥

शब्द–सद्गुरु रामजपै मेरा जीया ॥

टेक–बलिहारी बलिजाउँ चरण पर जिन यह प्रकट किया। सद्गुरु मेरे सबबिधि पूरण नीको दानदिया॥ तनमनधन गुरुहीपरवारों प्रभुरस प्रेमपिया। बृन्दाबन गुरुचरण जो छांड़ा अटल न नाम लिया ॥

शब्द–मुझको कहांकहांढूंढै मैंतो तेरेपासहूं । ना वैकुण्ठधामहै मेरा नाबासी कैलासहूं॥ब्रह्मलोकतेहीबिलगाना सबमें मिला पासहूं। जो देखा वोहीदेखा पूरण ज्यों अकाशहूं। बृन्दाबन विचार कहै उसीका मैं ख़ासहूं ॥

शब्द—हिंडोला ॥

हिंडोला झूलै सद्गुरुराम। प्रेमकीडोरी प्रीतिसों बटके लटकाई निजधाम १ अनहदनादकी पैंगबढ़तहै लखलख गावत नाम २ साधुसंग असझूला झूलै होवै पूरणकाम ३ वर्षाऋतु झनकार शब्दकी बृन्दाबन कहँ धाम ४ ॥

शब्द—हिंडोला ॥

हिंडोला झूलत लेत नईनइ तान। गावत सन्त सिद्ध साधक साधु होत निर्बान १ तान तनानन झन झन झनकत सुनसुन पुलकत प्रान २ सब उजियारा गगन उजियारा उदयचन्द्र और भान ३ बृन्दाबन लखरूपअपारा लाभ रहा गइहान ४ ॥

शब्द—प्यारेमन ढूंढ़ साईं अपना ॥

टेक—जाग्रत जगत माया कञ्चन धन ये सब है स्वपना १ नेती धोती किरिया पूजा पञ्चअग्नि में तपना २ चलते फिरत करत तीरथब्रत अन्तमाटीमें खपना ३ ढूंढ़तफिरतफेर नहिं पाया सीधा रस्ता अपना ४ युवागई और बृद्धभयो है अङ्गअङ्ग भयो कपना ५ अवहूं चेत मत फिरै बावरे घट अपनेको मथना ६ गुरुकृपा बृन्दाबन पाया अलख अलख लख जपना ७ ॥

रेखता—समझलो बूझलो प्यारे रहोनहिं नामसे न्यारे ॥

टेक—भरोसा देह मत राखो। अमीरस नाम का चाखो॥ सनेही शब्द सुरत कीजै। पियाला प्रेमकापीजै॥ भजन विन बहुत पछताओ। विते दिन फेरनापाओ॥ नमानोगे मेरा कहना। यह जानो नित्त दुखसहना॥ ज्यों

गागर जलभरी फूटै। पात जिमि डारसे टूटै ॥ नहो ऐसा कि था जैसा। भरम आवै हुआ कैसा ॥ इसीसे मैं कहों तुझसे। यहसुन बानी भली मुझसे॥ जभी शोचा तभी शोचा। गहो सतनाम दुख मोचा ॥ समझ में आगया मेरे। सुनाथा दूर है नेरे ॥ यह सद्गुरु राम वृन्दाबन। करै है नित्त हरि दर्शन ॥

शब्द—मेरामनमुझे नचायरहा। जीअनोखीधूमउठायरहा ॥

टेक—मेरे मनाये मानतनाहीं नाहकको विषखाय रहा ॥ कहना किसीका सुनता नाहीं। अपनी हीं ये गायरहा ॥ समझाया यह समझै नाहीं। गुजरी उमर पछतायरहा ॥ चाहै है सो होता नाहीं। अन्तको हार लजायरहा ॥ हां सन्तोषकी धारणा करले। भूखा भी आघाय रहा ॥ ज्ञानी बूझ बिचारसे भाई। सब दुख सहजै ढायरहा ॥ सद्गुरु रामसनेही प्यारा। सन्त सरोवर न्हाय रहा ॥ वृन्दाबन यह अकथ कथा है। आगिसे जल बर्षाय रहा ॥

भक्ति ज्ञान संवाद ॥

दो० भक्तिबिहीन जो पुरुषहैं, प्रेमस्वादनहिं पाहिं।
बिनाप्रेम रीझैं नहीं, जहँके तहँ रहि जाहिं॥

चौ० भक्ती कहै सुनो जी ज्ञाना। तुम छांड़ो अब अपनी बाना ॥
विन भक्ती सब डूबै जाई। कहना मान मेरा तू भाई ॥
सन्त बेद भक्ती को गाया। विना भक्ति जावे नहिं माया ॥
नामभेद तुम चीन्हा नाहीं। सत्य स्वरूप बसैं जामाहीं ॥
भक्ती कर वैकुण्ठ सिधारो। तो तुमको मिलिहै सुखभारो ॥
अलखअगमके पार ठिकाना। सब से ऊपर हमरा थाना ॥

अद्वैत ज्ञानहै काल स्वरूपा। भक्ती करै रङ्क को भूपा॥
अहंब्रह्म कहि अहँकारी हूये। भक्ति ज्ञान सब दिये बिगोये॥
ज्ञानकिया परलोक अभाऊ। भक्ती सत्यलोक पहुँचाऊ॥
प्रकृतिमंडल से परे लखाया। सो बैकुण्ठ है सत्य अमाया॥
ब्रह्मलोक और गोलोका। यह माया रचिदीनों धोका॥
जो माया इन लोकों माहीं। मध्य बैकुण्ठ ताकी गमनाहीं॥
सत्य पुरुष का जहां निवासा। भक्ती वहां करावै बासा॥
लोकमाहिं जिव थिरता लावै। पुरुष दरश कर आनँद पावै॥
असंख्य सूर्य्यजहँवांउजियारा। हीरालाल जड़े दरबारा॥
देवन की वहँ सभा सुहावै। देखदेख चित बहु हरषावै॥
महासंख योजन बिस्तारा। एक पलक में सबी निहारा॥
भक्ती के गुण ये हैं भाई। बिरोधी ऊपर क्रोध न लाई॥
आपन माने दासनदासा। मिरतक तुल्यकरै जो बासा॥
हरिआज्ञा में रहै दिनराती। उस्तुत पाय हरष नहिं माती॥
दर्शन जिनके मांगैं देवा। भक्ती का है अस्कर भेवा॥
पांच इन्द्रीको बश में राखै। नामरसायननिशिदिनचाखै॥
काम आदि भक्ती से जावैं। बिन इन गये मुक्तिकसपावैं॥
कामअपरबलसबकोभूरा। ऋषिमुनिशिवआदिककियोधूरा॥
जहँतक ब्रह्मज्ञान तुम गाई। वहँतक पहुँच काल अन्याई॥

दो० हरिगुरुकी भक्तीबिना, रञ्चकभी सुख नाहिं।
बृन्दावनबड़भागजिस, सोगुरु भक्ति कमाहिं॥
सुन्दररूपजो आपना, भक्ती कियो बखान।
मोहआशकीबाटलखि, ज्ञान निबृत्ती ठान॥

चौ० बोलेज्ञानसुनोजी दासी। तुमसेबताजिवमुक्ति निवासी॥
कर्म दास जो तुम्हरे भाई। तुम दोनों हो जीव सहाई॥

मोटे पाप कर्म से जाई। झीने को लो तुम धरखाई॥
निष्कामकर्मपुनि भक्ती दोऊ। मनकी मल चञ्चलता खोऊ॥
पीछे जीव ज्ञानही पावे। रूप अपन में थिरहोजावे॥
दूसर रूप सकाम जो होई। ताका फल तुम सुनलो लोई॥
तासे जीव परभुता पाई। जगकेमाहिंराज्य मिलिजाई॥
और अनेकन सुख बहुपावे। बिषयभोगमेंनिशिदिन धावे॥
बहुत हुआ वैकुण्ठै पाया। भोग भाग चौरासी धाया॥
स्वर्ग वैकुण्ठ और सबलोका। सम्पति स्वप्न अन्तहै धोका॥

सो० दास दासीका काम, सो तुम शिरपर धरतहौ।
यामें संशय नाहिं, जीव शुद्ध तुम करत हौ॥

दो० भक्तिसकामजो रूपतुम, बिषयकृत्य सुखदेत।
यह तो मुक्ती है नहीं, फेर फार जग लेत॥

चौ० अबतुमसुनोहमारीबाता। माया लागै तुम्हरी माता॥
जो जो जीव चलै तुम राही। उनके माया गले लगाही॥
ब्रह्म अकर्त्ता सब से न्यारा। सो है देश प्रदेश हमारा॥
जिनके है नहिं ज्ञान स्वभाऊ। उनको आवागवन सोहाऊ॥
निर्गुणभक्ती का फल ज्ञाना। असभक्ती कोइ बिरलैजाना॥
भक्तिनिष्काम भांति दो मानो। निर्गुणसर्गुण सो तुम जानो॥
निर्गुणभक्ति उपास जो माना। याका निर्गुण नाम कहाना॥
निर्गुणउपास का भेद बताऊं। ताकी दासी माया जताऊं॥
निर्गुणउपास की भक्ती जोई। ताकाफल निश्चलता होई॥
सर्गुण रूप उपास कि सेवा। सो भक्ती दे लोक कि मेवा॥
नामभेद तुम कुछ नहिं चीन्हा। सत्यस्वरूपबोध नहिं लीन्हा॥
सत्य विचार जिन पाया नामा। सत्य पुरुष है उनका धामा॥
सत्य कहौं मैं उसको भाई। ना वह जन्मै ना मरिजाई॥

सो चेतनहीं सत्य कहाया। ताको ज्ञानी सहजै पाया॥
रूप बरण से है वह न्यारा। भर्म रूप माया बिस्तारा॥
यासे निर्गुण नाम पुकारा। केवल है आनन्द कि धारा॥
सुषुप्ति में सबही सुख पावै। जब मन नहीं कहींको धावै॥
तुम वैकुंठक रूप बखाना। मन विषयी का हुआ पयाना॥
सोई मन भोगैगा लोका। भोग भाग फिर खावै धोका॥
लोक भोग हां उत्तम भाई। परयहविषयी मन न नशाई॥

दो० जबलग मनयह बनाहै, तबलग फन्द न जाय।
निज स्वरूप नहिं पावही, वृंदाबन कहि गाय॥
भोगअवस्था के विषय, दुखसुख दोनोंजान।
जहां द्वैतका लेश है, निर्मलसुखनहिंमान॥

चौ० मनके बिनाभोगनहिंभाई। मनजबनहीं भोग खोजाई॥
भोगगये सुख निर्मल पाया। सत्यस्वरूप इसी को गाया॥
रोचक बचन बहुतकहिगाया। जामें जीव रहै उरझाया॥
भ्यानककहिके भय उपजावा। सत्य बचन का लेश न पावा॥
मनसे कलपदेश बहुकहिया। जाकी आश जीव उरझैया॥
पढ़पढ़बचनमगन जिवहोवै। कल्पितसुखवशजन्महि खोवै॥
ना कोइ जाय आपही देखा। सेवक को समझावैं लेखा॥
शिष अब पक्ष त्यागनहिंकरई। होके क्रोधी सबसे लरई॥
नाक कटाय मिलै हैं रामा। अत्रौ न रहा यही सुखकामा॥
मूरख भेद वेद नहिं जाना। जासे कुल्हकाकुल्हलियमाना॥

दो० जब मन विषयोंसे बचै, और एकागर होय।
वृन्दावन जबलखिपरै, दुविधा रहै न कोय॥
मनअस्थिर के कारणे, अनहद शब्दलखाय।
याकरमन थिरहोय है, अङ्ग मलीन नशाय॥

देखो जाय अक्षरावती, तामें कहा कबीर।
सत्यलोक बिन रूप है, माया का नहिं सीर॥
रूप न रेख न रङ्ग कुछ, तिर्गुण ते प्रभु भिन्न।
गुरु नानककी साख है, जिनदूरकियाहैजिन्न॥
देखो गीता के विषय, पुरुष अव्यक्त कहाय।
व्यक्तवान सब भर्म है, ताको देव बहाय॥

चौ० ज्ञानीगुरुजाको मिलिजावै। उनकी ताप सभी मिटिजावै॥
विषयी गुरू रूपको थापैं। जाका शिष्य कभी नहिंधापैं॥
सर्गुण भक्ती का जो भेदा। बिनगुरु ज्ञानी होय न छेदा॥
हे दासी सुन्दर तुम होई। यामें संशय नाहीं कोई॥
जीव शिंगार तुम्हीं से होई। ज्ञानविवेक तुमपै नहिं लोई॥
रज तम सत ये माया रूपा। तम स्वरूप लैडारै कूपा॥
रजकर जीव विषय सुखपावै। बृत्त सतोगुणलोक पहुँचावै॥

दो० करणीका फल भोगकर, मृत्युलोकपुनि आय।
यासे देखो जीव की, आवागमन न जाय॥
कर भक्ती निष्काम तू, जो जिव होवै शुद्ध।
उनको सत्य जो प्राप्ती, तजगयेमनऔरबुद्ध॥

चौ० असजीवरूपअपनपौपाया। भर्मनाश रहवै नहिं आया॥
जन्म मरण का बीज नशाना। द्वैतअभाव अद्वैत रहाना॥
असकह्यो तुलसीदास गुसाईं। पराधीनस्वपन्यो सुखनाईं॥
जबलगसर्गुण भक्ति रहाहीं। तवलग आशडोर गलमाहीं॥
आशा छोड़ निराशा रहिया। आवनजानसभी मिटिगइया॥
गुरुसेवा बड़ि भारी पावे। पापमैल सबही कटजावे॥
शब्द ध्यान सुभिरण जो करई। निश्चलताकासुख चितधरई॥
थिरता पाय आश भइ दूरा। आपन रूप लखा जब पूरा॥

दो० अन्धपँगुलका न्यायहै, बूझै पुरुष सुजान ।
विनाज्ञान संतुष्ट नहिं, वृन्दाबन सत मान ॥

शब्द–सबतौ कही ऐसी क्यों न कही ॥

टेक–अटपट बाटा औघटघाटा धाराअगम बही । बूड़त रहूं दयानिधिस्वामी झपटिकैबांहगही १ गुरूकृपालुदयाबहु कीन्ही उनको असही चही । मैं मतिहीन भर्म सो रचिया नखशिख भूलरही २ पाँच बिहार निहार शब्द सुन अलख लखतहों सही । दोष भर्म जंजाल विनाशा एकहि एक अही ३ स्वामीमिलन जगजालहनन जिनके हैं आश यही । वृन्दाबन प्रभु नेरे देखावत फूलन पंथलही ४ ॥

भाग दूसरा तमाम, गुलाबबाड़ी इसकानाम ।
काँटेसेबचनाहैकाम, चुनोफूलनहिंहोतीशाम ॥

द्वितीयभाग समाप्तः ॥

इति ॥

---

१ ॐ सद्गुरु प्रसाद ॥

वाह गुरु सद्गुरु राम अनादि ॥

सत्य नाम सत्य गुरु समर्थ दीनदयाल ॥

ग्रन्थ बिहारवृन्दावन शान्तवेदका ॥

तीसरा भाग ॥

ग्रन्थकर्त्ताका सिद्धांत उनविरोधों के विषयमें जो शास्त्र और अन्यमतोंमें वर्त्तमानहैं और सत्संगके गुण और काम क्रोध लोभ मोह अहंकारके अवगुण और दया धर्म शील सन्तोष उदारता वैराग्य आदिके लाभ ॥

जोकि बहुधा मतोंका सिद्धान्त ऊपरके प्रश्नोत्तरों से विदित होताहै परन्तु मुमुक्षुको यह सन्देह और दुविधा खड़ी होगी कि कौन सिद्धान्त उत्तम और सत्य है कि जिसके सिद्ध करने में उद्योग करूं सब अपनी २ कहते हैं कोई कर्म को दृढ़ाता है, कोई उपासना को, कोई ज्ञानको, कोई योग को, कोई जगत् को सत्य कहताहै, कोई असत्य कहताहै, कोई ईश्वर को मानताहै, कोई ईश्वरका अभाव करता है ॥

दो० अस विवादको देखकर, मनमें संशय होय ।
वृन्दावन इस जाल से, बिरला बाचै कोय ॥
सब अपने सिद्धान्तको, सही कहत हैं सार ।
वृन्दावन वह और को, भूला जाने वार ॥

कोई यत्न अपने आधीन कहताहै, कोई ईश्वर के,

कोई दोनों के आधीन कहताहै कोई प्रारब्धको, कोई यत्न को मुख्य कहता है इसके विशेष एकही मत वाला दश प्रकार के वचन कहता है ॥

एकस्थानपर जगत् और ईश्वरकी सत्यता दिखाता है दूसरे स्थानपर असत्य कहदेताहै कहीं जप, तप, पूजा, कर्म, तीर्थ, व्रत मूर्तियों की पूजा नामका स्मरण ठहराताहै कहीं इन सबका अनिश्चय कराताहै परस्पर में शास्त्रों का विवाद दीखताहै यही दशा पुराणों कीभी है और फिर सब वेदको प्रमाण अर्थात् साक्षी करके अपने कहनेको अर्थात् सिद्धान्त को निश्चय कराते हैं कोई किसी देवताकी महिमा करता है किसी दूसरे की निन्दाकरता है विष्णुपुराण में विष्णुकी महिमा की है शिवपुराण में शिवजीकी महिमाहै और देवीपुराण में देवी को मुख्य कहाहै सूर्यपुराण में सूर्यको सब से बड़ा बताया है गणेशपुराण में गणेशजी को सब से बड़ा अधिकार कहा है ॥

दो० पंचदेवकी मुख्यता, पुराणों माहिं दिखाहि।
वृन्दाबन जो जेहि भजै, बड़ा कहत है ताहि ॥

पंचदेव उपासक विवाद ॥

विष्णुउपासक कहैहैं कि विष्णु आदि कर्त्ता हैं और सब देव उनके दास हैं शिव आदि देव की वारंवार रक्षा की है और कैसे हैं सतोगुण स्वरूप हैं जिनके दर्शनहीसे तन मन शीतल होजाय और मोक्षके दाता हैं शक्ति जिनकी स्त्रीहै और शिव क्या हैं जिनके दर्शनहीसे क्लेश होवे सांपों और खोपड़ियों की तो माला पहिनेहैं

शैव कहैहैं कि शिव आदि कर्त्ताहैं और समदर्शीहैं उन कोही यह सामर्थ्य है जो फूलों और सांपोंको समान सममैहैं और विष्णुकी बारंबार सहायताकीहै और शिव कल्याणरूपहैं बिना उनकी कृपा किसी का कल्याण नहीं होसक्ता और विष्णु तो स्त्री समान हैं रूप बनाना स्त्रियों का कामहै शाक्त कहैहैं कि विना शक्ति देह अमङ्गल होतीहै सो शक्तिने इन सब देवोंको अपनी शक्ति दी है जब वह देवकार्य करने योग्य हुये। गणेशउपासक कहैहैं कि सबसे पहिले गणेशजी मनाये जाते हैं विना उनके कोई कार्य सिद्ध नहीं होता सो गणेश आदि देवहैं सूर्यउपासक कहैहैं कि विना प्रकाश किसी से कोई कार्य्य नहीं होता सो सूर्य्यके प्रकाशसे सब कार्य्य करने योग्य हुये हैं सो सूर्य्यदेव सबसे बड़ेहैं अब कोई इन पाँचोंको उड़ा देताहै वह ईश्वरको निर्गुण कहताहै तात्पर्य्य यहहै कि ऐसे ऐसे संदेह और चिंता बहुधा मनुष्यों को सताते हैं। किंतु सत्संग और परमार्थ से रहित करदेते हैं परन्तु ऐसे संदेह चित्तमें लाके परमार्थ न करना या दूसरों की निन्दा करना अपनी अल्पज्ञता से है जो मनुष्यवाणी के भेद और अपने अधिकार से विदितहो और वादका पक्ष छोड़दे तो एक संदेह पास भी न फटके और सब अच्छे दीखें॥

दो० जिसके चितसे उठगयो, संशयरूपी रोग।
वृन्दाबन आनँद भयो, सहजे पूरण योग॥
यही दशा तव होयगी, निश्चय मानो बैन।
वृन्दाबन पक्षपात की, जातरहै जब कहैन॥

जो अपने अधिकार को, समझलेहु नरमीत।
तब वाणी और देवकी, मिलैसुगमतोहिंरीत॥
निन्दा अस्तुति त्याग के, खोज करे बृहसङ्ग।
वृन्दावन सो पद लखै, जाके सांचा रङ्ग॥

अब एक मोटा और प्रसिद्ध दृष्टान्त सुनिये कि एक मनुष्यके चार लड़के हैं चारोंकी अवस्था, बुद्धि, रुचि, चाल, चलन और देह में परस्पर अन्तरहै और पिता को अभीष्ट यहहै कि चारों जीविकाकरैं घरसँभालैं नेक चलन हों और प्रसन्नरहैं और दूसरोंको प्रसन्न रक्खें अब जो पिता एकहीसी सबको सीख करताहै तो काम नहीं चलता क्योंकि सबकी अवस्था और बुद्धिमें अन्तर है। अब उसको योग्य हुआ कि हर एकको उसकी योग्यता के सदृश पृथक् पृथक् शिक्षाकरै जो लड़का सबसे बड़ा पढ़ा लिखा होशियारहै उसकी अवस्था २५ वर्षकी है आरोग्यहै और विवाह आदि होगयाहै उस को अब पिता नौकरीकी शिक्षा करताहै और नौकरी की रीति और उसके लाभोंको भी बतलाताहै जो वह लड़का सौदागरी ज़मींदारी आदिके सुखोंकी प्रशंसा करताहै तो उसका पिता उसमें बहुत से दूषण देता है हानि दिखलाता है और नौकरीको सबप्रकार उपकारी बतलाताहै कि देखो नौकरीमें प्रतिष्ठा बड़ी है १० दश रुपये के मुतसद्दीकी प्रतिष्ठा लखपती से अधिक होतीहै दो तीनपहर नौकरी की फिर छुट्टीहै प्रतिष्ठावान् लोगों का सत्संग प्राप्त होताहै और बुद्धिकी वृद्धि होतीरहती है हुकूमत होतीहै और नाम प्रकाशितहोताहै और

हज़ारोंका काम निकलताहै। बड़ी आवागच्छ होती रहतीहै और सौदागरी आदि में क्याहै ख़ैर पेट भर लेनाहै न विद्या प्राप्तहोतीहै और न कुछ ऐसी प्रतिष्ठा है घर २ फिरना पड़ताहै और असामी डूबजाती है दिनरात लेनेदेनेका संदेहरहताहै मिथ्या बहुत बोलना पड़ताहै जोकि लड़का पढ़ने लिखने में सदासे रहाथा इससे उसको पिताकी सिखावन से नौकरी ही करना अच्छा मालूम हुआ तब खोजमें चल खड़ाहुआ नौकरी पाई उसका प्रयोजन सिद्धहुआ। दूसरा लड़का जिस की अवस्था २० वर्षकीहै और कुछ थोड़ा बहुत पढ़ा है उस की बुद्धिभी बहुत अच्छी नहींहै रोगीसाभी बना रहताहै वार्त्तालाप करने में भी अभ्यास सामान्य है। उस लड़के को पिता सौदागरी और दूकान्दारी की शिक्षा करताहै जो लड़का नौकरी करनेको कहताहै तो पिता नौकरी में हज़ारों अवगुण दिखलाकर कहता है कि नौकरी गुलामीहै प्रतिसमय हाकिमका भयरहता है देश, घर छूटजाता है अन्यों के साथ काम पड़ता है सब संदेह अपने ऊपर आते हैं और गिनी कौड़ियां हाथ आतीहैं नौकरीमें कोई सुख नहीं कहावतहै (परा-धीन स्वप्नेउ सुख नाहीं) और सौदागरी में यह सब बातें प्राप्त होतीहैं घरकी बादशाहतहै किसी का हुक्म सहना नहीं पड़ताहै रोटी करीकराई मिलती है रातको घरमें सोना मिलताहै समयपर ज़ोररहताहै जब चाहा काम किया जब चाहा न काम किया कुछ बहुतसी विद्या नहीं चाहिये और देखो ऐसे कामवाले कैसे प्रसन्न

हैं बड़े २ मकान तैयार कराते हैं हज़ारों रुपये पास होते हैं किसीके अधीन नहीं रहते। लड़केने अपनी दशा देखकर और पिता की शिक्षा सुनकर नौकरी से हाथ उठाया सौदागरी करनेलगा पिता पुत्र दोनों का अभीष्ट सिद्धहुआ तीसरे लड़के की अवस्था १२ वर्ष की है उसको विद्या सीखनेके वास्ते शिक्षा करता है और विद्याके लाभोंको सुनाकर कहताहै कि जो लिखे पढ़ेहैं वह घोड़ेपर चढ़तेहैं और ऐशकरतेहैं और खेल कूदके नुक़सान दिखाकर कहताहै कि जो खेल में रहते हैं वह दुर्जन होजाते हैं रोटी खानेको नहीं मिलती मदरसे जानेका अनुराग कराताहै ज़रूरतपर भय दिखलाकर कहता है कि निकालदूंगा और तुझको खाने को न दूंगा रातभर कोठरी में बन्दरक्खूंगा जो कहने से नहीं समझता तो मारता भी है और किसी स्थानपर दमदिलासा भी देने लगताहै प्यार भी करताहै और खेल भी खिलाता है जो लड़का घर से बाहर जाने में डरता है तो उसको ढाढ़स बँधाता है और कहता है कि बाहर जाने विना विद्या कैसे आवेगी और घरके रहनेसे लड़के बिगड़ भी जाते हैं और दूसरे लड़के तेरा नामडरपोकना रखदेंगे और बाहर जानेसे तो बड़ी सेरैं दीखने में आती हैं और देख तुझ से भी छोटेछोटे लड़के दिन रात फिरा करते हैं अब देख लीजिये कि इस लड़के से नौकरी और सौदागरी का कुछ हानि लाभ वर्णन नहीं करता और जिस बात से प्रयोजन है उसीकी बहुतसी प्रशंसा करताहै। अब चौथा लड़का

५ वर्ष की अवस्थाका है इस लड़केके लिये पिता खेल का सामान बनाया करता है। लाड़ प्यारसे खिला पिला के उसकेसाथ हँसाकरताहै उसकी बेअदबियों को लाड़ समझताहै। और रात दिन उससे झूंठी २ बातें किया करता है। और जो बस्तु वास्तव में भी नहीं है उसके होनेका भी इकरार करदेताहै जो लड़का बाहर जानेको करता है तो उसको बाहर जानेसे निषेध करताहै। और कहता है कि बाहर जाना अच्छा नहीं होता चोर पकड़ लेजायगा और जो कोई चाहेगा वह तुझे मारलेगा बाहर कभी मत जाइयो घरसे बाहर पांव रखना बहुत बुरा है भयकेमारे लड़का बाहर नहीं जाता घर में खेलताहै लड़के को भी अच्छा और पिताभी राजी इस लड़के से लिखने पढ़नेको नहीं कहता नौकरी सौदागरी और विद्याके लाभ नहीं सुनाता अब ज़रा ध्यान करने का स्थान है कि पिता की पृथक् २ सीख योग्यहै या नहीं प्रकटहै कि बहुतठीक है इस निमित्त कि चारों लड़कों का काम बनताहै और देखिये कि इस मनुष्यने प्रथम नौकरीकी प्रशंसा करी। और दूकान्दारीकी निंदा और दूसरे स्थानपर नौकरीकी निंदा और सौदागरीके लाभ एक और स्थानपर बाहर जानेके लाभ और घररहने में हानि और एक स्थान पर घर रहने में लाभ और बाहर जानेमें हानि कहो बाज़ी २ बातें सत्य कहीं और बाज़ी भयंकरी और कितनी लालच की। किसी स्थान पर अच्छीबातको बुरी कहा और बुरी को अच्छीकहा परन्तु कोई उस मनुष्यको अपराधी और झूंठा नहीं

कहता है किन्तु बुद्धिमान् कहलाताहै अब जो लड़के पिता को साखी करकर अपनी अपनी बात को सिद्ध करैं। और एक दूसरेको परस्पर में खण्डन करैं तो उपाधि के सिवाय और क्या लाभ होगा और समझने वाला इनलड़कों को अज्ञानीही समझैगा अब देखिये कि जिस लड़के को बाहर जानेके वास्ते निषेध किया है अब उसको कुछ दिन बीते बाहर जानेकी शिक्षा देकर घरमें रहना बुरा कहेगा अब जो लड़का लड़कपन में घर में रहेगा वह निस्संदेह प्रसन्न रहेगा और अवस्थाके पहुँचने पर आप बाहर जायगा। और बाहरके लाभ मालूमकरेगा और जो पिताके कहने पर लड़कपन में अमलकरेगा और बाहर जानेमें कोई लाभ भी होगा तो फिर अन्तको ख़राबही होगा परन्तु जब एक बातमें पक्का होजायगा तो दूसरेमें आप लगजायगा और लाभभी प्राप्तकरेगा। बाहर भी जायगा और सौदागरी नौकरी भी करेगा और लड़कपनमें घरमें रखनेसे पिता काभी यही अभिप्रायहै कि अन्तको नौकरीहीकरै और देखो बाज़ों को किसप्रकार समझाना पड़ताहै कि किसी राजाका लड़का था वह कुछ भी नहीं पढ़ता था और कबूतर खेलने का शौक़ रखता था बहुत से उस्ताद नियत हुये परन्तु किसीसे न पढ़ा राजाने हारके पढ़ाना छोड़ दिया इतने में एक मनुष्यने आकर कहा कि मैं पढ़ाऊँगा ख़ैर उसको नौकर रक्खा उस मनुष्यने प्रथम राजाके लड़के से स्नेह उत्पन्न किया और जो सौ कबूतर थे तो सौ और मोल लेकर रखवाये और आप भी

उसके साथ मिलकर कबूतर उड़ाया करे और यह मनुष्य राजा के लड़के से आज्ञा कियाकरे कि फलाना कबूतरला कभी २ वह औरका और ले आयाकरे अब उस्तादने कहा कि देख जबतक कबूतरोंके नाम न रक्खे जायँगे और तुमको ठीक २ पहचान न होगी तबतक पक्के कबूतरबाज न कहलाओगे राजा के लड़के ने कहा सत्यहै उस्ताद ने अक्षर आ, ई, ऊ आदि कबूतरों के नाम रक्खे और उस लड़केको यह अक्षर याद करवाये परंतु अब भी खूब पहचान नहींहै बहुधा पहचानने में भूल जाता था अब वह आप उस्ताद से कहनेलगा। कि मुझे इसप्रकार से हरएक कबूतरका नाम याद नहीं रहता उस्तादने कहा कि अक्षरों का लिखना सीखलो फिर सब कबूतरोंपर अक्षरोंका चिह्न करदिया जायगा तुम सुगमता से पहचान लिया करोगे अब लड़के को अक्षर लिखने का शौक़ उत्पन्न हुआ अब वह लड़का लिखता भी है और पढ़ता भी है इसीप्रकार उसको लिखना पढ़ना आनेलगा थोड़े समय में कबूतरबाज़ी तो छोड़दी और विद्या संपादन करनेलगा। देखिये किस यत्नसे पढ़ाया और जो लोभ दिखाया था उसकी सिद्धतासे उस्तादका प्रयोजन न था परंतु उसके छुड़ानेमें अर्थ था इसी प्रकार इस जगत् में भी बहुतसे ऐसे जीव हैं कि किसी प्रकार परमार्थमें नहीं लगते उनको इसी प्रकार जब शिक्षाहोय तो परमार्थकी इच्छा उत्पन्न होती है और देखो एकही बीमारी पर वैद्य दशरोगियों को पृथक् २ औषधि बताता है वह गुणकारी होती है जो

एकही ओषधि बता दे तो सबको अवगुणकारीहै। जो रोगी परस्परमें लड़ैं कि मेरी ओषधि अच्छी है और तेरी बुरीहै तो क्यालाभहै एक रोगीको दो पैसेका नुस्खा लिखा और एकको दो रुपयेका एकको खिचड़ी खाने को बताई और दूसरेको निषेध किया एकको रोटी बताई और दूसरेको दाल बताई। अब देखलीजिये कि जैसा रोगी वैसी ओषधि और वैसाही खाना और वैसाही पथ्य अब जो रोगी अपनी अपनी ओषधि करै और वैद्यके कहनेके अनुसार और ओषधि खायँ तो आराम होना संभवहै। जिस रोगीको रोटी खाना निषेध किया था जब उसका रोग दूरहोगा तब वैद्य आप रोटी खानेको बतावेगा किंतु खिचड़ी खानेको अवगुण कहैगा और यह भी बातहै कि जब रोगीका रोग दूर होजायगा वह आप रोटीकी इच्छा करैगा कुछ किसीके बतानेकी आवश्यकता न होगी परंतु जबतक उसके रोग बना हुआ है तबतक जो कोई रोटी खानेको कहै उसे शत्रु जानिये। क्षीरखाना अच्छाहै परंतु नीरोगको तलवार चलाना उसको योग्यहै जिसको चलाने की युक्ति आतीहै और जिस मनुष्यने कभी लकड़ी नहीं फेंकी जो वह तलवार चलावै तो एक दिन अपनाही गलाकाट मरेगा। अब जो मनुष्य इन दृष्टांतों को अच्छे प्रकार समझलेगा उसको कोई संदेह परमार्थ के सिद्ध करनेमें न उत्पन्न होगा समझेगा कि वेद शास्त्र महात्माओं का कहना अधिकारीप्रतिहै। रोचक, भयानक यथार्थ तीन प्रकार की वाणीहै देखो भागवतमें श्रीकृष्ण महाराजने आप

कर्मउपासनाको कितना दृढ़ किया है । और कितनी महिमा की है जिसका अंत नहीं और कहीं कहीं ज्ञान के बचनभी कहेहैं जब उद्धवजी सब धर्म सुन चुके तब पूँछा कि महाराज सबसे उत्तम श्रेष्ठ मत कौनसाहै तब महाराज ने कहा ॥

एकादशका-श्लोक ॥

अयंहिसर्वकल्पानां सध्रीचीनोमतोमम ॥
मद्भावस्सर्वभूतेषु मनोवाक्कायवृत्तिभिः ॥ १ ॥

इसका अर्थ यहहै कि सबमतोंमें बड़ा मत यह है कि मन बाणी कायाकरके सर्वभूतोंमें मुझको व्यापक देखै फिर उद्धवजीने कहा कि महाराज आपने कहीं देह कर्म स्वर्ग नरकको सत्य कहा है और कहीं असत्य सा कहा है फिर महाराजने कहा ॥

एकादशका-श्लोक ॥

छायाप्रत्याह्वयाभासा ह्यसतोप्यर्थकारिणः ॥
एवंदेहादयोभावा यच्छंत्यामृत्युतोभयम् ॥ २ ॥

इसका अर्थ यहहै कि जैसे छाया और कुयें और गुम्मज का शब्द झूठा होता है परन्तु उससे कार्य्य निकलता है इसी प्रकार देह भी असत्य है परन्तु स्वर्ग आदिके निमित्त कार्य्य निकलताहै महाराज ने वर्णन किया है ॥

श्लोक-परोक्षवादोवेदोयंबालानामनुशासनम् ॥
कर्ममोक्षायकर्माणि विधत्तेह्यगदंयथा ॥ ३ ॥

इसका अर्थ यह है कि जैसे बालक को लालच

दिखायाजाता है ऐसेही कर्म छुड़ाने के लिये कर्म कराये जाते हैं जैसे रोग दूरकरने के लिये औषधि दीजाती है और कुछ फल नहीं और जो किसी शास्त्र महात्मा की वाणी में दूसरे की निन्दा है वह वास्तव में निन्दा नहीं है परंतु अधिकारी की दृढ़ता के लिये ऐसी कही है और जब कर्म की महिमाकी है तो कर्मही को बहुत बड़ा दिखाया है जो बड़ा न दिखावें तो कर्म में रुचि न हो इसी प्रकार उपासना आदि के विषय में समझना चाहिये और जो अपने २ इष्ट और देवता को बड़ा ठहराते हैं यह भी उसी प्रकार सत्य है। देखो जिस समय काम पैरों से निकलता है तो पैरोंही की प्रशंसा होती है नाक, कान, आंख, वाणी यद्यपि पैरों से ऊपर हैं अधिक प्रयोजन के भी हैं परंतु इनकी प्रशंसा नहीं करता यद्यपि आंख, नाक, कान को फोड़ नहींडालता परन्तु दूसरे के समझाने को पैरकी प्रशंसा में आंख, नाक, कानकी तुच्छता करजाता है उसका अभिप्राय यह होताहै कि एक ओरका निश्चय पूरा होजाय और निन्दा करने से एक यह भी दूसरा प्रयोजन निकलताहै कि जब कोई अपने इष्टकी निन्दा सुनताहै तो वह चित्त से उसकी पकावट के वास्ते अपने इष्टकी ओर अच्छी तरह लगता है और महीन २ बातें सीखता है जिसने अपने इष्टकी पकावट की और अपने इष्टमें पक्काहुआ उसका चित्त शुद्ध हुआ अब ऊपरकी ओर उसकी वृत्ति चलतीहै वह उसको आप राह दिखलाती है जैसे बहता पानी आप अपनी राह ढूंढ़कर नदी में जामिलता है

अब निन्दा स्तुतिकी एकबात और सुनो देखो कबूतर खेलना भांग पीना बुरा है और निन्दित है परन्तु जो लड़का चोरी जुआ खेलने मदिरा पीनेमें लगाहो और उसको इन कठोर अपराधों से बचानाहो तो वह बिना किसी लालच और दिल्लगी के उनको नहीं छोड़सक्ता तो उस लड़के से कबूतर खेलने और भांग पीनेकी प्रशंसा कीजाती है कबूतर खेलना बहुत अच्छाहै उसमें मन की प्रसन्नता होती है और धन भी प्राप्त होता है भांग बड़ी उत्तम बस्तु है शिवजी ने अंगीकार की है अब उस लड़के ने ऐसी बातैं सुनकर चोरी जुवा और मदिरा पीना छोड़ दिया कबूतरों से खेलने लगा भांग पीनेलगा अब उसको विद्या के लाभ सुनाये वह लिखने पढ़नेलगा थोड़े दिनोंमें सब खेल छोड़कर विद्यार्थी होगया ऐसे शास्त्र महात्माओं के भी बचन हैं देखो कोई अपने शत्रु की हानि चाहता है वह दिन रात बुरे बुरे यत्न करै है शास्त्रने कहा कि जो अमुक अमुक मन्त्र जपो पूजा करौ तो शत्रुकी हानि होगी अब वह पूजा करनेलगा देखो कुकर्मसे हटकर सुकर्मकी ओर जालगा तो पहिले से तो अच्छा रहा और जो कुछ सुकर्म के बल सूझ होगई तो वह शत्रु को मित्र जानेगा अब देखो जिसने कबूतर खेलना भांग पीना अच्छा कहा तो एक प्रयोजन से कहा अब जो कोई ऐसे ऐसे भेदों को समझ लेगा तो उसको सब सच्चे दीखैंगे और संशयरूपी रोग दूर होजायँगे और सत्संग का फल पावेगा और जो अपने उपास्य की महिमा करैहै और दूसरे

के देवतोंको तुच्छ कहते हैं सो वह अपने उपास्यों को निर्गुण रूप सर्वव्यापी ठहराकर और दूसरों के देवतों को केवल सगुणही ठहराकर निन्दा करता है सो निर्गुणरूप के बिचार में तो सबका उपासक एकही है सगुणमें झगड़ा है पर वह भी निर्गुण से बाहर नहीं इसीप्रकार शास्त्र और देवता आदि सब एकही के अंग हैं किसको झूठा या बुरा कहना योग्य है अपनी देहमें से कौनसी वस्तुका दूर करना अच्छाहोगा अपने अपने समयपर हाथ, पैर, आंख, नाक, कान आदि सबही काम देते हैं पर समयतो कान से काम लेने का है और वह काम नाक से लोगे तो निस्संदेह ऐसा यत्न वृथाहोगा॥

दो० नदिया उतरो नावसे, क्या लैकरै जहाज।
जोजाको स्वारथ करै, सो ताको महराज॥

और प्रकटहै कि एक मनुष्य २) रुपये दूसरा १०) रुपये तीसरा १००) चौथा १०००) पैदा करता है सबहीका नाम तो कमाऊ है और जो २) रुपयेका पैदा करनेवालाहै वह कभी हज़ार भी पैदा करसक्ताहै परन्तु जो कुछभी नहीं कमाता है उससे क्या भरोसा है और जो थोड़ा भी किसी मत के अनुसार किसी तरह ईश्वर का ध्यान करताहै वह परमार्थहीहै॥

दो० सबही मारग सांइयां, आगे एक मुक़ाम।
जोही सम्मुख होरहा, ताही सेती काम॥

सबको बड़ा समझनाचाहिये परन्तु जिससे आप को काम पड़ाहै उसको मुख्य करके बड़ा समझना

येही तो बहुत उत्तमहोगा ॥ एक दृष्टान्त है कि कोई मनुष्य षटदर्शन अर्थात् सब पंथ के साधुओंकी सेवा किया करताथा उसने एकबार साधुओंका भण्डारा किया और सब वेषके साधु इकट्ठेहुये सबको बहुत अच्छे प्रकारके एकसे भोजन करवाये जब सब साधु भोजन करचुके तब उसने अपने गुरूकी पत्तलमें से प्रसादीली और मेंसे नहींली किसी साधुने कहा कि क्यों भाई यह अंतर क्योंकिया सबकी पत्तलमें से प्रसादी लेनीथी उसने उत्तरदिया कि महाराज सुनिये जब लड़की का बिवाह होताहै और जिससमय बरात आती है तब बरातियों को दूलहसे अधिक शिष्टाचारी होतीहै परंतु लड़कीका हाथ लड़केही को पकड़ाया जाताहै सो महाराज आप सब बराती हैं और गुरू दूलह के समान होतेहैं इस निमित्त इतना अंतर किया साधु चुप होगये अब देखो कोई पूजा करताहै और कोई जप करता है और कोई तीर्थस्नान करता है कोई दान देताहै कोई ध्यान करताहै कोई ज्ञानकहता है सब परमार्थीही तोहैं इससे किसीको बुरा कहते नहीं बनता अब यह शंका होगी कि जो जिसमें लगाहै वह उसी में लगारहेगा तो आगे किस प्रकार बढ़ैगा जो सच्ची मुक्ति पावे इसको इस प्रकार समझना चाहिये कि जब किसी मार्ग में पक्का होलेगा तब आपसे आप उसको तलाश उत्पन्न होगी और ईश्वर भी दया करके किसी सत्पुरुष को मिला देगा देखिये पहिले लड़के महादेव की पूजा करते हैं तो केवल फूलपत्ती चढ़ाना जानतेहैं या घंटा

बजाना परन्तु जब दूसरेको आरती करते सुनतेहैं तो आरती की अभिलाषा होतीहै तब पण्डित के पास आरती सीखतेहैं जब आरती से ऐसा मालूम हुआ कि महादेव कैलासवासी हैं तो अब कैलास के वृत्तान्त जानने की इच्छा हुई सो कथा वार्त्ता सुनने लगा उस में रुचि हुई सुनते २ उपासनामें प्रवेशहुआ और साधु सेवा करनेलगा अब ज्ञानके वचन भी सुनने में आने लगे उनको सुनकर उनके अर्थ को समझने लगा तात्पर्य यह है कि हौले २ ठिकाने पर जापहुंचा देखिये केवल फूलपत्ती चढ़ाना और घंटा बजानाही तो मुक्ति का दाता हुआ हां जो फूल पत्ती और ठन २ ही में रहे तो खैर (जैसे कंथा घर रहे वैसे रहे विदेश) परन्तु उनसे तौ भी अच्छे हैं जो कभीमंदिरमें नहीं आतेजाते उनसे और मुक्तिसे क्याप्रयोजनहै जो किसी परमार्थके मार्गमें किसी प्रकारलगे हैं वह परमार्थीही हैं हौले २ ऊपरके दरजेपर भी पहुंचजायँगे जैसे नाला नदी में पहुंचकर समुद्रमें पहुंचजाताहै ऊंघतेको जो जगाओगे तो अबेर सबेर जागही उठैगा परन्तु मृतक जाग नहीं सक्ता और जो परमार्थवक्ता वेद शास्त्र सन्त साधू देवताहैं और आचार्य अन्यमतों के सबही बड़े हैं और सबका प्रयोजन जीव के कल्याण के वास्ते है देखो करोड़पती लखपती हज़ारपती सबही तो साहूकार हैं जिन मनुष्यों को दश बीस सौ दोसौ रुपये के लेन देन का काम पड़ता है उनका काम हज़ारपती साहूकारसे बखूबी निकलताहै और हज़ारपतीही तो उनके लिये

अच्छा और बड़का साहूकार है परन्तु जब हज़ारों लाखों का काम पड़ता है तब लखपती साहूकार सेही प्रयोजन सिद्ध होता है तात्पर्य यह है कि जब जिससे प्रयोजन निकलै वही साहूकार है चाहो लखपती या करोड़पती या हज़ारपती हो। यह निस्संदेह है कि किसी मतमें कोई २ बातें ऐसी हैं कि वह दूसरे मतसे अत्यन्त प्रतिकूलहैं और जिसमतमें कि वह उचितहैं उनकी उस मतमें बड़ी प्रशंसा है और जिसमत के विपरीतहैं उस मतमें उनबातोंकी बड़ी निन्दाहै किन्तु यहांतक कि वह ठीक २ नरककी मूल हैं अब ऐसा उचित मालूम होताहै कि जिन बातों को जिस मतमें बुराकहा है उसमतवालेको उससे सब प्रकारसे अलग रहना योग्यहै और जिस मतमें वही बात योग्य कही है और उसमतवाले उसके अनुसार अमल करते हैं उसके विषय में यह बातहै कि जो जिसमतमें है वह उस मतको ईश्वरही की ओर से जानता है जो वास्तव में ईश्वरही की ओरसे है तो वह बात जिसको तुम बुरी समझते हो ईश्वर ने उस समूहके वास्ते वही उचित समझा होगा ईश्वरकी इच्छा और ईश्वरता में किसीको दख़लनहीं बुरेको भलाकरै और भलेको बुरा करै (गौआं देंदा घास मलीदा कुतियांजाग दियांलेदा खोई देंदा सुतियां जो कोरहदा तेरी आश क्यों जादा भूख मरहरना मव जीदा कौनकहे साहबनूतूयों नाहिं यौंकर) दूसरे यह कि जो वह आज्ञा ईश्वरकी तरफ़ से नहींहै उस मतके आचार्य ने कहदी है और वास्तव

में वह बुरी है तो अपराध उस आचार्य परहै क्योंकि
जो लोग उन बातों पर अमल करते हैं वह अपने
आचार्य के कहनेके अनुसार अमल करते हैं और
उसको ईश्वरकी ओरसे समझते हैं उन लोगों को
अपराध का बदला न देनाहोगा परंतु जो अच्छीबातैं
उस मतके अनुसारकीहैं उसका पुण्य प्राप्तहोगा इससे
जो मनुष्य भक्ति की ओर किसी मतके अनुसार प्र-
वृत्तहुआहै वह अच्छाही है क्योंकि दरजे २ पहुंचकर
अन्तको एकही स्थानपर पहुंचैगा और जिस मनुष्यने
कुछभी इधर को ध्यान नहींदिया वह तालाबके जलके
सदृशहै तालाबका पानी कभी समुद्रमें नहीं पहुंचैगा
और बहतापानी टेढ़े सीधे मार्गमें होकर अच्छे बुरे
स्थानोंपर फिरता हुआ समुद्रही में जा पहुंचैगा। कर्म-
उपासना से मुक्तिहै पर निजमुक्ति ज्ञानसे है सो कर्म-
उपासनाके वक्ता बहुतमत हैं और कर्मउपासनामें ही
मतोंका भेदहै सो भेद कभी न मिटैगा कर्मउपासनाके
सब मतोंमें विवादही बनारहेगा जिन मतवालों की
सिद्धता ज्ञान परहै उन सबोंका एकमत है और सब
मतोंके साधनमें अच्छा समझाजाता है अपनी २ ज-
गहह हां निर्गुण निष्काम उपासनामें भी इतना विवाद
नहीं है क्योंकि निर्गुण एकपुरुषही है सब निर्गुणउपा-
सक एकके उपासक ठहरे और सगुणरूप अनेक हैं
यद्यपि एक निर्गुणही से उनकी उत्पत्तिहै परंतु अनेक
होनेकेकारण उनमें विवाद है सो विवाद तीनकाल न
मिटैगा निर्गुणरूप व्यापक है उसकी उपासना में पूजा

पत्रीकी आवश्यकता नहीं है उसकी उपासनामें आराधना प्रार्थना ध्यान चहिये और जो मनुष्य मतको बदलडालते हैं उनकी यहदशाहै कि आपको अपने बापदादेकी जमाकी तो ख़बर नहीं है कि कितने करोड़ ख़ज़ाने रक्खे हैं और दूसरेकी ओर निश्चय लाये कि यह बड़ा जमावाला है तो अपने खाविन्द को छोड़ दूसरा खाविन्द करलिया हां जो भलीप्रकार अपने या दूसरे के मत को देखकर निश्चय बदलैं तो ठीक है और देखिये यह दस्तूर है कि जब एक मतवाला दूसरे मतकी निंदाकरता है तो जो बातैं कि उस मतमें छोटे लड़केके लिये कही हैं उनको सुनाकर और अपने यहां की बड़ीबड़ीबातैं कहकर फुसलालेतेहैं अपने घर की रसोई का वर्णनकरते हैं और दूसरे के घरकी जाजरूर को तकते हैं इससे भूखा रोटीके लालचसे फँसबैठता है परन्तु जोकि निश्चयका बदलाना भी उचितहै इससे जितने मत बदलाया उसने कुछ अपराध नहींकिया और जिसने मत बदला उसको अपराधीनहीं कहसक्ते क्योंकि इस मतके अनुसार मुक्तिमें प्रवृत्तहुआ हां इतनी बात है कि अपने घरकी पवित्र रसोई छोड़कर दूसरे के घरकी जूठन जो खाई सो भी उसदशामें जब कि कुछ वहां वास्तवमें वर्त्तमान हुआ और आप परिश्रम भी नहीं किया तो न इधरके हुये न उधरके (धोबी का कुत्ता घरका न घाटका) चमारको स्वर्ग में भी बेगार और जो ऐसे मनुष्य हैं कि जिन्होंने अभी न कुछ कर्म कियाहै और न उपासना न साधुसेवा न दान न

वैराग्य न विवेक परन्तु ज्ञानके वचन सुनकर ज्ञानगाते हैं उनका निस्संदेह कहीं ठिकाना नहीं यह लोग अभिमानी होजाते हैं इससे वेदान्त का श्रवण बिना अधिकारके वास्तवमें निषेधहै और ऐसेलोग नामकी इच्छा रखते हैं देखिये दोनों भूल कैसे बुरे हैं अभिमानी मालिकसे विमुखहोता है और नामकी इच्छा रखता है इससे अपना समय वृथाखोता है किसी अज्ञानी ने उनकी प्रशंसा करदी तो फूलगये इस से वह अपने ज़रासे सुखकेवास्ते दीन और दुनियां दोनों बिगाड़ते हैं वहलोग ऐसा निश्चय करलेते हैं कि ऐसेही ज्ञानी होते हैं और सबने नामही की इच्छाकी है मूर्ख ऐसा नहीं समझते कि ज्ञानी होना बहुत कठिन है और यह नहीं समझते कि नामकी कितनी प्रतिष्ठाहै और नाम और नेकनामी क्या है वास्तवमें देखिये तो नाम होनेका कितना फलहै नाम देहका होताहै सो जड़है उसका अन्त होजाता है देहको नामहोने से क्या फल मिला जीवकी दशा सुनिये कि जो ज्ञानी है उसको तो जगत्का अभावहै उसको नाम किस प्रकार सुख दे सक्ता है और जो ज्ञानी नहीं हैं परन्तु शुभकर्मी हैं या उपासक हैं जो उन्होंने देहपाई तो पहिले देह की याद नहीं होती फिर नाम से उनको क्या फल और जो स्वर्गको गये तो फिर वह अपना नाम सुननेको नहीं आते और जो अज्ञानी हैं वह नरकको गये या नीचयोनि पाई तो कहो नाम उनको क्या सुखदायी होगा हां नेकनामीका इतनाफलहै कि उसकी इच्छासे शुभकर्मबनना

है । इससे महात्माओंने कहीं २ नेकनामीकी प्रशंसा कीहै परन्तु अब लोग नेकनामी तो प्राप्त कियाचाहते हैं और कुकर्म करनेलगते हैं कहो नेकनामी कैसे होगी और जो ऐसा कहो कि महात्मा भी अपने नाम को पचै हैं यह कहना अशुद्धहै महात्माओं की बात अत्यन्त पृथक् है वह जो कर्म करते हैं वह दूसरों के कर्म सुधारने के वास्ते हैं उद्धवजीने भी श्रीकृष्णमहाराजसे पूछा कि आपको और ज्ञानीको कर्मका बन्धन नहीं है फिर नहाना धोना सेवा पूजा कर्म किसवास्ते करतेहो महाराजका वचन है ॥

एकादशका-श्लोक ॥

शौचमाचमनंस्नानं नतुचेदनपाचरेत् ।
अन्यश्चनिजमानयोगी यथाहंलीलयेश्वर ॥

इसका अर्थ यहहै कि स्नान आदिका करना कर्म है और मुझे औ ज्ञानीको कुतूहलवत् हैं और एकस्थान पर ऐसा भी कहाहै कि जो मैं न करूंगा तो जगत् भ्रष्ट हो जायगा महात्मालोग यद्यपि जगत् का व्यवहार करतेहैं परन्तु उनको जगत्का बन्धन नहीं होता ॥

दो०जैसे जलमें कमल निराला, मुर्गाबी नीसानी ॥
सुरतशब्दभवसागरतरिये, नानक नामबखानी १

कमल जलसे उत्पन्नहोताहै और जलहीमें रहताहै परन्तु जल से निरालाहै मुर्गाबी जानवर पानीमें गोता लेता है परन्तु जब निकलता है तबसूखाका सूखाही निकलताहै ऐसा चिकना होताहै कि पानी उसकी देहमें भिदतानहीं इसीप्रकार महात्माओंका हिसाब है जगत

में आते हैं और कर्मभी सबकरते हैं तथा लिप्तनहीं होते इसप्रकार एक और भी दृष्टान्तहै कि एक गोपी के पुत्रनहीं होताथा सो श्रीकृष्ण महाराजने कहा कि तू दुर्बासा ऋषि के पास जा और उनसे अपनी प्रार्थनाकर गोपीने कहा कि दुर्बासा ऋषि यमुना पार हैं मैं पार कैसे जाऊं श्रीकृष्णजीनेकहा कि यमुनासे यों कहि दीजियो कि जो श्रीकृष्णजी ने कभी स्त्रीप्रसंगकियाहो तो मार्गमतदे और जो न कियाहो तो दे गोपी यहबात सुनकर आश्चर्ययुक्तहुई कि यह महाराज ने क्याकहा कि सबसे अधिकतो विषय कियाकरतेहैं और यहकहते हैं कि जो कभी विषय कियाहो तो मार्ग मत दे परन्तु वह गोपी चल खड़ीहुई उसने जाकर यमुनाजी से यही बात कही तो यमुनाने मार्ग देदिया गोपीने पारजाय दुर्बासाऋषि के पास जाकर उनके आगे भोजन रक्खा और अपना मनोरथ कहा दुर्वासाऋषिने भोजन करके गोपीको आशीर्वाददिया गोपीनेकहा कि महाराजयमुना से कैसे पार उतरोंगी दुर्बासाजीने कहा कि तू यमुनाजीसे कहियो कि जो दुर्बासाजी ने कभी अन्न भोजन कियाहो तो मार्गमतदे और जो कभी न खायाहो तो मार्गदे गोपी सुनकर अत्यन्त आश्चर्ययुक्तहुई कि अभी मेरेही सामने सब मेरा लायाहुआ भोजन खागये और यह कहते हैं कि जो कभी भोजन खाया हो तो मार्गमतदे परन्तु शोचविचार करतीहुई गोपी वहांसे चलदी यहीबात यमुना से आकरकही यमुना ने मार्गदिया गोपीने पारआकर यह सब वृत्तान्त

श्रीकृष्णजी से कहकर फिर यह प्रश्नकिया कि महा-राज मुझको इन बातों का भेद बता दीजिये श्रीकृष्ण महाराजने कहा कि सुन गोपी यह कोई विषय अपने चित्तकी इच्छा से नहीं करैहैं और न उसका सुख हम को आनन्द देता है परन्तु दूसरे की केवल इच्छा से उसकी प्रसन्नता के निमित्त भोग करते हैं इसी प्रकार दुर्बासाऋषि का भोजन है अब देखिये इतनी सामर्थ्य अपने में तो नहीं है फिर महात्माओं के कृत कर्मों को और अपने कर्मों को कैसे समान समझै परन्तु अ-ज्ञानियों का यही स्वभावहै कि जिस बात में कुछ सुख दृष्टि पड़ा और सुगम हुआ तो गुरू की रीस करनेलगे और जो अपनेसे कुछबुरा काम होगया या जिस बात में दुःखहुआ या पराक्रमका व्यय है अथवा कठिन है तो अलग होजाते हैं एक दृष्टान्त है कि किसी मनुष्य ने हिंसाकीथी तथा च हत्या उसके पास आई कि मुझे स्वीकार कर उस मनुष्यने हत्या से कहा कि तू मेरेपास क्यों आई है इन्द्रके पास जा क्योंकि हाथों से हत्या हुई थी और हाथों का देवता इन्द्र है वह तुझे स्वीकार करैगा हत्या ने इन्द्र के पास जाकर सब बृत्तान्त कहा इन्द्र यहसुनकर मनुष्यका रूप धारणकर उसमनुष्यके पास आया वह उससमय अपने बागमें तालाब के कि-नारे खड़ाथा इन्द्रने बहुतसे वृक्षोंकी बहुत प्रशंसाकी और पूछा कि यह तालाब किसने बनाया और वृक्ष किसने लगाये हैं उसने कहा कि इन हाथों ने और अ-पने हाथोंकी ओर इशारा किया इन्द्र बोला कि हत्या

तो मेरे शिर और ये पेंड़ तेरे हाथों ने लगाये अब देखिये कि इस मनुष्यकी कैसी भारी भूलथी कि दुःख की बातमें तो आप अलगहोगया और सुखकी बातमें अपना अभिमान किया एक ऐसाही प्रसंग और सुनिये कि एक गुरू और एक चेला दोनों कहीं साथजाते थे गुरू एक कलार की दूकानपर मदिरा पीनेलगे चेले ने कहा जब गुरूही पीते हैं तो मुझे क्याहुआ आपभी पीनेलगा इसी प्रकार कई बातें जो सुखपूर्वक और सुगम की थीं गुरूकी रीस करके चेले ने भी किया आगे कहीं तेलका कड़ाह गर्म होरहाथा गुरू उस तेल के कड़ाह में जाकूदे अब चेलेजी खड़ेदेखतेहैं गुरूने कहा कि अब क्यों नहींआता मदिरा पीनाही! जानताथा सच है कि (गुरूकहै सो कीजिये औ करै सो करिये नाहिं) देखो ऐसी बातों के भेद सत्सङ्ग के विना नहीं खुलते इससे मनुष्यको उचितहुआ कि मुक्ति प्राप्त करने के लिये सत्सङ्गकरे जो बात कि सत्य है वह सत्सङ्गही से प्राप्तहोती है सत्सङ्गकी महिमा वेद शास्त्र और पुराण और सब सन्त महात्माओं ने की है इसप्रकार एक दृष्टान्त है कि कोई चोरथा उसने मरतीसमय अपने लड़कों को शिक्षाकी कि तुम कभी सत्सङ्गमें मत जाना नहीं तो भूखे मरजाओगे उसके लड़के अपने बापकी शिक्षापर यहांतक चलते थे कि फ़क़ीर और पण्डितों की बात नहीं सुनते थे किसीस्थानपर जहां उसका एकलड़का जायाकरताथा वहां कथा हुआकरती थी जब वह उसस्थानके पास जायाकरता तो अपने

कानों में अंगुली देलियाकरताथा एकदिन उसी स्थान के पास उसके पैर में कांटा लगगया उसके निकालने को कान से अंगुली निकाली उससमय कथा में यह प्रसङ्ग हो रहाथा कि देवताके परछाहींनहीं होती इतना उसको सुनाईदेगया दोचार दिन पीछे कहीं उसने चोरी की किसी मनुष्यने उसके पकड़ादेने का इक़रार किया तथा देवीका रूप बनाकर रात्रिके समय उन चोरोंके मकानपर गया और यह कहनेलगा कि तुमने अबतक चोरी के माल में से मेरी कड़ाही नहीं दी अर्थात् मेरा हिस्सा मुझकोनहीं पहुँचायामैं तुमको मारडालूंगी तथ च चोरोंने बाहर निकलकर पहले उसको बहुत दीनत से दण्डवत् की और जैसे वह अपना वृत्तान्त कहाचाहतेथे कि इतनेमें उस चोरने जिसने ऐसासुनाथा कि देवता के परछाहीं नहीं होती दीपक लाकर देखा तो देवीकी परछाहींपड़ी उसको निश्चयहुआ कि देवी नहीं है उसका छलसमझकर खूब उसको मारा और निकाल दिया अब इसका अभिप्राययहहै कि उस चोरने केवल एकवचन कथाका एकादिनसुनाथा उसके बदलेसे उसने दशबीस जानें बचाईं और नहीं तो सब चोर मारेजाते दूसरे उसको कथापर अत्यन्त विश्वासहुआ आपसे आप कथावार्त्तामें जाने लगा और अन्यचोरों को भी लेजानेलगा हौलेहौले वह सबचोर भक्तहोगये यह महिमा सत्सङ्गकी है साधु फ़क़ीरों का सत्सङ्ग ऐसा उत्तम है कि पारस पत्थर से भी अधिक गुण रखता है पारस लोहे को सुवर्ण बनाता परंतु पारस

नहीं करलेता और अच्छे मनुष्य अपने समान कर लेते हैं जैसे भृङ्गी अन्य कीटको भृङ्गीही बनाता है एक दृष्टान्त है कि एक पहुँचेहुये फ़क़ीर किसी नावपर बैठे थे दैवयोग से उनके पास एक दुष्टजन्तु आबैठा उसने अपने स्वभाव के अनुसार बिना कारण उन फ़क़ीर साहब को बहुत तंगकिया यहांतक कि उनको ऐसा मारा कि रुधिरबहनिकला उस समय आकाशवाणी हुई कि इसनावको डुबोदूं तब फ़क़ीरसाहबने कहा कि मैं ऐसा पापी मनुष्य इसनाव में बैठा कि जो नावके डुबानेकी आवश्यकता हुई फिर आकाशवाणी हुई कि यह मनुष्य जिसने दुःखदिया है डूबजाय फिर फ़क़ीर साहब ने विनयकी कि मैं ऐसा पापी बुरा मनुष्यहूं कि जो मेरे पास आकर बैठा वह डुबोयाजाय फिर तीसरी बार आकाशवाणी हुई कि न्याय तो होगा उस समय फ़क़ीर साहबने विनयकी कि जो दुष्टस्वभावता इसमनुष्य में है वह डुबादीजाय उसी समय वह दुष्टस्वभाव शुद्धचित्त होगया अब देखा चाहिये कि फ़क़ीरसाहब ने ऐसे नीच को अपने बराबर पूरा फ़क़ीर बनालिया देखो जो सज्जनहैं वह नेकीही करतेहैं क्योंकि वह ऐसा समझते हैं कि जो बुरे ने बुराई न छोड़ी तो हम भलाई क्यों छोड़ें और यह कि बिच्छू कुछ विचार कर किसीपर डंक नहीं चलाता उसका डंक चलाना स्वभावही है ऐसे नेकों को नेकी का करना उनका स्वभाव ही है इस स्थान पर यह प्रकट करना उचित मालूम होताहै कि बाजे २ अज्ञानी मनुष्य यह कहनेलगेंगे कि

साधु फ़क़ीर तो सब प्रकार नेकीही करते हैं इससे स
त्सङ्ग करके क्या करै चलो उनको तंगही न करैं देखि
यह अत्यन्त अज्ञानताहै एक दृष्टान्तहै कि एक मनुष्
एकरुपया अपने घरसे लेकरचला मार्ग में वह रुपय
कहीं गिरपड़ा अब वह मनुष्य अत्यन्त पश्चात्ताप क
रनेलगा किसी मनुष्य ने उससे उसके दुःखका वृत्तान्त
पूछा उसने कहाकि मेरारुपया गिरपड़ा उसने कह
चलो सन्तोषकरो जानहार था सो गया अब शोच क्यं
करते हो उसने उत्तरदिया कि मुझे रुपये का शोच त
नहीं है परन्तु मेरे घर साधुफ़क़ीर का न्योताहै औ
वह दोचार घड़ीमें आवैंगे और मेरे पास और रुपय
नहींहै उनको क्या खिलाऊंगा वह मनुष्य सज्जन औ
धनाढ्यथा अपने पाससे एक अशर्फ़ी निकालकर देने
लगा उसमनुष्यने कहा कि मेरी अशर्फ़ी नहींगईहै और
न मुझको अशर्फ़ीकी आवश्यकताहै मैं अशर्फ़ी लेकर
क्याकरूं अशर्फ़ी नहीं ली उस मनुष्यने उससमय एक
रुपया निकालकर उसकोदिया उसनेलेलिया और यह
कहा कि जो मुझको ईश्वर इसयोग्य करैगा तोमैं व्याज
समेत दूंगा नहींतो आज न्योता तुम्हारीहीओरसे हुआ
उस मनुष्यने ज़बरदस्ती अशर्फ़ी भी उसकोदी ला-
चारहो उसनेलेली अब यहमनुष्य रुपया और अशर्फ़ी
लेकर रवाने हुआ दैवयोगसे इसवृत्तान्तको कोई ती-
सरामनुष्य खड़ा देखताथा उसने अपने चित्तमें विचार
किया कि वाह यहमनुष्य खूबहै चलो तुम भी इससे
अशर्फ़ीलो यह तीसरा मनुष्य थोड़ीदूर आगेजाकर एक

स्थानपर बैठकर रोनेलगा कि मेरा रुपया गिरपड़ा उस मनुष्यने जिस ने अशर्फ़ी दीथी इस से भी वृत्तान्त निश्चय किया परन्तु साफ़ बिदित होगयाकियह झूठा है उसके फरेबके बदले उसको दण्डदियागया अब देखिये कि छल छिद्र से काम नहीं निकलता और जो कोई बात छलसे हो भी जाती है तो नियत नहीं रहती ईश्वरके घरसे दण्डपावैगा और जो दृष्टांत कि फ़क़ीर साहब और दुष्ट मनुष्यका लिखागया है उससे केवल फ़क़ीरीकी समता की महिमा दिखलाईहै अब और भी सत्सङ्ग की महिमा सुनो कि एकचोर चोरीकरके भागा परन्तु उसको किसी रीतिसे ऐसा सन्देह हुआ कि मैं पाकड़ा जाऊंगा उसने उस थैलीको छिपाकर एक मन्दिर में जाकर महन्त जी से विनयकी कि मैं फ़क़ीर हुआ चाहताहूं महन्तजी ने चेला करलिया और वह साधु बन बैठा खोजियों ने चोर का पता मन्दिर में लगाया उसकी ख़बर राजाको पहुँची जोकि सन्देहचोरीका साधु पर हुआथा इससे राजा ने खोजियोंसे कहा कि जो साधू चोर न निकलेगा तो तुम सब मरवाडालेजावोगे खोजियोंने इसबातको स्वीकार करके कहाकि मन्दिरमें चोर है और उससमय चोर साहूकारकी परीक्षा इसप्रकार होतीथी कि एक लोहेका गोला गर्मकरके हाथपर रक्खा जाया करता था जो हाथ जलगया तो चोरी साबित होगई इसी रीतिके अनुसार तप्तगोला उस साधूके हाथ पर रक्खागया साधूने गोला लेती समय यह कहा कि जो मैंने इसजन्ममें चोरी कीहो तो मेरा हाथ जलजाय

गोला उसके हाथ पर रक्खागया और उसका हाथ न जला तब राजा ने खोजियों के मारने की तजवीज़ की उससमय उस साधू ने कहा कि महाराज इनका कुछ अपराध नहीं है मैंही चोरहूं राजा ने कहा कि तुम्हारा हाथ क्यों न जला साधू ने उत्तरदिया कि मैंने यह कहा था कि इस जन्म में चोरीकीहो तो मेराहाथ जलजाय जबसे मैं साधुहुआ तबसे दूसरा जन्म होगया इसहेतु से मेरा हाथ न जला राजा चुप होरहा अब आशय इसका यह हुआ कि जो छलसे भी सत्सङ्ग में लगगये हैं वह सिद्धहोगये हैं देखो चोरने अपने को भी बचाया और दया करके उन खोजियों को भी बचाया और माल मालिक के हवाले किया इस से जो मनुष्य चित्तसे और विचारपूर्वक सत्सङ्ग करेंगे उनकी मुक्तिहोने में क्या संदेह है परन्तु यह बात मुख्य है कि सत्सङ्ग की तलाश वह करेगा जो इस संसारको दुःखरूप समझेगा और अपने को परलोक की चाह होगी॥

चौ० नानकदुखियासबसंसारा। जोसुखियासोनामअधारा॥

किसीने यहखोजकिया कि कोई इससंसारमें सुखिया भीहै जहां देखा वहां कुछ न कुछ पुकारहीसुनी एक मनुष्य को प्रत्यक्षमें सबप्रकार सुखीपाया परन्तु निश्चय करनेपर उस मनुष्य ने कहा कि जितना मैं दुःखीहूं उतना इस संसारमें कोई दुखिया नहीं अपनावृत्तांत वर्णन किया कि मुझको अपनी स्त्रीसे बड़ास्नेहथा एकबार वह ऐसी रोगग्रसितहुई कि जीनेकी आशा न रही स्त्रीने पश्चात्ताप करके कहा कि अबतुम दूसरा विवाह करोगे तथाच

मुझको स्नेहकेकारण यहविदितकरना अवश्यहुआ कि मैं बिवाह न करूंगा उस समय मैंने अपनेको नपुंसक कर डाला अबस्त्री निरोग घरमें वर्त्तमानहै रातदिन अत्यन्त दुःखीहूं इससे संसार में सुख नहीं है भूलसे तृष्णा में फँसताहै जो मनुष्य ध्यानसे देखै तो वास्तवमें सुख पाने के लिये अपने समय को वृथा खोता है और स्वामी से बिमुख होताहै इसपर एक दृष्टान्तहै कि किसी बादशाहने अपने वज़ीर को इनाम में दुशालादिया वज़ीर प्रतिष्ठापूर्वक दुशाला लेकर बाहरआया उस समय उस की नाक बहनिकली तो उसने जल्दी में अपनीनाक को दुशालेसे पोंछलिया किसी मनुष्यने बादशाह से चुगली खाई कि आपने तो वज़ीरको इनाम दिया उसने उसकी अत्यन्त तुच्छता की बादशाह ने उसीसमय वज़ीर को बुलाकर देखा तो मुख़बिरका कहना सचहुआ बादशाह ने क्रोधितहोकर उसीसमय वज़ीर से दुशालाछीनलिया और उसको अधिकाररहित करके बड़ी अप्रतिष्ठा से निकलवा दिया दैवयोगसे यहवृत्तान्त एक फ़क़ीर भी बाहर खड़ा देखता रहाथा उस समय उसने पश्चात्ताप खाकर कहा कि बादशाह ने केवल ऐसे छोटे अपराध पर ऐसा दण्ड दिया हमलोगोंको ईश्वर के यहां से क्या दण्ड होगा कि जो इनाम अर्थात् मनुष्यदेह हमको दियाहै हम उसको अत्यन्त भ्रष्ट किये डालतेहैं हमईश्वरको क्या मुख दिखलावैंगे उसी समयसे फ़क़ीर अपने ध्यानमें लगगया अब मनुष्य को चाहिये कि जिस प्रकार इस संसार के सामान के लिये दौड़ना है

जो थोड़े काल के लिये हैं किन्तु एक क्षणमात्र की स्थिरता नहीं उसीप्रकार परलोक किन्तु उससे अधिक परलोक की चिन्ता क्यों नहीं करता यह प्रकट है कि जीव नित्य बनारहताहै और देह मरतीहै जो जीव वना रहता तो वेदशास्त्र किसवास्ते अच्छे कर्मों की शिक्षा करते हैं और मरनेकेपीछे क्रियाकर्म करातेहैं कि जिससे जीव सुखपावै इससे देखो कि अत्यन्त बड़ी अवस्था हुई तो साठ सत्तर वर्षकी और तदनन्तर सदैव रहना है कि जिसकीकुछ गिन्तीनहीं फिर साठ सत्तर वर्ष किस गिन्ती में हैं और इस मनुष्यदेह में ईश्वरका स्मरण होसक्ताहै और देहमें नहीं होसक्ता इससे इसको अपनासमय संसारके खेलकूद और बिषयमेंखोना कैसाबुराहै और एक दिनका भरोसानहीं फिरभी नहीं समझता एकस्थानपर किसी मनुष्यने एकफ़क़ीरसे पूछा कि महाराज बस्तीका रस्ता कहां है साधु ने मरघटका रस्ता बतादिया वह मनुष्य पतेके अनुसार उस स्थानपर पहुँचा वहां मरघट देखता है बहुत आश्चर्यित हुआ और कहनेलगा कि साधू फ़क़ीर भी झूठ बोलते हैं वहां से लौटकर फिर साधुकेपास आया और कहा कि महाराज आपने मुझे बहकादिया साधूबोले कि तूने बस्तीका मार्ग पूछाथा सो भाई बस्तीकी राह तो वही है क्योंकि यह बस्ती नहीं है इसको उजाड़ कहना चाहिये कि यहांसे सब चलेजाते हैं एक और दृष्टान्त है कि कोई सेवक अपने गुरूकी सेवा किया करताथा अच्छे २ भोजन और कपड़े लेजाया करता परंतु गुरूजी निषेध कियाकरते

वह सेवक कहा करता कि महाराज अच्छे खाने पहरने में क्या दोषहै इस अन्तरमें दैवयोगसे सेवक को किसी साहूकारकी लड़की दृष्टिपड़ी वह अत्यन्त स्वरूपवती थी सेवक उसपर आसक्त होगया अब उसके मिलने के शोचमें सूखता जाताहै फ़क़ीर साहब उससे दुःखका हेतु निश्चय करते हैं परन्तु वह लज्जाके मारे वर्णन नहीं करता एक दिन फ़क़ीर साहबने ज़िद्दकरके पूछा तब उसने सब बृत्तान्त वर्णनकिया फ़क़ीर साहबने कहा कि यह वात कौन कठिनहै अभी हम उसीलड़की को वुलवादेते हैं जो कि फ़क़ीरसाहब बड़े अच्छे पुरुषथे उनके हुक्मको कोई टालनहीं सक्ताथा फ़क़ीर साहब ने सायंकाल को साहूकार से कहलाभेजा कि अपनी लड़की को भेजदो उसने लड़की को उसी समय भेज दिया फ़क़ीर साहबने सेवकसे कहा कि लड़की तेरे साथहै परन्तु तेरीमृत्यु पांच पहर पीछे अर्थात् पहर दिन चढ़े आवेगी उस समय तो सेवक बहुत प्रसन्नता से उस स्त्रीको साथलेगया परन्तु जब मार्गमें उसको मृत्युका स्मरणहुआ तो उसके होशउड़गये उस स्त्री से वात करने की भी सामर्थ्य न रही मृत्युका शोच शिरपर सवारहोगया प्रातःकाल वह स्त्री अपने घरगई यह शोचमें पड़ारहा जब पहरदिन व्यतीतहोगया और मृत्यु उसकी न आई तब उसनेकहा कि फ़क़ीर साहब भी मिथ्या वोलतेहैं उठ कर फ़क़ीर साहबके पासगया और कहा कि मृत्यु मुझको तो अबतक नहीं आई फ़क़ीर साहबने पूछा कि तूने उस स्त्रीसे अच्छे प्रकार

जो थोड़े काल के लिये हैं किन्तु एक क्षणमात्र की स्थिरता नहीं उसीप्रकार परलोक किन्तु उससे अधिक परलोक की चिन्ता क्यों नहीं करता यह प्रकट है कि जीव नित्य बनारहताहै और देह मरतीहै जो जीव बना रहता तो वेदशास्त्र किसवास्ते अच्छे कर्मों की शिक्षा करते हैं और मरनेकेपीछे क्रियाकर्म करातेहैं कि जिससे जीव सुखपावै इससे देखो कि अत्यन्त बड़ी अवस्था हुई तो साठ सत्तर वर्षकी और तदनन्तर सदैव रहना है कि जिसकीकुछ गिन्तीनहीं फिर साठ सत्तर वर्ष किस गिन्ती में हैं और इस मनुष्यदेह में ईश्वरका स्मरण होसक्ताहै और देहमें नहीं होसक्ता इससे इसको अपनासमय संसारके खेलकूद और बिषयमेंखोना कैसाबुराहै और एक दिनका भरोसानहीं फिरभी नहीं समझता एकस्थानपर किसी मनुष्यने एकफ़क़ीरसे पूछा कि महाराज बस्तीका रस्ता कहां है साधु ने मरघटका रस्ता बतादिया वह मनुष्य पतेके अनुसार उस स्थानपर पहुँचा वहां मरघट देखता है बहुत आश्चर्यित हुआ और कहनेलगा कि साधू फ़क़ीर भी झूठ बोलते हैं वहां से लौटकर फिर साधुकेपास आया और कहा कि महाराज आपने मुझे बहकादिया साधूबोले कि तूने बस्तीका मार्ग पूछाथा सो भाई बस्तीकी राह तो वही है क्योंकि यह बस्ती नहीं है इसको उजाड़ कहना चाहिये कि यहांसे सब चलेजातेहैं एक और दृष्टान्त है कि कोई सेवक अपने गुरूकी सेवा किया करताथा अच्छे २ भोजन और कपड़े लेजाया करता परंतु गुरूजी निषेध कियाकरते

वह सेवक कहा करता कि महाराज अच्छे खाने पहरने में क्या दोषहै इस अन्तरमें दैवयोगसे सेवक को किसी साहूकारकी लड़की दृष्टिपड़ी वह अत्यन्त स्वरूपवती थी सेवक उसपर आसक्त होगया अब उसके मिलने के शोचमें सूखता जाताहै फ़क़ीर साहब उससे दुःखका हेतु निश्चय करते हैं परन्तु वह लज्जाके मारे वर्णन नहीं करता एक दिन फ़क़ीर साहबने ज़िद्दकरके पूछा तब उसने सब बृत्तान्त वर्णनकिया फ़क़ीर साहबने कहा कि यह बात कौन कठिनहै अभी हम उसीलड़की को बुलवादेते हैं जो कि फ़क़ीरसाहब बड़े अच्छे पुरुषथे उनके हुक्मको कोई टालनहीं सक्ताथा फ़क़ीर साहब ने सायंकाल को साहूकार से कहलाभेजा कि अपनी लड़की को भेजदो उसने लड़की को उसी समय भेज दिया फ़क़ीर साहबने सेवकसे कहा कि लड़की तेरे साथहै परन्तु तेरीमृत्यु पांच पहर पीछे अर्थात् पहर दिन चढ़े आवेगी उस समय तो सेवक बहुत प्रसन्नता से उस स्त्रीको साथलेगया परन्तु जब मार्गमें उसको मृत्युका स्मरणहुआ तो उसके होशउड़गये उस स्त्री से बात करने की भी सामर्थ्य न रही मृत्युका शोच शिरपर सवारहोगया प्रातःकाल वह स्त्री अपने घरगई यह शोचमें पड़ारहा जब पहरदिन व्यतीतहोगया और मृत्यु उसकी न आई तब उसनेकहा कि फ़क़ीर साहब भी मिथ्या बोलतेहैं उठ कर फ़क़ीर साहबके पासगया और कहा कि मृत्यु मुझको तो अबतक नहीं आई फ़क़ीर साहबने पूछा कि तूने उस स्त्रीसे अच्छे प्रकार

से भोग किया उसने सत्य सत्य सब अपना वृत्तान्त कहदिया उस समय फ़क़ीर साहबने कहा कि देख वह चीज कि जिसके वास्ते तू जानदेताथा तुझको प्राप्तहुई और मृत्युके आने में पांचपहर की देर थी इससे वह वस्तु तुझ से भोगी न गई हम कि अपनी मौत दम दम पर समझते हैं और निश्चय नहीं कि दूसरा दम आवै या न आवै कहो अच्छे अच्छे भोजन और वस्त्र जिनको हम तुच्छ समझतेहैं वह किसप्रकार भोगे जायँ और देखो कि जैसे दर्पण चिकनाई लगने से मैला होजाताहै और सूखा आटा मलनेसे सफ़ाहोजाता है ऐसे बिषयभोग मायाके जो चिकनाईके सदृश हैं और अन्तःकरण जो दर्पणके समानहै उसको मैलाकरदेते हैं और वैराग्य विवेक आदिक जो सूखे आटेके समान हैं वह अन्तःकरणको प्रकाशित और शुद्धकरदेते हैं सो आशय इसका यहहै कि एक दमका भरोसा नहीं है इससे मनुष्य शोच समझकर जगत्के विषय से बचकर अपने परलोककीचिन्ताकरैं संसारमें थोड़ा जीवन है और अवधि क्षण क्षण में व्यतीत होतीजाती है और मरनेके पीछे जीव नित्यहै और सदैव रहताहै परन्तु अज्ञानी इस जीवनको ऐसा समझता है कि कभी अन्त न होगा और यही समझकर इसीसंसारके आनन्द के सामान किया करता है और उसको यह स्मरण नहीं कि कभी मृत्यु भी आवेगी और ऐसा समझै तो पाथ्य अर्थात् तोसाबांधै और मूर्ख और आलसीलोग अपनी अवस्था शोच विचारही में खोते हैं और कोई काम

नहीं करते एक और दृष्टान्त है कि कोई मनुष्य किसी फ़क़ीर साहब के पास अच्छी पोशाक लेगया फ़क़ीर साहबने लेने से निषेध किया उस मनुष्य ने कहा कि आप क्यों नहीं लेते हैं फ़क़ीर साहबने कहा कि इससे बहुत नुकसान होता है और ईश्वर की अप्रसन्नता होती है हम को भस्म का धारण करनाही उत्तम पोशाक है उस मनुष्य ने कहा कि ईश्वर कहां है और किसने देखा है आपपहिरिये और आनन्द करिये फ़क़ीर साहब ने कहा कि भला जो ईश्वर होय तो क्या गति होगी वह मनुष्य निरुत्तर हुआ आशय इसका यह है कि मनुष्यको धोखामें क्यों पड़ना जो कदाचित् ईश्वरहुआ तो अपराधी हुआ और जो ईश्वर नहींहै तो भोगविलास न करनेमें किसी की क्याहानिहै तात्पर्य यह है कि संसारके आनन्द और सुख से बचना चाहिये अन्तको यही आनन्द बहुत दुःखदेंगे परन्तु बाजे बुद्धिमान् ऐसा कहते हैं कि संसारी मनुष्यों से स्मरण कब होसक्ताहै दो घोड़ेकी सवारी नहीं होसक्ती देखिये यह कहना कैसा अशुद्धहै दो घोड़े की सवारी होसक्ती है एक बग्घी या रथ में दो घोड़े जोतले वह सवारी दो घोड़ोंहीकी तो कहलातीहै एक दृष्टान्तहै कि कोई मुसल्मान निमाज़ पढ़ताथा और उसकेपास हलुआ रक्खा था हलुवेको देखकर बिल्ली आई निमाज़ी हैरानहुआ कि जो बिल्लीको मारताहूं तो निमाज़जाती है और जो नहीं मारताहूं तो खानाजाताहै और खाने बिना दूसरे समय निमाज़ नहीं होसकेगी उससमय निमाज़ी

ने विचार करके (अलहम्दुल्लाह रब्बिलआलमीन) बहुत ज़ोरसे पढ़ा बिल्ली भागगई इसलिये कि रब्बिल आलमीन में बिल निकलताहै बिल्लीने समझा कि मुझे धमकाया इस हेतु से बिल्ली भागगई अब देखो कि युक्तिसे निमाज़ भी होगई और खाना भी बचा इससे मनुष्य सत्सङ्गमें जाय तो ऐसी युक्ति उसके हाथ आजायगी कि दीन दुनियां दोनों सुधरजायँगे अब यह प्रश्नहै कि ऐसे तुच्छ जीवन के वास्ते क्या जगत्ही का सुख भोगना श्रेष्ठ होगा कि जिसका ठिकाना न एकदिन न एक घड़ी न एक पलकाहै और सदैवके लिये दुःखमें पड़ना या यहकि इसजीवनमें दुःखउठालेना और आगे सदैवका प्रसन्न रहना देखो थोड़े दिनका दुःख सहना और सदैवको आनन्द रहना यही उत्तमहै अब मनुष्य को चाहिये कि मृत्युको हरसमय स्मरणरक्खे इस निमित्त कि जो स्मरण नहीं रखते उनको परलोककी चिन्ता नहीं होती वह अकस्मात्ही मरजाते हैं उनको शोक भी बहुत होता है और जो स्मरण रखताहै उस को मृत्यु सुगम होजाती है और सब प्रकार उसको परलोककी चिन्ता होतीहै परन्तु देखो मृत्युसे डरना न चाहिये किन्तु उसका स्मरण बहुत अवश्यहै और जो ऐसा कहतेहैं कि हमको तो समय नहीं मिलता जो सत्सङ्ग करैं यह भी भूलहै थोड़ीही देर करै होले २ काम बनजायगा॥

दो० करत करत अभ्यासके, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात है, शिलपर करत दगान॥

देखोरस्सी कैसीमृदुवस्तुहै और पत्थरकैसा कठोरहै परन्तु हौले २ कुयेंकी शिलमें रस्सीसे गर्तहोजाताहै मनुष्य परिश्रम नहीं किया चाहता नहीं तो जो चाहै सो होसक्ताहै परन्तु मनुष्य ऐसी इच्छा रखते हैं कि दुःख तो किंचित् न हो और काम पूरा होजाय सो ऐसीही दशा प्रकट देखनेमें आतीहै अब बाजे बुद्धिमानोंने केवल इतनेही को मुक्ति समझ रक्खी है कि सवा पैसेकी मिठाई और दो चारपैसे किसी साधु ब्राह्मण के आगे रखके गुरुदीक्षालेली बस अब जन्मभरकी छुट्टीहुई जो उनसे कोई कहताहै कि भाई सत्सङ्ग करो तो आपका जवाब है कि हम तो गुरुदीक्षा लेचुके जब गुरुमुख होगये तो और क्या करनारहा अब ऐसे मूर्खोंको क्या समझावै जो सवा पैसे में गुरुमुख बनजातेहैं देखो गुरुमुखहोना बहुत कठिनहै गुरुमुख उसको कहते हैं जो गुरु और भगवान् की आज्ञामें चलै और जो कुछ भला बुरा होय सब में प्रसन्न रहै और किसी बातमें दखल न दे और अपनी बुद्धिको बड़ी न समझै कहिये यह बात कैसी कठिन है अब जो देखतेहैं तो उनका कुछ अपराध नहीं है क्योंकि इस समयके गुरूजी भी दो चार पैसेहीपर राज़ी होजातेहैं और समझलेते हैं कि एक चेलाहीबढ़ा उनको उसकी मुक्ति से क्या फलसिद्धि अपना प्रयोजन तो खूब बनगया यद्यपि खोट दोनोंओर की है परन्तु वास्तवमें चेलेहीकी मूर्खताहै जो यह नहीं समझा कि अपना काम बिना अपने परिश्रमके नहीं चलसक्ता परन्तु परलोकका शोच किसको है संसारहीमें

आनन्द समझरक्खा है और यह मनुष्य की अत्यन्त भूलहै कि जो संसारी वस्तुओं से सुख समझ रक्खा है संसारका सामान कितनाही होय परन्तु दुःखदूर नहीं होता जब मनुष्य के दशरुपयेहों वह सौरुपयेवालों की ईर्षा करताहै और कहताहै कि जो मेरेपास सौ रुपये होजायँ तो कुछ दुःख न रहैगा सब सुख होजायँगे परन्तु जब सौ रुपये मिलगये तब उसकी दृष्टि हजार वालोंपर पड़ी अब उनके सामानको देखकर उसी प्रकार जैसा दश रुपयेकी दशामें दुःखीथा दुःखी रहताहै अब कदाचित् हजार मिलैगा तो लाखकी इच्छाहोगी इच्छाका अन्त किसी प्रकार नहीं होसक्ता इससे सुख प्राप्त करनेकी यह रीति नहींहै अब देखिये सुख मनुष्य के चित्त में है कुछ संसारीपदार्थों से नहीं इसलिये कि जो चित्तमें कोई संदेह आजाय तो सब सामान न होने पर भी आनन्द नहीं होता आनन्द केवल समझ मेंहै देखिये पहिले तो संसार की तृष्णा दूर नहीं होती जो किसी हेतुसे पूरी भी होजाय तो चित्त और भी बिगड़ जाय परलोकका तो कुछ भी शोच न रहै इस निमित्त कि जो बात दुखियाको अच्छी मालूम होती है वह आसक्तों को अरुचिदायक होती है क्योंकि ऐशके नशे में वह परलोकको क्या जानते हैं और जो ऐसा ध्यान करते हैं कि बहुतसे सामानसे सुख होताहै यह अत्यन्त भूलहै एक दृष्टान्त है कि कहीं किसी बादशाहकी सवारी बाजार में जातीथी एक फ़क़ीर साहब मार्गमें लोट रहेथे लोगों ने आकर कहा कि फ़क़ीर साहब मार्ग

छोड़दो सवारी आतीहै फ़क़ीरसाहबने पूछा कि किस की सवारी आतीहै उनमनुष्योंने कहा कि बादशाहकी सवारी है फ़क़ीरसाहबने कहा कि हम शाहंशाहहैं बाद-शाह हमारा अदब करके एक तरफ़ होकर चलाजाय यह फ़क़ीर साहब का कहना बादशाहतक पहुंचा बाद-शाह सवारी से उतरकर फ़क़ीर साहब के पास आया और कहा कि जो आप शाहंशाहहैं तो शाहंशाही का सामान अर्थात् फ़ौजख़ज़ाना मुझसे अधिक दिखाइये फ़क़ीरसाहब ने पूछा कि फ़ौजकिसकाम आती है बाद-शाह ने जवाब दिया कि शत्रु के मारनेको फ़क़ीरसाहब ने कहा कि हमारा कोई शत्रु नहीं है इससे फ़ौज रखकर क्याकरैं यह ख़बरदारी और फ़िक्र तेरेलियेहै बादशाह ने ख़ज़ाने के बारे में पूछा फ़क़ीर साहब ने कहा कि हमारे ख़र्च नहीं यह होशियारी और लूटजाने का भय तेरे ज़िम्मे है यही हेतुओं से हम शाहंशाह हैं अर्थात् बादशाहों के बादशाह हैं कि कोई संशय नहीं रखते बादशाह निरुत्तरहुआ अब देखो कि संसार के सामान की आधिक्यता से शोचफ़िक्र की आधिक्यता है और आनन्द नहीं इसके विशेष संसार का सामान मनुष्य को सुमार्ग से रोक देताहै इस निमित्त कि उसके चित्त का विनोदक होजाता है इसके विशेष खुशामदियों से प्रशंसा पाताहै इसी में प्रसन्न होजाता है उसको मूल-पदार्थ के सिद्ध करने की इच्छा नहीं होती परन्तु जो संसारी मुझको नहीं चाहते वह सदैव सुमार्ग के खोज में रहते हैं संसार में धन उतनाही अच्छा है कि जिस

में कालक्षेप होजाय इससे विशेष निष्प्रयोजन किन्तु वोझा समझना चाहिये ॥

दो० साहब इतना मांगहूं, जामें कुटुंब समाइ ।
जामें भूखा ना रहूं, साधु न भूखा जाइ ॥

और उस वस्तु से कभी आनन्द न समझै जिसके लेने से दूसरेको दुःख पहुंचे धनसे सुख कभी नहीं है परन्तु जो उससे सुकर्म करे तो लाभकारी है मनुष्य को दूसरे की ओर न देखना चाहिये जो अपने को प्राप्तहो उसीमें संतोष करे वह हज़ार धनी लोगों से बड़ा है इसहेतु से कि वह प्रसन्न रहता है धनी लोग डाहमें जलते हैं इससे ऐसी धनाढ्यता किस अर्थ की अब मनुष्य को उचित हुआ कि संसार की ओर से चित्त उठाकर सच्चेमन से सत्सङ्ग करै सत्सङ्ग से काम क्रोध लोभ मोह अहङ्कार उसका दूरहोगा जब ईश्वर की ओर प्रेम और भक्ति बढ़ैगी तब ईश्वर दयालु होगा और मुक्ति पावैगा अब यह कहना भी अवश्य है कि सत्सङ्ग बड़ेप्रारब्धसे प्राप्त होताहै और सत्सङ्गका असलरङ्ग लगना बहुत कठिन है इस निमित्त कि मनुष्य कहते हैं कि सत्सङ्ग करते हैं परन्तु काम क्रोध लोभ आदि के वशीभूत रहते हैं और समयपर चूकजाते हैं इसका कारण यहहै कि ऐसे मनुष्य सत्सङ्ग नहीं करते वह मनमती रहते हैं उनका काम क्रोध आदि नहींजाता आगे के दृष्टान्तों से ऐसे आदमियों का हाल विदित होगा इसलिये चाहिये कि सत्सङ्ग मोक्ष के लिये करैं तो काम आदि जो ऐसे बली हैं सब दूर होजायँ अब

लोभी का वृत्तान्त सुनो कि (लालचबुरी बलाय) एक विदेशी फ़क़ीर के पास तीन रोटियां थीं परन्तु उसके पास बांधने के लिये कुछ कपड़ा न था और एक और विदेशी था अपने को सत्सङ्गी कहता था उसके पास खानेको न था परन्तु कपड़ा था फ़क़ीर ने उस विदेशी से कहा कि तुम रोटी बांधलो तो तुमको एक रोटी दूंगा उस विदेशी ने रोटी बांधली परन्तु फ़क़ीर से चुराकर उस विदेशीने एकरोटी निकालकर खाली जब फ़क़ीर ने रोटी मांगी तो दो रोटी हवाले की फ़क़ीर ने कहा कि तीन रोटी थीं विदेशी बोला कि मैं क्या जानूं जो दीनी थी सो वर्त्तमान हैं इस में तकरार हुई परन्तु विदेशी सत्य न बोला फ़क़ीर ने चाहा कि इससे सत्य कहलाना चाहिये फ़क़ीरसाहब ने दोचार चमत्कार किये परन्तु विदेशी ने सत्य न कहा अन्तको फ़क़ीर ने एक मिट्टी के ढेर को सुवर्ण बनादिया और चार भाग किये एक अपना और एक विदेशी का और दो भागों के विषय में कहा कि जिसने रोटी खाई है यह उसके हैं विदेशी ने छूटतेही कहा कि रोटी मैंने खाई है फ़क़ीरका प्रयोजन सिद्ध हुआ सब सुवर्ण विदेशी को देकर आप कहीं को चलदिया वह सुवर्ण इतना था कि एक मनुष्य से नहीं चलसक्ता था उसने तीन मज़दूर करके एकएक गठरी उनके शिरपर रक्खी और चौथी आपली एक स्थानपर जहाँ उस मालवाले विदेशी का निवास था उसके पास पहुँचकर चारों उतरे उन मज़दूरों में से दो मनुष्य खाना लेनेको बाज़ार गये और दो वहां ठहरे

रहे जो बाज़ार को गये उन्होंने परस्पर में सलाह की कि उन दोनों मनुष्यों को जो स्थानपर ठहरे हैं मार डालो तो वह सुवर्ण हम तुम बांटलें तथाच सलाह के अनुसार मिठाई में बिष मिलाकर ले आये वह दोनों मनुष्य जो स्थानपर बैठे थे उन्होंने यह सलाह की कि उन दोनों मनुष्यों को जो बाज़ार गये हैं मारडालना चाहिये क्योंकि कुछ सुवर्ण उनको भी देना पड़ैगा इस से दो तलवार रेत में दबारक्खीं जिससमय दोनों मनुष्य बाज़ार से आये और खानेकी वस्तु रखनेलगे उससमय एकदम से दोनों की गर्दन उड़ादी अब इन दोनों ने मिठाई खाई जोकि मिठाई में बिषमिला था इससे यहभी मरगये अब देखिये कि लोभ ऐसा बुरा है एक और दृष्टान्त है कि एक मनुष्य सत्सङ्गमें जाया करताथा कुछदिन पीछे उसको यह अभिलाषा हुई कि मैं किसप्रकार स्वर्ग को देखूं किसी साधु ने कहा कि जो फलाने दिन फलाने समय फलानेप्रकार से तू अपने को जलादे तो वैकुण्ठ पहुँच जायगा उसने स्वीकार किया नियत दिवस को जलाने के वास्ते रवाना हुआ मध्यमें कोई चोर किसी की थैली चुराकर भागा आताथा और चोर को यह विदित हुआ कि मेरे पीछे आदमी भागे आते हैं उसको अपने पकड़े जाने का भयथा उसने उस मनुष्य से जो जलने के वास्ते जाता था पूछा कि तुम कहां जाते हो उसने कहा कि भाई वैकुण्ठ को जाताहूँ चोरने पूछा कि भाई वैकुण्ठ किस प्रकार से जाओगे उसने सब वृत्तान्त कह दिया उस

समय चोर ने थैली निकालकर कहा कि सत्य है जो सुख वैकुण्ठ में है वह रुपये से यहां भी वर्त्तमान है लीजिये यह थैली आप को यहां हीं वैकुण्ठ मिला इस मनुष्य को रुपया देखकर लालच आगया थैलीलेली चोर चलागया पीछेसे आदमी भागे चलेआतेथे उन्हों ने उसमनुष्य के पास थैली देखकर छीनली और बहुत सा मारा अब देखिये लोभ ऐसाबुरा है कि वैकुण्ठ से भी फेरलाया ऐसीही दशा मोहकी है एक दृष्टान्त है कि कोई मनुष्य वैकुण्ठ जानेवाला था उसके लिये देवता विमान लाये जब वह विमानपर चढ़ने लगा तो उसको मोह आया कि अपने जोरू लड़कों को भी ले चलूं परन्तु देवतोंने कहा कि आज्ञा केवल तेरे निमित्त है और किसीको हम विमानपर न चढ़ावेंगे उसमनुष्य ने कहा कि जो हम विमान के पाए से लटकचलें तो कुछ निषेध नहीं है इसबात को देवताओं ने स्वीकार किया तब उस मनुष्य ने विमान का पाया पकड़ा उस की स्त्रीने उसका पैर पकड़ा लड़के ने माका पैर पकड़ा जब विमान उड़ा तो लड़का मारे भय के रोने लगा पिताने कहा कि बेटा रोवैमत मैं तुझे लड्डूदूंगा परन्तु लड़का चुप न हुआ किन्तु और भी अधिक रोनेलगा उससमय उसके पिताको घबराहट में सुधि न रही और इस विचार में हाथ से पाया छोड़दिया कि लड़के को दिखलाऊं कि तुझे इतना बड़ा लड्डूदूंगा जो पाया छोड़ा तो सब के सब पृथ्वी पर गडसे गिरपड़े देखो मोह वैकुंठ से भी फेरलाया काम ऐसाबली है कि

शृङ्गीऋषि तकको भस्माय दिया और सम्पूर्ण संसार को खाये चला जाताहै जो मनुष्य कामके वश होरहाहै वह पशुसे भी निषिद्ध है क्योंकि यह काम मनुष्यों को बेशरम बे अदब बेईमान बनाता है और जैसे घोड़ा बे लगाम होताहै यहीदशा कामीपुरुष की है और कामी वहहै जो अपनी स्त्रीसे बिशेष दूसरीके अनुरागी होता है बिशेष काम के बिषय में आगे लिखाजायगा अब क्रोध का वृत्तान्त सुनो कि एक फ़क़ीर अपनी कुटी में बैठाथा किसी मनुष्य ने उसकी परीक्षा लेना चाहा कि ये क्रोधवश हैं या नहीं उस मनुष्य ने फ़क़ीर साहबसे कहा कि मुझे थोड़ीसी अग्नि दीजिये फ़क़ीर साहबने कहा कि भाई अग्नि मेरी कुटी में नहींहै और वास्तव में अग्नि नहीं थी परन्तु इस मनुष्यने फिर कहा कि महाराज थोड़ी सी दीजिये तब फ़क़ीर साहबने अप्रसन्नहोकर कहा कि यहां अग्नि नहीं इस मनुष्य ने फिर कहा कि महाराज दबीसी तो जान पड़तीहै अब फ़क़ीर साहबने अधिक क्रोधित होकर कहा कि चला जा कैसा आदमी है हम कहते हैं कि अग्नि नहीं है और मांगेही चला जाता है इस मनुष्यने फिर कहा कि महाराज धुआं तो उठता है कुछ थोड़ीसी दे दीजिये फ़क़ीर साहबको अत्यन्त क्रोध हुआ और मारने को दौड़े तब इस मनुष्यने कहा कि अबतो अग्नि बलने लगी अब प्रयोजन इसका यह हुआ कि जो फ़क़ीर को क्रोधहुआ वही अग्नि बलनेलगी इससे क्रोधऐसा बुरा है कि बड़ों बड़ोंको आ दबाता है और देखिये क्रोध

प्रथम तो अपनेही को जलाता है तदनन्तर दूसरे को जलाताहै इस निमित्त क्रोध अग्निहै जब चित्तसे उत्पन्न हुआ मुख से निकला इससे उस अग्निने प्रथम अपने चित्तको जलाया तब दूसरे को जलाती है इससे क्रोध बुरा है जो कभी बहुत आवश्यकता क्रोध करने की आन पड़े तो उसकी यह रीति है कि एक सर्प किसी स्थानपर लोगों को बहुत दुःखदायी होता था किन्तु काट काट खाताथा एक दिन कोई फ़क़ीर वहां आनिकला सर्पने उनपर भी चोटकिया फ़क़ीरने सर्पसे कहा कि ऐसे बुरे काम किस वास्ते करता है शीलवान् होजा फ़क़ीर के कहने से उसको ऐसा असर हुआ कि सर्प उसीसमय से अत्यन्त ग़रीब होगया अब यह दशा हुई कि लड़के उस सर्प को घसीटे घसीटे फिरते हैं थोड़ेकाल पीछे फ़क़ीर साहब फिर आये सर्प से पूछा कि कहो अब क्या दशाहै सर्पने कहा कि देखलो जैसी दशा है फ़क़ीर साहब ने कहा कि हमारा यह प्रयोजन नहीं था कि तू अपनी दुर्गति करावै तुझको उचित था कि अपनी फुंकार नहीं छोड़ता उस समय सर्पने फुंकार मारना प्रारम्भ किया अब आप भी बचा और दूसरों कोभी नहीं काटता ऐसे ढंग से जो क्रोध होय तो कुछ डरभी नहीं अब सुनिये अहङ्कार सबसे बुरा है देखो दुःख और अपमान का सहना सुगम है परन्तु सुख और बड़ाई का सहना कठिनहै सुखमें सब भूल जाना है और अभिमानी होजाता है जो सुख को सँभाले तो पुरुष है और दुःख को तो सभी सहते हैं सुखमें अपने

मित्रों से इस प्रकार भुक्ते जैसे पहिले दरिद्रता में निबाहता था यद्यपि काम क्रोध लोभ मोह अहङ्कार ऐसेही ज़बरदस्त अर्थात् बली हैं परन्तु सच्चे चित्त से सत्सङ्ग करने से मूलसहित दूर होसक्के हैं एक दृष्टान्त है कि किसी साधू ने बहुत सत्सङ्ग किया था इसकारण अत्यन्त शीलवान् होगया किसी मनुष्य ने उसकी परीक्षा लेनाचाहा एक दिन उनको खाने के वास्ते न्योता दे आये और अपने मकान पर आदमियों से कह दिया कि जब वह फ़क़ीर आवे तो एक आदमी उसको धक्का देकर निकाल दे और दूसरा बुलाले इसी प्रकार सात बार करना अब प्रातःकाल के समय वह साधू आया तब आदमियों ने उसीके अनुसार किया परन्तु फ़क़ीर साहब ने कुछ भी न कहा जब बुलाया तब चले आये और जब धक्का दिया तब निकलगये उस समय वह मनुष्य जिसने न्योता दियाथा चरणों में आगिरा कि मेरा अपराध क्षमा होय आप बड़े शीलवान् हैं फ़क़ीर साहब ने कहा कि इसमें मेरी क्या बड़ाई है यह तो कुत्तेका स्वभाव है कि जब लकड़ी दिखाई तब चला जाय और बुलाओ तब चला आवै अब देखिये कि कैसी शीलता इस साधु में थी यह सब सत्सङ्गका असर था जो मनुष्य सच्चे मनसे साधुगुरू के वचन पर विश्वासकरै तो निस्सन्देह उसको सत्सङ्ग का फलहोय एक दृष्टान्त है कि एक गँवार था उसको यहसूझी कि किसीको गुरू करके भगवान् से मिलना चाहिये इतने में एक फ़क़ीर आगये उसने प्रार्थना की फ़क़ीर साहब

ने उसको गँवार समझकर एक पत्थर का टुकड़ा उठा दिया और कहा कि यही भगवान् हैं इसकी पूजा किया कर जो इससे कोई और ज़बरदस्त मिलै तो उसे पूजियो यह गँवार उस पत्थर को पूजनेलगा सदैव बड़ी प्रीति से आंख बन्दकरके उसको भोग लगाया करता इतने में चूहे खाने को देखकर आते और लेजाया करते जब यह मनुष्य आंख खोलकर देखता तो समझता कि महाराज ठाकुरजी ने भोजन करलिये एकदिन दैवयोग से उसने चूहों को देख लिया कि चूहे भोजन खा रहेहैं उसने अपने मनमें बिचार किया कि अब पूजा चूहे की करनी चाहिये कि चूहे ठाकुरजी से ज़बरदस्त हैं अब वह पूजा चूहे की करने लगा एक दिन उसने देखा कि बिल्ली आकर चूहे को पकड़ लेगई तब उसने बिल्लीको ज़बरदस्त देखा फिर उस बिल्लीको पूजनेलगा एकदिन कुत्ते ने बिल्ली को मारा अब वह कुत्तेको पूजने लगा एक दिन उसकी स्त्रीने कुत्ते को मारा अब वह अपनी स्त्रीको पूजने लगा परन्तु एकदिन दैवयोग से उसको अपनी स्त्री पर क्रोधहुआ और उसको मारा अब उसने अपने को ज़बरदस्त समझा अपनी पूजा करनेलगा तात्पर्य्य यह है कि अब घट की पूजा होने लगी थोड़ेही समय में पूरा सिद्ध होगया अब देखिये कि निश्चय से क्या फल मिलता है अब मनुष्य प्रथम निश्चय नहीं लाते और जो निश्चय भी संसार के प्रयोजन के वास्ते करते हैं और जो कोई उनको वैराग्य की बात बताता है तो आप उत्तर देते हैं कि हमको

संसार के त्यागने में बहुत राजी हैं परन्तु हमको संसार ही नहीं छोड़ता धन्य उन लोगों के कहने को कि यह वही कहावत है कि कोई मनुष्य अपने गुरू से कह रहा था कि संसार ने पकड़रक्खा है क्याकरूं कुछ बस नहीं चलता गुरूजी उठकर एकबृक्ष से जा लपटे और कहनेलगे कि मुझे बृक्ष ने पकड़ लिया है छोड़ता नहीं वह मनुष्य देखकर आश्चर्य्यित हुआ कि आप गुरू जीने बृक्ष को पकड़ा है वह आप गुरूजी को शिक्षा करनेलगा कि महाराज बृक्ष ने तो आपको नहीं पकड़ा है आपही ने बृक्ष को पकड़ा है गुरूजी बोले अरे अज्ञानी अब समझले कि संसार को तैंने पकड़ रक्खा है और जगत् ने तुझको नहीं पकड़ा तेरा कहना अत्यन्त बृथा है कि मुझे संसार नहीं छोड़ता देख तूही संसार को नहीं छोड़ता इससे और चमत्कार की बात सुनो कि देवता की पूजा करने जाते हैं और दमड़ी के फूल चढ़ाते हैं और अपने को बड़ा पुजारी समझते हैं और बेटा और धन मांगते हैं और थोड़े दिन पीछे कहते हैं कि हमने तो किसी देवता में शक्ति नहीं देखी॥

दो॰ अन्तरमैलजोतीर्थनहावै,तिसवैकुण्ठनजाना।
लोक पतीणे कछू न होवै, नाहीं राम अयाना॥

कहिये ऐसे मनुष्यों को भगवान् मिलसक्के हैं बड़ी कठिनता यह है कि यही लोग असल प्रयोजन को नहीं समझते और एकलीक पीटते हैं किन्तु इसमें अपनी हानि करते हैं परन्तु उनके चित्त की शुद्धता किंचित् भी नहीं हुई इसलिये बाज़े महात्माओं ने तीर्थब्रत की

निन्दा भी की है और लोग उसको निन्दाही समझते हैं परन्तु उनका असल अभिप्राय निन्दा का नहीं है किन्तु यहां के लोग अब तीर्थव्रत से जैसा फल चाहिये वैसा नहीं प्राप्त करते उनको तीर्थव्रत से कुछ अभाव होजाय और सत्सङ्ग में आवें और वहां असल अभिप्राय को समझें तो तीर्थव्रत भी सुफल हो देखिये कि ठाकुरजी के दर्शन और पूजा से यह प्रयोजन था कि मनुष्य का चित्त एकाग्र और निश्चल हो उचित था कि मूर्त्ति के दर्शन करके हृदय में धारण करते और हरसमय दर्शन करते रहते कि मन एक ओर स्थिर रहता परन्तु अब यह बात तो करते नहीं किन्तु पूजा और दर्शन को एक आपत्ति सी टालदेते हैं हाथ में तो माला है ज़बान से रामनाम कहरहे हैं परन्तु मनीराम औरही खोदाखादी में लगरहे हैं किन्तु जहांतक बने वहांतक इतना भी न करने के लिये बहाना ढूंढ़ा करते हैं जिस दिन कोई संसारी काम आजाय तो और जो काम अपने तनके या संसार के हैं वह तो सब करैं और जो घड़ी दो घड़ी पूजा करते थे या दर्शन को जाते थे उसको उसदिन छोड़दें और जो कोई पूछे कि यह क्या तो उत्तरदें कि आज काम बहुत आगया इससे पूजा न करसके देखिये सब दिन रात में केवल घड़ी दो घड़ी पूजा करते थे और वही समय कुछ फलदायकथा सो उसमें ही कसर निकाली और कोई काम न छोड़ा और एक पूजा की विधि देखिये कि जिस दिन अच्छे २ शृङ्गार करैं उसदिन कहैं कि आज तो साक्षात् महाराज

आप विराजे हैं कहिये यह कैसी मूर्खताई है कि शृङ्गार अच्छा देखा तो महाराज उसदिन आप विराजैं देखिये लोगों की दृष्टि केवल पदार्थों परहै कुछ उनको मालिक का भाव नहीं है अब तीर्थ की दशा सुनिये कि तीर्थ स्नान करने से यह प्रयोजन था कि तीर्थ पर जाने से मनुष्य कुछ दानकरै और साधु महात्माओं के दर्शन करै कथा वार्त्ता सुनै और तीर्थगमन का श्रमकरै घर की हाय २ और मोह से छूटै भजनकरै ऐसे तीर्थ करने से मन शुद्ध होगा फिर जो सत्सङ्ग होगा तो मुक्ति पावैगा अब लोग यह करते हैं कि तीर्थपर जाकर माल खाते हैं सैरकरते हैं और घरको और इष्टमित्रों को अच्छी २ चीजें ख़रीदके ले आते हैं बड़े सामान से बिदेशकरतेहैं साधु पण्डितको लालची पाखण्डी कहते हैं पैसा पुण्य करतेनहीं और भूखेको खिलावते नहीं भजन और कथा सुननेका कहीं लवलेश नहीं जो शर्माशर्मी तीर्थस्नान का यज्ञ कहतेहैं तो दश पांच साधु ब्राह्मणों को पूरी तरकारी और बड़ी शिकारमारी तो थोड़ी बहुत साधारण मिठाई खिलादी और इष्टमित्र भाई बन्धु सौ पचास बुलाये उनकी ज़ियाफ़त करते हैं और अच्छी मिठाई मुरब्बा अचार चटनी पापड़ आदि वस्तु खिलातेहैं और यह अभिमान है कि हम तीर्थ कर आयेहैं और ऐसा भारी यज्ञ किया कहो यह यज्ञ हुआ या उनका शिर हुआ॥

दो० सालातीरथ सुसरातीरथ, तीरथछोटीसाली।
मातुपिताकी लाजनकीजै, तीरथहैघरवाली॥

अब व्रतका हाल सुनिये व्रत से यह प्रयोजनथा कि प्रथम तो उसे भूखेरहनेका दुःख मालूम होजाय कि दूसरे भूखेपर दयाकरै इसपर एक दृष्टान्त है कि किसी उस्तादने बादशाहके लड़केको शिष्यकरके विद्या और नीति सब सिखलादी बादशाह का लड़का विद्यामें निपुणहोगया उस्तादने बादशाहसे विनयकी कि जो अपराध क्षमाहोय तो एक बात इस लड़केको और सिखलादूं बादशाहने आज्ञादी उस्तादने एकदिन उसलड़केको बे अपराध बहुत मारा बादशाहने उसका कारण निश्चय किया उस्तादने कहा कि इसको बादशाहत करनी है इस वास्ते इसको दया अवश्य चाहिये जो यह आप मारखाने का दुःख नहीं जानता तो उसको दूसरे के मारनेसे कभी दया नहीं होती इससे अन्याय होता इस कारण मैंने इसको माराहै अब तात्पर्य्य यह है कि जो आप भूखा रहेगा तो दूसरे भूखे का उसको दर्द आवेगा दूसरे भूख प्यास को सहसके तीसरे अपने खानेके बदले कुछ पुण्य करै और कन्दमूलफलका थोड़ा आहारकरै जिससे कि आलस्य न हो तो भजन करै अब लोग क्या करते हैं कि रोज़ तो बिचारों को दाल रोटी भी कठिनतासे प्राप्त होती है व्रतके दिन दूध मलाई पेड़ा बरफ़ी खाते हैं हररोज़ घर और दुकान आदि के कामोंसे सावकाश नहीं मिलता व्रतके दिन बागोंमें सैर करतेहैं और सतरंज गंजीफ़ा खेलते हैं या सो रहतेहैं अब देखिये कि जब पेड़े बरफ़ी आप खाये तो पुण्यकहांसे करैं और जब बहुतसा पेट भरा

तो भजन कहांसे होय सतरंज गंजीफ़ा खेले या सोरहे सो और भी पापकमाये और अहङ्कार यह है कि हम ब्रतीहैं और जो कोई भूखापियासा आया तो जवाबहै कि आज देना नहीं है भला ऐसे लोगोंको किसप्रकार मालिक का दर्शन प्राप्तहोगा परन्तु ब्रती साहब से पूछिये तो उनका यह उत्तर है कि हमारी मुक्ति में क्या सन्देहहै जो वेदशास्त्र सच्चेहैं तो मैंभी सच्चाहूं ऐसालिखा है कि एकादशी के ब्रतसे मुक्ति होती है सो मैंने ब्रत किया मेरी मुक्ति होगी वाह साहब क्या अच्छा ब्रत किया है और संयम आदि तो भाड़मेंपड़े और मुक्ति तो आपके दरवाज़ेही पर खड़ी है अब ऐसे ब्रतियोंको नरकगामी कहैं तो क्या अनुचित है कि वेदशास्त्र को दोष लगावतेहैं उनसे पहिले यह पूछिये कि जो एक एकादशी के दिन भूखेमरनेसे और मालखाने से मुक्ति होतीहै तो और ब्रत क्यों करते हौ तीर्थयात्राके लिये क्यों मारेमारे फिरते हौ और कथा पुराण क्यों सुनते हौ समझ कर अज्ञानी बनना वही कहावत कि (फलानीने खसम किया बुराकिया नहीं उसने करके छोड़ दिया बहुतही बुरा किया) अब ध्यान कीजिये कि शास्त्रने जो एकादशी के ब्रतसे मुक्ति कही है सो सत्य है मिथ्या नहीं जो बिधिपूर्वक ब्रत एकादशी का करै तो निस्सन्देह ब्रतभजन दान पुण्य करते करते मुक्ति पावेगा बहुधालोग लड़कों से कहा करते हैं कि जहां अलिफ़ बे ते पढ़ी तहां क़ाबिलहुये कहिये केवल अलिफ़बे ते पढ़ने से क़ाबिल होजायगा परन्तु हां बिना

बासनाके बिनाचित्तसेकथासुनी उनको वास्तवमें अमृत प्राप्तहुआ कि उनका चित्त प्रसन्न और शुद्धहुआ ईश्वर की ओर प्रेमप्रीति अधिक हुई ऐसे सत्सङ्ग के बलसे कामआदिकछूटकर शीलसंतोष दया धर्म सत्य बोलना दीनता उदारता जगत्से वैराग्य प्राप्तहुआ मोक्षका अधिकारी हुआ अब शीलका गुण सुनिये कि जिसको शील प्राप्तहै वह ईश्वरके बचनको मानताहै और आप सुख भोगकर दूसरेकोभी सुखदायी होताहै देखिये एक मनुष्यने किसीशीलवान्को गालीदी वह शीलवान् चुप होरहा जोउसने उसकेबदलेमें गालीदी तो अपना न्याय आप किया इससे मालिकको अपने शिरपर न समझा दूसरे अपने को दुःखमें डाला तीसरे गाली देनेवाले को अधिक स्वतंत्र किया क्योंकि जिसने गालीदी उसने अपने को बलवान् समझाथा वह गाली खाकर चुप न रहैगा जो कुछ पराक्रमी होगा तो मार बैठेगा नहीं तो गालियांही और देगा अब उसके जीमें और अपराध बढ़ा और अपनीभी हानिबहुतहुई अब बहुतोंको ख़बरहुई उपद्रव बढ़ा और जो एक गाली खाकर चुप होरहा तो एक गालीहीरही और गालीदेनेवाला आप लज्जित होगा और क्षमा चाहेगा क्योंकि क्षमावालेकी दुर्जन हानि कभी नहीं करसक्ता एक दृष्टान्त है कि जहां घास फूस नहीं है वहां जो आग गिरी तो क्या जलावेगी दूसरे उपाधि न बढ़ी और न दूसरे ने जाना औ मालिक प्रसन्न रहा स्वामी की आज्ञा का प्रतिपालन हुआ ॥

दो० शील क्षमा जो घट बसै, सो नर प्यारा होय ।
वृन्दावन उस दासपर, दया करै सब कोय ॥

अब संतोषका वृत्तान्त सुनिये यद्यपि संतोष से धन नहीं उत्पन्न होता परन्तु जो बात धनसे प्राप्तहोती वही संतोषसे प्राप्तहोतीहै अर्थात् आनन्द जो संतोषसे दुःख अत्यन्त दूर नहीं होता परन्तु दुःखसहजाने की सामर्थ्य होजाती है वह समझता है कि सब प्रारब्ध और ईश्वरकी इच्छासे होताहै और ईश्वरकी इच्छानुसार चलना योग्यहै इससे क्योंरोवे और देखिये जो प्रारब्धको नहीं मानते तो आपही दुःख उत्पन्न किया होगा फिर रोना किसलिये जो स्वामी के यहां अन्याय समझतेहो तो भी रोनानहीं बनसक्ता क्योंकि जो जबरदस्त इच्छाके विरुद्ध किया तो यह और भी दुःखदेगा जो तुम स्वामीको नहीं समझते और ऐसा ध्यानहै कि जो होता है वह आपसे आप होताहै फिर रोनेसे क्या होगा इससे सब प्रकारसे संतोषकरना उचितहै संतोष प्राप्तकरनेके लिये ऐसा समझना चाहिये कि मेरे पास धन कितना आवश्यकतासे अधिकहै और मुझसे अधिक दुःखी कितने और हैं कोई संतोषी घोड़ेपर से गिरपड़ा उसका हाथ टूटगया वह ईश्वरका धन्यवाद करताहै कि बड़ी कृपाहुई जो गर्दन नहीं टूटी नहीं तो जानसे मरजाता किसी संतोषीका घर जलगया परन्तु उसके दो घर और भीथे किसी मनुष्यने संसारी रीति व्यवहार से आनकर उससे कहा कि बड़ा पश्चात्तापहै कि आपका घर जलगया संतोषीने कहा कि मुझे आपकी

ओर का बड़ा पश्चात्ताप है कि आपके एकही घर है मेरे तो अबभी दो घर वर्त्तमानहैं वास्तवमें संतोष बड़ी वस्तु है जिन मनुष्यों ने संतोष के बलसे अपनी इच्छा इस संसार में दबाई है परलोक में ईश्वर उनकी इच्छा को सुगमता से पूरी करैगा तात्पर्य्य यह है कि यहां भी आनन्द और वहां भी आनन्द ॥

दो० मनके हारे हार है, मनके जीते जीत ।
परब्रह्म को पाइये, मनहीं की परतीत ॥

जिन्होंने संतोष करके मनमारा है उन्होंने सम्पूर्ण जगत् को जीता है ॥

दो० गोधन गजधन बाजिधन, और रत्नधनखान ।
जब आवै संतोषधन, सब धन धूरि समान ॥

दृष्टान्त है कि किसी राजा ने सम्पूर्ण जगत् को जीता और अपनानाम सर्वजीत रक्खा सब उसको सर्वजीत कहते थे परन्तु उसकी माता उसको सर्वजीत नहीं कहती थी राजा ने अपनी माता से पूछा कि तू मुझे सर्वजीत क्यों नहीं कहती उसकी माता ने उत्तर दिया कि मैं तुझको सर्वजीत जब कहूं जब तू फ़लाने फ़क़ीर को जो अमुक स्थानपर है जीत आवै राजा अत्यन्त हैरान हुआ कि माता क्या कहती है बड़े २ राजा महाराजा मैंने जीत लिये फ़क़ीर जीतना क्या है परन्तु राजा फ़क़ीर की ओर रवाने हुआ वहां क्या देखता है कि एक दुर्बल फ़क़ीर बुरी सूरत बनाये बैठा है कि वहां राजा जा खड़ाहुआ और शोचता है कि इस को क्याजीतूं मेरा एक आदमी इसको उठालेजा

सक्ता है फ़क़ीर ने राजा से पूछा कि तेरा यहां आने से क्या प्रयोजन है राजा ने सब वृत्तान्त वर्णन किया फ़क़ीर ने कहा कि वास्तव में मुझको जीतसक्ता है परन्तु तू ने अभीतक अपने घरके शत्रु को नहीं जीता जो उसको जीतले तो तेरी माता भी तुझको सर्वजीत कहै राजाने शत्रु का वृत्तान्त पूछा तब फ़क़ीरसाहब ने कहा कि तेरा मन तेरा शत्रु है जो तुझको खराब कररहा है जो तू एक मनको जीतै तो इसप्रकार तृष्णा करके बेढँगा क्यों मारा फिरै उस समय राजा को ज्ञान हुआ और घर को लौट आया उसकी माता ने पूछा कि फ़क़ीर को जीता उसने जवाब दिया कि अब तो मैंने अपने को जीता है उसकी माता ने उसी समय सर्वजीत कहा अब देखिये कि मनके जीतने से सर्वजीत हुआ वाहरे संतोष तुझमें न कुछ रगड़ा है न झगड़ा है और सर्वजीत करादेता है सत्य है मनजीता तो जगजीता ॥

दो० साईं सत सन्तोष दे, भावभक्ति बिश्वास ।
सिदक सबूरी सांचदे, मांगै दादू दास ॥
जीवत माटी होरहो, साईं सन्मुख होय ।
दादू पहिले मररहे, पीछे मरै सब कोय ॥
संतोषी सब नरनते, सुखीरहत सबकाल ।
वृन्दाबन संतोषसम, दूजाधननहिं माल ॥

अब दया का चमत्कार सुनिये जो दया करता है वह मालिक का प्यारा होता है आप भी सुखी रहता है और दूसरे को भी सुख पहुंचाता है ॥

दो० दया धर्म्म का मूल है, नरक मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िये, जबलग घट में प्रान ॥

चित्तको वशीभूत करना हज़ारों तीर्थ से उत्तम है चाहे अपना मन वशकरै चाहे औरों का मन आनन्द देकर वशकरै दया उसको कहते हैं कि यथाशक्ति अपने दुःख को न समझ कर दूसरे को सुखदे जो उसकी देह से दूसरे का दुःख दूर होसक्ता हो तो आप कष्टसहै जो अपना सर्वस्वजाय तौभी निषेध न करै दयावान् साधुहैं निर्दयी कसाई जो धन से दूसरे का काम होय तो धनसे सहायता करै जो जबान से क़लम से आशीर्वाद से दूसरे का काम बनै उसमें न्यनता न करै जीव की रक्षा सब दया से उत्तम है (अहिंसा परमोधर्मः) यद्यपि इस बचन में किसी मत में निषेध नहीं होसक्ता परन्तु बाज़े बाज़े मत में जीवका मारना खानेके वास्ते उचित है यद्यपि इसके खण्डन में हज़ारों शङ्का हो सक्तीं पर अपने को कुछ झगड़े से काम नहीं है परन्तु किसी मत में मांस का खाना कुछ पुण्य नहीं है और न योग्यही है बहुधामतों में निषेध है इससे हरप्रकार से मांस खाने से परहेज़ करना चाहिये क्योंकि खाने में जीभ के स्वाद के सिवाय कुछ लाभ नहीं और वास्तव में प्रथम तो यह बस्तु अशुद्ध है दूसरे मनुष्यके चित्तको निर्दयी करदेती है यह बात प्रकट है कि जो मांसखाते हैं उनको जीव मारने में दया नहीं होती है निष्प्रयोजन भी चित्त के आनन्द के लिये जीवहत्या करते हैं और बदला निस्सन्देह देना पड़ता है किसी

को दुःख देना सब प्रकार से बुरा है इसहेतु से मांस खाने को त्याग करनाही अवश्य है जब मनुष्य में दया होगी तो सब सुकर्म्म बनसक्ते हैं नहीं तो कोई नहीं बन सक्ता इससे दया को सबसे पहिले धारणा चाहिये॥

दो० दया सर्व से है बड़ी, सकल मतन के माहिं।
दया हीन जे पुरुष हैं, वृन्दावन नर नाहिं॥

अब धर्म का वृत्तान्त सुनिये कि राजा हरिश्चंद्र अयोध्या का राजा था उसके राज्य में सत्य वर्त्तता था एकवार अन्न का दाना बोयाजाय तौ सातवार फलदे आधा दूध गाय के बच्चे को मिलता था बारह वर्ष से पहिले लड़की का विवाह होता था प्रजापर अन्याय न था और सब प्रसन्न थे दुःख और दरिद्रका लेश भी न था एक समय उस राजा को यज्ञ करने की इच्छा हुई विश्वामित्र ने कहा कि यज्ञ मैं करवाऊंगा और यह कहकर विश्वामित्र स्वर्ग को चलेगये राजा ने बहुत कालतक राह देखकर यज्ञ प्रारम्भ करादिया विश्वामित्र को ख़बर हुई कि राजा का यज्ञ प्रारम्भ होगया तब उनको बहुत क्रोध हुआ और जो कि इन्द्रादिक अन्य देवताओं को भय था कि हरिश्चन्द्र राजा बड़ा सत्यवक्ता है यह कभी न कभी हमारा राज्य लेगा सब ने विश्वामित्र को यह बहकाया कि आप जाकर हरिश्चन्द्र का सत्य डिगावैं विश्वामित्रने एक कुत्ते का रूप धरके उसके बाग़ में पहुंचकर उस बाग़ को उजाड़ दिया राजा को ख़बर हुई राजा अपने साथियों को लेकर आया उनके आतेही कुत्ता भाग निकला राजा

और उसके साथियों ने पीछा किया परन्तु कुत्ता हाथ में न आया साथी सब हारकर थकरहे राजा अकेला कुत्ते के पीछे चला गया आगे एक नदी आई विश्वामित्र ने कुत्ते का रूप छोड़कर ब्राह्मणका रूप बनालिया और एक लड़का और लड़की भी रचकर राजाके पास आया राजा ने दण्डवत् की इन्होंने आशीर्वाद दिया तब इन्होंने राजा से कहा कि राजा यह कन्या बारह बर्ष की होगई है और लड़का भी वर्त्तमानहै अभी इस का विवाह करदे राजा ने अपने मनमें बिचार किया कि यहां कैसे करदूं परन्तु ब्राह्मण की हठ देखकर वहीं उसका विवाह करके लड़की से कहा कि तू जो चाहै सो मांगले राजा से लड़की ने प्रथम देने का इकरार अपनी इच्छा के अनुसार करवालिया फिर राजा से कहा कि अपना सर्वस्व और राज्यदे अब राजा घबराया कि जो नहीं देताहूं तो सत्यजाता है राजाने संकल्प करादिया तदनन्तर ब्राह्मण बोला कि महाराज मुझे भी कुछ दो यह तो आपने इस कन्याको दिया अब राजा घबराया कि अबदेने को क्यारहा और ब्राह्मणने सवामन सुवर्ण मांगा राजा ने कहा कि मुझे बेचले अपना को भी संकल्प करादिया अब राजा घर आया और वह ब्राह्मण के साथ जाने लगा राजा की रानी और लड़का भी उसके साथ हुआ मार्ग में सूर्य्य की ऐसी गर्मीहुई कि जीव जन्तु और वृक्ष जले जाते थे और ये तीनों राजा रानी और लड़का अत्यन्त पियास से पीड़ित थे ब्राह्मणने पानीलाकर रानीके आगे

रक्खा और कहा कि जल पीलो जिसमें देह रहे रानीने कहा कि पतिके बिना पिये पहिले मेरेपीनेसे मेरा सत्य जातारहेगा पानी न पिया ब्राह्मणने लड़केसे पानीपीने को कहा उसनेभी उत्तरदिया कि जबतक माता पिता जल न पियें तबतक मेराधर्म नहीं तब राजाके पास पानी लेगया राजाने कहा कि जबतक संकल्प पूरा न होगा तबतकमैं पानी नहीं पीसक्ता तात्पर्य्य यह है कि किसीने जल नहीं पिया ब्राह्मण ने बनारस में राजा रानी और लड़केको बेचनेके वास्ते खड़ाकरदिया पहिले एक वेश्या आई और उसने रानीको मोललेनाचाहा किन्तु अधवन भर सुवर्ण देने को राजीहोगई उससमय रानी ने वेश्यासे पूछा कि तू कौन है उसने उत्तर दिया कि मैं वेश्या हूं सबका चित्त मोहलिया करती हूं अपने शरीरका बहुत सा शृंगार करके सदा सुहागन बनीर- हतीहूं यहसुनकर रानीको बहुत क्लेश हुआ और प्रा- र्थनाकी कि हे ईश्वर! इससे मुझे बचाले उससमय एक बन्दरने आकर उस बेश्याको इतना हैरानकिया कि वह भागगई फिर एक ब्राह्मण इस रानी और लड़के को मोल लेगया और हरिश्चन्द्र को एक श्वपच मोलले गया और मोलमें सवामन सोना मिला वह राजा ने उस ब्राह्मणकोदिया श्वपचने राजाको दो नौकरियां बता दीं एक तो मरघट पर जो मृतक आवै उसके घरवालों से सवारुपया और एक बिलस्त कपड़ा उसके क़फ़न में से लेलिया करै राजा इसी प्रकारसे करनेलगा तब भी विश्वामित्र को सन्तोष न आया फिर राजा के सत्य

डिगाने की और युक्तिकी अब सर्प बनकर राजा के लड़केको जो बागमें ब्राह्मणके लिये पूजाके फूललेने जाया करताथा उसको काटा लड़का मरगया रानी लड़केको मरघटपर लेगई हरिश्चन्द्रने सवारुपया और कपड़ा मांगा रानीने कहा कि पुत्र तुम्हाराहीहै राजानेकहा मैं यह नहीं सुनूंगा अपने मालिककी आज्ञा भंग न करूंगा रानी के पास रुपया न था राजाने रानीकी चादरलेली तब लड़केको मरघटपर रखनेदिया खैर रानी लड़के को बहा कर उसके शोकमें किसीस्थान पर पड़रही विश्वामित्र ने उसीदेशके राजाके घरमें चोरी करके एक मोतियों का हार लाकर उसरानीके गलेमें डालदिया रानी शोकमें पड़ीथी उसको कुछ देहानुसन्धान भी न था और वहां विश्वामित्रने राजासे कहा कि तुम्हारा चोर पकड़ाहै उस के मनुष्यों को लेजाकर रानी के गले में हार पड़ाहुआ दिखलादिया अब रानीपर मार पड़नेलगी कोई पूछता नहीं राजाने हुक्मदिया कि इसको श्वपच की मारफ़त वृक्षमें लटकाकर मारडालो और यह रानी उस श्वपच के पास भेजीगई कि जिसकानौकर राजा हरिश्चन्द्रथा उस श्वपच ने हरिश्चन्द्र से कहा कि इसको मारडालो हरिश्चन्द्र ने रानी को वृक्ष में लटकादिया उससमय एक मेलाथा हज़ारोंको रानीका स्वरूपदेखकर दया आती थी और बिलाप करते थे हरिश्चन्द्र को मारनेसे रोकने लगे रानी ने कहा कि राजा अब बिलम्ब मतकरो ऐसा समय न मिलैगा कि गङ्गा के तटपर तेरे हाथ से मेरी मृत्युहोय राजा ने तलवार उठाई ज्योंहीं मारने को

चाहाथा त्योंहीं भगवान् प्रकट हुये हाथ रोककर रानी को वृक्षसे उतरवाया उसके लड़के को गङ्गाजी ने लाकर खड़ा करदिया विश्वामित्र अत्यन्त लज्जित हुये और अपने कियेका फलपाया ॥

दो० जो तोको कांटे बुवै, ताको बो तू फूल।
तोको फूल के फूल हैं, वाको हवै त्रिशूल ॥

जयदेव ब्राह्मणकी कथा भी इस दोहेकी पुष्टता करती है जयदेव ब्राह्मणने किसी सेवक के यहां से कुछ रुपया पाया उसे लेकरचले मार्ग में चार चोर मिले उन्होंने परस्पर में सलाहकी कि इस ब्राह्मणको क्या करना चाहिये किसीने कहा कि इसको मारडालो किसी ने कहा कि छोड़दो किसीने कुछ कहा किसीने कुछ अन्त को यह सलाह ठहरी कि इसके हाथ पैर काटकर एक गढ़े में डालचलो तात्पर्य्य यहहै कि ऐसाही करके सब माललेगये दैवयोग से एकदिन पीछे उस ओर राजाकी सवारी निकली लोगों को उसगर्त्त में से एकप्रकार का प्रकाश मालूमहुआ तब लोगोंने जाकर जो देखा तो क्या देखतेहैं कि एकमनुष्य के हाथ पैर तो कटेहुयेहैं परन्तु शेष देह चमकरहीहै यहसुनकर राजा आप वहां गया कि दर्शनकर जयदेव को वहांसे उठाकर अपने घरलाया जयदेवने राजाको उपदेशकिया कि साधु सेवा कर राजा करने लगा जो साधु आवै उसकी सेवा खूब होय जो छलकर कोई साधुकारूप रखकरआवै उसकी भी यथोचित सेवाहोय चोरभी जिन्होंने जयदेवके हाथ पैर काटे थे वह इस राजाका वृत्तान्त सुनकर साधु का

भेष बनाकर राजाके यहां आये जयदेवने उनको पहिचाना और राजासे कहा कि इनकी सेवा बहुत अच्छे प्रकार से कर राजाने खूब सेवाकी और चोरोंको विदा करती समय जयदेव के कहने के माफ़िक़ दो बहिंगी रुपयोंकी उन चारों के साथ करदीं मार्ग में एक बहिंगी वाले ने चोरोंसे पूछा कि महाराज राजाने तुम्हारीसेवा और साधुओं से बहुत अधिक की इसका क्या हेतु था उन चोरों ने कहा कि हमने एकसमय जयदेवकी जान बचाई थी इतना कहतेही पृथ्वीफटगई और चारोंचोर खड़े के खड़े उसमें समागये वहक हार धनसमेत लौट कर आये और जयदेव और राजासे वृत्तान्तकहा जयदेवजी शोचसे कटे हाथ पटकने लगे उसीसमय उनके हाथ पांव दुरुस्तहोगये अब सत्य बोलने का माहात्म्य सुनो सत्य बोलना महापुण्य कहा है परन्तु अत्यन्त कठिन है एक दृष्टान्त है कि कोई अमीर अपनी विलायत से अपने बादशाह की आज्ञानुसार दूसरी विलायत में गया जिसदिन उस विलायत में पहुंचे उस दिन पहुंचने से पहिले वायु अत्यन्त तीव्र चली कि जहाज़ के डूबजानेका भयथा परन्तु निर्विघ्न पहुंचा उस विलायतके बाजे अमीरलोग उसकी अग्रगामिता को आये और कहनेलगे कि आज आपको अत्यन्त खेद हुआ होगा हमको पश्चात्ताप है और अत्यन्त शोच होरहा था यह अमीर इनबातों को सुनकर अपने चित्त में कहनेलगा कि यह लोग मिथ्याबोलतेहैं इनको मेरा क्या शोच है उस विलायत के अमीरों ने इसको एक

स्थान में उतारा इस अमीर ने मकानका किरायापूछा तब उस विलायत के अमीरों ने शिष्टाचारी दिखाकर यह कहा कि मकान आपहीका है इसका क्या किराया होगा यह अमीर चुपहोरहा दूसरे दिन उस अमीर ने अपने आरामके लिये दो एक दीवारें उस मकान की गिरादीं जब कि मकान के मालिकको खबर पहुंची कि अमीर ने दीवारें गिरादीं आनकर अमीर से कारण पूछा और कहा कि मकान आपके रहने को दिया था या गिराने को अमीर ने जवाबदिया कि तुमने कल कहा था कि मकान आपहीका है हमने अपना समझकर अपने आनन्द के वास्ते तुड़वाया हम यह नहीं जानते थे कि तुम झूठबोले ऐसीही कई एक बातें शिष्टाचारी की और हुईं कि जिनको इस अमीर ने झूठीपाईं उस अमीरने अपने बादशाहको अर्ज़ी लिखी कि ईश्वरके लिये मुझको जल्द यहां से बुलालो यहां के आदमी बहुत झूठे हैं चित्तमें कुछ और मुँह में कुछ और फिर अपनेको सच्चा समझते हैं और हम जोकि चित्तमें होता है वही मुँहपर लातेहैं तो हमको जंगली और निर्बुद्धी कहते हैं अब देखिये कि सच्चबोलना कैसा कठिन है चाहिये तो ऐसाही बोलै जो ऐसा न बनपड़े तो इतना अवश्य है कि वह बात न कहै जिसमें दूसरे का नुक़सान होय यद्यपि बहुधा शिष्टाचारी में मिथ्याशब्द भी निकलते हैं और दूसरेका चित्त प्रसन्न होजाता है परन्तु अधिकता उसकी भी अच्छी नहीं क्योंकि (अति सर्वत्र वर्जयेत्) फिर मिथ्या बोलने का अभ्यास हो जायगा

और सत्य बोलने के स्थानापन्न झूठीप्रशंसा हो जायगी इसी कारण बहुत मुलाक़ात करना भी निषेधहै शिष्टाचारीमें वृथा झूठबोलना पड़ताहै किसी की निन्दाकरनी पड़ती है किसी की वृथा प्रशंसा करनी पड़ती है झूठे २ इक़रार करने पड़ते हैं और मिथ्या बोलना महापाप है इससे सत्य बोलना सबसे उत्तमहै सत्यबोलनाही ईश्वर की प्रसन्नता का कारणहै सीधेमार्गमें कोई नहीं भूलता॥

दो० साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जिनके हिरदे साँच है, तिनके हिरदे आप॥

अब दीनता का वृत्तान्त सुनिये कि दीनता ईश्वर को भी पसन्द अर्थात् अभीष्ट और मनुष्यको भी रुचती है किसी भक्तकी पुस्तक में ऐसा लिखाहै कि जबराईल खुदा के फ़रिश्ते जब खुदाके पास जातेथे मार्गमें शैतान मिला उसने पूछा कि हज़रत कहांजातेहो जबराईलने कहा कि खुदाके पास जाताहूं शैतानने कहा कि तुम खुदाके लिये क्या नज़रलिये जातेहो जबराईल ने कहा कि खुदा सब का मालिक है और सब वस्तु उसकी उत्पन्न की हुई है भला मैं कौन वस्तु लेजाऊं शैतानने कहा कि ख़ाली हाथ भी तो जाना उचित नहीं है तब जबराईलने कहा कि तुम बताओ क्या लेजाऊं शैतानने कहा कि न्याज़ अर्थात् दीनता लेजाओ न्याज़ खुदाके पास नहीं है इसलिये तोफ़ाके तौरपर होगी क्योंकि वह बेन्याज़ कहाजाताहै यह न्याज़ अर्थात् दीनता उसको नवीन वस्तु होगी जबराईल यह सुनकर चलनेलगे शैतान ने कहा कि एक काम मेरा भी करते

आना खुदासे मुझे मुक्त कराल्लाना जबराईलने कहा कि बहुत अच्छा करूंगा जबराईल खुदा के पास गये खुदाने कहा कि प्यारे मेरे वास्ते क्या लाया जबराईल ने कहा कि न्याज़ लायाहूं खुदा बहुत खुश हुये अब देखिये दुनियांमेंभी दीनतासे सब प्रसन्न होते हैं और ईश्वर भी प्रसन्न होता है इससे दीनता ऐसी अच्छी वस्तु है कि दोनों जहान में प्यारी है ॥

दो० नानक नन्हा होरहो, जैसी नन्ही दूब।
बड़ीघासजलजायगी, दूब खूबकी खूब ॥
हरिजनतो हाराभला, जीतन दे संसार।
हारातो हरिसे मिलै, जीता यमकेद्वार ॥
कबीर—जगमेंबैरीकोइनहीं, जो मन शीतलहोइ।
यह आपातूडालदे, दया करै सबकोइ ॥

और अभिमान करना शैतानकाकाम है जबराईल ने शैतानकी दरख़्वास्त खुदासे की हुक्म हुआ कि शैतानसे कहो कि उसने आदमका क़सूर कियाहै इससे उसीसे माफ़करावे उसकी मोक्षहोगी यह हुक्म जबराईलने शैतानसे आकरकहा शैतान बोला कि वाह वाह जो यही मुझको करनाहोता तो खुदासे क्या मोक्ष मांगता देखिये शैतान से दीनता न हुई इससे जिसमें दीनताहै वह मनुष्य खुदा और आदमी दोनोंका प्यारा अब उदारता के गुण सुनिये (चिराग़े रोशनी जगमें झलकहै ॥ दियेकी रोशनी मुँहपर तलकहै) एककहावतहै कि कोई फ़क़ीर किसी दाताके घरपरगया और वहां जाकर आवाज़दी कि हे सूम ! कुछ दिला जोकि

वह मनुष्य सबको देताथा उस फ़क़ीरको भी दिया फ़क़ीरने लेनेके बाद आशीर्वाद दिया कि सूम तेरा भला हो और फिर वही फ़क़ीर किसीकृपण के मकानपरगया वह किसीको कुछ नहीं देताथा फ़क़ीर ने सवालकिया कि दाता कुछ दिला उसने दोचार गाली दीं फ़क़ीरने कहा कि दाता तेरा भलाहो कोई दूसरा मनुष्य यहदशादेख कर आश्चर्य्यितहुआ कि फ़क़ीर ने दाता को सूम और सूमको दाता कहा उसने फ़क़ीर से ज़िद करके इस बात का भेद पूछा फ़क़ीरने कहा कि जिसको तुम दाता देखते हो वह वास्तव में सूम है कि अपनी जमा अधाधुन्ध बढ़ाता है एकगुना देगा हजारगुना पावेगा जिसको तुम सूम कहते हो वह असलमें दाताहै इस वास्ते कि जो कुछ उसके पास है वह यहीं छोड़जावेगा और वहां उस को कुछ न मिलेगा देखिये देना कैसा अच्छा पदार्थ है कि जिससे दीन और दुनियां दोनों सुधरते हैं॥

दो० दाता आगे लक्षमी, ठाढ़ी रहै हुजूर।
जैसे गारा राजको, भरभर देत मजूर॥

देखलीजिये गऊ का दूध बाटिका का फल कूपका जल और विद्या देनेही से बढ़ती है ऐसेही धनका भी लेखा है जो दान करने में हानि भी हो तौभी देना न बन्द करै (करतेपुण्य होइ भी हानि। तौऊ न तजै पुण्यकीबानि) परन्तु बिचार सहित देना बहुत फलदायकहै और बाज़े देने में अपनी और दूसरे की भी हानि होती है शराबीके देने में प्रत्यक्ष में तो हानिही दृष्टि पड़तीहै और जोकि अपनेभाई बंधु रिश्तेदारोंको

अपनी नामवरी के वास्ते देते हैं वह भी देना देना नहीं है परन्तु तोभी नेककामहै एकदृष्टान्त है कि कोई मनुष्य अपने भाई बन्धुओं को देतारहा उसको परलोक में उसके बदले कुछ न मिला उसने भगवान् से कहा कि मैंने तो बहुत दियाहै मुझको यहां उस पुण्य के बदले किस वास्ते नहीं मिलता वहां से उसको जवाब मिला कि तूने मेरे भाई बन्धु अर्थात् साधु ब्राह्मणों को नहीं दिया जो तुझे बदलामिले तूने अपने भाई बंधुओं को अपनी नामवरी के लिये दिया सो नामवरी का सुख तूने अपने जीतेही भोगलिया और जो तूने उनका हक़दिया तो अब बदला कैसा जो तू मेरीराहपर उनसे भी सलूक करतातो बदला मिलता परन्तु अब भी तूने हज़ारोंसे अच्छा किया किसीका हक़ न रक्खा भाइयों के हक़से हलकाहुआ भाई बन्धुओंकी सेवा करने के पुण्य से तू मेरे पासतक पहुंचा अबदेखिये जो बिचार सहित दे और नामकी इच्छा न हो और अभिमान न हो तो इसका कितना बड़ा फलहोगा देना इसको कहतेहैं कि एक दाता था वह सदैव सदावर्त्त दियाकरता था परन्तु जब देता तो नयन नीचे करलेता था किसी फ़क़ीरने यह देखकर कहा ॥

दो० ऊंचे चंगुल देत हौ, नीचे करके नैन ।
कासों सीखी सीखना, ऐसी बिधिसे दैन ॥

उस दाता ने जवाब दिया ॥

दो० देनहार समरत्थ है, सो देहै दिन रैन ।
लोग नाम मेरा कहैं, तासे नीचे नैन ॥

परन्तु अब लोगोंकी यह दशाहै कि किसीके पुरुषा कंगालथे उस कंगाली में साधुब्राह्मणोंको अपनी सामर्थ्य भर दिया करतेथे उनके लड़के बहुत बड़ेआदमी होगये परन्तु साधु ब्राह्मणों को उतनाही जितना उनके पुरुषा देतेथे दिया करतेथे और अभिमान इतना कि जिसका अन्त नहीं किसी मनुष्यने कहा कि तुमको ऐसा योग्य नहींहै तुम बड़े आदमीहो अपनी सामर्थ्य के माफ़िक़ दियाकरो उसने जवाबदिया कि पुरुषों की रीति नहीं काटसक्के उस मनुष्यने कहा कि हां जी सत्य है देनेमें तो पुरुषोंकी रीति और पैदाकरने में अपनी रीति ठीकहै अपने उपार्जन में तो रीतितोड़दी परन्तु देने में कभी न तोड़ियेगा नहीं तो बड़े अपराधी होगे॥

दो० लीक लीक गाड़ी चलै, लीकै चलै कुपूत ।
तीनचीज़ बे लीककी, शायर सिंह सुपूत ॥

अब उनसे भी बड़े असामीकावृत्तांत सुनिये एक साहूकार बड़ासूमथा एक दिन वह बही लिखरहाथा उस समय किसी ने आकर कुछमांगा साहूकार ने कहा कि पहिले दियाथा सो तोअब बहियां पीटनी पड़ीहैं और रातादिन रुपये की रक्षाकरनी पड़तीहै अब दूं तो न मालूम और क्याकरना पड़े उस मनुष्य ने जवाब दिया कि हे वुद्धिके शाहजी जो तुम्हारा होइ तो दो तुम तो निस्सन्देह मज़दूरहो तुमकैसे परायामाल देसक्के हो अब देखिये कि ऐसे मनुष्यों की क्या दशा होगी प्रथम तो सुकर्म नहींकरते और फिर दलीलोंसे अपने दिलको विना कौड़ीपैसा खर्चे समझालेते हैं बड़ेउस्ताद

हैं और वास्तव में ऐसेही मनुष्य आंखके अंधे गांठ के पूरे नाम नयनसुख कहलाते हैं और दाता भी इन्ही को समझना चाहिये कि जो कुछ पाया है वह सब छोड़-कर ख़ाली हाथ चलेजायँगे अब तुम ऐसों के मुँहपर धूलडालो और एक ग़रीब घसियारे का हालसुनो कि एक राजा तीर्थ पर गया और बहुत सा पुण्य किया उस घसियारे ने चित्त में कहा कि राजाने तो बहुत पुण्य दान किया तुमको भी कुछ पुण्य करना चाहिये घसि-यारे के पास कुछधन तो मौजूद न था परन्तु जाली और खुरपा बेचकर पुण्य करदिया जब राजा तीर्थ से लौटा तो उस दिन धूप की अत्यंत उष्णता थी साथ के सब आदमी घबराये जाते थे परन्तु उस घसियारे के शिर पर एक टुकड़ा बदली का चलाआताथा उसको धूप नहीं मालूम होती थी इसकी ख़बर राजा तक पहुँची राजा ने घसियारे को बुलाकर सब बात निश्चय किया परन्तु राजा के समझमें न आया किसी परिडत ने राजा से कहा कि महाराज इस घसियारे ने तीर्थपर बहुत पुण्य किया है इसकारण बदली इसके शिरपर रहती है राजा को आश्चर्य्य हुआ कि यह घसियारा मैं राजा मैंने इतना दान किया है इस बेचारे घसियारे ने क्या पुण्य किया होगा परिडत ने कहा कि महाराज उसने केवल खुरपा जाली पुण्य किया है परन्तु देखिये कि उसके खुरपा जालीही सर्वस्व धन था उसने तो सर्वस्व दान करदिया और आपने य-द्यपि लाखरुपये पुण्य किये हैं परन्तु आपके पास अब

भी करोड़ों का धनहै राजा चुप होगया अब देखो घसियारे ने अपनी योग्यता से बाहर काम किया परन्तु ऐसा देना बहुत कम होता है यह बड़ी हिम्मतवालों का काम है अथवा जो मनुष्य संसार से अत्यन्त प्रयोजन न रखना चाहै उससे बन सक्ता है और जो संसार सेभी प्रयोजन रखना चाहै उसको इस बातपर अमल करना चाहिये (आरारहु बसूला और बरमा मतहो) आरे का यह स्वभाव है जब कि लकड़ी चीरता है तो बुरादा दोनों ओर डालता है संसारी लोगों को आरे के समान रहना चाहिये अपना भी काम चलावैं और पुण्य भी करैं और साधु फ़क़ीर को बरमे के समान होना चाहिये प्रथम तो फ़क़ीर को मांगना न चाहिये और जो ले तो रखना न चाहिये और जो इसके बिपरीत अमल करते हैं वह फ़क़ीर नहीं हो सक्ता परन्तु सूरत फ़क़ीर की है फ़क़ीर साधु से यह प्रयोजन नहीं है कि बाणी जानताहो और बाना रखता हो नहीं जिसका मन साधु हुआ हो हां जो मकान भारी है उनको लेना और रखना इस तरह पर कि कोई दरवाज़े पर से भूखा न जाय और साधुओं की टहल होती रहै योग है वह परउपकारी होते हैं और जिस का अमल इसके बिपरीत है उनको चित्तही में समझ लीजिये जैसे हैं तैसे हैं देना ऐसा चाहिये कि दूसरा न जानै किन्तु यह कि दाहिने हाथ से दे और बायां हाथ न जानै इस समय में देना कठिन है धन लड़के से भी प्याराहै जो धन देतेहैं वह बड़े शूरमा हैं ॥

दो० तनमनसे सबकोइ मिलै, धनसे मिलै न कोइ।
जो कोई धन से मिलै, सो कलि बिरलाहोइ॥

गुप्तदान महादान कहाहै क्योंकि उससे यहलाभहै एक तो दानीको अभिमान नहीं होसक्ता दूसरे नामवरी से बचा तीसरे दान लेनेवाले की प्रतिष्ठा न भङ्ग हुई दानी को अन्त में संपूर्ण दान का फल मिलैगा परन्तु कंजूस को बड़ा बहाना मिला जो उनसे दान को कहो तो कहते हैं कि हम गुप्त देते हैं पर सत्य है कि दान के बदले गालियां देते हैं रोटी देने के बदले घरके किवाड़ देतेहैं अन्त को अपनी जान यमराज की फाँसी में फँसाते हैं और धन माल यारों को ख़र्चने को छोड़ जाते हैं हां जो गुप्तदान करैं तो ठीक है पर अधिकारी प्रति है जिनके अभिमान बश है नामवरी का सुख तुच्छ जानाहै और अन्तके लिये कोई कामना नहीं उसको प्रत्यक्ष दान देना हानि नहीं करसक्ता किन्तु और पुरुषों को उपदेश देनेवाला है और गुप्तदानी से सबका प्रयोजन नहीं निकलसक्ता है क्योंकि उसको सब जानते नहीं और देखो सदावर्त्त यज्ञ आदि गुप्त नहीं होसक्ते कंजूस को एक और बहाना होता है कि दान पात्र को देना चाहिये अब कोई न कोई खोट मँगता में लगादी देने से छुट्टी पाई और जो दूसरा समझावे तो क्रोध करते हैं और चर्चा की यह रीति है कि अपने बचन का पक्ष न करै जो दूसरा सत्य कहै तो ऐसा समझकर मानले कि एक बात ही सीखी देखिये जब एक हाथ गन्दा होजाय तो दूसरा

हाथ उसको शुद्ध करता है परन्तु आप और भी सफ़ा होजाता है इसी प्रकार चर्चा होनी चाहिये और जब तक चर्चा में मृदुता रहती है उस समय तक दूसरे का कहना समझ में आता है और मनुष्यों को यह भी समझना अवश्य है कि छोटी छोटी बातों पर विद्वान् की परीक्षा न करें एक दृष्टान्त है कि एक बादशाह बहुत होशियार था किसी दूसरे बादशाह ने उसकी होशियारी की परीक्षा लेनी चाही उसने अपना वकील भेजा और इस सवाल का जवाब पूछा कि अमुक सूबे के अमुक इलाक़े के अमुक क़सबे के अमुक ज़मींदार के जोता है उसके कै बिस्वे और कहां पर हैं वकील ने यह सवाल किया कि बादशाह ने जवाब दिया कि यह मेरी अन्त की डेवढ़ी पर जो दफ्तर है उसके दरवाज़े पर जो मुहर्रिर है उससे पूछलो वकील अत्यन्त लज्जित हुआ अब देखिये कि बादशाह की होशियारी और बिज्ञता क्या ऐसी छोटी और तुच्छ बातों पर सम्बन्धित होती है अब प्रयोजन इसका यह है कि बाजे मूर्ख एक दो बातैं सुनकर सवाल करते फिरते हैं और प्रत्यक्ष में अपने को बुद्धिमान् बतलाते हैं तो ऐसे मनुष्य सत्सङ्गी की बराबरी नहीं करसक्ते चाहो सत्सङ्गी से उस मूर्ख का जवाब दियाजाय या न दिया जाय चाहो सत्सङ्गी में छोटा मोटा अवगुण भी होइ तौभी मूर्ख उसके समान नहीं होसक्ता है यथा एक पहलवान है दैवयोग से एक चिड़िया उसके बराबर होकर फुर्र से निकलजाय और वह पहलवान चौंक

जाय तो क्या उसकी पहलवानी जाती रहती है और जो सत्सङ्गी हे उनको सब रहन शोभा देती है चाहो माला कण्ठी पहिरै या न पहिरै बाज़े मूर्ख यह भी कहा करते हैं कि वृद्ध अवस्था में ईश्वर का स्मरण करलेंगे अब देखिये क्या अज्ञानताहै प्रथम तो बचन झूठा क्योंकि भरोसा नहीं कि बुढ़ापा आवेगा या नहीं दूसरे जो तरुणता में सावकाशहै और हाथ पैर चलतेहैं और ज्ञान स्थिररहै उस समय को तो संसारमें लगाते हैं और वृद्ध अवस्था जबकि हिला चला भी न जायगा उससमय में ईश्वर के स्मरण का विचार करते हैं अच्छा समय तो अपने काम में लाते हैं और बुरा समय ईश्वर के अर्थ दिया चाहतेहैं कहिये ऐसे मूर्खों की मुक्ति होनी है और बाज़े मूर्ख ऐसा भी कहा करते हैं कि सत्सङ्ग तो बहुतकिया परन्तु कुछ प्राप्त नहीं हुआ यह उनका कहना अत्यन्त मिथ्याहै सच्चे दिलसे सत्सङ्ग नहीं किया नहीं तो महाआनन्द प्राप्तहोता इसमें अपराध उसी काहै एक दृष्टान्त है कि किसी चेलेने अपने गुरुसे कहा कि महाराज मुझको टहल करते इतना काल व्यतीत हुआ परन्तु कुछ सिद्ध नहीं हुआ गुरूजीने कहा कि जा वह लोहेका डिब्बा जिस में पारस रक्खाहै उठालो चेला हैरान हुआ कि जो पारस है तो डिब्बा लोहेका कैसे बनारहा डिब्बा सोनेका होना चाहिये था जब वह डिब्बालाया गुरूने डिब्बा खोलकर दिखलाया उसके भीतर पारसथा परन्तु पारस अरु डिब्बे के बीचमें एक कपड़ेकी तहथी गुरूजीने कहा कि इसी प्रकार कपटकी

तह तेरेभी चित्तमें रही है तुझको प्राप्त किस तरहसे हो और देखिये कि बहुधा लोग यहभी कहतेहैं कि क्या सत्सङ्ग करैं साधुओंका काम क्रोध लोभ मोह गयाही नहीं हमारा क्या खोवैंगे दशबीस का नाम गिनादिया क्या खूब ज़रासीही बातमें अपना पीछा छूटा इसको अज्ञानता के सिवाय क्या कहैं हां माना परन्तु पांचो उँगली एकसी तो नहीं होतीं दूसरे साधु कैसाही होय तुमको सब प्रकारसे शिक्षाही करेगा तेरे मतलबमें सन्देह नहीं है॥

दो० नीलकण्ठ कीड़ा भखै, मुखै विराजै राम।
हमको अवगुणसे कहा, पड़ीगुणहिंसेकाम॥

और हम पूछतेहैं कि फ़क़ीरों का सत्सङ्ग तो इसप्रकार छोड़ा फिर आपने किसका सत्सङ्ग स्वीकार किया यही उत्तरदेंगे कि संसारीलोगोंका वह फ़क़ीर संसारी आसक्त मनुष्योंसेभी गयेबीते हैं यह नहीं सुनाहै कि (लटाहाथी बटेर बरोबर) अब ऐसी अज्ञानता जब निकलै जबउनके ऊपर बचनोंकी मारपड़ै (मारकेआगे भूत भागै) इस कहावतका असल वृत्तान्त यह है कि कोई मनुष्य विवाह करनेको गया उसकी स्त्री ने पहिले यह वचनबन्ध कर लिया था कि वह पति के शिर में सौ जूतियां प्रतिदिन मारैगी जो जूते खानेहोयँ तो विवाह होय जोकि यह मनुष्य कामवश था जूता खाना अङ्गीकार करलिया और बहुत दिनोंतक जूतेखातारहा जब बहुत लाचारहुआ और जूतेलगने बुरे मालूम होनेलगे तो उसने रोज़गारके बहाने बाहरके जाने का

इरादाकिया जोरूने कहा कि जूते कौन खायगा उसके घरमें किसी वृक्षका कोई ठूंठथा उसके पति ने कहा कि जबतक मैं लौटकर न आऊं तबतक तू इस ठूंठको मारा-कर उसकी स्त्री ने मान लिया और उसकापति रवाना हुआ और इसने ठूंठपर जूते मारने प्रारम्भ करदिये उस ठूंठ में एकभूत रहता था जब जूते पड़े तो भूत घबराया उसने कहा कि यह बड़ी आफ़त लगी चलो किसी तरह इसके पतिको लानाचाहिये उसके पति के पास पहुँचा और कहा कि मैं तुझको बहुतसा रुपया दिलाऊं तू अपने घर लौटजा उसने स्वीकार किया और चित्त में कहा कि फिर जूते खानेपड़ैंगे परन्तु रुपया तो मिलैगा भूतने कहा कि मैं फलाने राजाके शिरपर चढ़ताहूं जब तू इलाज करैगा तो मैं चला जाऊंगा तुझ को राजासे बहुतसा रुपया मिलजायगा तथा ऐसाही हुआ अब वह मनुष्य रुपया लेकर घर आया देखिये इस कहावत में दो बातें निकलती हैं एक तो यह कि मारके आगे भूतभागै दूसरे यह कि लोग काम के ऐसे वशीभूत होजाते हैं कि धन और स्त्रीके पीछे जूतेखाने स्वीकार करते हैं और यहांपर इस कहावत से यह प्रयोजन है कि जब ऐसे मूर्खोंपर वचनरूपी बाणोंकी वर्षाहोय तब उनका भूतभागै और देखिये बाज़े मनुष्य कैसे जौहरी बनकर कहते हैं कि हमको तो कोई साधु दीखतानहीं किसका सतसङ्गकरैं यह उनकी अत्यन्त भूलहै उनकी दृष्टिमें अन्तर है उनको सिद्ध साधुकी पहिचान नहीं और जबतक कोई दिन

सत्सङ्ग न करैंगे तबतक उनको सिद्धसाधु मिलना कठिनहै एक दृष्टान्त है कि किसी राजाने चाहा कि हंस को देखूं किसी बुद्धिमान्ने युक्ति बताई कि तू जानवरों को दानाडालाकर कभी हंसभी आजायगा राजाने यही किया जब सब ओरसे चिड़ियां आने लगीं उससमय किसी हंसने देखा उसनेभी विचार किया कि जहां यह चिड़ियां जाती हैं वहां एकबार मैं भी चलूं अपनी सजातीय समझकर हंसभी उनके साथ आया परन्तु दाना न चुगा पृथक्ही बैठारहा राजाको ख़बर हुई कि सब चिड़ियां तो चुनती हैं परन्तु आज एक जानवर ऐसा आयाहै कि वह दाना नहीं खाताहै राजाने हुक्मदिया कि मोती डालदो जब मोतीडाले तब हंस उतरकर चुगनेलगा राजाका मनोरथ सिद्धहुआ अब देखिये जब बहुतकालतक हज़ारों चिड़ियां खिलाईं तब वह हंस दृष्टिगोचर हुआ इसी प्रकार मनुष्य को चाहिये कि फ़क़ीरों की सेवा करता रहै तो कभी न कभी कोई महापुरुष भी मिल जायँगे सूर्प अर्थात् छाजकीसी बुद्धि रखनी चाहिये सूर्प असल २ माल तो अपने मं रखता है और कूड़ा अलग करदेता है मनुष्यको चाहिये कि फ़क़ीर के गुणोंको देखै और अवगुणको न देखै परन्तु आज कल बहुधा लोगों का मत चलनीका सा है माल माल नीचे डाले हैं और भूसी अपने में रक्खै हैं इसी से सत्सङ्ग अच्छा नहीं लगता पाप अपना और कलङ्क औरपर मूर्ख यह नहीं समझते कि महापुरुषको तुमसे मिलने से क्या प्रयोजनहै वह संसारीलोगों को

जानवर समझते हैं एक दृष्टान्त है कि कोई बादशाह किसी फ़क़ीरकी मुलाक़ातको गया फ़क़ीरसाहबने बादशाहके पहुँचनेसे पहिले दरवाज़ेपर एक मनुष्य बैठा दिया और उससे कहदिया कि बादशाह जब दरवाज़े परआवै तब तू उसको रोंक दीजो और कहियो कि मैं फ़क़ीर साहबका हुक्म लेआऊं तात्पर्य्यह है कि इसी प्रकार हुआ बादशाह को फ़क़ीर साहबके दरवाज़े पर रुकना बहुतही असत्य हुआ जब फ़क़ीर साहबके पास गये तो कहा कि फ़क़ीरको दरबान् न चाहिये फ़क़ीरने जवाबदिया कि संसारी कुत्तोंको रोंकनेकी आवश्यकता पड़तीहै और एक दृष्टान्तहै कि किसी राजा की लड़की बड़ी अवस्था होनेपर भी कपड़े नहीं पहिरा करती थी राजा ने बहुतसी युक्तियां कीं परन्तु कोई गुणदायक न हुई एक दिन दैवयोग से एक फ़क़ीर साहब राजा की मुलाक़ात को आये लड़की ने फ़क़ीर साहब को देखते ही कपड़े पहिन लिये राजा को बड़ा आनन्द हुआ और आश्चर्य्य हुआ कि आज इसने फ़क़ीर साहब के दर्शन करते ही आप से आप कपड़े पहिर लिये राजा ने इस बात को उस लड़कीसे पूछा लड़की ने जवाब दिया कि स्त्री परदा पुरुषसे करतीहै जानवरों से नहीं करती इससमय पूर्ण अवस्था भर में एक फ़क़ीर साहब दिखलाई दिये हैं उनसे मुझको परदा करना अवश्य हुआ देखिये फ़क़ीर की पहिंचान बिन दृष्टि कैसे होसक्ती है हीरा जौहरी के सिवाय कौन परख सक्ताहै एक दृष्टान्त है कि एक फ़क़ीर साहब ने अपने

चेले को बारह वर्ष के पीछे कुछ जप बतलाया वह बहुत प्रेम से उसको जपता रहा एक दिन उसने वही जप एक और फ़क़ीर के मुँहसे सुना और वह फ़क़ीर वास्तव में कंगाल भिखमंगाथा उस चेलेने कहा कि गुरूजीने मुझको बारह वर्ष के पीछे यह जप बतलाया जिसको कंगाल भिखारीभी जानते हैं चेले ने यह सब वृत्तान्त गुरूजीसे कहा गुरूजीने एक हीरा उठाकर चेले जी को दिया कि जाकर इसको बेंचलावो वह चेला किसी तरकारीवाले के पास लेगया उसने हीरेकी चमक देखकर अपने चित्तमें कहा कि यद्यपि पत्थर है परन्तु यह लड़के के लिये खिलौनाहोगा मुट्ठीभर साग बदले में देनेलगा चेलेने कहा कि मैं अपने गुरूसे पूछआऊं तब साग लूंगा चेलेने आकर यह वृत्तान्त वर्णन किया फ़क़ीर साहब ने कहा कि किसी और दुकानपर लेजा फिर वह एक दुकानदार के पास लेगया उसने एकपैसा मोल कहा इसी प्रकार दोचार दुकानोंपर लेगया ऐसा २ मोल होता रहा अन्तको गुरूजी ने कहा कि फलाने जौहरी के पास लेजा जब हीरा उस जौहरी के पास पहुँचा तब उसके लाखों रुपये देनेलगा अब देखिये हीरे की परख विना जौहरी के नहीं हुई उस समय चेला समझा यह मन्त्र हीरे के सदृश है परन्तु विना परख कौड़ी के समान है और जिसको इसकी परख है तो मोलकी संख्यानहीं इसी प्रकार मनुष्यमें अभी परख तो आई नहीं हीरा कैसे परख लेगा जब जौहरी लोगों का सत्सङ्ग करता रहै तो परख आवे एक दृष्टान्त है

कि कोई फ़क़ीर पहुँचे हुये थे एकदिन कोई राजा उन के दर्शनको गये फ़क़ीर साहब अपने ध्यान में थे देर तक राजा खड़ा रहा जब फ़क़ीर साहबने नेत्रखोले तो क्या है कि उनके सामने राजा खड़ा है राजाको बैठाया उस समय राजाने फ़क़ीर साहबसे कहा कि जो ध्यान आप करतेहो मुझे भी बतला दीजिये जिससे स्वामी के दर्शन हुआकरैं फ़क़ीर साहबने राजासे कहा कि एक थैली रुपयों की मँगालो औ एक सराफ़को बुलालो उसी समय थैली और सराफ़ पहुँचा फ़क़ीर साहब ने उस थैली में एक खोंटा रुपया मिलादिया और सराफ़ से कहा कि इन रुपयोंको परखदे उसने परखकर खोंटा रुपया अलग करदिया फ़क़ीर साहबने कहा कि तुझ को रुपया परखने की दृष्टि कितने दिन में आई है उसने जवाब दिया कि दशपांच वर्षतक सराफ़ों की दूकान पर बैठकर रुपयापरखा जब यह दृष्टि प्राप्त हुई फ़क़ीर साहबने राजासे कहा कि देख एक रुपये की परख तो दशपांच वर्षमें आती है ईश्वरकी पहिंचान एक क्षण भरमें होसक्ती है राजाने लज्जित होकर कहा कि मुझसे भूल होगई निस्सन्देह प्रथम सत्सङ्ग अवश्य इसकाल में बहुत मनुष्यके धन और अवस्थाका अभिमान सत्सङ्ग से रोकता है धनवान् निर्द्धन के पास बैठने में लज्जा करैंहै बड़ी अवस्थावाले छोटी अवस्थावाले के पास जाने और उसकी सीख सुनने में अपनी हानि मानै हैं कहो कैसी निर्बुद्धिता है क्या धनकी कमी से परमार्थकी लघुता होती है? धन तो और परमार्थ का

विरोधी है कौड़ी पैसेवाला धनी नहीं होसक्ता जिसका चित्त उदारहै वह धनी कहलाताहै और वास्तवमें धनी वही है जो परमार्थकी राह बतावै और बड़प्पन क्या अवस्थासे होताहै ? नहीं, जिसकी बुद्धि बड़ी वह बड़ा है इन फांसों से एक बढ़कर फांसी गले में पड़ी है वह यह है अर्थात् जाति और कुलका इतना अभिमान होता है कि जिसका अन्त नहीं यह अभिमान सत्सङ्ग करनेको अत्यन्त रोंक देताहै यह नहीं समझते कि सत्सङ्ग और चीज़है और जाति कुल धन और वस्तुहै॥

दो० जात न पूंछो साधुकी, पूंछ लीजिये ज्ञान ।
मोल करो तलवारका, पड़ा रहन दो म्यान ॥

चौ० हरिकाभजै सो हरिकाहोई । जाति पांति पूंछै ना कोई ॥

देखिये राजा जनक मन्त्री थे और व्यास भगवान् ब्राह्मणथे उन्हों ने शुकदेवजी को राजा जनक के पास ज्ञान सीखनेको भेजा और वहांसे शुकदेवजी को ज्ञान प्राप्त हुआ नारदजी ने बहेलियाको गुरू किया राजा युधिष्ठिरके यज्ञ में घण्टा नहीं बजताथा श्वपचभक्तके आने पर बजा रामचन्द्रजी ने बहेलिनी के जूठेबेरखाये और ब्राह्मणत्व इसपरभी सम्बन्ध नहींहै कि जो ब्राह्मण और ब्राह्मणी के पेटसे उत्पन्नहुआ उसीको ब्राह्मण कहैं क्योंकि अचलमुनि हथिनीसे पैदा हुये और अगस्त्य मुनि अगस्त्यके फूलसे और द्रोणाचार्य्य दोनासे और इसीतरह विश्वामित्र पर ये सब ब्राह्मण कहलाते थे अब देखिये जाति बड़ी या प्रेम, भक्ति और सत्सङ्ग बड़ा ध्यान करनेकास्थानहै कि ब्राह्मणत्वक्षत्रियत्व देहसे सम्बन्धित

है या गुणपर जो देहपर सम्बन्धित होता तो रामचन्द्र कभी बहेलिनीके जूठेबेर न खाते और यज्ञमें श्वपचकी कभी गम न होती और राजाजनकके पास शुकदेवजीको कभी न भेजते और वह मुनि न कहलाते जिनका ऊपर नाम लिखाहै और न पूजेजाते और देखो नारदमुनि भी अन्यजातिसे पैदाहुये और ब्राह्मणहोगये इससे ब्राह्मण वह है जो ब्रह्मको जानै यह गुणसे सम्बन्ध रखता है अब इस समयमें बहुत ब्राह्मणों ने ब्रह्मका जानना तो यह समझा है कि एक दो श्लोक याद कर लिये या मीन, मेष, मकर सीखलिया धनकी राशि गाई महाश्रेष्ठ ब्राह्मण और पण्डित बनगये और हज़ारोंको तो टकाही ब्रह्महै जिस में हँड़िया खुदबुद हो कोई मरै या जिये उनको टका लेने से काम, कहिये अब जो कोई ऐसे ब्राह्मणोंपर दया करके मित्रतासे समझावै या अवगुण दिखावै तो क्या अपराध किया परन्तु महाराजाधिराज समझाने के स्थानापन्न गालियां देते हैं परन्तु बुद्धिमान् तौभी यह समझता है कि ब्राह्मणों की गालियां गाली नहीं होतीहैं आशीर्वादहै उष्णता अधिक हुई और मेह बर्षा इधर आपको ठंढक मिली उधर बादरमें से विकार दूर होगया और स्वच्छ आकाशहुआ और इसबातसे फिरना कि ब्राह्मणको दण्डवत् न करना या ब्राह्मण को गालियां देना या दान न देना अपने धर्मसे फिरना है जो मूर्त्तिके पूजने से मुक्ति होती है तो क्या ब्राह्मण जो चैतन्य है उसके पूजने से नरक होगा जो देवता का वास मूर्त्ति में है सो भगवान् के

अनुसार है तो क्या ब्राह्मण जो कैसाही बुरा है उस में नहीं होसक्ता इस के विशेष जो ऐसी रीतिहो कि जिसके बाहर भीतर कोई हानि न दिखाईदे तो उसको प्रत्यक्ष में निबाहनाही उत्तम होगा छोटे और बड़ेकी देह एकही है परन्तु छोटेको अदब करनाही उचित है इससे क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रको ब्राह्मणका अदब अवश्य है परन्तु ब्राह्मणको भी इतना शोचना अवश्य चाहिये कि दूसरे की श्रद्धा न बिगाड़े और जातिका ही अभिमानी न होजाय अपने कर्म्मोंकी ओरभी देखे दानलेना जब उचित है जो अपने समयको ईश्वरकी तरफ़ लगावे, औरोंको सन्मार्गका उपदेश बतावे, शुभइच्छा से कर्म करावे, नहीं यह दानखाना बड़े बड़े दांत उपजावेगा जो यह कहना असत्यहो तो अपराध को क्षमाकरना अब इससमय के लोगों का वृत्तान्त सुनिये कि बाजे बाजे मूर्ख यहभी कहदेतेहैं कि सत्सङ्गियों को तो दुःखमें फँसे देखतेहैं और जो कुसङ्गी और कुचाली हैं वह ऐश करतेहैं यह उनका कहना अत्यन्त मिथ्या है क्योंकि संसारमें किसीकोभी सुखनहींहै प्रथम ऐश आनन्द को कहते हैं सो संसारी ऐश में आनन्द कहां कि क्षणभर का आनन्द और पहरों दिनों बर्षोंतक का दुःख पाते हैं औ सत्सङ्गी यद्यपि देहसे दुःखीभी हैं तौ भी चित्त में प्रसन्न रहते और आगे तो सदैव कोही आनन्दमें रहैंगे।

दो० मनमें तो आनँद रहै, तन बौरा सब अङ्ग।
ना काहू के सङ्ग है, नानक ना कोउ सङ्ग॥
मनते तनते बदन ते, सदा रहै निष्पाप।

सबघट देखे आतमा, विनजिह्वाहरिजाप॥

सत्सङ्गियों के बराबर कुसङ्गियों को कभी दुःख नहीं व्याप्त है देखिये जो मनुष्य चारमनकी गठरी शिरपर रक्खै तो नहीं चल सक्ता और जो लेजाता है तो अत्यन्त दुःख भोगताहै और गर्दन टूटजातीहै और जो मनुष्य और एक दश सेरकी गठरी बनाकर चार मन का बोझा अपनी गर्दनपर उठाताहै तो सुगमतासे ले जाताहै क्योंकि वह सम्पूर्ण बोझा देहपर और आधी ठेकी पर जो पीठ और गर्दन पर धरीहुई है इसी प्रकार सत्सङ्गी और कुसङ्गी को समझना चाहिये एक आपत्ति सत्सङ्गीपर आई और अपनी बुद्धिके ज्ञानसे वह आपत्ति आपत्तिसी नहीं गिनता और जिसको सत्सङ्ग नहीं है वह निस्सन्देह मारेजाते हैं॥

दो० विपतिभली हरिनामसों, कायाकसौटी दुःख।
रामविना किसकाम के, दादू सम्पति सुःख॥

और सत्सङ्गति आपत्ति टलभी जातीहै एकदृष्टान्त है कि दो मनुष्य कहींको चले एक नेक था दूसरा बदथा राहमें नेकमनुष्यके तो कांटा लगा और बदआदमीको एक हज़ार रुपयों की थैली मिली प्रत्यक्ष में तो विदित हुआ कि अन्यायहै किसी फ़क़ीरने इसका भेद खोला कि नेकमर्द को तो आज शूलीथी उसके नेकचलन के कारण शूलीके बदले कांटा रहगया और बद आदमीको बादशाहत होनीथी उसकी बदचलनी से हज़ार रुपयों की थैली रहगई अब ध्यान करके देखिये कि सत्सङ्ग कैसी उपकारी वस्तुहै कि पहिलेतो नेकचलन प्राप्तहोता

है फिर मुक्ति होती है परन्तु संसारी मनुष्य धन, स्त्री, कुटुम्बको बहुत बड़ा समझतेहैं धनकी हानि लाभका वर्णनऊपरभी होचुकाहै अबइतना औरभी सुनलीजिये॥

दो० भठियारी और लक्ष्मी, दोनों एकहि जात।
आवत तो आदर करैं,जात न पूछैं बात ॥

इस धन दौलत में दो लत हैं एकतो यह कि निस्सन्देह नरकको लेजाती है दूसरी ऐसी है जो स्वर्ग को लेजाती है अब अख़्तियार है कि चाहो आग में पैर रक्खो चाहो पानी में एक दृष्टान्तहै कि कोई साहूकार था वह दिन रात अपना व्यवहार किया करताथा कभी कथा वार्त्ता सुनने नहीं जाता था परन्तु सौ पचास साधुओंको अपने मकानपर उतार कर सबप्रकारसे टहल किया करताथा किसीने पूछा कि तुम जो दिनरात व्यवहारही में रहते हो इससे भजन क्यों नहीं करते हो जो मुक्तिपाओ उसने उत्तरदिया कि जो भजन करूंगा तो अकेले मेरीही मुक्तिहोगी जैसे मगनानन्द मौनी आप निस्सन्देह मुक्तहैं परन्तु दूसरे को कुछ नहीं क्योंकि मुख बन्दहै और अब सौ पचास साधु भजन करते हैं कहो अब एक मेरा भजनकरना अच्छा या सौ पचास का जो धन होय तो ऐसाही होय नहीं तो जो ऊंचा उठता है वह फुवारेके सदृश नीचेको होताहै यह वह लतहै जो नरक को लेजातीहै अब स्त्रीका वृत्तान्त सुनिये कि एक मट्टी का तूदाहै या एक ढेर हड्डी रुधिर और चमड़ेकाहै उसके ऊपर अपनी जान देना या गुलामीकरना और सत्सङ्ग छोड़ना कैसी बुरी बातहै एकदृष्टान्तहै कि किसी

राजाके लड़के को प्रधानकी लड़की किसी संयोग से दृष्टि पड़ी और यह उसपर आसक्त होगया अब हर समय उसी चक्कर में फिरता रहता और चिन्ता और शोक में सूखाजाताथा किसीसे कहता नहीं बड़ी कठिनतासे उसका वृत्तान्त विदितहुआ राजाको ख़बरहुई तो राजा अत्यन्त शोचग्रसित हुआ कि हाय! कैसे होसक्ताहै प्रधानकी जाति और मेरीजाति एक नहीं जो बिवाह हो सके और लड़केकी यह दशा हुईजाती है राजा हर समय शोचमें रहे प्रधान ने राजाका वृत्तान्त पूछा कि महाराज आपको ऐसी कौन चिन्ता व्यापीहै अहर्निश शोचग्रसित रहतेहो राजाने मन्त्रीको बहुतसा टाला परन्तु मन्त्रीने न माना तब राजाने सब वृत्तान्त कहदिया मन्त्रीने सुनकर अत्यन्त अधीर होकर खाना पीना सब छोड़ दिया इधर देखताहै तो कुआँ उधर देखताहै तो खाईं हौले हौले इस बातकी ख़बर उस लड़कीको भी पहुँची लड़कीने अपने पितासे कहा कि आपने थोड़ी सी बातके पीछे इतना शोच वृथा किया आप क्यों घबरातेहौ बातकी बात रहजाय और मतलबका मतलब सहजमें होजाय (सांप मरै न लाठी टूटै) लड़कीने बापसे कहा कि आप राजा के लड़केसे यह ख़बर करदो कि वह लड़की बीमारहोगई है जब अच्छी होगी तब विवाह होजायगा उसी समय उस लड़कीने एकनाईको बुलाकर सब अपने बाल मुड़ा डाले और जमालगोटे का जुल्लाब लिया उसमें सौ दस्त आये लड़कीका स्वरूप महाकुरूप होगया और सब देह में हड्डी २ दिखाने

लगीं अब लड़कीने पितासे कहा कि अब तुम राजाके लड़केको बुलवालो राजाके लड़के को खबरकीगई कि लड़की अब अच्छी होगई है चलो हार लेआवो राजा का लड़का अत्यन्त प्रसन्न होकर बहुत उत्तम २ वस्त्र भूषण पहिनकर बड़े उत्साहसे उसके पास चला और लड़कीने एकयुक्ति और भी कर रक्खीथी कि जिस मकानमें बैठीथी वहां एकओर बालोंकाढेर और एक तरफ़ विष्ठा की नदी दुर्गन्धित रक्खीथी और सम्पूर्ण मकान को गन्दा कर रक्खाथा जो राजाका लड़का उस लड़की के सम्मुख पहुँचा उसका स्वरूप देखकर अत्यन्त घृणा की किन्तु एक दम भर भी न ठहरा अपने घर लौट आया अब उस लड़कीका नाम भी नहीं लेता अब देखिये इस दृष्टान्त से क्या प्रयोजन निकला लड़की ने दिखाया कि शिरपर तो बालों का ढेरहै और भीतर हड्डी और विष्ठा भरी है इससे ऐसी वस्तु पर अपनी इज्ज़त और जान देनी कैसा बुरा काम है॥

दो० नारी कहूं कि नाहरी, तू मत राचो दास।
मंजारी जो बोलिकै, काढ़ कलेजे खात॥
नारी नाहीं नाहरी, करै नयन की चोट।
कोई साधू ऊबरै, राम नाम की ओट॥

परंतु ऐसा हो तो और बात है॥

दो० नारि पुरुष दोउ एकमत, भक्ति साधु बिनहोय।
कलह कलपना मिटगई, सत् पद रहे समोय॥
छोटी बड़ि सरकारका, मता हुआ है एक।
सूरत शब्द की एकता, काटे फन्द अनेक॥

अब कुटुम्बकी दशा सुनिये कि एक लुटेराथा वह विदेशियोंको लूट २ कर उनका धन घरमें लाताथा उसके सब घरके लोग खाया करते एक दिन एक फ़क़ीर चले जातेथे यह लुटेरा उनको भी लूटने गया तब फ़क़ीर साहबने कहा कि भाई एक बात मेरीभी सुनले पीछे तुझे अख़्तियार है लूटि लीजियो उसने कहा कि कहो फ़क़ीर साहबने कहा कि तू क्यों लूटा करताहै उसने उत्तरदिया कि कुटुम्ब पालनेको फ़क़ीर साहबने कहा कि अच्छा अब तू उन खानेवालोंसे पूछ कि जिस समय भगवान् के यहांसे इस लूटने का दण्ड मिलैगा उस समय तुम सब मिलकर उस दुःखको बाँट लोगे या नहीं यह मनुष्य अपने घर गया और वहां अपने लड़के और स्त्री से पूछा सबने कान पर हाथ रख कर कहा कि हम क्या लूटने को कहतेहैं हम इसका क्यों दण्ड भोगेंगे यह मनुष्य सुन कर फ़क़ीर साहबके पास आया और उत्तर सुना दिया फ़क़ीरसाहबने कहा कि हे मूर्ख तू देख खाने को सब मौजूद मार खानेको तूही अकेला रहा फ़क़ीर साहबका कहना उस मनुष्य के दिल में चुभगया शोचा कि यह सब अन्याय मेरेही गलेपर रहा उसी दिनसे लूटना छोड़दिया तात्पर्य्य इस कहनेसे यह है कि सब अपने २ सुखके साथीहैं दुःख में कोई पास भी नहीं खड़ा होता और प्रत्यक्षमें देख लीजिये कि जन्मभर इस कुटुम्बके लिये पाप भी कमाये और इसी उद्योगके परिश्रममें भजन भी छोड़ा जब बुढ़ापा आया तो बुरेलगनेलगे कोई बात भी नहीं

करता और कोई उद्यत भी हुआ तो पहिले कहताहै कि तुमने तो बड़ी जान मारी कहो क्या कहतेहो अब थोड़ी बहुत सुनकर चले गये और कहते चलेजाते हैं कि बुड्ढेकी तो बुद्धि सठिआय गई है और महादुःख दे रक्खाहै घरमें से दूसरे बोले कि क्या कहूं इस बुड्ढे के मारे तो नाकमें दम है अपनी तो दिन भर बक रहाहै और की कुछ नहीं सुनता न समझता है न मालूम इसको क्या होगया तीसरे बोले भाई अभी क्या दुःख है इनके मरने पर ख़बर पड़ैगी जब इनके क्रियाकर्म और तेरहीं को रुपया चाहियेगा इसको तुम बड़ी हत्या समझो चौथा बोलउठा ख़ैर जो होगा सो होगा अब यह मरै तो रात दिनकी बकबक तो मिटै इसका जीना तो महादुःख और पाप का मूलहै कहां तक इसकी खांय खांय और भांय भांय सुनैं और बुड्ढा हाथ मल मलके कहताहै कि हाय सारी अवस्था वृथाहीगई इस कुटुम्ब से कुछ सुख न पाया देखो जब यह लड़के थे तो मैं रातदिन इनके भरण पोषण की चिन्ता में रहता सब प्रकार इनकी टहलैं और लाड़ प्यार करतारहा आप न खाया इनको खिलाया आप न पहिना इनको पहिनाया आपन सोयाइनको सोलाया इनके साथ मुझ को भी अज्ञानी बनजाना पड़ताथा इनकेजी बहलानेके लिये अस्त व्यस्त बका करता था जो इनको ज़रासा भी दुःख होता था तो मुझको अपनी जान तक का स्मरण इनकी चिन्ता में नहीं रहता था कुछ सावधान हुये तो शिक्षा करतारहा हज़ारों सुख दुःख पाप पुण्य

कमाकर इनके विवाहशादी किये फिर यह शोचरहा कि इन लड़कों से कोई कुकर्म न बनजाय जो कुल डूबजाय अब जो किसी लायक़ हुये और मैं वृद्ध हुआ तब यह दशा करते हैं हाय अब तो मरजानाही उत्तम है क्या मौतके दफ़्तरसे भी नाम कटगया जो अबतक भी मौत नहींआती और यह दोहा स्मरण कर २ शोक करताहै॥

दो० सुत दारा अरु लक्ष्मी, पापी के भी होय।
साधुसमागमहरिभजन, तुलसी दुर्लभहोय॥
शोच करै सो सूरमा, करि शोचै सो कूर।
करिशोचियामुखश्यामहै, शोचकरामुखनूर॥
दीन गँवायादुनियासँग, दुनी न चलिहैसाथ।
पैर कुलहाड़ा मारिया, गाफ़िल अपने हाथ॥

देखिये ज़िन्दगी में यह सुख कुटुम्ब के उठाये और जो मूर्ख यह कह देते हैं ख़ैर यहां के दुःख सुख क्या हैं पीछा तो सुधर जायगा वाहरी समझ आगे तो यह धूल उड़ाई अब पीछे का वृत्तान्त सुनलीजिये ख़ैर कुछदिन पीछे बुड्ढा चल बसा अब सलाह होनेलगी कहो अब क्या करें एक बोला कि भाई जो कुछ करो सो समझकर करो आजही का दिन नहीं है कि क्रिया कर्म तेरहीं भी पड़ी है दूसरा बोला कि भाई आज दश पांच रुपयेमें कर करादो तीसरा बोला कि इसमें तो नककटी है तात्पर्य यह है कि परस्पर में रद बदल अर्थात् ठायँ २ होकर जैसे तैसे उस हत्याको मरघट तक पहुँचाया अब क्रियाकर्म में ब्राह्मणों से झगड़ा चला जाता है तेरहीं के दिन दशपांच ब्राह्मणों को

तरकारी पूरी खिलाई एक एक टका दक्षिणा दिया चलो निपटे हां तर्पण करनेको मुफ़्त का पानी उलचने को खुशीसे तैयार हैं उनके निमित्त श्राद्ध आदिक करने में तो मृत्यु आतीहै अपने नाम करनेकी सलाह ठहरी तो बिरादरी और यार दोस्तों को बहुत अच्छे माल खिलाये औ खुश होते हैं कि हमने बड़ानाम किया कहो इसमें उनके बाबाजीको क्या मिला शायद बाबा जी के हिस्सह में दो चार आने आयजायँ उससे चने चाबकर भी मार्ग पूरा न होगा बाहरी सेवा सम्पूर्ण उमर भर तो हज़ारों रुपये पैदा करके खिलाये और ऐसे दुःख भोगे अब दो चार आने मिले तो क्या अब उन की गयाका वृत्तान्त सुनिये कि लड़का गया को गया और गया करके लौट आया किसीने पूछा कि गया में तो तुम्हारा बड़ा रुपया ख़र्च हुआ होगा हांभाई क्या कहैं जीही जानता है हज़ार रुपया लगगया अत्यन्त ख़ाली खोखलहोगये और आप दशबीस रुपयामें गया करआये सो भी ब्राह्मणको तो दशबीस टकेही में टाला होगा वहां तो बूढ़ेजी नरक में सुख लूटते हैं यहां बेटे जी ने मिथ्याबोलनेकी दश बीस सेर की गठरी शिरपर और रक्खी और जो नाकवाले हुये और कुछ नामवरी का शौक़ हुआ तो भाई बन्धु यारदोस्तों की बड़ी धूम धामसे ज़ियाफ़तकी अब ध्यान और न्याय करने का स्थानहै कि इसमनुष्यको जिसकी गया हुई है क्या पल्ले पड़ा सत्य है कि बिना अपने मरे स्वर्ग नहीं दीखताहै और जो पुत्र सुपुत्र हुये तो हां अलबत्ता जो मेहनत

पहिलेकी है उसकी मजूरी चाहै मिलजाय सो उसमें भी सन्देह है कि मशालची कोस भर पीछे और आप आगे जो कोई कहै कि इसमें तो शास्त्र खण्डन होता है नहीं शास्त्र तो मिथ्या नहीं होता परन्तु उनकी आंखोंपर तो ज़रूर परदा पड़ा जाताहै शास्त्र लोक परलोक दोनों को गाता है जो पिता को बेटेका लाभ न दिखावे तो उनसे प्रीति कबहो और नीच लोग कब पाससे कौड़ी ख़र्चैं और जो प्रीति और दान नहींहै तो संसारका प्रबन्ध बिगड़जाताहै अब मनुष्य केवल संसारीलोगोंका ध्यानकरते हैं और जो शास्त्र और महात्माओं का सिद्धान्तहै उससे आँख छिपाते हैं इस कारण ऐसे मनुष्य की दीनदुनियां दोनों ख़राब होतीहैं जो मनुष्य अपने परलोकको चिन्ताकर और शुभकर्म और मालिक की भक्ति करे तो संसार और परलोक दोनों में सुखी होय॥

दो॰ बिषयजगतकेअग्निसम, जलसमान सत्सङ्ग।
वृन्दावन तट यमुन के, शीतलभो सब अङ्ग॥
सर्व जीव आनँद चहैं, विषय भोग संसार।
मृगतृष्णा की भूमि में, जलबल होय ख़ुवार॥

चौ॰ नरतनउनकोजानुअमोला। लगेनहींजिनकामझकोला॥
जो नहिं सुधि परमारथ राखैं। उनको वेद पशू कहि भाखैं॥
करि विवेक जो देखो भाई। पशुतन में सुखहै अधिकाई॥
पशु भरिपेट चराई कीन्हा। अबअचिन्तदुखनिकटनचीन्हा॥
मनुष्य पेटभर सब कुछ खावा। उसीसमयचिन्तामनलावा॥
कहौ तृप्त पशुतन का जानै। या इस बुद्धि भ्रष्टिको मानै॥
चिन्ता चिता एक सम भाई। सुन्न भेड़ दोउबीच रहाई॥

सुभभेद सूना नहिं जानौं । काम निकृष्ट सुभको मानौं ॥
चिता जलावैं तन निरजीवा । चिन्ताजारै मन सरजीवा ॥
मन राजा मन्त्री यह नैना । मिलकरदोउ चलावतसैना ॥
सूचक मन्त्री मूरुख राजा । अन्धाधुन्ध समीइनकाजा ॥
देखभाल यह चुगली खावैं । राजा नगरी आग लगावैं ॥
जलैं आप सब नगर जलावैं । फिररोवैं मुहिं हँसीदिलावैं ॥
लोचन मन्त्री जल भरिलावैं । रोयरोय पानी ढुलकावैं ॥
इन मूरुखका कौन हिसावा । फूंकफांकफिरजलवरसावा ॥
कामादिक रागन घट घेरो । पांचभूत मठ कियोबसेरो ॥
मतिभ्रम होय नहीं कुछ सूझै । विषयस्वाद में सारनबूझै ॥
जगतृष्णा इच्छा अधिकाई । निशिदिनचिन्ताचितैजलाई ॥
दो० जबलग ये पांचोबने, तबलग दुखी निदान ।
ऐसे नरसे पशु भले, जिनके लोभ न मान ॥
चौ० तज तू मोह विषयको मीता । चेतपरमपदतोजगजीता ॥
फल नर तन को अस तू पावै । सुफलजन्महरिजनकहलावै ॥
जस कूकर हड्डी को चावै । इसविधिकासुखमनुजकमावै ॥
ऐसी भूल भई दुखदाई । जन्मजन्मदुख भुगततभाई ॥
गर्दभ जस बश काम रहाई । मुखपरलातखाय पुनिजाई ॥
इसविधि मूरुख माया हेरै । खायथापफिरि शिरनहिंफेरै ॥
गर्दभ जस धोबी का जानो । जापरबहुविधि भारलदानो ॥
घर पहुँचे लादी उतराई । राति समय वह जाड़ा खाई ॥
अस मूरुख धन ढेर बटोरै । चलतीबार सबी पुनि छोड़ै ॥
गर्दभ सुख चन्दन नहिं मानै । राखधूल बहु नीकी जानै ॥
शूकर प्रीति पुरीप से राखै । अमृतभोजन वह नहिं चाखै ॥
असजगजीव विषयरस राजी । आंख मीचकर हारत बाजी ॥

दो० घुग्घूको दिनरात है, रातसमय दिन भाश।
ऐसे मूरखजीवको, विषय राग कियोनाश॥

सवैया-खान मिला अरु पान मिला बहुमान मिला धन धाम रहाई। कुल मोट मिला गढ़ तोप मिला पृथिव-राज मिला सेना बहु पाई॥ पुत्र मिला अरु पौत्र मिला बहु मित्रमिला दिनादिन अधिकाई। वृन्दावन हरिनाम विना सबही सुख धूरसमान कहाई॥

चौ०जीवनजगको स्वपना होई। सम्पतिधनसबजायबिगोई॥
यह माया सबजग भरमावा।दुखकोसुखसागरादिखलावा॥
त्राहि त्राहि नर राह न पावा। त्रयगुणमें फँसभटकाखावा॥
रज तम की रहै बहु अधिकाई। सतगुण से नहिं नेह बढ़ाई॥

दो० कामक्रोधको त्यागिकै, लोभमोह कियोनाश।
तवहूंकारजनाबनै,जबलगअहंमानकीआश॥
झीनी माया जिन तजी, मोटी गई बिलाय।
ऐसे जनके निकटसे, सबदुख गयो हिराय॥

स०पोना—कामनाहिंक्रोधनाहिं मोहनाहिं लोभत्यागदियो है। रोगनाहिं शोगनाहिं भोगनाहिं योगवास लियोहै॥ धननाहिं धामनाहिं मित्रनाहिं विषय नाश कियो है। वृन्दावनअसकोईएकजगमाहिंजिनआपादानदियोहै॥

दो० शील धर्म्म सन्तोष गह, दया दान उपराम।
प्रेमदीनता अधिक मन, बनेसहजसबकाम॥

चौ०अपने को नीचाकर मानो। निन्दावचन न मुखसे आनो॥
सतसँगमेंरुचिअधिकवढ़ाओ। जग शोभासे नेह न लाओ॥
बाट माहँ जस करो बसेरा। तुम नहिंमानो वह घर मेरा॥
इसविधि जगमें करौ पयाना। दुखसुखसेतुमरहो अलगाना॥

मन अभिमानधरो नहिंभाई। क्षण आगेकी खबर न पाई॥
तुम चाहो बलनिर्बल होवो। रस पारा से बलनहिं जोवो॥
हारे मनको जीता जानो। हार हार हरि नेह लगानो॥
दो० हारपड़े शरणागती, सूझ पड़ो करतार।
रजाहुक्मपहिंचान के, उतरयो शिरसे भार॥

चौ० रजतमछोड़ करो सतसङ्गा। पावो सतगुण दुखहो भङ्गा॥
साधु कि महिमा असबतलावैं। तीरथचन्द्र कल्पतरु गावैं॥
सेवन तीरथ पाप विनासू। चन्द्रदरश जसतापजरासू॥
कल्प निकट इच्छापुर जाई। साधु सङ्ग फल तीनों पाई॥
दरशन से शीतल होजावै। सेवा करत पाप नश जावै॥
वचन सुनत जग मिथ्याभाशे। इच्छा बीजसहज होइ नाशे॥
माया जग में बन्धन डाला। सन्त दयालु हरैं ततकाला॥
सन्तगती का भेद नियारा। अगमअगोचरअलखअपारा॥
विष्णु आदि जितने हैं देवा। कह्यो अगाध सन्तकर भेवा॥
तीनदेव रचना कर ठानी। स्वार्थसहितपरमारथआनी॥
सन्तकृपानहिं स्वारथ राखा। निष्केवल परमारथ भाखा॥
पाखँड का नहिं राखा लेशा। पन्थसुगम नहिं होयकलेशा॥
कलियुग माहिं जगतके जीवा। करैं अचार न पावैं पीवा॥
छूत अछूत न करैं बिचारा। चौकान्हाना यही अधारा॥
असनर बुद्धिहीन तुम जानो। सांच न भावे झूठ रचानो॥
पवनछुवत है सब जग केरा। वही करत घटमाहिं बसेरा॥
कहौ शुद्धता अब होइ कैसे। न्हाइ धोय बैठे गिध तैसे॥
उत्पति मूल देह की देखो। बीरजहाड़ चामकर लेखो॥
सत्तदया कर भूल छुड़ाया। सन्त मार्ग का भेद बताया॥
पुरुष एक चैतन्य दरशावा। पूरणखण्ड रहित बतलावा॥
भयते रहित वैर नहिं ताके। चिन्ता पहुँचै निकटनजाके॥

गर्भ योनि से रहैं अतीता। आदिअन्तजाका नहिंमीता॥
दूसर वा सम हुआ न होई। आनँदसदा शोक नहिं कोई॥
मनके विना करै सब ज्ञाना। देह विना जग रचना ठाना॥
बिन नयनन द्रष्टा वह होई। श्रवण विना पुनि श्रोतासोई॥
सबके निकट सबन ते दूरा। भेदी देखै सदा हजूरा॥
जो असपुरुषशरणगहि राखी। वहहुये मुक्त न चहिये साखी॥
कारण पुरुषरूप से न्यारा। निर्गुण जाको सन्त पुकारा॥
भक्तवछल अरु दीनदयाला। हरजन पर वह सदा कृपाला॥
जो कुछ होइ उसी से जानो। कर्त्ता हुआ अकर्त्ता मानो॥
चिन्तामणि समरूप पिछानो। जसनिश्चयतसफलतुममानो॥
पुरुषनाम सत नाम बखाना। सुरत शब्दका पन्थलखाना॥
गुरु से प्रीति साधु की सेवा। तब पावै कुछ हरिको भेवा॥
टहल करै पितु माता केरी। भूखे को नहिं दरशे फेरी॥
प्रापत में हरषावै नाहीं। करै न शोच गये के माहीं॥
पलपल पर यश हरिको गाई। वैर विरोध करै नहिं भाई॥
सबके लिये शुभ इच्छा राखै। वचन कठोर न मुखसे भाखै॥
पर स्त्री पर दृष्टि न लावै। संग कुसंगी को नहिं भावै॥
अस्तुति दूसर सुन हरषावै। अपनीअस्तुति सुनडरजावै॥
निन्दा दूसर कभी न भावै। अपनी सुनकर क्रोध न लावै॥
सुरत शब्दसों जाय मिलावै। हरिका गुण गावत हरषावै॥
जो कुछ होइ वही भल जानै। हरिको धन्यवाद मुखआनै॥
वाह गुरू तू जपले मीता। जगत विघ्नको सहजे जीता॥
गुरु से अब यह विनती होई। याको पाठ करै जो कोई॥
नेम सहित दोहा चौपाई। करै पाठ जो चित्त लगाई॥
इच्छा पूरण रक्षा पावै। चलै सुपन्थ सन्त गुणगावै॥

दो० वृन्दावन आधीनपर, दयाकरौ सब कोय।
नाम प्रीति उरमें बसै, दर्शन सहजे होय॥

बारहमासा ॥

आसाढ़ पियाबिन भारी। मैं डगर निहारों ठाढ़ी ॥ प्यारे अब यही बिचारों। तनमन मैं तुमपरवारों॥ आवो करो यहां डेरा। वृन्दावन बसावो खेरा ॥ अब मोहि लिया प्यारे तूने। प्रकट रहो या सूने १ सावन में आवन कहिगे। आशा जो मनकोदैगे ॥ निशि दिन मैं राखों ध्याना। खोजों शब्द कि खाना ॥ अपने जो घट में बसके। साईं जो बोले हँसके ॥ हरक्षण में नाम रटोंगी। वृन्दावन यह माला बटोंगी २ भादों घटाघन घेरे। हम नैन मीच पिउहेरे। जब चुप्परहूं पिय बोलैं। श्रवणों में चित्तको तोलैं ॥ मैं कानको मूंदा जब से। पिय बीनबजावैं छबिसे ॥ वृन्दावन की पूरीआशा। जहां पीव वहँ तेराबासा ३ कुवांरे खुलीसतद्वारी। निरखापियारा लारी॥ त्रिकुटीद्वार जब देखा। छुटा जन्म का लेखा ॥ मैं चक्रित अब कुछकीजे। पिउ आपन दर्शन दीजै ॥ सुन महा सुन जहां हमआने। वृन्दावन लखा निर्वाने ४ कातिक तका जिन अन्दर। बासा किया बिच मन्दर ॥ जो जो गगनचढ़ धाया। निर्मल छुटी जब माया ॥ रही रूपरंगराती। पिया होगये हमारे साथी ॥ पूरणमास भयो परकाशा। वृन्दावनकी पूरी आशा ५ अगहन हमैं नहिं भावै। पिया प्यारा आप न आवै ॥ भोजन अनेकप्रकारी। बिनरामरस सब खारी ॥ छःमास हुये सब भूला। बिरहाहुई जसशूला ॥ वृन्दावन पियारे जगमें। व्यापक हैं दशहू मगमें ६ पूस मास कस वीतै। काम क्रोध जो जीतै ॥ मैं कुटिल

अधम खलकामी । तुमतौहौ अन्तरयामी॥ऐ पिया चूक निरवारो । शिरसे ये बोझ्फाटारो॥ वृन्दावन पियारे बोलैं । मनकी गिरहको खोलैं ७ माघै घरही में ढूंढ़ा । बाघन का शिर जब खूंदा ॥ पिय बिन जो मकरनहावै । आग लगे जलजावै ॥ बेनीजी है जगमेला । मैं चाहों उसे अ-केला ॥ वृन्द वन से बूझो कैसी। सुधरही न ऐसी वैसी ८ फागुन बसन्ती ऋतुयां । करले पिया सँग बतियां ॥ वन वन जोबन वन फूले । बिरहा कलेजे हूले ॥ रँगरँग रँ-गीली गावैं । पिया पिया कहिधावैं ॥ सुर तालछतीसी रागिन । वृन्दावन पिया वैरागिन ९ चैत आया जब हम चेता । तन धन है पियाके हेता ॥ मैं शीशसे चल कर जाऊं । मैं कैसे पिया तोहिं पाऊं ॥ करजोर यही मैं भाखों । रस पिया तुम्हारा चाखों ॥ नई नई आवाजें आवैं । वृन्दावन सोहंरटलावैं १० बैशाख महीना भारी। सूरत दिखाओ प्यारी ॥ सखीआ निरादरकरती । क-हना नहीं चित धरती ॥ जाव जहां सब मूसैं । तुमबिन पियासबरूसैं ॥ वृन्दावन मनावो पियाको । धीरजरखो या जियाको ११ यह जेठ अगिनि अस आया । हरि बिन जो जलती काया ॥ शीतलकरो या हिरदा । हारा मैं फिरदा फिरदा ॥ बारह मासहुये पिया आओ । शब्दों की मेहबरसाओ ॥ मिलिया जो सतगुरुरामा । वृन्दावन के पूरणकामा १२ आयासखी लौंद महीना । पूरण पिया को चीन्हा ॥ आये पियामेरे प्यारे । हिरदेकेनैन उघारे ॥ पाया जो मैंने हेरा । यों सुफल जन्महै मेरा ॥ वृन्दावन यह बारहमासी । गावै कटै यम फाँसी १३ ॥ इति ॥

शब्दप्रमाण और उपमाना। अर्थापत्ती पञ्चम जाना॥
षष्ठम अनुपलभधी होई। जो समझा मुक्ता है सोई॥
इंद्री विषय प्रत्यक्ष कहावै। अग्नि उनमान धूमसे पावै॥
श्रोत्रन से जो सुनिया जाई। शब्द प्रमाण इसी को गाई॥
ज्ञान उपमान यही पहिंचानो। कहा सुई कांटे सी जानो॥
है वलवान कहै नहिं खाता। विनभोजनवलकहांसेआता॥
अर्थापत्ती यही बखाना। षष्ठम का अव करो धियाना॥
घट जब जाय फूटि रेभाई। घटअभाव अनुपलभधिगाई॥

दो० बिन जाने परमाण के, अर्थ शुद्ध नहिं होय।
अर्थशुद्ध जो ना लखै, कहो भर्म कस खोय॥

चौ०श्रुतिस्मृतिसन्तनसबभाखा। चेतनएक भिन्न करिराखा॥
आभाससहित बुद्धी करैज्ञाना। धरैकूटस्थकोवह अभिमाना॥
साक्षी ब्रह्म एकही रूपा। यही ज्ञान ज्ञानन को भूपा॥
इन्द्री विषय नहीं है आतम। आपन लखाआपपरमातम॥
सुखदुखकाकहो कौनस्वरूपा! ज्ञातहोय अस ब्रह्म अनूपा॥

दो० ब्रह्म और परपंचमें, रंचक भेद न जान।
दृश्य अदृश्यसबब्रह्म है, वृन्दाबनसतमान॥
बिनमृत्तिकाघटकुछनहीं, मृतिकाहीघटहोय।
निराकार आकार है, वृन्दाबनलखुसोय॥

अब इससमयमें बहुधा वेदान्तकी भी चर्चा परमार्थियों को अच्छी मालूमहोती है और जो उसके सुनने के अधिकारी हैं उनको ज्ञान प्राप्त होताहै अब सबसे पहिले अधिकारी वेदान्त को समझना चाहिये वेदान्त श्रवण करने का अधिकारी वह पुरुषहै कि जिसके मल अर्थात् पाप और मनकी चञ्चलता दूर होगई है केवल

एक स्वरूप का अज्ञान है और चार साधन सहित हो १-विवेक २-वैराग्य ३-षट्सम्पत्ति ४-मुमुक्षुता। विवेक यह कि सत्य असत्यको समझताहो, वैराग्य यह कि ब्रह्मलोक तकके सुखोंकी इच्छा नहो किन्तु उनसे घृणाहो षट्सम्पत्तिके यह अङ्ग हैं सम मनका मारना अर्थात् संकल्प विकल्प न उठनेदेना १ दम इन्द्रियों का दमन करना अर्थात् विषय आदिक का त्याग करना २ उपराम जगत्से वैराग्य और वेदान्त शास्त्र सुनने के निमित्त देहकी क्रिया होय ३ तितिक्षा धूप, छांह, क्षुधा, तृषा, सह सक्ता हो किन्तु समान समझताहो ४ श्रद्धा अर्थात् प्रीति, रुचि, भाव और निश्चय वेदान्तमें होवै ५ समाधान अर्थात् चित्त ठहरा हुआ होवे ६ ॥

मुमुक्षुता वहहै कि मुक्ति की इच्छा रखता होवै ऐसा पुरुष अधिकारी कहलाताहै फिर वेदान्त शास्त्रका श्रवण मनन निदिध्यासन और तत्पद त्वंपदके अर्थ का शोधन करके मोक्षको प्राप्त होताहै चारों साधन और श्रवण आदि अन्तरङ्ग साधन कहलातेहैं और कर्मयज्ञ आदि बहिरङ्ग कहलातेहैं मुमुक्षू अन्तरङ्ग साधन की इच्छा रक्खै बहिरङ्गका साधन साधारण रक्खै अन्तरङ्ग साधन के ज्ञानमें फल प्रकट है और निष्काम बहिरङ्ग का फल जो मनकी शुद्धी करताहै बहिरङ्ग अर्थात् गुप्त है और काल अन्तरहै क्योंकि कर्म्मका फल तत्काल नहीं मिलता और ज्ञान दोप्रकारका होताहै एक परोक्ष ज्ञान कि ब्रह्महै और दूसरा अपरोक्ष ज्ञान कि मैं ब्रह्महूं जैसे किसीमनुष्यकी टोपी पवनलगनेसे शिरपरसे उसके

पैरोंके पास गिरपड़ी अब वह इधर उधर टोपी को देखताहै टोपी उसको दृष्टिगोचर नहीं होती किसी दूसरे मनुष्यने कहा कि क्यों घबराता है टोपी तेरे पासहै यह सुनकर उस मनुष्यको ऐसा निश्चय आया कि टोपी है गईनहींहै इसको परोक्षज्ञान कहते हैं कि ऐसा निश्चय हुआ कि ब्रह्महै तदनन्तर उस मनुष्यने उससे कहा कि देख तेरे पैरोंके पास टोपीहै अब उसने टोपीको देखा यह अपरोक्ष ज्ञान है जब ऐसा निश्चय हुआ कि मैं ही ब्रह्महूं॥

इस दृष्टान्तसे यहां केवल इतनाही प्रयोजन है कि परोक्ष और अपरोक्षके अर्थ समझमें आजावैं॥

अब बहुधा लोग यह कहतेहैं कि इससमयमें ऐसा अधिकारी कोई नहीं दीखता और बिना अधिकार वेदान्त का श्रवणकरके वाचक ज्ञानी होजाते हैं कोई मनुष्य ऐसेही कहरहा था कि एक परमहंस वहां आगये उस मनुष्यने दण्डवत् कर पूछा कि महाराज आपका नाम क्याहै उन्हों ने कहा कि इस देहका नाम चन्द्रमणि है तब उसने कहा कि महाराज आपने ऐसा कहा कि देहका नाम चन्द्रमणि है आपने अपनाही नाम क्यों नहीं कहा परमहंस बोले कि नाम देहका होताहै चैतन्यका नहीं फिर उसने पूछा कि आप कौन हैं उत्तर दिया कि ब्रह्म महाराज आप ब्रह्महैं तो और सब क्या है परमहंसने उत्तर दिया कि जो दृश्यमानहै सो जगत् है मिथ्याहै अनहुआ भासै है और यहभी है कि सर्व ब्रह्म है॥

क्यों महाराज जो सर्वब्रह्महै तो तुम श्वपचके साथ क्यों नहीं खाते और रोटी के बदले उपला क्यों नहीं खालेते और जो आपको कोई बुरा कहै और मारै तो क्यों क्रोधकरते हौ और जब कोई दुःख आताहै तो क्यों हाय हाय करतेहौ और जो आप ब्रह्मज्ञानी होतो भोजनोंके खोजमें क्यों फिरतेहौ आपमें इतनीभी शक्ति नहीं कि भोजन न करौ या भोजन अपनेपास मँगालो हमने तो व्यास और जनक आदिको ज्ञानी सुना है जिनमें ऐसी सामर्थ्य थी कि चाहैं तो पृथ्वी को लौटदें और यह सामर्थ्य थी कि अपना पैर अग्नि में रखदें और दुःख न हो जड़भरथ जी को ज्ञानी सुनाहै कि जिन से पालकी उठवाईगई और उन्हों ने कुछ न कहा और ज्ञानी अन्तर्यामी होतेहैं और महाराज जब ज्ञानहुआ तो जगत् नहीं भासना चाहिये न मालूम आपका ज्ञान कैसाहै और आप ज्ञानी कैसेहैं और आप ब्राह्मण किस प्रकार हैं और आपके विवेक वैराग्य षट् सम्पत्ति किस प्रकारके हैं महाराजा हमतो भगवान्के दास हैं जीव हैं दुखी सुखी भी होते हैं असामर्थ्य हैं स्वामीसे रक्षा मांगते हैं और उसकी मायाका कुछ अन्त नहीं बड़े २ देवता उसका कुछ अन्त न पासके तो जीवकी क्या गिन्ती है हमतो उसकी केवल सेवा करते हैं जैसे पहिले बड़े २ ऋषीश्वर मुनीश्वर करते आये हैं और जो भगवान्ने गीतामें कहाहै उसके अनुसार चलते हैं और स्वर्ग भोगनेकी इच्छा रखतेहैं ॥

परमहंस कहते हैं कि भाई जो तू ब्रह्म ईश्वर,

पैरोंके पास गिरपड़ी अब वह इधर उधर टोपी को देखताहै टोपी उसको दृष्टिगोचर नहीं होती किसी दूसरे मनुष्यने कहा कि क्यों घबराता है टोपी तेरे पासहै यह सुनकर उस मनुष्यको ऐसा निश्चय आया कि टोपी है गईनहींहै इसको परोक्षज्ञान कहते हैं कि ऐसा निश्चय हुआ कि ब्रह्महै तदनन्तर उस मनुष्यने उससे कहा कि देख तेरे पैरोंके पास टोपीहै अब उसने टोपीको देखा यह अपरोक्ष ज्ञान है जब ऐसा निश्चय हुआ कि मैं ही ब्रह्महूं ॥

इस दृष्टान्तसे यहां केवल इतनाही प्रयोजन है कि परोक्ष और अपरोक्षके अर्थ समझमें आजावैं ॥

अब बहुधा लोग यह कहतेहैं कि इससमयमें ऐसा अधिकारी कोई नहीं दीखता और बिना अधिकार वेदान्त का श्रवणकरके वाचक ज्ञानी होजाते हैं कोई मनुष्य ऐसेही कहरहा था कि एक परमहंस वहां आगये उस मनुष्यने दण्डवत् कर पूछा कि महाराज आपका नाम क्याहै उन्हों ने कहा कि इस देहका नाम चन्द्रमणि है तब उसने कहा कि महाराज आपने ऐसा कहा कि देहका नाम चन्द्रमणि है आपने अपनाही नाम क्यों नहीं कहा परमहंस बोले कि नाम देहका होताहै चैतन्यका नहीं फिर उसने पूछा कि आप कौन हैं उत्तर दिया कि ब्रह्म महाराज आप ब्रह्महैं तो और सब क्या है परमहंसने उत्तर दिया कि जो दृश्यमानहै सो जगत् है मिथ्याहै अनहुआ भासै है और यहभी है कि सर्व ब्रह्म है ॥

आभासहै उतने चैतन्य को कूटस्थ कहते हैं और माया और माया में चैतन्यका आभास और चैतन्य ईश्वर है अविद्या और अविद्या में चैतन्य का आभास और कूटस्थ जीव है जो कूटस्थका आभास बुद्धिमें कहा जाय तो परागकी जो सुषुप्ति का जीव है हानि होगी क्योंकि सुषुप्ति में बुद्धिका अभाव है ब्रह्म अकर्ता है ईश्वर कर्ता है सब सामर्थ्यवान्है माया उसकी आज्ञा-कारिणी है और जीवभोक्ता है अविद्या के वश जीवके स्वरूपमें जो आभास अंश है वह पाप पुण्य करै है और उसके फलोंको भोगै है और ईश्वर में जो आभास अंश है वह फल देता है और दोनों में चैतन्य अंश है वह एकही है ईश्वर नित्यमुक्त है क्योंकि शुद्ध सतोगुण में आभास है चैतन्य और माया ईश्वर का स्वरूप है रजोगुण तमोगुण प्रधान सतोगुण में आभास जीव है सो प्रच्छिन्नहै ईश्वर व्यापक है व्यापक उसे कहते हैं कि जो सारेहोय और किसी स्थान से उसका अन्त नहो कालदिशा आदिभी व्यापक कहलाते हैं पर इन सबका अन्त है वास्तव में एक चैतन्यही व्यापकहै सो उसकी पूजन यह है ॥

दो० सर्व ठौर में देखना, आतमअचलअभङ्ग।
यह पूजा उसदेवकी, कहियेअटलअभङ्ग॥
जो पूजा आकारकी, ताको फल परिछिन्न।
वृन्दावनअसबोधबिन, पूरण रहगयो भिन्न॥
चेतन सबमें एक है, यहनिश्चय तू जान।
जो दृष्टी है भेद की, देह भाव से मान॥

अग्निमाहिं जैसे नहीं, शीतलता का लेश।
वृन्दावन तस ब्रह्म में, नाहीं द्वैत कलेश॥

अब देखो मैंने अपने को ब्रह्म बताया है जीव, ईश्वर, देह नहीं कहा है दुःख, सुख, खाना, पीना, मारना, पीटना, नाम जाति यह सब देहका धर्म है से उन्हों के व्यवहार मायाकृत पृथक् २ हैं माया के व्यवहार मेटने से ज्ञानी नहीं होता माया की असत्यत दृढ़ करने से ज्ञानी होता है ऐसेही श्वपचके साथ खाने में या उपला खाने में ज्ञान नहीं है जो इस देहके लिये भोजन नियत है और जिसके साथ व्यवहार सनातन से चलाआताहै वही यह देह अंगीकार करैहै और जो श्वपचके साथ खानेहीमें मोक्षहै तो एक श्वपचके साथ क्या उसके भाईबन्धु नहीं खाते उनकोही ज्ञानी समझो और क्या उपला किसी जीवका खाना नहीं है दीमक उपले को खाजाती है तो दीमकहीको ज्ञानी समझो और जो गाली मार खाकर चुप हो रहने सेही ज्ञानी होता है तो बैल दिन भर गाली और मार खाते हैं और कुछ बोलते हैं न मारते हैं तो उनकोही ज्ञानी समझो और जो तुमने कहा कि जब सर्व ब्रह्म है तो फिर भेद करना क्या भाई जब सर्व ब्रह्म कहा तो श्वपचके साथ न खाना या उपला न खाना कुछ और हुआ मेरा श्वपचके साथ न खानाभी तो ब्रह्मही है क्योंकि मैंने सब को ब्रह्म कहा है एक दृष्टान्त भी सुनलो एक ज्ञानी थे वह अपने चेलेको वेदान्त पढ़ायाकरते थे उसमें जीव ब्रह्मकी [illegible] ने कहा कि महाराज मैं भी

ब्रह्महूं गुरुने कहा हां चैतन्यमात्र में कुछ भेद नहीं फिर कुछ देर के पीछे गुरुने पानी माँगा तो चेलेने उत्तरदिया कि मैं तो ब्रह्महूं पानी कैसे लाऊँ जब गुरुने कहा कि बता मैं कौनहूं और पानी लाना और पानी पीना और गुरु चेला होना किसका धर्म है अब चेला चुपहुआ अब शक्ति सामर्थ्यकी बात सुनो कि शक्ति आदि पदार्थ ईश्वरमें होते हैं सो मैंने अपने को ईश्वर नहीं कहाहै अब शक्तिसे और मुझसे क्या प्रयोजन है किन्तु हमतो यही कहतेहैं कि माया मिथ्याहै इससे उसके पार पाने का खोज करना भी वृथा है इसलिये रचना के आदि अन्त इत्यादिका विचार करनाभी निष्प्रयोजनहै और जो तैंने ज्ञानी शक्तिमान् सुनाये उसका यह भेद है तू सुन कि ज्ञानी दो प्रकारके होते हैं एक युंजान दूसरा युक्त योगी और युंजानयोगी भी दो प्रकार के होते हैं कोई अधिक प्रारब्ध रखतेहैं और कोई न्यून प्रारब्ध रखते हैं-और युक्त योगी ईश्वर के अवतार होते हैं सो मैंने अपने को ईश्वरका अवतार नहीं कहा इस निमित्त व्यास आदिक से और मुझसे कुछ सम्बन्ध नहीं रहा और जनक आदिक से और मुझसे प्रारब्ध का भेद है उनकी प्रारब्ध बड़ी थी और ऐश्वर्य्यवान् थे मेरी प्रारब्ध छोटी है इससे इतना ऐश्वर्य्य नहीं परन्तु ज्ञान में मुझमें और जनकादिक में कुछ भेद नहीं जो तुम पूछो कि जनक आदिक की ऐसी प्रारब्ध क्यों हुई इसका वृत्तान्त सुनो किसी की उपासना केवल निष्काम हुई और किसी की सकाम निष्काम दोनों

हुई केवल निष्काम से ज्ञान प्राप्त हुआ औ सकाम से ऐश्वर्य्य दिया और कुछ शक्ति भी दी और सुनो कि ज्ञानी के जगत् का अभाव है ऐश्वर्य्य को मिथ्या समझता है फिर ऐश्वर्य्य बड़ा हुआ या छोटा हुआ तो क्या किन्तु थोड़े ऐश्वर्य्य में जीवन्मुक्ति का फल अधिक है उपाधि कम होती है और तुम कहते हो कि वैराग्य जैसा कहा है वैसा किसी में नहीं दीखता हम तुमसे पूछते हैं कि हमने तुमसे कौनसी धन सम्पत्ति मांगी है जिससे तुमने जाना कि वैराग्य नहीं है और तुमने यह कैसे निश्चय किया कि हम को धन सम्पत्ति और सुखों की इच्छा है और यह तुमने कैसे जाना कि जो हमको सुख मिले तो हम ग्रहण करलेंगे और उन सुखों को सत्य समझेंगे और तुम जनक आदिक को ज्ञानी कहचुके हो वह राजा थे और गृहस्थ थे अब उनको सुख में भूलाहुआ कहोगे या क्या भाई यह जगत् का सुख दुःख प्रारब्धाधीन है ज्ञानी को कुछ हानि नहीं करता जैसे सर्प के दांत तोड़ डालने से काट नहीं सक्ता और इसको ध्यान से समझो कि वैराग्य दो प्रकार का होता है एक दोषदृष्टि दूसरा मिथ्यादृष्टि दोषदृष्टि यह है कि जब दुःख आन पड़ा उसको न सम्हाल के घर छोड़के वैरागी होगये जब प्रारब्धाधीन फिर सुख मिला बस फँसगये क्योंकि सुखके न मिलनेही के कारण से वैराग्य हुआ था और जिसको मिथ्यादृष्टि से अर्थात् जगत् को मिथ्या समझकर वैराग्य हुआ है उसका वैराग्य कभी नहीं जा

सक्का क्योंकि वह कभी किसी पदार्थको और इस जगत् को सत्य नहीं जानैगा इसका वैराग्य सत्य है और जो तुम कहो कि षट् सम्पत्ति सहित कोई नहीं दीखता तो हम पूंछते हैं कि मुमुक्षु कौनसे सुखको भोगते हैं रूखा सूखा खाने को मिलता है और पृथ्वी सोनेको मिलती है भूखे प्यासे भी पड़े रहते हैं और जो तुम कहो कि धूप छांह एकसी नहीं गिनते और जो तुम ऐसाही समझते हो कि धूप खानाही मोक्षदाता है तो उन कुली मज़दूरों को ही ज्ञानी समझो जो सब दिन धूपही में रहते हैं और कुछ धूपका खेद नहीं मानते भाई इस का यह अभिप्राय है कि एक तो धूप और छांह दोनों को मिथ्या निश्चय करै दूसरे यह कि कदाचित् धूप में जाना पड़े तो रुक न रहै चला जाय अब देखो दो मनुष्य गरमीकी ऋतु में खसकी टट्टियों में बैठे थे किसी ने कहा कि एक बड़े ज्ञानी महात्मा फलाने स्थान पर आये हैं एकने कहा कि हमसे तो अब धूप में जाया नहीं जाता दूसरे ने कहा कि दर्शन तो अवश्य करना चाहिये वह चल दिया कहिये उसने धूपको छाया के समान समझा या नहीं जो समान न समझता तो दूसरे के सदृश वह भी बैठाही रहता इससे छांह और धूपको एकसा समझना इसीको कहते हैं और जो तुमने अपना वृत्तान्त कहा सो सत्य है तुमको उचित है कि अपने को दास समझो सुकर्म्म करो और कथा सुनो और ध्यानकरो यही तो ज्ञान पानेका मार्ग है जो ऐसा किये जाओगे तो एक दिन तुमभी ज्ञानी हो जाओगे

और तुम देखो कि जब तक रोटी नहीं खाई है तबतक चौके का बड़ा अधिकार है कोई छूने नहीं पाता और जहां रोटी खाचुके तो उसका कुछ ध्यान नहीं कोई छुवै कोई उसमें जाय कुछ बात नहीं ऐसेही जबतक ज्ञान नहीं हुआ है तबतक अवश्य ऐसीही रीति चाहिये ज्ञानहुआ पीछे कुछ बन्धन नहीं है भगवान्ने आप भागवत में कहा है॥

श्लोक—यावत्सर्वेषु भूतेषु मद्भावो नोपजायते।
तावदेतौ उपासेत वाङ्मनोकायवृत्तिभिः॥१॥

जबतक सर्वभूतों में मद्भाव न होवे तबतक मन वचन, काया करके उपासना करता रहे भाई हम तुम को मिथ्या नहीं बतलाते तुम हमको चाहै सो कहो सो तुम्हारा अपराध नहीं है क्योंकि जितनी तुम्हारी बुद्धि है उतनी तुम भी कहते हो एक कहावत है कि किसी भूखे ने एक हीरा पड़ा हुआ पाया उसने कहा कि वाह चमक तो बहुत अच्छी है परन्तु किस अर्थ का जो इससमय अन्नका कण मिलता तो बड़ेप्रयोजन का होता हीरेको फेंककर चलागया महाराज आप के चित्तमें आवै सो कह लीजिये अब आप यह कहिये कि वाचक ज्ञानीभी होतेहैं या नहीं परमहंसने कहा कि कर्मकाण्डी आदिमें पाखण्डीभी होतेहैं या नहीं मनुष्यों में पशुभी होतेहैं या नहीं पक्के खिलाड़ियों में कच्चे खिलाड़ी भी होतेहैं या नहीं और फुलवाड़ीमें घास फूस कांटेभी होतेहैं या नहीं महाराज यह तो सत्यहै परन्तु आप यह कहिये कि वाचकज्ञानी और लक्ष्यज्ञानी कैसे

पहचानें कथन तो दोनोंकी एकहीसी सुननेमें आतीहै किन्तु वाचकज्ञानी लक्ष्यज्ञानीसे कुछ अधिकही कहाता है अब सुनो जो मनुष्य पहिले कर्मउपासना करचुका है और चार साधन साधचुकाहै और वेदान्तका श्रवण, मनन, निदिध्यासनकरके तत्पद त्वंपदका शोधन किया है और ब्रह्माकार वृत्तिहै वह लक्ष्यज्ञानीहै और जिसने कर्मउपासनातौ कीनहीं और साधन सम्पन्नभी न हुआ और ज्ञानके वचन कहनेलगा वह वाचकज्ञानीहै और देखो जिसने कर्म्मउपासना की है उससे उस समयमें जब कर्म्मउपासना कर रहाथा तब कुकर्म जातेरहे थे और साधनअवस्थामें मन और इन्द्रियोंको वशकिया था और यह बात प्रकट है कि जिसबातका अभ्यास छूट जाताहै फिर वह बात उससे नहीं होती और न अच्छी लगतीहै जो लक्ष्यज्ञानी है उसकी प्रवृत्ति कुकर्म में नहीं होगी और जो कोई प्रारब्धाधीन उससे कुकर्म बनजाय तो उसका कुछ शोक न होगा और उससे दण्ड का भय नहीं क्योंकि अच्छे कर्मसेभी तो ज्ञानी आनन्द नहीं मानता और न उसके फलकी इच्छा रखता है इससे ज्ञानी शुभाशुभ कर्म दोनोंसे पृथक् है और वाचकज्ञानी की रुचि कुकर्म में होगी और उससे कुकर्म्म बनते होंगे उसको उचितहै कि कुछकाल साधु गुरुकी सेवा तन मन धनसे करे तब वेदान्त का श्रवण करे नहीं तो विना अधिकार जो वेदान्त का श्रवण करेगा वह निस्सन्देह नष्ट होगा क्योंकि मोहनभोग खानेको मुखचाहिये पहिले शुद्धचित्तके साथ गुरुकी सेवा करना

योग्य है तब वेदान्तके श्रवण करनेका अधिकारीहोगा नहीं तो (दोनों दीनसे गये पांड़े हलुआ रहे न मांड़े)॥

दो०ज्ञानी रहै पहाड़सम, खटपट व्यापै नाहिं।
वृन्दावन वह शान्त करि, रहप्रसन्न घटमाहिं॥

और जिसकी रुचि कुकर्ममें नहीं है और कुकर्मभी नहीं करता और ज्ञानके वचन कहताहै पर छलज्ञान नहीं है तो उसमें मनन और निदिध्यासनकी कसरहै वह मनन और निदिध्यासनकरे और जो यह कहतेहैं कि जो ज्ञानी कहतेहैं हमने उनको कभी कर्मउपासना करते नहीं देखा उनको कैसे मानें कि पूरा ज्ञान हुआ सो तुम देखो कि कर्मउपासना ज्ञान एकही जन्ममें तो नहीं होता कर्मउपासना और जन्ममें करचुका होगा गीता में भगवान्ने कहाहै कि (अनेकजन्मसंसिद्ध-स्ततोयाति पराङ्गतिम्) जो कर्मउपासना करचुकाहै उसकी यह पहिचानहै कि लड़कपनसे परमार्थकी ओर रुचिहोगी कुकर्म से भय रखता होगा साधु गुरुकी सेवा में प्रीति होगी और मनमें दुःख सुखकी संहारगति होगी भजन, गीत, मङ्गल सुननेका उत्साह होगा चित्त उदारहोगा और जिसने कर्म्म उपासना नहींकी उसकी प्रकृति इसके विपरीत होगी महाराज आपने कईस्थानों पर कहा है कि जगत् मिथ्याहै अनहुआ भासे है यह बात अत्यन्त बुद्धि में नहीं आई जगत् प्रत्यक्षमें सत्य दीखता है इसमें भांति भांति की रचनाहै इसी जगत्में अवतारहुये और बड़े बड़े राजा महाराजा महात्माभी हुये जब दुःखहोताहै तब दुःख ज्ञात होताहै और जब

सुख होताहै तब सुखका भान होताहै लड़की, लड़के, इष्ट, मित्र, घरबार, धन, धाम ये सब सत्य विदित होतेहैं, प्रधान न्याय करतेहैं, गुरु ज्ञान उपदेश करते हैं, आप चर्चा करतेहैं, मैं सुनताहूँ, आप ऐसे जगत् को अनहुआ कैसे कहतेहैं और जो जगत् नहीं है तो आप फिर क्या समझातेहो जब बन्धनही नहीं है तो मुक्ति क्याहोगी ॥

और महाराज पहिले ऋषीश्वरोंने हज़ारों वर्ष ध्यान पूजा और तपस्याकीहै और अबभीलोग करते हैं भला यह होसक्ताहै कि यह सुकर्म निष्प्रयोजन है और ब्रह्मका पाना केवल दो चार बातोंही के समझने से आजाताहै सुनो तुमने जो कहा सो सब सत्यहै परन्तु देखो स्वप्नमें स्वप्नकी सब रचना सत्यदीखतीहै या नहीं एकदृष्टान्तहै कि किसी मनुष्यने स्वप्नदेखा कि मैं बड़ा साहूकार हूं मेरे बेटे पोते हैं और बड़ी धूमधामसे विवाह आदि कार्य्य कियेहैं और सम्पूर्ण बिरादरी में बड़ा कहलाता हूं हाकिमोंमें मेरी बड़ी पहुँचहै और पूजा सेवा भी मेरे यहां बहुत होतीहै गीता सहस्रनाम का पाठकरताहूं और ध्यानकरताहूं कथा वार्ता होतीरहती है बड़े २ विद्वान् साधु पण्डितोंकी सभा इकट्ठी होतीहैं इष्टमित्रों के साथ व्यवहारहोता रहताहै फिर क्या देखा कि मैं एक बार अत्यन्त रोगी होगया हूं हकीम, वैद्य दवा करतेहैं होम, जप होरहा है तीन महीने पीछे आरोग्य होगया फिर एक लड़का बीमार होगया हज़ारों उपाय किये परन्तु कोई गुणकारी न हुआ लड़का मर

गया अब हाय हाय कर रोताहै भाईबन्धु साधु परिडत समझारहेहैं सो कभी कभी थोड़ी थोड़ी शान्ति आ-जातीहै फिर रोय उठताहूं इसमें किसी विद्वान्‌ने आकर कहा कि अब हाय हाय क्यों करतेहो यह जगत् मिथ्या है और स्वप्नके समानहै पहले तो साहूकार यहबोला कि महाराज आपकी दृष्टिमें स्वप्न तुल्यहै और मिथ्या है जो आपके लड़का होता और मर जाता तो आपको प्रकट होता कि जगत् कैसे मिथ्या और स्वप्नके तुल्य है फिर विद्वान्‌ने कहा कि भाई यह सब स्वप्नही है तू जाग उठ तेरा दुःख अत्यन्त जातारहेगा महाराज कैसे जागें आपही कृपा करके जगाइये विद्वान्‌ने आवाज़से कहा कि जाग उठ तू सोताहै और तू अमुकहै उठ खड़ाहो साहूकार जागउठा अब देखताहै कि न वह घरहै और न वह माल है न साहूकारी है न वह ज्ञानी जगानेवाला है जैसा था वैसाही रहगया अब परमहंस ने कहा कि देखो स्वप्नकी बातें सब सत्यथीं या नहीं जो सच्ची न होतीं तो क्यों जाग्रत् जगत्‌कीसी दीखीं और क्यों उसने दुःख, सुख, पूजा, घर, धन, हकीम, प-ण्डित, विद्वान्, वैद्यको सचमाना और जब जागो तब कुछ नहीं आपही आप अकेलाहै॥

महाराज स्वप्न तो और बातहै और यह जगत् और बातहै स्वप्नमें तो इस जगत्‌की देखी सुनी वस्तुओंका ध्यान आजाताहै परमहंसने कहा कि यह बात मिथ्या है जिस बातका ध्यानहोताहै उसकाभोग प्रत्यक्षमें नहीं होता वह वस्तु अपने स्थानपर रहतीहै यह अपने

स्थानपर रहताहै केवल ध्यान कियाकरै परन्तु स्वप्नमें तो यह बात नहीं होती क्योंकि वहां वस्तुको भोगताहै इस जगत् के सदृश सब दृश्यपदार्थ सत्य मालूम होते हैं स्पर्श में आते हैं जो केवल ध्यान होता तो यह नहीं होसक्ता देखो तुम्हें एक घोड़ेका ध्यान आया तो ध्यान के समय वह घोड़ा तुम्हारे सम्मुख नहीं आ जाता और न तुम उस घोड़ेपर सवार होकर बाज़ार जासक्के हो परन्तु स्वप्न में तो तुम घोड़ेपर चढ़ते हो उसे दाना घास खिलाते हो इसलिये स्वप्न में जगत् की देखी सुनी वस्तु का ध्यान नहीं होसक्ता परन्तु वस्तु नई रची जाती है और जो तुमने तपस्या पूजाका वृत्तान्त कहा सो भाई यह बात है कि तपस्वी स्वर्गेश्वरी और राजेश्वरी सो नरकेश्वरी और जो तुमने ऋषीश्वरों का वृत्तान्त कहा सो यह बात है सुनो पहिले अवधि हज़ारों वर्ष की होती थी कहो ऋषीश्वर सिवाय इस काम के और क्या करते जो तुम कहो कि दश बीस हज़ार वर्षकी तपस्या और कष्ट भोगे विना मुक्ति न होगी तो अब सन्तोष करके घर बैठो न इतनी अवस्था होगी और न तुम तपस्या पूजा कर सकोगे और न तुम्हारी मुक्ति होगी यह वही बातहै कि किसी को रस्सी में सर्प का भ्रम हुआ वह पहाड़ को दौड़ा गया कि वहां से शिला लाकर इसे मारूंगा खैर महाराज यह तो देखा जायगा आपका प्रयोजन तो यही है कि जगत् और स्वप्नसृष्टि दोनों बराबर हैं अर्थात् दोनों मिथ्या हैं स्वप्न में स्वप्नसृष्टि भी तो सत्य

दीखती है इसीप्रकार यह जगत् अज्ञान में सत्य दीखता है जब पुरुष स्वप्न से जागता है तो स्वप्नसृष्टि मिथ्या मालूम होती है किन्तु असम्भव होताहै क्योंकि उसको कुछ चिह्नमात्र भी उसका नहीं मिलता ऐसेही जिसको ज्ञान हुआ उसको असत्य दीखता है परन्तु इस में एक बड़ा सन्देह है कि स्वप्न से जागेहुये पुरुष को तो फिर स्वप्नसृष्टिका मूलसहित अभाव होजाता है परन्तु जिनको आप ज्ञानी कहते हो उनको तो अत्यन्त इस सृष्टि का अभाव नहीं होता जो अत्यन्त अभाव होजाता तो उनको अपनी देह और यह जगत् कुछ नहीं दीखता परमहंसने कहा कि दृष्टान्त का अर्थ तुम ठीक समझे और जो तुमने सन्देह कियाहै उसका यह उत्तरहै कि प्रारब्ध का तीर जो चल चुका है वह अपने वेग को पूरा करके ठहरैगा॥

ज्ञानहुआ और ज्ञान के होतेही तुम्हारे कहने के अनुसार जगत्का आभास न रहना था परन्तु प्रारब्ध के कारण शरीर को ठहरना है और दुःख सुख भोगना है और यह बात जगत् के भासित हुये बिना नहीं होसक्ती इस निमित्त ज्ञानी को जगत् भासता रहता है जगत् की सत्यता का तो अभाव होगया और जगत् के भासका अभाव शरीरपात हुये पीछे होजायगा उस को विदेहमुक्त कहते हैं क्योंकि ज्ञानी को शरीर रखना नहीं है एक और भी दृष्टान्त है जैसे कुम्हार दण्ड से चक्कर फिराता है और जब दण्ड चक्कर से अलग कर लेताहै तब भी कुछ देरतक चक्कर फिरा करता है इसी

प्रकार ज्ञानी को ज्ञान हुये पीछे भी जगत् भासा करता है परन्तु कर्मों का दण्ड दूर होगया जिसके कारण स्वर्ग नरक चौरासी लाख योनि भोगनी पड़ती हैं और देखो अँधेरे में कहीं रस्सी में सर्प का भ्रम हुआ तो मारे भय के गिरपड़ा और चोट लग गई जब दीपक से देखा तो रस्सी निकली अब सर्प तो जातारहा रस्सी का निश्चय हुआ परन्तु चोट न जायगी कुछदिन भोगनी पड़ैगी इसी प्रकार ज्ञानी को ज्ञानहुये पीछे भी प्रारब्ध के वश जगत् भासता रहता है सो उसे ज्ञानी ब्रह्म के भिन्न नहीं समझता॥

दो० खाना सोना बोलना, ज्ञानी के सम जान।
सबको जानै ब्रह्ममय, दूजा भाव न मान॥

और ऐसा भी देखा सुना है कि ज्ञानी को जगत् का अभाव भी होजाता है परन्तु ऐसे ज्ञानी की देह वर्ष छः महीने से अधिक नहीं ठहरती और देखो कि सब ज्ञानी एकही वर्ण के नहीं होते प्रारब्धाधीन सब में भेद होता है देखो एक पुरुष तो स्वप्न में से जाग उठा है और उसको स्वप्न की बातों का कुछ भी स्मरण नहीं रहा और दूसरा स्वप्न से जागा है और उसको स्वप्न की बातों का स्मरण तो है परन्तु कुछ दुःखसुख नहीं मानता तीसरा स्वप्न से जागा है उसके नेत्र के आगे स्वप्न की बातें फिर रही हैं दुःखी सुखी भी होता है और पश्चात्ताप भी करता है कि रात की बातें सत्य क्यों न भईं परन्तु कुछ कहता नहीं चौथा स्वप्नसे जागा है सो अब अपने मनमें स्वप्न की बातों का फल सत्य

समझता है कि जो मैंने स्वप्न में राज्य किया है तो मैं अब राजा हूंगा जो स्वप्न में कंगाल हुआ तो अब कंगाल हूंगा और लोगों से स्वप्न का फल पूछता फिरता है परन्तु स्वप्न की राज्य और रंकता को मिथ्याही समझता है और पांचवां स्वप्न से जागा है और शोच विचार करते २ फिर सोगया जब फिर स्वप्न देखता है तब कोई बुरा स्वप्न होगया तो डरकर जागपड़ा अब मन में शोच विचार करता है परन्तु सोता नहीं और छठा पुरुष स्वप्नही की दशा में जागा है उसको अपनी प्रथम दशा स्मरण होआई है तो कहता है कि मैं अमुक हूं और अमुक स्थान में सोरहा हूं यह जो कुछ दीखता है सब स्वप्ना है और मिथ्या है चलो जागउठो क्यों इसमें शिर मारते हो जाग उठा सातवें की भी यही दशा है परन्तु कहता है कि ज़रा सैर करलूं कुछ तुम्हारी हानि तो है नहीं तुम तो जागे पीछे वही होगे जो हो वह सैर देखता है परन्तु जो कि उसको अपनी दशा का स्मरण आगया इस कारण सुखी दुःखी नहीं होता जो स्वप्न में रोता भी है तौ भी यही जानता है कि मिथ्या है और मिथ्याही रोरहा हूं मैंतौ अमुक मनुष्य हूं और जो हँसताहै तोभी यही कहता है और जब कुछ देरतक सैर देखलेता है तब कहता है कि उठो कुछ अपना कामही करैंगे या आनन्द से फिर सोरहैंगे इसमें क्या लाभ है जाग उठा अब देखिये कि सातों पुरुष जागे परन्तु अवस्थामें भेदरहा इसीप्रकार ज्ञानियों की भी दशा समझ लो महाराज जो बातैं

आपने सुनाई वह हमने कभी नहीं सुनी थीं और सत्यही होंगी हमारे ही ओछे भाग्य होंगे जो हमको ज्ञान नहीं आता आप दया करेंगे तो क्यों न होगा, महाराज! आपने ऐसा भी कहा है कि भ्रम करके जगत् भासता है सो महाराज भ्रम क्या वस्तु है भ्रम उसको कहते हैं कि होय कुछ दीखै कुछ जैसे रस्सी में सर्प और सीप में रजत का भान और मृगतृष्णा का जल वास्तव में रस्सी है परन्तु सर्प दीखता है सीप में रजत का भ्रम हुआ रेत है परन्तु पानीसा दीखा इसीप्रकार एक ब्रह्म है उस में जगत् भ्रम आत्मक दीखता है और जब ब्रह्मका ज्ञान हुआ तब जगत् का पता भी नहीं और जबतक सत्य दीखता है तबतक ब्रह्मज्ञान नहीं है और केवल पढ़े से ज्ञान नहीं होता॥

दो० विद्या कथनी कूड़ है, जो अभ्यास न होय।
वृन्दावन अभ्यासबिन, ब्रह्मलाभ गयो खोय॥
शान्तिवृत्ति ज्यहि पुरुषकी, ताको भासे आय।
जैसे निर्म्मल जलविषे, आपनरूपदिखाय॥

महाराज भ्रम तो तब होताहै जब कि पहिले कोई सच्चा सर्प और रजत और पानी देखाहै तभी रस्सी और सीपी और रेतमें सीप रूपा और पानी भ्रमसे दीखता है आप कहते हैं कि ऐसेही यह जगत् भ्रमसे दीखता है तो सत्यजगत् कौनसाहै जिस सत्यजगत्को देखकर ब्रह्ममें इस जगत् का भ्रम होताहै परमहंस ने कहा कि देखो यद्यपि स्वप्न संस्कारजन्य होताहै अर्थात् पहिली देखी वस्तुका संस्कार अन्तःकरणमें रहे उसके

अनुसार स्वप्नदीखा परन्तु देखो यह कुछ नियम नहींहै कि सच्चेही सर्पको देखकर रस्सीमें सांपका भ्रमहो देखो भानमतीका सर्प झूंठा देखा है तिसपर भी रस्सी में सर्प का भ्रम होगा तुमने पहिले जन्ममें जो असत्य जगत् देखाहै उसी असत्य जगत् के कारण तुमको ब्रह्म में इस जगत्का भ्रम होताहै और यह हमारा सिद्धान्त है कि जगत् माया आदि छःवस्तु अनादि हैं जो महाराज यह जगत् भी भ्रमहै और मृगतृष्णाका जलभी भ्रमहै तो प्यास जैसे इस पानीसे बुझतीहै ऐसेही मृगतृष्णा के जलसे भी प्यास बुझनी चाहिये परमहंस ने कहा कि इसमें भेद है कि सृष्टि तीन प्रकार की है एक परमार्थिक दूसरी व्यवहारिक तीसरी प्रतिभासिक व्यवहारिक सृष्टि ईश्वर की रची है और प्रतिभासिक जीव की है प्यास व्यवहारिक सृष्टि में है तो व्यवहारिकही सृष्टि के जल से बुझेगी प्रतिभासिक से नहीं बुझसक्ती क्योंकि परस्पर में भेद ठहरा देखो परमार्थिक सत्ता तो ब्रह्म की है उसका तीनों काल में नाश नहीं होताहै और प्रतिभासिक सत्ताका नाश विना ब्रह्मज्ञान के होसक्ताहै और व्यवहारिक सत्ताका नाश बिना ब्रह्मज्ञान नहीं होसक्ता क्योंकि व्यवहारिक सत्ता ईश्वरीय रचनाहै और प्रतिभासिक इस जीवकी और वास्तव में प्रतिभासिक सत्ताका भी नाश ब्रह्मज्ञानके बिना नहीं होसक्ता व्यवहारिक सत्तासे प्रतिभासिकका अत्यन्त अभाव नहीं होता इतना होता है कि जैसे घट फूटगया पृथ्वी में लय हुआ परन्तु मृत्तिका

का नाश नहीं हुआ सो प्रतिभासिक का अत्यन्त अभाव भी परमार्थिक सत्ता से होता है॥

अब महाराज भ्रम का कोई स्थूल दृष्टान्त कहिये और बाज़े जो ऐसा कहते हैं कि जगत् मानने का है मानो तो जगत्है नहीं तो कुछभी नहीं है इसकाभी भेद सुनाइये परमहंसने कहा कि सुनो एक वैश्यथा उसके एक पुत्रीथी दिवाली का तिवहार आया दिवालीके एक दिन पहिले लड़की एक पात्रमें गेरू घोरकर पिताकी खटियाके पास इस निमित्त रखके सोरही कि प्रातःकाल दिवाली दिवाल पर काढूँगी और सायंकाल के समय उस वैश्यकी खटियाके पास उसकी स्त्री सदैव एक लोटा पानी भरकर रखदिया करती थी तथाच उसने वह लोटा धराहुआ देखा उसने समझा कि लड़कीने धरदियाहै यह समझकर वह सोरही प्रातःकाल होतेही वह वैश्य उस लोटेको उठाकर जंगलको लेगया जब आबदस्त लेचुका तो क्या देखताहै कि रुधिर बहरहा है और जाना कि यह रुधिर दस्तमें आया है इससे ज्ञात होताहै कि किसीने जादू कियाहै या कोई कठिन बीमारीहुई है अब शोच कर अत्यन्त घबराया सुधि बुधि जातीरही बड़ी कठिनतासे घरतक पहुँचा और आकर खाटपर पड़रहा स्त्री पूछती है कि क्या दशाहै कुछ नहीं कहता जब स्त्री ने बहुत पूछा तो झुंझलाकर कहने लगा कि हायहाय मैं तो घड़ी दो घड़ी में मरजाऊँगा मेरे सवासेर लोहू गया है उसकी स्त्री भी सुनके हैरान हुई और वैद्य हकीम के बुलाने की तय्यारी हुई इतने

में उसकी लड़की भी जागउठी और लोटा ढूँढ़नेलगी लोटा उसको मिलता नहीं वह रोनेलगी माता ने पूछा कि तू क्यों रोवै है उसने अपने लोटे का हाल कहा उसका बाप भी पड़ा सुनता था जब उसको ध्यान हुआ कि वह लोहू न था किन्तु गेरू था यकदम से उठबैठा कि मैं तो अच्छा हूं नीरोग हूं वृथा इतनी देरतक दुःख भोगा अब जगत् के मानने का दृष्टान्त सुनो एक वैश्य था वह परदेश चलागया दश बारह वर्ष व्यतीत होगये जब वह गया था तब उसके वर्ष छः महीने का लड़का था वह अब युवा होगया वह अपने पिता से मिलने चला उसी अन्तर में उसका पिता भी परदेश से घरको आता था ऐसा योग हुआ कि वह लड़का एक स्थान पर किसी सराय में दिनहीसे अच्छी कोठरी देखकर उतर रहा सायंकाल को वह वैश्य भी वहां पहुँचा जिस कोठरी में वह लड़का उतरा था वही उस बनिये को भी पसन्द आई बनिये ने उस लड़के को निकलवा दिया और कुछ अधिक देकर उस में आप रहा लड़का रातभर अत्यन्त खेद में रहा और रोता भी रहा परन्तु बनिये ने एक भी न सुनी जब प्रातःकाल हुआ तो बनिये ने लड़के को देखा और उससे पूंछा कि तू कहां से आया है उसने अपने देश का नाम बताया फिर बनिये ने जाति महल्ला बाप का नाम पूंछा लड़केने सब वृत्तान्त कहदिया बनियेने सुनते ही कहा कि तू मेरा लड़का है अब गलेसे लगालिया और जोकि रात्रि को उसको दुःख दिया था उसका

अत्यन्त पश्चात्ताप करने लगा परमहंस ने कहा कि देखो दो दृष्टान्त कहे पहिले दृष्टान्त से जिसमें गेरूका वृत्तान्त है वह भ्रम को सिद्ध करता है पिछला जगत् के मानने को देखो वही लड़का रात्रिमें था पर उसको लड़का करके नहीं माना कुछ दुःख सुख नहीं हुआ प्रातःकाल उसी को लड़का समझकर दुःखी सुखी हुआ इसीप्रकार जो जगतदृष्टि करो तो जगत् है और जो ब्रह्मदृष्टि करो तो जगत् नहीं महाराज जो जगत् न रहा तो फिर क्या रहा केवल आकाशही रहा सो आकाश शून्य है कुछ वस्तु नहीं और आपका ब्रह्मभी कुछ नहीं क्योंकि अरूप है इसलिये मेरे को विदित होता है कि आप आकाश को जो सूनसान है ब्रह्म कहते हैं परमहंस ने कहा सुनो जो कहते हो कि ब्रह्म जिसको अरूप कहा कुछ है नहीं हमने तो ब्रह्म के तीनरूप कहे हैं सत्, चित् और आनन्द तुम कैसे कहते हो कि ब्रह्म कुछ है नहीं हां स्थूलरूप तो नाश है इस लिये अरूप कहलाता है और आकाश तो जड़ है और उत्पत्ति हुआहै और ब्रह्म चैतन्य है उसकी चैतन्यता से आकाश का ज्ञान होता है और तुमने जो कहा कि जब जगत् नहीं रहा तो सूनसान रहा देखो सूनसान तो तब होवै जिस समय कुछ भी न होवै सो सूनसान के मालूम करनेवाले तो तुम आपही मौजूद हो फिर सूनसान कैसे हुआ और ज्ञान ब्रह्मका सत्य होता है इन्द्रियां और अन्तःकरण जड़ है वह आप तो कुछ जान नहीं सके इसलिये देख ब्रह्मही सबका प्रकाशक है॥

दो० जिह्वाशरवण नासिका, त्वचा नेत्र हैं जोय।
इनका साक्षी आतमा, निश्चय मानो सोय॥
फुरना होवै लीन जब, भयो जगतको नाश।
वृन्दाबन तब रहिगयो, केवल ब्रह्म प्रकाश॥
ब्रह्मबिना कुछ होत नहिं, ब्रह्म अकर्त्ता होय।
धूमकलोह सँयोग कर, रेल चलावै सोय॥
ब्रह्मजगत यह नाम सब, जबलगज्ञान न होय।
मिटो द्वैतता भाव जब, नामरूप गयो खोय॥
बुद्धि गुरू औ शास्त्र पुनि, मिलैं ये तीनों साथ।
जब कुछ दीखै ठौर की, वस्तु पड़ै तब हाथ॥
जैसे जग स्वपने बिषे, बिन सामग्री होय।
वृन्दाबन तस यह जगत, चिदाकाश है सोय॥

महाराज यह आप सब सत्य कहतेहैं परन्तु मैं देखताहूं, कि ज्ञानीके पास तो कोई एक दोई जाते होंगे किन्तु बहुतसे तो अकेलेही सूनसान बैठे दीखते हैं और ज्ञान किसीके समझ में नहीं आता इससे ज्ञानी के मिलनेसे कुछ लाभ नहीं होताहै और जो ज्ञान सीखा तो कोरा कोरासा बिदित होताहै कुछ ब्रह्म नहीं देखा जासक्ताहै शास्त्रके लिखेको बक लो और तो कुछ नहीं दीखता अब उपासक का वृत्तान्त सुनो बहुतसे मनुष्य आतेजाते रहतेहैं बहुतोंको उपदेश होताहै कथा वार्त्ता होती रहतीहै खूब प्रसाद बँटते हैं भजन धूम से होताहै ठाकुरोंका शृंगार होताहै दर्शन करके चित्त बहुत प्रसन्न होताहै और बड़े बड़े उत्सव होते रहते हैं भगवान् का नाम जपते हैं ध्यान करके ईश्वर का गुणानुवाद करते

हैं जिस समय प्रेम आताहै उससमय गद्गद होजाते हैं तात्पर्य यह कि जो ये सब असत्य होते तो आनन्द क्यों देते कहीं झूठीवस्तु से भी आनन्द होताहै और महाराज वेदान्त का बचन सुनके तो अभिमानही होजाताहै और पुरुष निर्भय होजाताहै साधु,गुरुसे भाव नहीं रहता महाअनर्थ बुद्धिमें घुसजाता है जब यहाँ हीं यह दशाहै तो आगे क्या होनाहै और आप मुझसे कहिये कि कौन कौनसी पोथी वेदान्तके मतकी ज्ञानकी दाता है और कोई एक दो ज्ञानी भी हैं उनका नाम बताओ भला गुरु नानकशाहकी बाणी कैसी है॥

परमहंसने कहा कि भाई तुमको ज्ञान सीखने को किसने कहा हम तो तुमको पहलेही कहचुके हैं कि तुम उपासना करो किन्तु दृढ़ होके उपासना करो तन, मन, धन से भी इन सुकर्मों को उत्तम जानो कथा वार्त्ता सुनो तीर्थमें डुबकियाँलो दान करो ब्रतके दिन माल न खाओ ठाकुरपूजा करो शृंगार करो छापा, तिलक लगाके नाचो कूदो गाओ झाँझ मृदङ्ग बजाओ हथेलियाँ पटको तुम नाहक झुंझलातेहो अच्छा महाराज जो तुम यह बातें अच्छी कहतेहौ तौ फिर तुम क्यों नहीं करतेहौ और ज्ञान ज्ञान पुकारतेहौ भाई तुम अपनी फ़िक्रकरो हम अपनी फ़िक्र करलेगें देखो नमकीन, चिरपिरा, खट्टा अच्छा होताहै। पर किसीको स्वाद लगता है, किसीको नहीं लगता। मिठाई अच्छी तौ है; पर किसीको अच्छी लगतीहै, किसीको नहीं। किसीको भीड़भाड़ उपाधि पसन्द है, किसीको एकान्त शान्तवृत्ति भाती है। और

तुमने जो कहा कि ज्ञानी के पास एक दोही जाता होगा और बहुतसे भेद दिखाये और उपासना की महिमा की सो सुनो जिस प्रकार भीड़भाड़ तहसीलदारी में रहती है उतना तो महक्मे डिपुटी कमिश्नरी में नहीं और जितनी ज़रूरत डिपुटी कमिश्नरी में है उतनी कमिश्नर के यहां नहीं साहब कमिश्नर के यहां कोई अपीलवाला या राजा बाबू जाताहोगा अब तुम से पूंछै हैं कि बड़ा सबमें कौन और अधिक सुख किस को और उससें चीफ़कमिश्नरी का अधिकारी कौन और भाई तुम भी सच्चेहौ जो नहान आया तो हज़ारों धोतियां लेले उठ दौड़े और कथा में दशबीस मुश्किल से दीखे हैं और ज्ञानी के पास दो चार भी नहीं दीखते अब देखो जो तीर्थपर सैर तमाशा है सो कथा में नहीं इसलिये तुम्हारे कहने के अनुसार तीर्थ बड़ा और भागवत गीता शास्त्र छोटे हुये और जो तूने कहा कि ज्ञानी के मिलने से क्या लाभ? सो भी समझलो। ज्ञानी के एकबार का दर्शन जो शुभ इच्छा सहित हो तो तीन सौ साठ तीर्थ नहाने और दश बर्ष कथा सुनने के फल से अधिक है और ज्ञानी के साथ सत्सङ्ग की महिमा का क्या फल कहाजाय देखो एक आदमी के पास धनकी थैली है अपनी समझता है उससे फल खाने की इच्छा रखता है जो किसी को देता है तो ब्याज के लालच देता है जो कदाचित् मुफ़्त भी देवे तो हज़ारों अहसान करता है और आप शोच विचार करता है और एक मनुष्य नशे में है और थैली उसके भी पास

है उसको थैली की कुछ ख़बर भी नहीं और न उससे उसको सुख भोगने की इच्छा है अब जो कोई चाहे उसके पास से थैली लेले देखिये अब इन दोनों में किसके मिलने से लाभ है जो उपासक हैं उनको अपनी उपासना का अभिमान है उसका फल भोगा चाहते हैं वह दूसरे को क्या देंगे पहिले अपना तो पेट भरलें और ज्ञानी से जो सुकर्म्म होते हैं उसको अपनी कर्तब्यता का अभिमान नहीं न वह फल भोगा चाहता है और ईश्वर के यहां से सबको कर्मोंका फल दिया जाता है अब ज्ञानी लेता नहीं वह धन अस्वामी हुआ सो ज्ञानी के दर्शन और सेवा करनेवालों को मिलता है और जो ज्ञानी के कुकर्म्म हैं उसका फल निन्दक को मिलता है और जिसने शुभ इच्छा कर ज्ञानी के दर्शन किये हैं उसीसमय गठरी मिली इस को बिना परिश्रम का मोहनभोग कहते हैं जिसके बड़े भाग उदय हों उसको ज्ञानी के दर्शन होते हैं कहो ज्ञानी कैसे परउपकारी हैं कि दर्शनही से इतना प्राप्त होता है और जगत् में भी देखलो कि राजा की तो क्षणभर की मुलाक़ात सबकुछ देदेती है और कङ्गाल की दशबर्ष की नौकरी में इतना हाथ नहीं आता एक दृष्टान्त सुनो कि कोई मनुष्य किसी दूसरे के पास कुछ धन सौंप कर परदेश को गया जब वह परदेश से आया तब उसने अपनी धरोहर चाही रखनेवाला मुकर गया अब वह हैरान है सब से फ़रियाद करता है कुछ नहीं होता होते होते राजा तक ख़बर पहुँची

राजा ने उस मनुष्य से कहा कि कल मेरी सवारी निकलेगी सो तू उस मनुष्य की दूकान पर जिसको धरोहर सौंपी है बैठा रहियो जब मैं दूकान के पास पहुँचूं तब तू मेरी ओर को आइयो मैं तेरी ओर अपना कान करदूंगा तू कुछ एक दो बात चुपके से कहि दीजियो इसी प्रकार दूसरे दिन ऐसाही हुआ अब यह दशा दूकानदार ने देखी तब घबराया अब कहताहै कि हांजी हांजी तुम्हारी धरोहर सब मौजूद है मैं तो तुम्हारी परीक्षा करताथा कि देखूं तुम क्या करते हो उसी समय धरोहर सौंप दी अब राजाके क्षणभर मिलने का लाभ देखिये और दश पांच दिन पहिले जो उसने और मनुष्यों से फ़रियाद कीहै उसका लाभ देखिये और तुम ने जो कहा कि ज्ञानीका तो ज्ञान कोरा है और न कुछ आनन्द है न ब्रह्म दीखता है देखो हीरेकी परख जौहरी को होती है और अनाजकी परख वैश्यको जौहरी को सुख हीरेकी अधिकतामें है और बनियेको सुख नाज की अधिकतामें है और जो तुम कहो कि ब्रह्म नहीं दीखता सो गोसाईं तुलसीदासजी पहिलेही कहिगयेहैं ॥

दो०है नेरे सूझै नहीं, लानत ऐसी ज़िन्द ।
तुलसी यह संसारको, भयो मोतियाबिन्द ॥
तन सुखाय पिञ्जरकरै, धरै रैनि दिन ध्यान ।
तुलसी मिटै न बासना, बिना बिचारे ज्ञान ॥
दरदिवार दर्पण भयो, जितदेखों तित तोहिं ।
कँकड़ी पथरी ठीकरी, भई आरसी मोहिं ॥
एक समाना सकल में, सकल समाना ताहि ।

कबीर समाना बूझमें, तहां दूसरा नाहि ॥
आपहि किया कराइया, आपहि करने योग ।
नानकआपहिरमिरहा, दूसर हुआ न होग ॥

और एक दृष्टान्तहै कि कोई फ़क़ीर मार्गमें पड़ाथा एक मस्त हाथी चला आता था हाथीवान् ने कहा कि फ़क़ीर हटजा फ़क़ीर ने कहा मुझमें और हाथीमें एक राम है मुझसे हाथी कुछ न कहैगा तब हाथीवान् ने कहा कि क्या मेरेमें राम नहीं है कि जो तुमको हटने को कहताहै फ़क़ीर उत्तर न देसका और भाई जो तुम ने कहा कि वेदान्तके बचन सुनकर निडर होजाता है और अभिमानी होजाताहै सो कहना तुम्हारा ठीक है इसका निर्णय बाचक ज्ञानीके संवादमें होचुका है और देखो कि लड़के तो परछाहींसे डराया करते हैं और वह डरा करताहै इसलिये कि वह छाया को देव भूत समझताहै अब कहो कि जब वह लड़का बड़ा होजाय तो परछाहींसे डरना चाहिये या निडर होना चाहिये ॥

दो०सर्व सुख वैरागमें, तेज तपस्या माहिं ।
भक्तीमें प्रभुता बड़ी, मुक्ति ज्ञान बिन नाहिं ॥

कुण्डलिया ॥

ज्ञान समाधि जाकेलगी सो क्या लावै ध्यान ।
सो क्या लावै ध्यान ध्यान दुनियां कहलावै ॥
आपै भये बादशाह फिर कौन के मुजरे जावै ।
लिया निशाना मार तुपक अब कौन चलावै ॥
मनका संकल्प भजन रूप अपना दरशावै ।
जो था सो था एकपल टुको न होय हैरान ॥

राजा ने उस मनुष्य से कहा कि कल मेरी सवारी निकलेगी सो तू उस मनुष्य की दूकान पर जिसको धरोहर सौंपी है बैठा रहियो जब मैं दूकान के पास पहुँचूं तब तू मेरी ओर को आइयो मैं तेरी ओर अपना कान करदूंगा तू कुछ एक दो बात चुपके से कहि दीजियो इसी प्रकार दूसरे दिन ऐसाही हुआ अब यह दशा दूकानदार ने देखी तब घबराया अब कहताहै कि हांजी हांजी तुम्हारी धरोहर सब मौजूद है मैं तो तुम्हारी परीक्षा करताथा कि देखूं तुम क्या करते हो उसी समय धरोहर सौंप दी अब राजाके क्षणभर मिलने का लाभ देखिये और दश पांच दिन पहिले जो उसने और मनुष्यों से फ़रियाद कीहै उसका लाभ देखिये और तुम ने जो कहा कि ज्ञानीका तो ज्ञान कोरा है और न कुछ आनन्द है न ब्रह्म दीखता है देखो हीरेकी परख जौहरी को होती है और अनाजकी परख वैश्यको जौहरी को सुख हीरेकी अधिकतामें है और बनियेको सुख नाज की अधिकतामें है और जो तुम कहो कि ब्रह्म नहीं दीखता सो गोसाईं तुलसीदासजी पहिलेही कहिगयेहैं ॥

दो० है नेरे सूझै नहीं, लानत ऐसी ज़िन्द ।
तुलसी यह संसारको, भयो मोतियाबिन्द ॥
तन सुखाय पिञ्जरकरै, धरै रैनि दिन ध्यान ।
तुलसी मिटै न वासना, बिना विचारे ज्ञान ॥
दरदिवार दर्पण भयो, जितदेखों तित तोहिं ।
कँकड़ी पथरी ठीकरी, भई आरसी मोहिं ॥
एक समाना सकल में, सकल समाना ताहि ।

कबीर समाना बूझमें, तहां दूसरा नाहि ॥
आपहि किया कराइया, आपहि करने योग ।
नानकआपहिरमिरहा, दूसर हुआ न होग ॥

और एक दृष्टान्तहै कि कोई फ़क़ीर मार्गमें पड़ाथा एक मस्त हाथी चला आता था हाथीवान् ने कहा कि फ़क़ीर हटजा फ़क़ीर ने कहा मुझमें और हाथीमें एक राम है मुझसे हाथी कुछ न कहैगा तब हाथीवान् ने कहा कि क्या मेरेमें राम नहीं है कि जो तुमको हटने को कहताहै फ़क़ीर उत्तर न देसका और भाई जो तुम ने कहा कि वेदान्तके बचन सुनकर निडर होजाता है और अभिमानी होजाताहै सो कहना तुम्हारा ठीक है इसका निर्णय बाचक ज्ञानीके संवादमें होचुका है और देखो कि लड़के तो परछाहींसे डराया करते हैं और वह डरा करताहै इसलिये कि वह छाया को देव भूत समझताहै अब कहो कि जब वह लड़का बड़ा होजाय तो परछाहींसे डरना चाहिये या निडर होना चाहिये ॥

दो०सर्व सुख वैरागमें, तेज तपस्या माहिं ।
भक्तीमें प्रभुता बड़ी, मुक्ति ज्ञान बिन नाहिं ॥

कुण्डलिया ॥

ज्ञान समाधि जाकेलगी सो क्या लावै ध्यान ।
सो क्या लावै ध्यान ध्यान दुनियां कहलावै ॥
आपै भये बादशाह फिर कौन के मुजरे जावै ।
लिया निशाना मार तुपक अब कौन चलावै ॥
मनका संकल्प भजन रूप अपना दरशावै ।
जो या सो या एकपल टुको न होय हैरान ॥

ज्ञान समाधि जाकेलगी सो क्या लावै ध्यान।

चौ० भभाभर्म मिटावो अपना। यह संसार सकल है स्वपना॥ भरमें सुर नर देवी देवा। भरमें सिद्धसाधक ब्रह्मेवा॥ भर्म भर्म मानुष डहकाये। दुस्तर महाविषम यहमाये॥ भर्मिभर्मि भय मोह मिटाया। नानक तेहि परम सुख पाया॥

एक को एक कहै सब कोई हौं मैं गरभ व्यापै। अन्तर बाहर एक पहिंचानै यों घर महल संजापै॥ प्रभु नेरे हरि दूर न जानों एको सृष्टि सवाई। एक ॐकार औ नहिं दूजा नानक एक समाई॥ आप उपदेशै समझै आप। आपी रचिया सबके साथ॥ आप किन्हों आपन बिस्तार। सब कछु उसका वह कहनेहार॥ उससे भिन्न कहो कुछहोय। थान थनन्तर एको सोय॥ आपन चरित आप करनेहार। कौतुक करै रङ्ग अपार॥ मन में आप मन अपने माहि। नानक की मति कही न जाहि॥

और सुनो साधु गुरु में जैसा भाव ज्ञानी को होता है वैसा उपासक को कहां क्योंकि ज्ञानी ऐसा समझता है कि साधु गुरुही ने तो यह बात लखाई है अब उन से बड़ा कौन क्योंकि ज्ञानी को तो ईश्वर से कुछ चाह नहीं रही और ब्रह्म सो वह अपनेही को मानता है इससे उसको व्यवहार में केवल साधु गुरुहीका धन्यवाद और सेवा रही जिनके कारण अपने स्वरूप को जान लिया और ज्ञानी जो शुभकर्म करता है सो उस का करना स्वाभाविक है और उपासक तो कभी साधु गुरु को देखता है कभी तीर्थ का ध्यान करता है कहीं

ठाकुर से प्रार्थना करता है और बड़े २ परिश्रम से सुकर्म्म करता है और तुम कहो कि कौन से ज्ञानी ने साधु गुरु को मारा है बुरा कहा है या टहल नहीं की है और क्या ज्ञानी तीर्थ, भजन, स्मरण, ध्यान नहीं करते सो हमतो कर्म्म उपासना का खण्डन नहीं करते क्योंकि उपासना के बिना ज्ञान किसी को नहीं होसक्ता है और केवल ज्ञान से ब्यवहार नहीं चल सक्ता है एक दृष्टान्त है कि कोई मनुष्य अन्धा था और एक अपङ्ग था दोनों मिले और दोनों भूखे थे और वृक्षपर मेवा वर्त्तमान था अब अन्धे को दीखता न था और अपङ्ग से चढ़ा न जाता था दोनों ने मता करके यह सलाह की कि अन्धे ने पंगु को अपने कन्धे पर चढ़ाया पंगु ने बृक्ष से मेवा तोड़ा और दोनों ने खाया देखो जब दोनों अकेले थे तब मेवा प्राप्त नहीं होसक्ता था इसीप्रकार ज्ञानी को तो कर्म्म उपासना की अत्यन्त आवश्यकता है और अकेला ज्ञान तो पंगु के समान है पर तुमको यह समझना चाहिये कि निन्दा बुरे की भी बुरीहै और जब तुम ज्ञानी की निन्दा करोगे तो तुम्हारी उपासना कहां रही जो ज्ञान समझ में आता तो कहो इतनी बुद्धि नहीं है या कहो कि हम को ज्ञान से प्रयोजन नहीं है तो भी अच्छा है कि निन्दा के पाप से तो बचे और बिचार कर देखो तो ज्ञानी निरुपाधि होता है और उपासक अपने नाम होने की इच्छा के कारण बड़ी धूम धाम से उपाधि खड़ी करा करता है और जो तुमने कहा कि असत्य बस्तु से भी

कहीं सुख होता है तो देखो भानमती के असत्य खेल से सुख होता है और दुःख भी होता है स्वप्न के असत्य सृष्टि से सुख दुःख होता है और यद्यपि स्वप्न का सुख मिथ्या है पर सुख अच्छा लगता है और स्वप्न का दुःख भी मिथ्या है पर बुराही लगता है और देखो स्मरण करलो कि पहिले तो तुमने कहा कि हम को तो वैराग्य किसी ज्ञानी में नहीं दीखता और तुम आप वैराग्य ही के समान बतलाकर निन्दा करतेहो कहो कैसा अपराध करतेहो और ज्ञानी तो यहां भी सुखी और आगे भी सुखी देखो तुम सब कुछ उपासना की महिमा कर आये परन्तु सुषुप्ति का सुख सबसे बढ़कर है क्योंकि दोपहर तथा तीनपहर तक कथासुनोगे पूजा करोगे गावो बजावोगे प्रेम करोगे फिर भी यही कहोगे कि अब तो सोवेंगे जो सोने में अधिक सुख नहीं होता तो क्यों सोनेके लिये कथा में से उठते और देखो कि सुषुप्तिमें कोई भी वस्तुनहीं है न तन है, न घर है, न धनहै, न कुटुम्बहै, न साधुहै, न गुरुहै, न सेवाहै, परन्तु सुषुप्ति का सुख सबसे बढ़कर है सो ज्ञानी को ऐसासुख सब काल प्राप्त है विषय का सुख अज्ञानमें है क्योंकि अज्ञानी सुखको दूसरे पदार्थ से माने है अपनेमें नहीं देखता और वास्तव में सुख अपनेही में है जो अपने में नहीं होता तो सुषुप्ति में सुख न होना चाहिये था क्योंकि कोई पदार्थ सुषुप्ति में वर्त्तमान नहीं है और देखो जो पदार्थ में सुख होता तो सबकाल सुखका भागी होना था सो यह बात नहीं

है धन, सम्पत्ति कुटुम्ब आदि सब वर्त्तमानभी हैं परन्तु फिरभी मनुष्य दुःखी होताहै जो धन, सम्पत्ति, कुटुम्ब में सुख है तो क्यों उसको सबकाल सुखी नहीं रखता और जिन्होंने अपनेमें सुखदेखा है उनके पास एक पदार्थ भी वर्त्तमान नहीं और सुखी हैं और मनका यह स्वभावहै कि एक इच्छा करी पूर्णहुई क्षण भर आनन्द माना फिर वैसाही दुःखी है क्योंकि अब दूसरी इच्छा उत्पन्न हुई फिर मन डगमगानेलगा देखो जिसकालमें इच्छा पूर्णहुई तो ज़रा मन ठहरा और सुख हुआ या सुषुप्ति में विना इच्छा हुआथा तो सुख हुआ इससे सिद्ध हुआ कि मनकी निश्चलता में सुखहै पदार्थों में सुख नहीं सो ज्ञानीका मन वैराग्य विवेक करके निश्चल हुआहै महासुखीहै उसको पदार्थका होना तो उपाधि दीखता है पर सुखदायी नहीं दीखता और जो प्रारब्ध आधीन पदार्थ मिलेहैं तो उनको असत्य समझकर भोगताहै जैसे समझनेवाला भानमतीके खेल को देखकर सुखी होता है यद्यपि अज्ञानी लड़के भी वैसाही खुशीहोतेहैं पर इतनाभेदहै कि लड़के उसखेल को सत्य समझते हैं और बुद्धिमान् उसको मिथ्या समझतेहैं और देखो ज्ञानी अज्ञानी दोनों भोजन करके सुखी होतेहैं पर ज्ञानी अज्ञानी समान नहीं होसक्ता ज्ञानी सुखको भोजनसे उत्पन्नहुआ नहीं मानताहै भोजन को इतना समझता है कि मनकी इच्छा पूर्ण की मन ठहरगया परन्तु सुख भोजन ने नहीं दिया सुख मनमें ही था ठहरने से सुख का भानहुआ जैसे

हुये पानीमें मुँह दीखताहै और अज्ञानी भोजनको ही सुखरूप समझताहै और जो निश्चलता मनकी पदार्थों से होतीहै सो पदार्थ थिर नहीं रहता और जो वैराग्य विवेकसे मन निश्चल कियाहै तो मन सदा थिर रहता है केवल क्षुधा पियास के समय तो उपाधि उठाता है और जो तुमने पूछा कि कौनसी पुस्तक बेदान्त के ज्ञानकी दाताहै सो पुस्तकों का क्या अन्तहै परन्तु तुम जो चाहो तो पञ्चदशी, अष्टावक्र,गीता, योगवाशिष्ठ पढ़ो और एक ग्रन्थ विचारसागर, महाराज निश्चल दासजी दादूपन्थी का बनाया हुआ भाषामें ऐसाउत्तम है कि जिसके पढ़नेसे तत्कालज्ञान होजाय हम तुमको इन्हीं पुस्तकों के द्वारा समझारहे हैं किन्तु विचारसागर के कई प्रसङ्ग सुनाये हैं और ज्ञानी तो बहुत हैं कहां तक नाम गिनाऊं परन्तु अब तू जा महाराज कृपासिन्धु ब्रह्मस्वरूप आनन्दमय दादूपन्थी महाराज रामजीदास साधुके दर्शन कर देख कैसे महात्माहैं और जो तुमने पूछा कि गुरू नानकशाह की वाणी का वृत्तान्त कहो सो सुनो गुरू नानकशाह फ़क़ीर हिन्दू के गुरू और मुसलमान के पीर । धन्य ! धन्य !! धन्य !!! क्या वाणी है ! शर्वत का घूंट है; पढ़तेही शान्ति प्राप्त होतीहै, तीनों तापोंका नाश करनेवाली है। और वाणी में किसी की निन्दा नहीं केवल मालिकको और अनुराग सुरतशब्द का मेल और ज्ञान है पहिले सुखमनी साहब का पाठकरो देखो क्या अमोल पदार्थ है महाराज सत्य है ऐसीही प्रशंसा सारे सुनी है और

मैंने देखा है कि और पन्थों के साधू ब्राह्मण उपासक ज्ञानी सब गुरू की वाणी का पाठ करते हैं महाराज आपने कहा कि सुषुप्ति का सुख सब से बड़ा है और मैंने सोने की अत्यन्त निन्दा सुनी है परमहंस ने कहा कि भाई दृष्टान्त का एक अङ्ग लियाजाता है हमने सो रहने को अच्छा नहीं कहा परन्तु बिन पदार्थ के सुख का रूप दिखायाहै और जो सदा सोतारहै तौ भी एक बातहै सो किसीसे सदैव सोयानहींजाता और जो अधिक सोतेहैं तब महादुःख पातेहैं फिर इस सोनेसे क्या लाभहुआ महाराज धन्यहौ धन्यहौ बड़े २ भेदबताये बड़ी भूलसे बचाया महाराज कृपा करके कहिये कि ब्रह्म में जगत् का भ्रम जो हुआ सो जैसे रस्सी में सर्पका सो महाराज देखिये कि सर्पकाभ्रम रस्सी या सन्धि या लकड़ीमें होताहै घटमें नहीं होता और ब्रह्म जगत्का कुछ मेल नहीं बताया और एकसी सूरतनहीं बताई फिर ब्रह्ममें जगत् का भ्रम कैसे हुआ परमहंसने कहा कि इस का कुछ नियम नहींहै देखो जाति देह की होती है क्योंकि एक जीव पहिले जन्ममें ब्राह्मणथा अब बनिया हुआ जो जातिधर्म जीवका होता तो बनिया न होना चाहिये था क्योंकि जीव तो अबभी वहीहै जो पहिलेथा परन्तु अज्ञानी का जीव जातिको अपनाही धर्म माने है अब यद्यपि जाति और आत्मा से किसी प्रकारका मेल नहीं है और सूरत एकसी नहीं है आत्मा व्यापक है और जाति परिच्छिन्न है पर आत्मा में जाति का भ्रम होगया इसीप्रकार ब्रह्ममें जगत्का भ्रम होगया॥

महाराज ब्रह्म तो प्रकाशरूप सूर्य्य के समानहै और जगत् अँधेरेके सदृशहै सूर्यके सन्मुख अंधकार नहीं ठहर सक्ता ब्रह्ममें जगत् कैसे ठहरा परमहंसने कहा कि सुनो अग्नि लकड़ीमें होती है परन्तु न दीखती है और न लकड़ीको जलातीहै इसीप्रकार समान चेतन अज्ञान का विरोधी नहीं किन्तु साधक है महाराज माया सत्यहै या असत्यहै या क्या परमहंसने कहा कि माया का ब्यौरेवार वृत्तान्त सुनो शून्यवादी अर्थात् जो ऐसे कहै हैं कि कुछ है ही नहीं वह मायाको अत्यन्त अनहुआ कहै हैं इस को असत्य ख्याती कहै हैं अर्थात् जैसे रस्सीमें सर्प असत्य है तैसे और स्थानपर भी सर्प असत्यहै व्यंग्य ज्ञानवादी के मतको आत्मख्याती कहते हैं कि रस्सी में या और किसी जगह सर्प नहीं है बुद्धि सर्प है बुद्धि से बाहर कुछ नहीं बुद्धिही सर्प के आकार को धारण करैहै बुद्धि क्षण २ में बदलैहै बुद्धि से बाहर जो स्थूल जगत् दीखै है सो भ्रमहै और न्याय और वैशेषिक अन्यथा ख्याती कहै हैं अर्थात् सुम्बई देशमें सच्चा सर्पहै उसीको देखै हैं पर नेत्रन में दोष है जिससे पास मालूम होता है जैसे कोई रोग ऐसा होताहै कि चौगुना खिलाताहै ऐसेही नेत्रन का दोष सुम्बईके सर्पको निकट दिखलाताहै और ख्यातवादी कहैहैं कि जो असत्यहो अर्थात् अत्यन्त अनहुई वस्तु दीखै तो गीदड़के सींगभी देखने चाहिये इससे असत्य ख्याती मिथ्याहै और जोकि रस्सीमें सर्प क्षणभर वया घण्टों तक देखा करताहै कुछ क्षणभरका नियम नहीं

और बुद्धि क्षण क्षणमें बदल जातीहै इस वास्ते आत्म-ख्याती अशुद्ध हैं और अन्यथा ख्याती भी मिथ्या हैं क्योंकि ज्ञान पदार्थके अनुसार होताहै पदार्थ रस्सी है सच्चे सर्पको कहां देखती इससे यह सत्य है कि सच्चे सर्प का ध्यान और समान रस्सी का ज्ञान यह अ-ख्यातवादीका मतहै परन्तु यहभी अशुद्धहै क्योंकि जो सच्चेसर्पका ध्यानहीहै तो रस्सीको सन्मुख देखकर क्यों डरा और एककाल में दो ज्ञान भी नहीं होसक्के इससे अनिर्वचनीय ये ख्याती शुद्धहैं वेदान्त में माया अनि-र्वचनीय है न सत्यहै और न असत्य ऐसे प्रकार की है कि जिसको कुछ नहीं कह सक्के देखो कि अन्तःकरण की वृत्ति नेत्रोंमेंसे निकलकर जिस पदार्थपर गिरती है उस पदार्थ के समान होजातीहै और उसपदार्थका ति-मिर दूर करतीहै पदार्थ भासताहै प्रकाश सहायकहै और जहां रस्सीमें सर्प भासा वह वृत्ती बाहरगई और रस्सी के साथ लिपटीभीरही पर तिमिर अर्थात् अन्ध-कार दोष कर रस्सी के समानाकार नहीं हुई उस स-मय में वृत्ती और अविद्याका क्षोभ हुआ वह अविद्या सर्पाकार होके भासनेलगी अब देखो जो अविद्याका कार्य्य सत्यहोय तो रस्सी के ज्ञानसे सर्प दूर न होनाथा और जब रस्सीका ज्ञान हुआ तब सर्पका अभाव हो-जाता है इस निमित्त उस सर्प को सत्यनहीं कहसक्के और जो असत्यकहैं तो देखा था इससे सत्य और अ-सत्य से किसी औरही प्रकारकी है इस हेतु से अनिर्व-चनीय कहा देखो बीज में वृक्ष कैसे रहताहै जो कहो

कि बीज में वृक्ष है तो बीज के तोड़े वृक्ष का चिह्नभी नहीं निकलता है और जो तुम कहो कि उस में वृक्ष नहीं है तो फिर वृक्ष कहां से आजाता है इसी को माया अनिर्वचनीय कहते हैं और जैसे सर्प अवि-द्याही का परिणाम था ऐसे वह वृत्ती जिस का सर्प भासा है अविद्याही का परिणाम है सो ज्ञानभी अनि-र्वचनीय है जो वह वृत्ती अन्तःकरणका ज्ञान होता तो सर्प का अभाव न होता ॥

महाराज सत्यहै खूब समझमें आया पर महाराज आपने ऐसा कहाहै कि स्वप्नकी सृष्टि तो नई रचनाहै महाराज! जो जीव देहसे बाहर जाकर रचताहै तो स्वप्न के समय में देह मृतक के समान होनी थी सो होती नहीं और देह ज़रासी है उसके भीतर हाथी घोड़ा घर शहर कैसे बन सक्तेहैं सुनो वेदमें लिखाहै कि स्वप्नसृष्टि मन रचता है सो देहके भीतर गले की नाड़ी में सब रचताहै क्योंकि मन विना प्राणके देहसे बाहर नहीं जा सक्ताहै प्राण सब इन्द्रियों का राजाहै जहां प्राण नि-कसा तहां सब इन्द्रियां भी गईं जो मन और प्राण बा-हर जाते तो देह मृतक समान होती और जो कहो कि केवल मन बाहर जाकर स्वप्नसृष्टि रचताहै सच्चे पदार्थों को देखताहै सो देखो मनमें ज्ञानशक्ति है कर्मशक्ति नहीं है और स्वप्नमें सब कर्म करने पड़ते हैं सो कर्म प्राण और इन्द्रिय आदिके बिना होता नहीं इस हेतुसे केवल मनका बाहर जाना बनता नहीं मन जैसे घोड़े हाथी रचताहै वैसेही कल्पितदेह इन्द्रिय स्वप्न देखनेवाले की

भी रचताहै क्योंकि स्वप्नमें रात्रिको घावलगा पर प्रातः-काल इस सच्ची देह पर चिह्न नहीं होता इससे सिद्ध हुआ कि वह देह जिसपर घाव लगाथा और थी और कल्पनामात्र थी स्वप्न साक्षी भासहै क्योंकि जाग्रत् देह की इन्द्रियां नहीं देखतीं ॥

महाराज आप तो जगत् को स्वप्न समान कहे हैं पर मेरी बुद्धि में नहीं समाता भला यह तार जिस में ख़बर भेजी जातीहै और रेलगाड़ी यह मिथ्या होसक्के हैं परमहंसने कहा कि सुनो तुम वृथा भ्रममें पड़ते हो रेल,तार आदि जगत् में हैं या जगत् से भिन्न हैं और जब सारा जगत् मूल सहित मिथ्या हुआ तो रेल आदि कहांसे सत्य पदार्थ होजायँगे देखो स्वप्नमें तुम ऐसे ऐसे अद्भुत पदार्थ रचोहो कि जिसका अन्त नहीं मिलता और स्वप्न अवस्थामें वहसच्चे दीखतेहैं और तुम जानतेहो कि उन पदार्थोंसे स्वप्नके जगत् को बड़ा लाभ होरहा है पर हां, बड़ी बुद्धिमानी का काम है धातुओंका स्वभाव और धूम्रका बल जान कर यह रेल आदि बनाहै देखो एक नानबाई अर्थात् रोटी करने वाला था उसने एक डेग चूल्हे पर चढ़ाई और एक थालीसे उसका मुँह ढक दिया जब पानी औटा तो धूम के बलसे थाली हिलने लगी उसने उस थालीपर एक तार चिपका कर तारका दूसरा सिरा दूसरे मकान में निकाला अब जैसे २ थाली डेगपर हिलै है वैसेही तार का सिरा भी दूसरे मकान में हिलै है उसने तो यह सब खेलके समान किया परन्तु पीछे और बुद्धिमानोंने धुयें

के बलकी परीक्षा को और धुयेंके बलसे गाड़ी चलाई रेलगाड़ी में धुआं एक नल की तरफ़ ज़ोरसे जाता है उसके बलसे रेल चलती है तारका हाल सुनो कि हकीम को यह मालूम हुआ कि धातुओंमें भी बल होता है और कोई धातु दूसरी धातुसे मेल रखतीहै कोई बैर कोई धातु पोली होतीहै कोई ठोस देखो एक लंबी छड़ी फूलधातु की बनाओ और एकलोहे की फूलकी छड़ी का तुम एक किनारा ठोंको दूसरे किनारेतक झनकार चलीजावेगी और लोहेकी छड़ीमें यहबात न होगी इसीप्रकार यह तारभी ऐसी धातुओंसे बना है जब ख़बर भेजनी होतीहै तब तारकेसिरेको पारेसे डुबो दिया करते हैं और और तार के दायें बायें हिलाया करै हैं सो वह हिलाना तार लिये चलाजाता है जहां तारका सिरा आताहै वहां एक सूई होतीहै सो हिलजातीहै सो जो दायें को हिलीतो (क) अक्षर समझा और बायें को हिली तो (ल) अक्षर समझा दोनों को जोड़ कल हुआ इसी तरह सब अक्षरों के चिह्न नियत हैं अब देखो यह बड़ी बुद्धि की बातहै पर जगत् से बाहर नहीं है ब्रह्मज्ञान दूसरी बात है ॥

दो०शोधनकरै सोनार जिमि, कुन्दन लावै हाथ ।
वृन्दावन अस ज्ञान में, जगतरहै नहिंसाथ ॥
माया के संयोग से, जो चेतनभयो जीव ।
सो चेतन निजरूप को, त्यागकियोनहिंपीव ॥
दर्पण जलके माहिं जस, छाया दूसर होय ।
वृन्दावन जो विम्ब है, नहीं हुआ वह दोय ॥

मन फुरना से रहित कर, कौने विधि से होय।
चहै भक्ति चहै ध्यान कर, चहै ज्ञान से खोय॥

महाराज आपने तो प्रारब्धको अमिट कहा जो प्रारब्ध अमिटहै तो फिर वेद शास्त्रने यत्न क्यों लिखे कि ऐसाकरै तो ऐसा होगा किसीके प्रारब्ध में धन नहींथा पर शास्त्रके अनुसार उसने जप तप पूजाकी धन उसके होगया अब प्रारब्ध तो मिटगया परमहंस ने कहा कि सुनो यह झगड़े अविद्याकेहैं तुम ब्रह्मविचार करते करते कहां जापड़े खैर तुमने पूछा हम इसकाभी वृत्तान्त कहेदेते हैं पर यह स्मरण रखना कि हमारा सिद्धान्त यह है कि माया अनिर्वचनीय है अब सुनो जिस मनुष्यने शास्त्र के अनुसार अमल कियाहै और धनवान् होगया इसमें प्रारब्ध नहीं मिटती इसको ऐसा समझो कि उसके प्रारब्ध में धन होना इसी मार्ग से लिखा था जैसे किसीको नौकरी करके किसीको दुकानदारी करके किसीको कथा कहकर धन मिलता है उसको जप तप पूजा करकेही धन मिलना था॥

दो० जैसी हो होतव्यता, तैसी उपजै बुद्धि।
होनहार हिरदय बसै, बिसरिजायसबसुद्धि॥

चौ० होइहै वहीजुरामरचिराखा। कोकरि तर्क बढ़ावै शाखा॥

तो महाराज अब मैं कुछ न करूंगा जो कुछ मेरे प्रारब्धमें होवेगा सो होरहेगा। परमहंसने कहा कि ठीक है पर देखो जो तुम्हारी प्रारब्धमें कुछ न करना लिखा है तो तुम वास्तव में इस बातपर उपस्थित हो जाओगे और जो करना प्रारब्ध में लिखा है तो अभी एकदम

में औरही समझ होजायगी और देखो कि जो कुछ न करनेसे तुम्हारी प्रारब्धमें सुख लिखा है तो सुख प्राप्त होगा और जो दुःख लिखा है तो दुःख मिलैगा। एक दृष्टान्त है कि दो मनुष्य परस्पर झगड़ते थे एक कहता था कि उद्योग बड़ा, दूसरा कहता था कि प्रारब्ध, किसी मनुष्यने इन दोनों को एक कोठरी में बन्द करदिया जो प्रारब्धको बड़ा कहताथा वह तानदुपट्टा सो रहा कि जो होना होगा सो होगा जो उद्योग को बड़ा कहताथा उसने अपने चित्तमें कहा कि कुछ उद्योगकरो नहीं तो भूखेही मरे उसने दीवारमें किसी युक्तिसे गर्त्त किया और कहींसे खाना लाकर खूब खाया अब चित्त में कहताहै कि चलो वह प्रारब्धवाला भूखा पड़ा है उसको भी खिलादो कि वह भी जानै कि उद्योग ऐसी वस्तुहै उसने उसकी कोठरी की दीवार में गर्त्त करके कहा कि लो खाने को ले क्यों भूखों मरताहै देख हमारा उद्योग और अपनी प्रारब्ध कौन बड़ाहै प्रारब्ध वालेने कहा कि लाओ खाना लेलिया और कहा कि ले देख अब हमारा प्रारब्ध बड़ा या उद्योग तूने तो इतना परिश्रम किया तब खानेको मिला और हमैं सोते हुये खाने को आया उद्योगवाला चुप हुआ अब इस दृष्टान्तसे ऐसा सिद्ध हुआ कि प्रारब्ध बड़ा परन्तु ध्यान करने का स्थानहै कि खाना बिना उद्योग के प्राप्त नहीं हुआ किसी उद्योगवाले ने इतना उद्योग कियाथा जब खाना मिला इससे विना उद्योगके प्रारब्ध कुछ नहीं करसक्ती इससे दोनोंबराबरहैं जैसे बिना तेल और बत्ती

से दीपक नहीं जलता जो तेल और बत्ती नहीं है तो क्या प्रकाश करैगा और जो बत्तीहै और तेल नहींहै तोभीकैसे प्रज्वलितकरै परन्तु इतना अन्तर निस्सन्देह है कि जो बत्ती छोटी भी होय और तेल बहुत होय तो दीपक देरतक जलैगा और जो तेल थोड़ा होय और बत्ती बड़ी होय तो दीपक देरतक नहीं जलसक्ता सो प्रारब्ध चैतन्य है तो थोड़े से भी उद्योग से काम पूरा होसक्ता है और जो प्रारब्ध नहीं तो सहस्र उद्योग निष्फल हैं इतनी प्रारब्ध की प्रशंसा है अब महाराज पहिले मुझको इस प्रश्न का उत्तर दीजिये कि एक साधु ने ऐसे कहाथा कि गुरु और आचार्य विरक्त होते हैं और बिना संस्कृत पढ़े ज्ञान नहीं होता सो यह ठीक है या नहीं परमहंस ने कहा कि सुनो साधु का कहना सही है परन्तु तुम कहो कि तुमने विरक्त किस को समझा है महाराज मैं तो विरक्त उसे जानता हूं कि जो गृहस्थ न हो और अपने पास कुछ न रखता हो और जो पहिले सम्बन्धी हैं उनसे प्रीति और मेल न रखता हो परमहंस ने कहा कि यह सब बातैं पशु पक्षियों में वर्त्तमानहैं न वह गृहस्थी रक्खैहैं और न किसी से मेल रक्खै हैं और न कुछ पास रक्खै हैं और वहुत करके जंगल में रहैहैं और दूसरे दिन की फ़िक्र भी नहीं रक्खै हैं अब तुम देखो विरक्त उसे कहै हैं जिसको गुरु की कृपा करके ऐसा बोध होता है कि जगत् मिथ्या है और ब्रह्म सत्य है और इन्द्रियों आदि के विषय में रुचि नहीं है ऐसा जो पुरुष है सो विरक्त

है अब ऐसा पुरुष सच्चा है गृहस्थ होय चाहै वैरागी होय चाहै उपाधि सहित हो चाहै उपाधि रहित हो- देखो ऋषीश्वर याज्ञवल्क्य उद्दालक राजाजनक गुरु नानक कबीर साहब गृहस्थ थे या नहीं और जो तुमने कहा कि विना संस्कृत पढ़े ज्ञान नहीं होता सो इसका तात्पर्य यहहै कि बिना संस्कृत पढ़े संस्कृत पदोंका ज्ञान नहींहोता और आत्मज्ञान की प्राप्ति गुरु के वचनद्वारा होतीहै सो गुरुचाहैं संस्कृतद्वारा श्रुति स्मृतिका बोधक- रावैं चाहैं भाषा या किसी और देशकी बोलीद्वारा शिष्य को बोध दें इसीको वेद कहते हैं आत्मज्ञान की प्राप्ति में दोनों एक समान हैं और जो पुरुष केवल संस्कृत पढ़ोंही से बोध होना कहैहैं उनके विषयमें एक दृष्टान्त सुनलो कहीं संस्कृत पढ़ों की सभाथी उसमें एकविरक्त साधु भी पहुँचगये सो साधु ने कोई प्रश्न भाषा में किया संस्कृतवालों ने कहा कि भाषा प्रमाण नहीं इस पर साधु ने संस्कृत पढ़नेवालों को भाषा में दो चार गालियां दीं तब तो सब के सब साधु के मारने को दौड़े साधु ने कहा कि आपने अप्रमाण की बोली को कैसे प्रमाण करलिया सबके सब चुपहोरहे जो संस्कृत पढ़ा आत्मज्ञानी होगा वह भाषा की बोली में दूषण नहीं लगावेगा और देखो संस्कृत के अर्थ सब संस्कृत पढ़हुये भाषाही में समझाते हैं और समझते हैं॥

महाराज एक सन्देह और है मैंने यह सुना है कि प्रारब्ध उसको कहते हैं कि जो पहिले जन्म में कर्म कियेहैं उसके अनुसार भोगना होगा सो कर्मों के फल

दुःख सुख हैं इससे प्रारब्ध के अनुसार दुःख सुख भोगने चाहिये थे पर जगत् में दीखता है कि दुःख सुख भी भोगते हैं और इसके सिवाय किसी को शुभ इच्छा होती है और किसी को अशुभ इच्छा होती है इन दोनों का बीज कौन है सुनो जैसे कोई फल मीठा और कोई कडुआ होता है परन्तु सिवाय मिठाई और कटुता के फल में एक प्रकार की सुगन्ध और दुर्गन्ध भी होती है इसीप्रकार कर्मों का बदला सुख दुःख फल के सदृश है और शुभ इच्छा और अशुभ सुगन्ध और दुर्गन्ध के सदृश है इस निमित्त सुकर्म का फल केवल सुखही नहीं है किन्तु शुभइच्छा भी है जिससे आगे को लाभ होता है और शुभकर्म बनते हैं इसीप्रकार कुकर्म का वृत्तान्त जानलो महाराज यह और कहदेव कि जितने सुकर्म और कुकर्म के फल हैं उसी प्रकार दोनों भोगने पड़ते हैं या यह कि सुकर्म अधिक है और कुकर्म कम है तो जितना सुकर्म अधिक है उसी का फल भोगना पड़ता है या यह कि एक सेर सुकर्म हो और तीन पाव कुकर्म है तो यह दोनों ही भोगने पड़ैंगे ॥

परमहंस ने यह कहा कि ऐसा निश्चय होताहै कि दोनोंही भोगने पड़ेंगे तो महाराज शास्त्र ने यह क्या कहा कि जो कोई कुकर्म होजाय तो प्रायश्चित्त करने से कुकर्म दूर होजायगा परमहंस ने कहा कि अपनी समझ में ऐसा आता है कि इसमें शास्त्र का यह प्रयोजनहै कि प्रथम तो कुकर्मी कुकर्म करने से बच जायगा

क्योंकि वह प्रायश्चित्त में लगा और जब प्रायश्चित्त कर चुका तो सब उसको भला कहने लगे अब कुकर्म करने को उसकी रुचि न होगी दूसरे यह कि सुकर्म से शुभइच्छा भी उत्पन्न होगी तीसरे यह कि कुकर्म का दुःख सुख सुकर्म के फल से भारी नहीं मालूम होगा और उस समय कुकर्म का फल कुछ काल के लिये हट भी जायगा देखो एक मनुष्य ने तो एक को मारा और एक को कुछ दिया अब जिसको मारा है वह बदला लिया चाहता है और जिसको दिया है वह बदला दिया चाहता है अब बदला देनेका इतना दुःख नहीं मालूम होता इस निमित्त कि बदला लेने का सुख उस समय सहायता करता है और देखो कि सुखका बल हुआ दुःख सहना सुगम होजाता है जैसे मन भर की गठरी किसी बीमार के शिर पर रक्खो और मनभर की अच्छे भले के शिरपर रक्खो और देखो कि कचहरियों में मुक़द्दमे नम्बरवार होते हैं परन्तु जो खूनका मुक़द्दमा आजाय तो सब मुक़द्दमे धरे रहते हैं वह पहिले होता है इसी प्रकार जब सुकर्म बहुत हुआ तो कुकर्म के फल को हटाकर अपना फल देनेलगताहै॥

महाराज यह बातैं तो बहुत अच्छी हैं बड़े सन्देह को दूरकरै हैं आपने इनको झगड़ा कैसे कहा है सुनो ज्ञानी को देह नहीं रखनी फिर प्रारब्ध का और यत्न का कहना सुनना झगड़ाही तो है जिस मार्ग नहीं चलना उसके कोस क्या गिनना और जब माया को अनिर्वचनीय कहचुके तो फिर अब क्या कहा जावै

महाराज सत्य है परन्तु मेरे बड़े सन्देह दूर हुये अब कुछ ब्रह्मविद्या की चर्चा श्रीमुख से वर्णन कीजिये परमहंस ने कहा कि जो कुछ तुम्हे पूछना हो सो पूछ ले महाराज मैं तो दुःखी सुखी होता हूं छोटासा हूं असमर्थ हूं और ब्रह्मानन्दरूप है पूर्ण है फिर मैं ब्रह्म किसप्रकार होसक्ता हूं परमहंस ने कहा कि सुनो दुःख सुख सामर्थ्य असामर्थ्य यह सब धर्म अन्तःकरण के हैं और तू अन्तःकरण का द्रष्टा है महाराज जो मैं अन्तःकरणका द्रष्टा हूं तो जगत् का अधिष्ठान कौनहै सुनो जहां चैतन्य अधिष्ठान होता है तहां चैतन्यही द्रष्टा होता है जैसे स्वप्न का अधिष्ठान और द्रष्टा दोनों चैतन्यहैं मिथ्या जगत् अधिष्ठान की हानि नहीं करता जैसे मृगतृष्णा का जल पृथ्वी को गीला नहीं करता और जहां रज्जु में सर्प का भ्रम होता है तहां रज्जु में विष नहीं होजाता और जैसे जलाकाश घटाकाश मेघाकाश महाकाश एकही हैं ॥

दो० करिकरि आपी संकलप, नरक स्वर्ग ठहराय।
जैसे बालक छाहँ को, देव भूत कहि गाय॥

पर चारोंमें उपाधि भेद अवश्यहै इसी प्रकार जीव साक्षी अर्थात् कूटस्थ ईश्वर और ब्रह्म चैतन्यरूप करिकै एकही चैतन्यहै और जो उपाधि भेदहै सो मिथ्या है जलाकाश इसको कहतेहैं कि घटाकाश और जलमें प्रतिविम्ब आकाश का और घटाकाश यह कि जितना अवकाश घट को आकाश ने दिया और मेघाकाश जितना आकाश वादलोंको जगहदेवे और वादल के

जलमें जो आकाशका भासहै और महाकाश पूर्ण आकाश को कहते हैं और जीव ईश्वर ब्रह्मको चैतन्यरूप करके एक जानना और जीव ईश्वरकी उपाधि को मिथ्या समझना इसीको ज्ञान कहतेहैं ॥

महाराज लक्षणा क्याहै सुनो लक्षणा तीन प्रकार की होतीहै जहती १ अजहती २ भागत्याग ३ जहती यह कि जिसमें सब वचनका त्यागहो जैसे किसी ने कहा कि गङ्गा में गावँ है तो गङ्गामें गावँ नहीं होसक्ता किनार पर होगा इसमें सब वचनका त्याग हुआ और अजहती यह कि जिसमें सब वचन का ग्रहणहो जैसे किसीने कहा कि लालरङ्ग उड़जाताहै तो लालरङ्ग की चिड़ियां होतीहैं इसमें सब वचन अर्थात् अधिक ग्रहण हुआ भागत्याग यह कि जिसमें कुछ लियाजावै कुछ छोड़ाजावै जैसे जीव ईश्वरकी उपाधि का त्याग॥ और दोनोंमें जो चैतन्य भागहै उसका ग्रहण महाराज अन्तःकरण तो जड़है जड़को दुःख सुख नहीं होसक्ता परमहंसने कहा कि सत्यहै कि अन्तःकरण जड़है पर तेरी चैतन्यता जो अन्तःकरणमेंहै उसके कारण अन्तःकरणको दुःख सुखकी ज्ञात होतीहै जैसे दीपक के प्रकाशसे जुवारी जुवां खेलता है और पण्डित पोथी बांचता है परन्तु दीपक दोनों कर्मोंका अभिमानी नहीं ऐसीही तेरी चैतन्यता लियेहुये अन्तःकरण दुःख सुख भोगताहै पर तुझको उन कर्मोंका लेश नहींहै। महाराज आभास रूपवाली वस्तु का होताहै और आभास अपने से भिन्न स्थानमें पड़ताहै सो आपने चैतन्य को

व्यापक कहा फिर आभासके पड़ने को स्थान कहांरहा सुनो शब्द अरूप होताहै पर उसका प्रतिबिम्ब ध्वनि होतीहै और आकाश अरूप और व्यापक है पर जल में आकाशका प्रतिबिम्ब होताहै थोड़े से पानीमें बहुत सी गहिराई दीखतीहै ॥ महाराज मुझे आपने व्यापक बतायाहै फिर इसका क्या कारणहै जो केवल अन्तःकरण भोगताहै देह क्यों नहीं भोगती ? परमहंस ने कहा देखो अन्तःकरण दर्प्पणके सदृशहै और देह भीत के सदृश है दर्पणमें प्रतिबिम्ब दीखताहै भीत में नहीं दीखता यद्यपि प्रकाश पदार्थ भीत और दर्पण दोनों में बराबर है परन्तु दीवार को यह सामर्थ्य नहीं कि प्रतिबिम्ब दिखावै और देखो कि स्वच्छ जल में आकाश का आभास शुद्ध मालूम होताहै और स्थानपर नहीं यद्यपि प्रकाश सबदेह में व्यापकहै परन्तु आभास अन्तःकरण ही में पड़ता है सम्पूर्ण देह में नहीं क्योंकि अन्तःकरण सतोगुण का कार्य्य है और देह तमोगुण का कार्य है अन्तःकरण हीरेके सदृश है जैसे फूल की लाली हीरे में झलकती है पथरैली में नहीं झलकती इसी प्रकार अन्तःकरण चैतन्य का आभास होता है देह में नहीं सामान्य चैतन्य तो देह और अन्तःकरण दोनों में एकसा है पर आभास का भेद अर्थात् अन्तःकरण में सामान्यचैतन्य और आभास दो वस्तु हैं तो महाराज सम्पूर्ण देह में दुःख सुख कैसे मालूम होताहै जहां अन्तःकरण होवै वहांही चाहिये॥

परमहंस ने कहा सुनो जो अन्तःकरण को एक

स्थानी हृदय में बतावै है तो वह यह कहते हैं कि
अन्तःकरण की वृत्ती सम्पूर्ण शरीर में फैली हुई है
जैसे सूर्य का प्रकाश और जो एकस्थानी नहीं कहते
वह अन्तःकरण को सम्पूर्ण शरीर में व्यापक कहतेहैं
महाराज यह कहिये कि ज्ञान किसको होता है अहं
ब्रह्म अर्थात् मैं ब्रह्म ऐसा कौन कहता है परमहंस ने
कहा कि बुद्धि में जो चैतन्य का आभास है सो कहत
है और उसीको ज्ञान होगा महाराज आभास तो ब्रह्म
नहीं है और ब्रह्म से भिन्न औरही प्रकार का है परम-
हंस ने कहा कि कहना तो बुद्धि सहित आभास का
है और आभास को ही ज्ञान होगा परन्तु आभास
कूटस्थ अर्थात् साक्षी का अभिमान रक्खै है अर्थात्
आभास अपने रूप और साक्षी के स्वरूप को अपना
आपही जानै है वेदान्त में आभास का ब्रह्म के साथ
एक होना बाधि समानाधिकरण कहा है जैसे दर्पण में
जो स्वरूप वह स्वरूप अपने को बाधिकारी के असल
स्वरूप में जासमाता है जैसे परछाहीं आदमी की
आदमी ही में जा समाती है देखने में दूसरी वस्तु थी
पर असल में कुछ न थी जो वास्तव में वह परछाहीं
कुछ होती तौ कहीं आप अकेली रहती सो कहीं
दीखती नहीं॥

दो० हरिहरजन दोउ एक हैं, बिव विचार कुछ नाहिं।
जल से उपजैं तरँगज्यों, जलही बिषे समाहिं॥

महाराज यह बात तो अच्छे प्रकार से समझ में
आगई परन्तु प्रलय और ज्ञान में क्या अन्तर है

प्रलय में भी तो कुछ नहीं रहैगा और ज्ञानी की देह कैसे छूटै है सुनो प्रलय इसे कहते हैं कि जब ईश्वर जीवों के कर्मों के फल देने से उदासीन होवे है तब प्रलय होय है सो प्रलय में सब वस्तुओं का संस्कार माया में रहैहै तथाच जीवों के कर्म भी जो बाक़ी रहैहैं वह भी माया में रहते हैं और जब वह कर्म भोग देने को पक जाते हैं तब ईश्वर को ऐसी इच्छा होती है कि अब जगत् रचना चाहिये उस समय माया तमोगुण प्रधान पांचों तत्त्वों को उत्पन्न करै है माया से आकाशतत्त्व शब्दसमेत पैदा होता है और आकाश से वायु की उत्पत्ति और वायु से अग्नि और अग्नि से जल और जल से पृथ्वी उत्पन्न होती है इन पांचों तत्त्वों का सतोगुण अंश अन्तःकरण और ज्ञानइन्द्रिय बनैहै और रजोगुण अंश से कर्म्मइन्द्रियां पृथ्वी का रूप कठोर रङ्ग पीला है इससे दो इन्द्रिय की उत्पत्ति हुई एक ज्ञानइन्द्रिय नासिका १ दूसरी कर्मइन्द्रिय गुदा २ जलका स्वरूप द्रवता रङ्ग सफ़ेद इससे दो इन्द्रिय एक ज्ञानइन्द्रिय रसना १ दूसरा कर्मइन्द्रिय लिङ्ग २ तेज का स्वरूप दाह उष्ण प्रकाश रङ्गलाल इससे दो इन्द्रिय एक ज्ञानइन्द्रिय नेत्र १ और दूसरा कर्म इन्द्रिय हाथ २ वायु का स्वरूपवेग रङ्ग हरा इस से दो इन्द्रिय एक ज्ञानइन्द्रिय त्वचा १ दूसरा कर्मइन्द्रिय पावँ २ आकाश का स्वरूप पोल रङ्ग काला इस से दो इन्द्रिय एक ज्ञानइन्द्रिय श्रवण १ दूसरा कर्मइन्द्रिय वाक् २ इस देह के चार प्रकार के भोजन

हैं लेज पानी मेजदही पेज फल भख भूनाहुआ अब देखो कि प्रलय और ज्ञान में कितना भेद है प्रलयके पीछे तो फिर जीवों को पैदा होना होता है और ज्ञानी ब्रह्म में लयहुआ उसको फिर देह नहीं धरनी होती और ज्ञानी को कुछ सन्देह इस बातका नहीं रहता कि देह तीर्थ पर छूटै या जंगल में दोनों बराबर हैं और जो किसी ज्ञानी ने देश, काल का भी विचार किया है तो अज्ञानियों के उपदेश के वास्ते और वशिष्ठ आदि ज्ञानी अधिकारी हैं इनकी देह एककल्प पर्य्यंत रहती है पर इनको आत्मा में जन्ममरण नहीं भासैहै महाराज मैंने सुना है कि जीव के तीन देह होती हैं वह कौनसी हैं ? परमहंस ने कहा कि एक तो कारण शरीर कहलाता है जो सुषुप्ति में होता है और दूसरा लिङ्ग शरीर कहलाता है जो स्वप्न में होता है सो १७ तत्त्व का होता है पांच कर्मइन्द्रिय हाथ, पावँ, वाक्, लिंग, गुदा और पांच ज्ञान इन्द्रिय अर्थात् आँख, नाक, कान, जिह्वा, त्वचा पाँच प्राण और एक मन और एक बुद्धि और तीसरा स्थूल शरीर है और इन शरीरोंसे आत्मा भिन्न है इन तीनों शरीर ही में पांच कोष हैं कारण शरीर को आनन्दमय कोष कहै हैं और पांच ज्ञानइन्द्रिय और अन्तःकरणकी वृत्ति बुद्धि को विज्ञानमय कोष कहते हैं और पांच ज्ञानइन्द्रिय और मनके संकल्प विकल्प को मनोमय कोष कहतेहैं और पांच प्राण और पांच कर्मइन्द्रिय को प्राणमय कोष कहते हैं और स्थूलशरीर को अन्नमय कोष

कहतेहैं कोषका अर्थ म्यान है अर्थात् आत्माका ढापने वाला है कोई इस देह को आत्मा कहता है और कोई इन्द्रियों को आत्मा कहता है और कोई प्राणको कोई बुद्धिको और कोई आनन्दमय कोष को आत्मा कहता है सो सब यह अज्ञान के कार्य्य हैं अब देखो स्वप्न के समय स्थूल शरीर नहीं भासता और सुषुप्ति में सूक्ष्म शरीर का भी अभाव परन्तु आत्मा का भान होता है क्योंकि सुख स्वरूप आत्मा है और सुषुप्ति में सुख प्राप्त है जो सुषुप्ति में सुख न होता तो क्यों ऐसा उठ कर कहता है कि बड़े सुख से सोये देखो आत्मा तीनों अवस्था में वर्त्तमान है जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति तीनों में है और पांच कोष तीनों अवस्था में नहीं होते और जो वस्तु कभी हो और कभी न हो सो वह सत्य और व्यापक नहीं होसक्ती देखो सब मतवाले इन पांचों कोषों में फँसे हैं और आत्मा इन पांचों कोषों से भिन्न और इनका प्रकाशक है आत्मा सत् चित् आनन्द-रूप है यह उसके गुण नहीं हैं गुण कभी रहता है कभी नहीं रहता सो आत्मा सदा सत् चित् आनन्दमय है यह रूप उसका स्वरूपही है जैसे अग्नि का स्वरूप दाह है जो कोई ऐसे कहै है कि अग्नि का दाह तो मन्त्र से दूर होजाता है मन्त्रवाला अग्नि मुख में रख लेता है पर मुख नहीं जलता सो दाह अग्नि का गुण है जो स्वरूप होता तो कभी दूर न होता सो यह बात झूंठी है देखो अग्नि का दाह दूर नहीं होता परन्तु मन्त्र के बल से मुख और अग्नि के बीच में परदा पड़-

जाता है इसीसे मुख नहीं जलता इससे विदित हुआ कि आत्मा व्यापक है सो अपना स्वरूपही है कुछ ज्ञान से ब्रह्म नहीं मिलता क्योंकि ब्रह्म कुछ दूसरी वस्तु नहीं है यह आपही ब्रह्म है अपने को न जानना बन्धन है और ब्रह्म जानना मोक्ष है ॥

दो० वाणीवचन न कहिसकै, वचनमाहिंवहहोय।
कह्योअवाच जिस ब्रह्मको, वाणी बोलै सोय ॥
जैसे स्वप्ने के विषय, राजा मांगी भीख।
वृन्दाबन जब जागियो, था वहराजाठीक ॥
अज्ञानी के कर्म्म बश, इच्छाउत्पतिहोय।
वृन्दाबन वह वासना, जन्मधरावैसोय ॥

और भाई उत्पत्ति प्रलय महाप्रलय यह माया है सो मायाका बहुत बिचार करना कुछ प्रयोजनका नहीं क्योंकि जिस वस्तुको दूर करनाहै उसका बहुत वृत्तान्त निश्चय करना वृथाहै देखो बारूदका हाथी जो अच्छे प्रकार उड़े तो प्रशंसाहै बारूदके हाथीके स्वरूपकी प्रशंसा नहींहै इसी प्रकार मायाका उड़ादेनाही अच्छा है और उसके कामोंका निश्चय करना कुछ आवश्यकता नहीं है महाराज आपने बहुत ठीक कहा आपने जीव ब्रह्मका वर्णन तो किया परन्तु आपने ॐकारका भेद कुछ न कहा और मैंने सुनाहै कि वेदान्ती ॐकार की अहं ग्रह उपासना करतेहैं परमहंस ने कहा सुनो ब्रह्म का चिन्तवन ॐकारस्वरूप करके अहंध्यान से होताहै ॐकार अक्षर ब्रह्मस्वरूपहै सो अभ्यासी चिन्तवन करे हैं ॐकार ब्रह्मस्वरूपमें ही हां निर्गुण ब्रह्मको परब्रह्म

कहतेहैं और सगुणब्रह्म को अपर ब्रह्म कहते हैं सो नि-
र्गुण ब्रह्मका चिन्तवन करना चाहिये जिससे मोक्ष
प्राप्त होता है और जो अपर ब्रह्मका चिन्तवन करैहै
उनको ब्रह्मलोक प्राप्त होताहै और जो निर्गुण उपा-
सना में ब्रह्मलोक की इच्छा होय तो मोक्ष नहीं प्राप्त
होता ब्रह्मलोक प्राप्त होताहै वहां हिरण्यगर्भ के सदृश
सुख भोगकर ज्ञान होताहै तब मुक्ति होतीहै अब नि-
र्गुण उपासना का यह मार्गहै कि जो कुछ उत्पन्न हुआ
है और जिसने उत्पन्न कियाहै सब ॐकार हैं और सब
वस्तुओं में नाम और रूप दो भाग हैं सो नाम से रूप
पृथक् नहीं इस निमित्त कि जब बैल कहा तो सुनने
वाला बैल समझैगा रोटी न समझैगा उससे नाम स्व-
रूपमें मिला हुआ है और सब नामोंका मूल ॐकारहै
क्योंकि यह प्रणव शब्दहै इससे वेदकी उत्पत्तिहै और
वेदसे सब नामोंकी उत्पत्तिहै इससे सब नाम और रूप
ॐकारमें हैं और इसी प्रकार सब नाम और रूप ब्रह्म
में हैं इससे ब्रह्म और ॐकार एक हुआ ब्रह्मवाच्य है
और ॐकार वाचकहै सो वाच्य और वाचकमें भेद नहीं
हुआ कर्त्ता अब ब्रह्म और आत्मा और ॐकारकी इसी
प्रकार एकता है विराट् हिरण्यगर्भ ईश्वर और तत्
पद का लक्ष्य साक्षी यह ब्रह्मके चार भागहैं और आत्मा
के चार भागहैं बिश्व, तैजस, प्राज्ञ और त्वंपदका
लक्ष्य साक्षी जीव जीवसाक्षी को तुरिया भी कहतेहैं
विराट् उसको कहतेहैं कि चैतन्य सम्पूर्ण प्रपंच सहित
और विश्व उसे कहते हैं कि जिस व्यष्टि स्थूल अभि-

मानीहै और विश्वभी विराट्‌रूपहीहै इसीप्रकार ॐकार का पहिला अक्षर अकार विराट्‌रूपसे अभेदहै विराट् ब्रह्मका पहिलाभाग और विश्वजीव का पहिला भाग अकार पहिला अक्षर ॐकारका है जोकि तीनों पहिले हैं इस हेतु से अभेदहै हिरण्यगर्भ और तैजस और ॐकार जोकि दूसरा अक्षर ॐकार काहै एक है प्राज्ञ और ईश्वर और मकार तीसरा अक्षर ॐकारकाहै एक है और ॐकारकी अ मात्रा चौथा पाद और ब्रह्मका चौथा हिस्सा ईश्वर साक्षी और जीवका चौथा हिस्सा जीवसाक्षी जिसको तुरिया कहतेहैं यह चारों एकहैं ऐसे चिन्तवन न करना इसको लयचिन्तवन और निर्गुण उपासना कहे हैं महाराज कुछ समाधिका वृत्तान्त बताइये सुनो समाधि दो प्रकार की होतीहैं एक निर्विकल्प दूसरी सविकल्प सविकल्प समाधि में त्रिपुटी अर्थात् ध्येय, ध्याता, ध्यान द्वैत ब्रह्मरूपही प्रतीत होवैहै जैसे रुपया और चांदी रुपया चांदी रूपही भान होवैहै निर्विकल्प समाधि में भी त्रिपुटी होवैहै परन्तु ऐसे जैसे पानी में नोन घुलाहोता है नोन होता तो है पर दीखता नहीं देखो सुषुप्ति में अन्तःकरण का अभाव है परन्तु निर्विकल्पमें अन्तःकरण वृत्ति सहित होताहै पर घुले नोन के सदृश है प्रतीत नहीं होता और निर्विकल्पका फल यह है कि वृत्ति भी जातीरहै जैसे पानी की बूंद गर्म लोहेमें प्रवेश करैहै ऐसे अन्तःकरणकी वृत्ति ब्रह्म में लय होवैहै सुषुप्तिमें अन्तःकरण का लय अज्ञान में होवैहै समाधि में और सुषुप्ति में केवल इतनाही भेदहै

निर्विकल्प में चार विघ्न होतेहैं लय १ निद्राकरके वृत्ति का अभाव विक्षेप २ वृत्ति ब्रह्माकार होनेगई पर जोकि ब्रह्म बहुत भीनाहै वृत्ति घबड़ाकर लौट आई कषाय राग द्वैत संस्कार ३ रसास्वादः ४ जब विक्षेप न होवे और वृत्ति बिना ब्रह्माकार हुये सविकल्पका सुख भोगे महाराज आप लो जो सुनावें हैं सो अनोखी अनोखी सुनावैं हैं मैंने बड़ों २ के मुखारबिन्दसे सुनाहै कि विष्णु शिव आदि का ध्यान हुआ करताहै आपने पूजा भी उड़ाई और ध्यान भी भगवान् का उड़ाया परमहंसने कहा कि सुनो ॥

दो० विष्णुशिव और शक्ति यह, गणपतिसूरजआदि।
यह उपजे उस एक में, सो हैं देव अनादि ॥
अजर अमर वह एक है, नहिं कृत्रिम हो सोय।
वृन्दाबन आकार जो, महाप्रलय गयो खोय॥

महाराज मुझसे एक बात यह पहले और कह दीजिये कि वाममार्गी क्या होता है चारों वेदों से बाहर है या क्या और महाराज नास्तिक मत क्या है भाई तुमसेहारे (कहां राजाभोज कहां गंगातेली) कहां से कहां जापड़े खैर इस वाममार्गका भी वृत्तान्त सुनो वाममार्ग में भगकी पूजा होती है जो एकसमय हजार स्त्रियों की भगकी पूजा उनको मिलजाय तो जीतेजी ही उन की मुक्तिहै यह वाममार्ग है वाममार्गी मदिरा को तीर्थ कहतेहैं प्याजको व्यास कहतेहैं सुनो हमने तो ऐसाही सुना है कि वाममार्गी प्रत्यक्षमें वेदोंके विपरीतहैं और ऋग्, यजुर, साम, अथर्वण इनचारों वेदोंमें कहीं ऐसा

उपदेश नहींहै और लोग कहतेहैं कि महादेवजीसे इस मार्गकी उत्पत्ति है अपनी बुद्धि में कुछ ऐसा आता है कि जिस वस्तुको वैष्णवमत में बुरा कहा है उसीको वाममार्ग में अच्छा बतलाया है इससे ऐसा विदित होताहै कि वाममार्ग के आचार्य्यने एकता सिद्धि कराई है जिसको लोग बुरा समझतेहैं वह बुरा नहींहै अच्छा बुरा सबको एकसा निश्चय करायाहै परन्तु देखो स्वप्न का विष और मिठाई एकसी तो है नतो उस मिठाई से भूख जाती है और न उस बिष से कोई मरता है तो भी मिठाई सबको पसन्द है इसी प्रकार जिस मत में अच्छे कर्म हैं वह मिठाईके बराबरहैं और जिसमें निषेध अशुद्धकर्महैं वह कड़वी भ्रष्ट वस्तुहैं और उससे घृणा होती है ऐसा वाममार्ग है ॥

हां शाक्तमत दक्षिणावना ऐसा नहींहै उसमें शक्ति की शुद्ध पूजाहै बहुधा वैष्णवभी पूजतेहैं उससे शक्तिलोक की प्राप्ति है और जो शक्तिको निर्गुण व्यापकरूप करके ध्यान करैहैं उनकी गति और उत्तम होगी और जिस पूजा में हिंसा और मदिरापानहै वह मार्ग पर विरक्तवालोंकाहै उनको किसी तरहकी भी मुक्ति से प्रयोजन नहीं इसलिये इसका वृत्तान्त बहुत लिखना निष्फलहै तुम प्रसिद्ध देखलो कि लक्ष्मी का स्वभाव सतोगुण है उनकी पूजा में जीववध नहीं और उस शक्ति का स्वरूप काली भवानीहै सो तमोगुण मूर्त्ति है और दुष्ट क्षयकरने को धारण कियाहै जैसे कोई पुरुष समयाधीन क्रोधमेंहै उससे मिलना न चाहिये न उस

समयके कामोंको उत्तम समझना चाहिये न उससमय की मूर्तिकी उपासना योग्यहै हां जिसके भाग्य ओछेहैं वह सतोगुण रूपको छोड़के तमोगुणरूपसे प्रीति करै हैं और शुभपूजा और सुकर्मको त्यागिकै अशुभ कर्म धर्मशास्त्र के विपरीत करै हैं॥

अब नास्तिक मतका वृत्तान्त सुनो नास्तिक वहहै जो कर्त्ता नहीं मानते और कहते हैं कि जगत् आपही आप उत्पन्न होता है और नाश होता है अर्थात् जहां चार तत्त्व मिले वहां कुछ आकार बनजाता है चाहो आदमी या जीवजन्तु आदि जैसे तेल बत्ती दिया और आग चारों एकस्थान पर हुये और दीपक प्रकाशहुआ इसी प्रकार चारतत्त्वके मिलनेसे मनुष्य सजीव बनगया कोई और दूसरा बनानेवाला नहीं॥

अब देखो कि तत्त्वों में नास्तिकों के अनुसार यह सामर्थ्य ठहरी कि वह आपसे आप मिलके एकस्वरूप बनजाते हैं देखो जो काम औरोंने एक ईश्वर में कहे वह इन नास्तिकों ने चारतत्त्वों में कहे औरों के एक कर्त्ता और नास्तिकोंके चार कर्त्ता और देखो जो कोई कर्त्ता नहींहै तो उत्पत्ति इस प्रबन्धसे नहीं होसक्ती जब बिना किसी कारणके आपसे आपही उत्पत्ति होती तो एक आदमी सौगज़ का और दूसरा पांच गज़का एक के नेत्र शिरपर दूसरे के पैर में एककी अवस्था लाख वर्षकी होती और एककी दोचार दिनकी जो कि उत्पत्ति में यह बात नहीं है इससे यह उत्पत्ति किसीके विचार से है और जब इरादाहुआ तो इरादा करनेवाला भी

हुआ सो इन नास्तिकों में तत्त्वोंको इरादा करनेवाला मानाहै इस से इन्होंने चार कर्त्ता माने यथार्थसे देखो तो चार तत्त्व इनके चार कर्त्ता हुये और इन चारों का मिलना पांचवीं शक्ति हुई अब ऐसे सपूतों का क्या कहना है कि जिनको पांचकर्त्ता अनादि वर्त्तमान और जिनका स्वीकारभीहै और फिर नास्तिक बनते हैं वाह महाराज वाममार्गी और नास्तिकों का वृत्तान्त अच्छा सुनाया वृथा समय व्यतीत हुआ और महाराज यह बड़ा सन्देहहै कि सब शास्त्रों में भी आपस में भेद है सुनो शास्त्रों का आशय तो बहुधा करके आत्माहीका विषय है परन्तु वेदान्तशास्त्र व्यास भगवान् का जो ईश्वर के अवतारथे कहाहुआहै और दूसरे शास्त्रयुंजान योगियों के कहे हुये हैं और देखो जब मक्खन निकालना होताहै तो दूध हांड़ी रस्सी लकड़ी आदि कितनी ही वस्तु होती हैं तब मक्खन निकलता है सो वेदान्त शास्त्र दूध है और शास्त्र रस्सी आदि के समान हैं सो जब दूध मथा गया तब ब्रह्मज्ञान मक्खन निकला॥

दो० बुद्धि इन्द्रियां आदिसब, द्वैत भयो जब नाश।
वृन्दाबन जो रहगया, सो है ब्रह्मप्रकाश॥

अब महाराज कहिये कि आपने स्वप्नसृष्टि और जाग्रत्सृष्टि की ऐक्यता बताई पर मुझे अबभी भेद मालूम होता है क्योंकि जाग्रत्काल के पदार्थ दूसरी जाग्रत् सृष्टिमें मिलेहैं और स्वप्नसृष्टि के पदार्थ दूसरे स्वप्नसृष्टि में नहीं मिलेहैं तो स्वप्नसृष्टि और जाग्रत् सृष्टि की ऐक्यता किस प्रकार होसक्ती है परमहंस ने

कहा कि वाहरे खिलाड़ी अबतो तू वेदान्तकी चोटीकी ख़बर लेनेलगा देखो जैसे स्वप्नमें एकही कालमें आप देखनेवाला और सामग्री पैदा होती है और स्वप्नमें भी उसको दीखताहै कि यह सामग्री सब पहलीहै जो कल थी वह आजभी है क्योंकि स्वप्नमें भी तो युग बर्ष महीना दिन सभी तो होता है इसी प्रकार अविद्या के कारण से एक कालमें यह जाग्रत्का जीव और प्रपञ्च उत्पन्न होताहै परन्तु अविद्याका यह खेल है कि ऐसा मालूम होता है कि यह सामान कलका है अविद्या का सतोगुण अंश ज्ञानरूप होवैहै और तमोगुण अंश घटरूप होयहै सो दोनों एकही काल में पैदा होते हैं यह वेदका मुख्य सिद्धान्त है इससे यह विदित हुआ कि कलके पदार्थ आज नहीं दीखे हैं नवीन पैदा होते हैं परन्तु अविद्या का यह लक्षण है कि जैसे अनहुये पदार्थ दिखलावैहै वैसेही अनहुआ काल अर्थात् समय भी हर बस्तुमें दिखलावे है सो सब अनिर्बचनीय है और जो तुम कहो कि जाग्रत् जगत् के घड़ेका बनाने वाला कुलालदण्ड होता है और स्वप्नमें तो अविद्या बनाती है सो देखो स्वप्नमेंभी कुलाल चक्र और दण्ड सेही घड़ा बनताहै जो घड़ा रात्रिको स्वप्नमें तुमने मोल लिया सो कुम्हारकी दूकान सेही तो मोल लिया था और कुम्हारको तुमने घड़ा बनाते भी देखा था चक्र भी था दण्ड भी था और वास्तवमें कोईभी न था इसी प्रकार यह प्रपञ्च कुछ नहीं है केवल एक तेरी स्फुरना है जिस समय स्फुरनाहुई तो जगत् वर्त्तमान और जब

स्फुरना नहीं तो जगत् भी नहीं जाग्रत् और स्वप्न मे स्फुरनाहै जगत् सम्पूर्ण सन्मुख है सुषुप्ति में स्फुरना नहीं जगत् का पता नहीं और देखो जहां तुम्हारी वृत्ति अर्थात् ध्यान न गया तो वहां कुछ वस्तु होने का क्या गुमानहै क्योंकि जहां तुम नहींहो वहां कुछ होय या न होय तुमको तो अनहुआही है जब तुम अपने बिचारमें किसी वस्तुको मानतेहो अर्थात् तुम्हाराध्यान जब उस वस्तुतक पहुंचता है तब उसका होना तुम्हें भासता है और जब तुम्हारी वृत्ति एक वस्तुको ग्रहण नहीं करती तो उसका होना कब ठीक होसक्ताहै इससे भाई जगत् स्फुरनाके साथ उत्पन्न होताहै कलका नहीं है जैसे दीपक जलता है और नदी बहती है सो जिस जिस समय तुम देखोहो उस २ समय दीपककी लव नवीन है और नदीका पानी नवीनहै न पहली लव है न पहला पानीहै इसको दृष्टि सृष्टिबाद कहैहैं महाराज अबतो मेरी समझ कुछ औरही हुई जाती है आपकी चर्चा क्या है मानो दर्पणहै ॥

शब्द बिलावल महला तीसरा ॥

अतुल क्यों तुलया जाय । दूजा होय तो सूझी पाय ॥
तिससे दूजा नाहीं कोय । तिसदी क़ीमत काके होय ॥
गुरुप्रसादि बसे मनआय । ताके जाने दुविधा जाय ॥
रहाव— आप सराफ़ कसौटी लाये । आपहि परखे आपचलाये ॥ आपहितौलापूराहोय । आपहिजाने सांचा सोय ॥ मायाकारूप सामितसे होय । जिसनू मेले सो निर्म्मल होय ॥ जिसनूलाये लागे तिसआय ।

सब सच दिखालेता सच्चसमाय ॥ आप लिवधातु है आपहि। आपबुझाये आपहि जापहि ॥ आपहि सद्गुरु शब्दहै आपहि। नानकआखसुनाये आपहि ॥

महाराज मैंने आपको अत्यन्त परिश्रम दिया है परन्तु दोचार बात औरभी कहदीजिये यह किसप्रकार कि एक स्थानपर तो आप ने कहा कि मैं ब्रह्महूं और दूसरी जगह कहा कि सब ब्रह्महै और कहीं ईश्वर को कर्त्ता कहा कहीं माया को परमहंस ने कहा कि सुनो इसको विधिनिषेध कहते हैं विधि वचन तो यह है कि सब ब्रह्म है और निषेध यहहै कि मैं ब्रह्महूं अब प्रयोजन दोनोंका एकहीहै यथा किसी स्थानपर १० मनुष्य बैठेहों और उनमेंसे एक आदमी ९ मनुष्यको उठाना चाहताहो तो हरएक से बोला तू भी जा तू भी जा केवल मैं रहूंगा अब इस कहनेसे यह प्रयोजन हुआ कि जो दृष्टमानहै सो सब जानेवालाहै एक मैंही रहूंगा यह निषेध वचन हुआ कि इसमें ९ मनुष्योंका निषेध किया और आपही रहा और जो ऐसे कह देता कि एकही रहै तो बिधि बचन होता इससे यह आशय है कि वह ९ मनुष्य उसी दशवेंमें लय होजायँ या नाश होजायँ इससे दशों एकही होगये अर्थात् सब जगत् ब्रह्म होगया सो एक रहा इससे दोनों प्रकारके कहने से एकही रहा क्यों महाराज ! तो ब्रह्म आपही जगत् होजाता है सुनो जगत् भ्रम है जैसे रस्सीमें सर्प इस प्रकार जगत् ब्रह्ममें है और ब्रह्मसे इसी प्रकार जगत् नहीं बनता है जैसे कुम्हार और मिट्टीसे घड़ा बनताहै

महाराज आपने माया को जगत् का कर्त्ता कहाहै और माया भ्रम है तौ उससे जगत् की उत्पत्ति कैसे होसक्ती है परमहंस ने कहा कि सुनो जैसे सूर्य आपभी प्रकाशितहै और अन्यों को भी प्रकाश देताहै इसी प्रकार माया आपभी भ्रम है और भ्रमका कारणभी है सुनो एक दृष्टान्त है इसको भली प्रकार समझना जो तुम इस दृष्टान्त को खूब समझ लोगे तो तुमको कोई सन्देह न रहैगा देखो जब कोई घूमता है तो उसको मकान हवेली घूमती विदित होतीहै अब जो घूमनेवाला केवल निर्बुद्धि है या बालक है तो वह यह जानता है कि मकान फिर रहाहै और देखो तो उसका ज्ञान सच्चा भी है क्योंकि हवेली घूमती दीखैहै अब तुम वास्तवमें उसके ज्ञान को सत्य कहोगे या मिथ्या वास्तव में तो हवेली फिरने का ज्ञान असत्य है क्योंकि हवेली तीन कालभी नहीं घूमी सत्यज्ञान उसे कहैहैं जो ज्ञान ज्ञेय के अनुसार होय हां हवेली तो स्थिर और घूमती देखी इसलिये यह सत्य ज्ञान नहीं हुआ भ्रम हुआ अब जो भ्रमका कारण घुमेरी है सो भी कुछ पदार्थ नहीं अब दृष्टान्त सुनो यह प्रपंच और आवागमन सब भ्रम है ब्रह्म स्थिर और निर्विकारहै उसमें प्रपंच कहांपर अज्ञानियों के माया और मायाका कार्य सत्य दीखै है सोई अज्ञान है और तुम कहो कि सो ज्ञानी को भी दीखैहै जैसे बड़े मनुष्य को भी हवेली घूमती दीखे है परन्तु वह जानैहै कि हवेली कभी नहीं घूमी इसी तरह ज्ञानी का निश्चय है प्रारब्धाधीन प्रपंच दीखै है पर असत्य

जानै है जबतक घुमेरी रहै है तबतक हवेली फिरती दीखैहै सो ज्ञानीका प्रारब्ध जो पहिले रचागयाहै उसके अनुसार दीखै है अब तात्पर्य यह है कि माया और माया का कार्य दोनों भ्रमहैं और देखो किरीट कुंडल कुछ सोने से आप भिन्नपदार्थ है ऐसे ब्रह्मही जगत् है पर नाम और रूप मिथ्या है महाराज जो सब प्रपंच भ्रम है तो अन्तःकरणभी भ्रमहुआ अब भ्रम अन्तःकरणकी वृत्ति आत्माको कैसे पहचानेगी परमहंस ने कहा देखो वृत्ति ब्रह्मको विषय नहीं करती अर्थात् ब्रह्म को नहीं देखती परन्तु अविद्याको दूर करती है इसको वृत्ती व्यापती कहैहैं जब अविद्या दूर हुई तो वृत्ति में से अविद्या दूर हुई केवल ब्रह्मही रहगया और सुनो वेदान्तशास्त्र में जहां ईश्वरको उपादान और निमित्तकारण कहाहै उसकी यह रीतिहै कि जैसे घड़ेका उपादानकारण मृत्तिका है और निमित्तकारण कुलाल चक्र आदि इसी प्रकार जगत्का उपादानकारण माया है और निमित्तकारण चैतन्यहै जैसे मकड़ीके जाले में मकड़ी का शरीर तो उपादान है जहां से जाले को उत्पन्न करैहै और उसका चैतन्य निमित्तकारण है अब चैतन्य ईश्वर और मकड़ी का पृथक् रहा वह ज्ञानस्वरूपहीहै और देखो ईश्वरको जगत्का कर्त्ता कहना अज्ञान में बनै है क्योंकि न जगत् है और न ईश्वरहै भ्रमहै केवल अज्ञानीके समझाने के निमित्त ईश्वरको कारण कहागया देखो जब कि अनाज बोना होताहै तो पहिले खेतमें हल चलाते हैं दानाडालकर पानी देते हैं

ब्रह्म जगत् का कारण है या प्रधान आदिहै इसको प्रमेयगत संशय कहैहैं ब्रह्म स्वतः सिद्धहै पृथ्वी आदि की नाईं सो और प्रमाणसे जानाजायगा फिर श्रुतिका प्रयोजन रहा नहीं इसे प्रमाणगत असम्भावना कहै हैं ब्रह्मको जगत्से और प्रकारसे स्थित होनेसे जगत् का कारण कैसे बनै नहीं वनता ऐसे निश्चय को प्रमेय-गत असंभावना कहै हैं ॥

ब्रह्मको स्वतः सिद्ध होने करके श्रुति को ब्रह्मको प्रतिपादन के बिषे निष्फलता है इसलिये श्रुति कर्महीको बोधन करैहै ऐसे निश्चयको प्रमाणगत विपरीत भावना कहैहैं तन्तु और पटकारण और कार्य्य सदृश रूपवाले दीखेहैं और जगत्की और ब्रह्मकी सादृश्यता नहींहै इसलिये प्रधान आदिक जगत्का कारणहै ऐसे निश्चयको प्रमेयगत विपरीत भावना कहैहैं महाराज सत्य है अब यह सन्देह उत्पन्नहुआ जो आपने कहा है कि जगत् तेरी स्फुरना से है सो महाराज जो मेरी स्फुरना से है तो मैंने तो कभी दुःख की स्फुरना न की होगी फिर मुझे दुःख कहांसे हुआ परमहंसने कहा कि सुनो कि जब जगत्की स्फुरनाहुई तो सभी वस्तु आगई क्योंकि जगत् नाम सुख का नहीं है जगत् नाम दुःख सुख दोनों का है जैसे रातकी स्फुरना की तो अन्धकार चन्द्रमा नक्षत्र सभीहैं इसी प्रकार जगत्के साथ दुःख सुख दोनों हैं महाराज आपने कहाहै कि चैतन्य ज्ञान-स्वरूप है तो चैतन्य को जगत् भासता होगा जो भा-सता नहीं तो ज्ञानस्वरूप क्या ठहरा। परमहंसने कहा

और निराव करते हैं और रात्रिदिन खेतकी रक्षा करते हैं कि कोई हाथ न लगावे और जब अनाज पका तो आप मालिक अपने हाथ से काटने लगता है देखो एकदिन तो उस वस्तुकी कितनी रक्षाथी और एक दिन आपही काटनेलगा इसी प्रकार भाई अज्ञान में ईश्वर सत्य है बड़ी २ महिमा के योग्य है कर्त्ता है पालताहै और रक्षाकरता है परन्तु जब ज्ञान आया तब माया की वह दशा है कि जैसे पके नाज के खेतकी होती है चैतन्यमात्रही नियत रहता है और सुनो जैसे वैद्य रोग दूरहोने के वास्ते जुल्लाब देताहै तो उस समय जुल्लाब की बड़ी महिमा है क्योंकि रोगको दूर करता है परन्तु अन्त में उस जुल्लाबको भी दूरही करना पड़ता है अगर जुल्लाब पेटमें रहजाय तो वह दुःख का हेतु होता है इससे वैद्य उस जुल्लाब को भी पेटसे निकलवाता है इसी प्रकार पहिले ईश्वर सत्य है दुःखको दूर करता है और ज्ञान में ईश्वर काभी अलग करना अवश्य पड़ता है किन्तु यहांतक कि यहभी भूल जाय कि मैं ब्रह्महूं या सब ब्रह्म है इसको निर्विकल्प समाधि कहते हैं परन्तु जबतक देहहै तो प्रारब्ध के वेग से ज्ञानी का समाधि से उत्थान होजाता है क्योंकि जीव बुद्धि का अग्रगामी है जब बुद्धि ब्रह्मकी ओर जाती है तो पहिले जीवको कूटस्थके साथ ऐक्यता होती है परन्तु बुद्धि फिर उत्थान करालातीहै सुनो एक बात और समझो कि श्रुतियोंने कर्म बोधक कियाहै या सिद्धि ब्रह्म को प्रतिपादन करे हैं इसको प्रमाणगत संशय कहे हैं॥

ब्रह्म जगत् का कारण है या प्रधान आदिहै इसको प्रमेयगत संशय कहैहैं ब्रह्म स्वतः सिद्धहै पृथ्वी आदि की नाईं सो और प्रमाणसे जानाजायगा फिर श्रुतिका प्रयोजन रहा नहीं इसे प्रमाणगत असम्भावना कहै हैं ब्रह्मको जगत्से और प्रकारसे स्थित होनेसे जगत् का कारण कैसे बनै नहीं बनता ऐसे निश्चय को प्रमेयगत असंभावना कहै हैं ॥

ब्रह्मको स्वतः सिद्ध होने करके श्रुति को ब्रह्मको प्रतिपादन के बिषे निष्फलता है इसलिये श्रुति कर्महीको बोधन करैहै ऐसे निश्चयको प्रमाणगत विपरीत भावना कहैहैं तन्तु और पटकारण और कार्य्य सदृश रूपवाले दीखैहैं और जगत्की और ब्रह्मकी सादृश्यता नहींहै इसलिये प्रधान आदिक जगत्का कारणहै ऐसे निश्चयको प्रमेयगत विपरीत भावना कहैहैं महाराज सत्य है अब यह सन्देह उत्पन्नहुआ जो आपने कहा है कि जगत् तेरी स्फुरना से है सो महाराज जो मेरी स्फुरना से है तो मैंने तो कभी दुःख की स्फुरना न की होगी फिर मुझे दुःख कहांसे हुआ परमहंसने कहा कि सुनो कि जब जगत्की स्फुरनाहुई तो सभी वस्तु आगई क्योंकि जगत् नाम सुख का नहीं है जगत् नाम दुःख सुख दोनों का है जैसे रातकी स्फुरना की तो अन्धकार चन्द्रमा नक्षत्र सभीहैं इसी प्रकार जगत्के साथ दुःख सुख दोनों हैं महाराज आपने कहाहै कि चैतन्य ज्ञानस्वरूप है तो चैतन्य को जगत् भासता होगा जो भासता नहीं तो ज्ञानस्वरूप क्या ठहरा। परमहंसने कहा

कि सुनो चैतन्य ज्ञानस्वरूप है परन्तु जगत्का ज्ञान नहीं करता क्योंकि जगत्का ज्ञान अन्तःकरण की वृत्ति कहैहैं परन्तु अन्तःकरण की वृत्तिको ज्ञान की शक्ति देनेवाला चैतन्य है जैसे दीपक आप तो नहीं देखता परन्तु नेत्रों को देखने की सामर्थ्य देता है जो चैतन्य ज्ञानका प्रकाशक न होता तो अन्तःकरण की वृत्तिको ज्ञान नहीं होसक्ता जैसे अन्धकारमें दीपक बिना नेत्रों को देखने की सामर्थ्य नहीं है इससे जैसे दीपक देखता नहींहै परन्तु दिखलाताहै और दीपकको प्रकाशक कहते हैं इसी प्रकार ब्रह्म जगत्को नहीं देखता परन्तु दिखलाता है इस कारण ज्ञानस्वरूप कहागया और देखो जो ब्रह्मको ज्ञाता और द्रष्टा कहा है उसकी यह रीतिहै कि जैसे लोहेका गोला अग्नि में गर्म किया हुआ है जो वह देहसे लगजाय तो कहतेहैं कि गोले ने जलाया परन्तु देखो गोला जलानेवाला नहींहै अग्नि ने जलायाहै परन्तु जोकि अग्नि गोलेके आश्रयहै इस लिये गोले का नाम कहा गया इसीप्रकार ज्ञातापन तो बृत्तिमें है परन्तु चैतन्यके आश्रयहै इसी हेतुसे चैतन्य को ज्ञाता कहा गया॥

महाराज आपने अज्ञान असत्य कहा इससे अज्ञान ऐसा है जैसे बन्ध्यास्त्रीका लड़का अब उसलड़के के सन्तान नहीं होसक्ता क्योंकि वह आपही नहीं है फिर इसी प्रकार अज्ञान से रचना नहीं होनी चाहिये थी क्योंकि अज्ञान भी तो कोई वस्तु नहींहै और जो आपने सुषुप्तिमें जगत् का बाध्य बतलाया तो अन्धों

को भी जगत् नहीं भासता परन्तु जगत्का बाध्य नहीं सिद्ध होसक्ता॥

परमहंसने कहा सुनो हम प्रपञ्चको भी तो ऐसाही असत्य कहतेहैं जैसे अज्ञानको जो बन्ध्यास्त्रीका लड़का दीखै तो निस्सन्देह उसके सन्तति भी होसक्तीहै और जो बन्ध्या स्त्री के लड़का नहीं तो सन्ततिभी नहीं इससे हमारा यही प्रयोजनहै कि अज्ञानी लोग बन्ध्याके पुत्र को चिन्तवन करते हैं और उसके सन्ततिभी देखतेहैं अर्थात् अज्ञानको भी सत्य मानतेहैं और इस जगत् को भी सो अज्ञान और यह जगत् दोनों असत्य हैं और जो तुमने अन्धे के विषयमें कहा उसका यह उत्तरहै कि जगत्बाध्य केवल ज्ञानी कोही है अज्ञानियों के दृष्टिमें तो सत्यही है और जबतक ज्ञानी की देह है तबतक यह जगत् भासैहै परन्तु कुछ ज्ञानीका बिगाड़ नहीं करता जैसे कि एकबार मृगतृष्णाके जलको देख लिया है और फिर वह उसी मार्ग होकर निकला तो उसको मृगतृष्णा का जल फिर दीखैगा परन्तु उसको धोखा नहीं होगा क्योंकि एकबार उसने वहां जाके देख लिया है कि वास्तवमें जल नहींहै परन्तु रेतकी चमक से जल दीखता है महाराज आपने पहिले कहा है कि ज्ञानीके सञ्चित कर्म जाते रहते हैं तो महाराज इसी प्रकार प्रारब्ध कर्म भी क्यों नहीं जाते रहते जिससे उसी समय जगत्का अभाव होजाय॥

परमहंसने कहा कि सुनो एक मनुष्यने एक गिलास भर मदिरा पीली है और एकबोतल उसके पास रक्खी

हुईहै अब बोतल तो दूर होसक्तीहै परन्तु पीहुई मदिरा नहीं दूर होसक्ती इसका तो नशा अवश्यही होगा इसी प्रकार प्रारब्धभी दूर नहीं होसक्ती है क्योंकि दुःख और सुख जो इस शरीर को होतेहैं वह पी हुई मदिरा के समानहैं महाराज ज्ञानीको प्रारब्धाधीन जगत्के सुख प्राप्तहुये वह उनके भोगने में लगा तो जीवन्मुक्त के सुखका त्यागहुआ इसी प्रकार ज्ञानी विदेह मुक्त का भी त्याग करदेगा सुनो ॥

दो० देह पात के होतही, जीव पुरुष का जोय ।
भया लीन आकाश में, निश्चय मानो सोय ॥
यह प्रपंच यक भर्म था, सर्प रज्जुमें भान ।
वृन्दाबन रज्जुज्ञान ते, सर्पलीन नभ जान ॥

देखो देहके वियोगपर ज्ञानीका अन्तःकरण चैतन्य आकाश में लय होजाता है क्योंकि प्रारब्धका बन्धन टूटा मूल सहित अविद्याका नाशहुआ और जैसे रस्सी में सर्पहै रस्सी का ज्ञान होतेही आकाश में लय हुआ है वह सर्प ढूंढ़े नहीं मिलता और जो ज्ञानी भोग करै है सो सत्य समझकर नहीं भोगता इससे जीवन्मुक्त का त्याग नहीं होता हां अधिक सुख जीवन्मुक्तको नहीं मिलता। महाराज ! एक सन्देह और उत्पन्न हुआ है कि वेदमें इस जगत्की उत्पत्ति कहीहै और कई प्रकार से कही है यह समझमें नहीं आता यह कि एक वेद कई प्रकार की बातें कहीं । परमहंसने कहा कि यह प्रपंच मिथ्या अनहुआ है अब कहो कि जो वस्तु असत्य है वह उत्पन्न कब हुई मायाकी रचनाहै सो माया

अनिर्वचनीयहै इससे वेदने जहां जैसा समझाहै वैसाही वृत्तान्त उत्पत्तिका लिख दिया है जो रचना सत्य होती तो एकही प्रकारसे कही जाती अन्य सब मतों में भी उत्पत्ति के विषयमें विरुद्ध है इससे जैसा जिसकी बुद्धि में आया वैसाही लिख दिया और यह भी सत्य है कि पचास मनुष्यों ने मनोराज की सृष्टि बनाई अब अपनी अपनी सृष्टिकी उत्पत्ति जैसी जैसी कही वह सही और वास्तवमें केवल वह एक सत्य है जिसने पचास का वृत्तान्त सुनकर कहाथा कि सबको भ्रम हुआ था न कुछ उत्पन्न हुआ और न कुछ नाश हुआ और देखो कि सब कहते हैं कि पहिले एक ईश्वर था और पीछे ईश्वरही रहेगा तो जो कुछ बीचमें हुआ वह पहिले ईश्वरहीथा जब इसका अन्त आवैगा तब फिर ईश्वरही होगा इससे मध्य में भी ईश्वरही है जो मध्य में कुछ और होजाता तो ईश्वर नहीं होसक्ता था जैसे दूधका दही हुआ और तरुणसे वृद्ध हुआ अब दही दूध नहीं होसक्ता और वृद्ध तरुण नहीं होसक्ता अब जैसे दूध सत्य है वैसे दही भी सत्यहै इससे जो तुम ऐसा मानो कि जगत् ईश्वर से पृथक् है और ईश्वर नहीं होसक्ता तो उत्पत्ति को नाशवान् कहना अशुद्ध है क्योंकि जैसे ईश्वर स्थिरहै वैसाही जगत्‌भी स्थिर रहैगा परन्तु सब छोटे बड़े मतोंमें ईश्वर को एकही कहाहै और जो दीखता है उसको नाशवान् कहा है इससे साबित हुआ कि जो कुछ दीखता है सो ईश्वरसे भिन्न और कोई दूसरी वस्तु नहींहै भ्रमसे उसको पृथक् समझाहै अब

देखो कि जब सम्पूर्ण जगत् ब्रह्मही है तो चैतन्य कुछ और होगा जो ऐसा कहते हैं कि ईश्वरने शून्यसेही सबको उत्पन्न कियाहै हम पूछते हैं कि शून्य कोई स्थान है जो शून्य स्थानहै तो ईश्वर सर्वत्र न हुआ क्योंकि ईश्वरका होना शून्यमें नहीं होसक्ता इस से एक शून्य और दूसरा ईश्वर दो हुआ और जो कहो कि शून्य स्थान नहींहै तो जब ईश्वर सर्वत्र है तो फिर उत्पत्ति का होना ईश्वर के सिवाय और कहांसे हुआ महाराज सत्यहै जो ध्यान करताहूं तो आपका कहना वास्तवमें सत्यहै क्योंकि जब केवल एक ईश्वर ही था उस समय यह जगत् न था परन्तु जैसे कि बाजे मतवाले कहते हैं कि ईश्वर ने अपनी शक्तिसे यह सब उत्पन्न किया इस से उत्पत्ति की मूल शक्तिहुई किन्तु यह कि सब उत्पत्तिमें से निकली और शक्ति शक्तिमान में थी इससे जो कुछ शक्तिमें से निकला वह शक्तिमानमें था और शक्तिमान केवल एकथा इससे वह जो निकलाथा वह शक्तिमानही था शक्तिमान से प्रयोजन साक्षात् ब्रह्मसे है। परमहंस ने कहा कि खूब समझो कि नैनू कपड़े में बेलबूटाहै पत्थरमें मूर्ति बनी है देखने में बेलबूटा और मूर्ति कपड़े और पत्थरसे अज्ञानी पृथक्ही जाने है परन्तु वास्तव में बेलबूटाभी तो कपड़ाहीहै और मूर्त्ति पत्थरही तो है॥

महाराज सत्यहै जगत् भ्रमहै और चैतन्यमात्र एक है परन्तु महाराज जब ब्रह्म व्यापकहै तो फिर अन्तःकरण में आभास कैसे होसक्ताहै और जो अन्तःकरण हुआ तो ब्रह्म कैसे व्यापक होसक्ता है जब एक

स्थान में दो वस्तु होंगी तो वह हर एक कैसे व्यापक होसकैंगी ॥

सुनो अन्तःकरण तो मायां का कार्य्य भ्रमहै जैसे सर्प और रस्सी एक समय पर एकस्थान पर वर्त्तमान थी जब सर्प दीखा तो रस्सी कुछ जाती नहीं रही रस्सी आप भी वर्त्तमानथी और सर्प भी था इससे भ्रमकी दशा में एक स्थानपर दो वस्तु रहसक्तीहैं और देखो आकाश व्यापकहै परन्तु जलमें आकाश का आभास पड़ता है इसी प्रकार ब्रह्मका आभास अन्तःकरण में है सत्य है महाराज अब यह कहिये कि जिन मनुष्यों ने वैकुण्ठमें मुक्ति मानीहै और कहते हैं कि विना ब्रह्म के देखो हम ब्रह्मका होना कैसे मानें उनकी क्या दशा है सुनो जिनकी उपासना पूरी होगईहै वह निस्सन्देह कल्पित वैकुण्ठ भोगेंगे जैसे जाग्रतमें जिस वस्तु में अभ्यास रहताहै वह स्वप्नमें प्राप्त होतीहै परन्तु प्रथम तो यहहै कि (क्षीणे पुण्ये मृत्युलोके विशन्ति) फिर जन्मरखना पड़ताहै दूसरे यह है कि जब वैकुण्ठ में रहैंगे तो उस समय भी कुछ दुःखही रहैगा क्योंकि वैकुण्ठमें अपने अपने अधिकार के अनुसार स्थान मिलैंगे जो विष्णुभगवान् के अत्यन्त समीपी होंगे उनकी ईर्षा अवश्य करैंगे जो दूर होंगे हां इस जगत्के सुखसे वहां अधिक सुख होगा परन्तु जो विषय आनन्द मनके विना नहीं होसक्ता और वैकुण्ठमें पदार्थ हीहै इससे वैकुण्ठीके शिर पर मन भरका वोझ बनाही रहा और अन्तको धक्काखाये परन्तु लोगोंकी समझ

पर पश्चात्ताप होताहै कि असल आशय नहीं समझते वेद शास्त्र पुराण आदि में वैकुण्ठकी प्रशंसा की है परन्तु गीतामें और उन्हीं वेद शास्त्र पुराण और वाणी में यह भी लिखाहै कि पुण्य दान सब कुछकरो परन्तु निष्काम करो और भगवान् के अर्पण करदो अब इस का प्रयोजन नहीं समझते जो वैकुण्ठ दिलाना स्वीकार होता तो सबकर्मों को अर्पण करना अपनी ओर क्या आवश्यकताथी इससे साफ़ बिदितहै कि भगवान् और महात्माओं का यह आशय रहाहै कि लोग शुभकर्म वैकुण्ठ के लोभसे करैं और जब मुझको अर्पण करैं तो मैं उनके बदले में उनके मनकी शुद्धीका फलदूं जिससे उनका मन शुद्ध होकर ज्ञान पावैं और मुक्त होजायँ अब लोग वैकुण्ठ ही जाने को मुक्ति माने हैं लोहे की बेड़ीकाटी और सोनेका तौंक गले में डाला परन्तु हां उनसे तौभी अच्छेहैं जो भूत प्रेत शीतला मशान आदिका पूजा करनाही मुक्तिमानैंहैं और जगत्के सुख को सुख मानाहो देखो सब वस्तुमें अस्ति भाति प्रियहै अर्थ इसका यह है कि कुछ है मालूम होता है और प्यारा है और अनाम रूप मायाकीर्त्ति नाशवान् है अस्ति भाति प्रिय सबकाल में वर्त्तमानहै जैसे आटा है मालूम होताहै प्यारा है सफ़ेद दीखताहै अब जो रोटी बनी तो नाम और रूप आटेके जातेरहे पर और अस्ति भाति प्रिय तो रोटीमें भी वर्त्तमान है इसी प्रकार ब्रह्म व्यापक और सदैव वर्त्तमान और देखो जबतक ब्रह्म-ज्ञान नहींहै तबतक त्रिकुटी ज्ञेय, ज्ञाता, ज्ञान तीनों

बनेहुयेहैं और जब तक वस्तु और उसको देखनेवाला और देखना बनाहै तबतक मोक्ष नहीं जो कोई अत्यन्त प्यारा मिलताहै तो उस समय यह इच्छा होतीहै कि मैं और वह एक होजाऊं जो कोई वस्तु अच्छी होतीहै तो यह चाहताहै कि पेट में रखलूं इससे असल आनन्द वही हुआ जब कि एक होजाय तो जो तुम ईश्वर के समीप भी गये तो क्या लाभ हुआ ? क्योंकि ईश्वर का भय शिरपर सवार हुआ और तुम यहभी कहतेहो कि ईश्वरकी इच्छा में किसी को वश नहीं भलेको बुरा करै बुरेको भलाकरै और तुम अपनेको सदा अपराधी ही समझाकरो हो इससे जो ईश्वरके सम्मुख अपराध बनगया तो मारेगये जो अपराधभी न बना और ईश्वर ही की इच्छामें ऐसा आगया कि तुमको दुःख दे अब कहिये क्या मुक्तिहुई और जब कि तुमको यहभी दावा नहीं है कि शुभकर्मियों को अवश्यही स्वर्ग प्राप्त होगा तो ऐसे धोखे में क्या लाभहै और जो तुम दावा करोगे तो ईश्वर के यहां अपराधी होगे क्योंकि ईश्वर की इच्छा में तुमने दख़ल दिया इसके बिशेष उसका गुप्त भेद जानना भी तो तुमने असम्भव समझाहै और जो तुमने कहा कि बिना ब्रह्मके देखे ब्रह्म कैसे निश्चय होय॥

वाह वैकुण्ठ तो आप देखकरही आये हैं जो कहो कि वेद शास्त्र और बड़े २ कह गयेहैं इससे स्वर्ग का निश्चय है तो ब्रह्मज्ञान क्या वेदशास्त्र में नहीं कहा है और क्या बड़े २ ब्रह्मज्ञान को नहीं कह गये हैं और अब ज़रा ध्यानसे देखो कि सुख दुःख और बुद्धि आदि

को तुमने देखा है जो नहीं देखा है तो निश्चय क्या लातेहो और जो वस्तु देखने में नहीं आवै उसको तुम किस प्रकार जानतेहो भाई इन नेत्रोंसे ब्रह्म नहीं दीख सक्ता हां तत्पर होकर निदिध्यासन करो तो आपही को ब्रह्म कहोगे लो अब वेद शास्त्र और महात्माओंका कहना सुनलो महावाक्य तो वेदका यह है (अहं ब्रह्मास्मितत्त्वमसि) प्रज्ञानन्द ब्रह्मवेदकी श्रुति सुनो (ॐसत्यं ज्ञानमनन्तम्ब्रह्म नेह नानास्ति किंचन । सर्वं खल्विदं ब्रह्मेति) कहिये उत्तरमीमांसा शास्त्र है या नहीं यह तो वेद और शास्त्र की गवाही हुई ॥

अब गुरु नानकसाहबके बचन सुनो ॥

निरङ्कारआकार आप निर्गुण सर्गुण एक । एकहि एक बखाननो नानक एक अनेक ॥ आपहि आप आप ऊपायो । आपहिबाप आपही मायो ॥ आपहि सूक्ष्म आपस्थूला । लखी न जाई नानकलीला ॥ जिन्ह आप रचो परपंचअकार । तिहु गुणमें कीन्हों बिस्तार ॥ पाप पुण्य तेहि भई कहावत । कोउ नरक कोउ स्वर्ग बछा-वत ॥ आल जाल माया जंजाल । हों मैं मोह भर्म भय-भार ॥ दुःख सुख मान अपमान । अनेक प्रकार किये बखान ॥ आपन खेल आपकर देखै । खेल संकोचै तो नानक एकै ॥

कबीरसाहब ने कहाहै ॥

साधो हरमें हरको देखा । आपहिमाली आपब-गीचा आपहि सींचनहारा ॥ आपहि कली आपही फूला आपहि सूंघनहारा । आपहि दुनिया आपहि दौलत

आपहिमालखज़ाना ॥ आपहिलूटै और लुटावै हाथ लिये एक प्याला। कहैं कबीर सुनौ भाई साधो घटहि में ठाकुरद्वारा ॥

दो० कबीर जिसको खोजत, पायो सोई ठौर।
सोई फिरिकै तू हुआ, जिसकोकहता और॥
कबीर वृक्ष पूंछै बीजसे, बीजवृक्षके माहिं।
जीव जो ढूंढै ब्रह्म को, ब्रह्मजीव के माहिं॥
कबीरआदिहतासिबआपमें, सकलहतीतामाहँ।
ज्यों तरुवर के बीज में, डारपातफलछाहँ॥
हेरत हेरत हेरिया, रह्यो कबीर हेराय।
बुन्द समानी सिन्धु में, सोकित हेरीजाय॥

चौ०सत्यलोककी अकह कहानी। सोईनिजसद्गुरु सहदानी॥
रूप वर्ण जहँवां नहिं देशा। तीनलोक अचरज संदेशा॥
नहिं तहँ पांचतत्त्व की काया। सत्तपुरुष आपहि निर्माया॥

दो० बूंद समान्यो सिन्धु में, यह जानै सब कोय।
सिंधु समाना बूंद में, बूझै बिरला कोय॥

पलटूदासजी के वचन सुनो॥

जगन्नाथ जगदीश जगमें व्याप रहा॥ चार खानि में लख चौरासी और न कोई दूजा। आपहि ठाकुर आपहि सेवक करत आपनी पूजा॥ आपहि दाता आपहि मँगता आपहि योगी भोगी। आपहि शिव आपही बिश्वनी आपवैद आपरोगी॥आपहि ब्रह्मा विष्णु महेश्वर आपहि सुर नर मुनि हो आया। आपहि ब्रह्मनिरूपण गावे आपहि प्रेरत माया॥ आपहि कारण आपहि

कारज बिश्वरूप दरशाया। पलटूदास दृष्टि जब आवे संत करैं जब दाया॥

तुलसीसाहब के बचन सुनो॥

सो० हम पिया पियाहमएक,लखिविवेकसन्तनकही।
भई अगम रस भेष, देखा दृग पिय एकही॥
हमरा सकल पसार, वारपार हमहीं कही।
सन्तचरणकी लार, आदिअन्ततुलसीभई॥

राग बसन्त--मत भ्रम मोरे घरमें दीदार। टुक आंख खोल ग़फ़लत बिसार १ व्यापक सबमें अखण्ड ब्रह्म। छाड़ भटक दुनिया को भरम॥ युगयुग भर्मत कर विचार। सुरतमें नितसत सुधार २ वनभुलान घर बिसरि घट। ठग सँग कीन्हो घरन घाट॥ दिनचार तनकीचिनार। छूटत तनु भुगतत होनहार ३ बूझ समझ घर खोज रोज। अन्दरमें मनमारे मौज॥ सँग सद्गुरु करले निर्धार। भटकभूल सबदे निकाल ४ जिनजिन सद्गुरु शरणलीन्ह। तिन तिन पायो अगमचीन्ह॥ अगम गलीइक विधि बिचार। तुहीं तुही तुलसी वारपार ५॥

दो० वार पार तुलसी लखो, पगो चरण के माहिं।
छको अगम रसब्रह्मको, थको थीर मनमाहिं॥

गुसाईं तुलसीदासजीने कहा है॥

मैं हरि साधन करै न जानी। जस अब निज भेषज कीन्हो तस कौन दोष दरवानी॥ स्वप्ने नृपको ग्रस्यो बिप्र बध बिकल फिरे अघलागे। बाजिमेध शतकोटि करै नहिं सुधि होय बिन जागे॥ स्वर्ग में सर्प बिपुल भयदायक प्रकट होय अबिचारे। बहु आयुध धर बल

अनेककर मारेमरै न मारे ॥ निज भ्रमते करसम भव-
सागर अतिभय उपजावे। अवगाहत बोहित नौकाचढ़
कबहुँक पार न पावे ॥ तुलसिदास जग आप सहित
जबलग निर्मूल न जाई। तबलग कोटि उपाय करि
मरिये तरिये नहिं भाई ॥

दो० ब्यापकब्रह्मजोबिरजअज, अकुलअनीहअभेद।
सोकि देह धरि होइ नर, जाहि न जानतवेद॥

चौ०ब्यापकब्रह्मअखंडअनन्ता। अखिलअमोघशक्तिभगवन्ता॥

दो०यथा अनेकन रूप धरि, नृत्यकरे नट कोय।
सौसौ भाव दिखावही, आपहि होय न सोय॥
कोई सत्य झूंठकहै कोई, युगलप्रबलकर मानै।
तुलसिदासपरिहरैतीनभ्रम, जबआपनपहिंचानै॥

दादूसाहबने भी कहाहै ॥

दो०नहीं तहांसे सब हुआ, फिर नाहीं होजाय।
दादू नाहीं होरहो, साहबसे लव लाय॥
कृतमनहीं सो ब्रह्महै, घटै बढ़ै नहिं जाय।
पूरण निश्चल एकरस, जगत न नाचैआय॥
उपजै विनशय गुणधरै, यह मायाका रूप।
दादू देखत थिर नहीं, क्षणछाया क्षण धूप॥

जगजीवनसाहबने कहाहै ॥

शब्द—तुमहीं घट बोलत तुमहीं डोलत तुमहीं हो क-
र्त्तार। तुमहीं खवावत पानि पियावत मैं मन करी वि-
चार॥ तुमहीं ब्रह्माविष्णु महेश्वर तुमहीं योग पसार।
तुमहीं सन्तनके मनमानी हो तुम निर्गुण निरङ्कार॥

चौ०शुभ औ अशुभअहो सब माहीं। और दूसरो जानों नाहीं॥

चरणदासजी का बचन ॥

स०श्वासहिश्वास चलै जब आपहि है सो अखण्ड टरै नहिं टारो । बाहर भीतरहै भरपूर सो ढूंढ़तहै कहँ नाहिं है न्यारो ॥ चरणदास गुरुभेद दियो भ्रम दूर भयो जो हतो अतिभारो । दृष्ट अदृष्ट जो रामको देखत राम भयो पुनि देखनहारो ॥

वलीसाहबका क़ौलहै ॥

दरियावकी मौजपर जाय देखो कहां जाना कहां आना है । दरियावमें उठनाहै फेर दरियावमें समाना है ॥ यहां और नहीं कुछ करनाहै मैं तैंका भेद मिटाना है । दरियाव अखण्ड अद्वैत वली ना कुछ खोनाहै ना कुछ पाना है ॥

ग़ज़ल—हुबाबकी तरह अपने तईं बनाके तोड़ । तरीक़हक़ में यही तोड़है ख़ुदासे जोड़ ॥ बदनके तोड़े हवा के सिवा न निकलैगा । ख़ुदही निकलै जो दीजे ख़ुदी का भांड़ाफोड़ ॥ तइअ़नातके नुक़्तोंसेहै कसीर अहद । वही है एक या दश सौ हज़ार लाख करोड़ ॥ सनमको पूजैं ब्राह्मण हरम को मानैं शेख़ । यह दोनों एकहैं मानूं किसे किसे दूं छोड़ ॥ सिवाय हस्ती हक़के जो कुछ नज़र आवै । यक़ीन जानो कि देव ख़यालकीहै खोड़॥ अज़लसे लेके अबद तक यही जो है सोहै । बरंगेबहर रवां जिसमेंहै न तोड़ न जोड़ ॥ अबश हैं सैर सख़ुन के यह तोड़ जोड़ नियाज़ । बश अपने ज़िक्र की और फ़िक्रकी तरफ़ मुंह मोड़ ॥

क०—श्वास श्वास रातदिन सोहं सोहं होय जाप यही

माला बार बार दृढ़कै धरतहै। देहपरे इंद्रीपरे अन्तः-करणपरे एकसो अखण्ड जाप तापको हरतहै॥ काठ रुद्राक्ष और सूत ऊनहूंकी माला इनके फिराये कौन का-रज सरत है। सुन्दर कहत एक आत्मा चैतन्यरूप आपको भजन सो तो आपही करतहै॥

महाराज निस्संदेह यह सत्यहै कि जीव और ब्रह्म की एकता में कुछ भेद नहीं है अज्ञानियों की समझ में भेद है यह जगत् अनहुआही भासे है जैसे स्वप्नमें एकही काल में बाप बेटा और पोता सब सामग्री बन-जाती है इसी प्रकार यह जाग्रत् जगत्भी है स्वप्न में भी ऐसा मालूम होता है कि मकान राज मज़दूरों ने तैयार किया है और वह जो राज मज़दूर हैं उनका परस्पर में सम्बन्ध है कोई बाप है कोई बेटा है कोई भतीजा है तात्पर्य्य यह है कि एक शरीरमें ऐसा भान होताहै कि उससे बेटा पैदाहुआहै दूसरे शरीरमें यह भान होता है कि फलाने का बेटा है परन्तु वास्तव में सब र-चना एकही क्षण में होगई और जब जागे तब सम्पूर्ण सृष्टि लय होगई पर महाराज जो ब्रह्म चैतन्य है तो चैतन्यता तो किसी पदार्थ में रही होगी स्वतन्त्र नहीं रहसक्ती सो वह पदार्थ भिन्न करके कहिये कि जिसमें चैतन्यता रही हुईहै सुनो जो तुम मिश्री को मिठाईसे भिन्न दिखादो तो चैतन्यताभी भिन्न दिखाई जाय भाई जैसे मिठाई मिश्री का स्वरूपहीहै ऐसे चैतन्यता आप ही स्वरूपहै जो गुण होता तो गुणीसे भिन्न होता महा-राज ब्रह्म तो कुछ हुआ नहीं शून्यही रहा॥ भाई सुनो

(लक्षणप्रमाणाभ्यां वस्तुसिद्धिः) अर्थ यहहै कि लक्षण और प्रमाणों करके बस्तुकी सिद्धि होती है कहो तुम शून्यको जानाहै तो शून्य कहां और जो नहीं जाना तो तुम शून्य कैसे कहतेहो भाई इसका कोई लक्षण प्रमाणहै नहीं इस लिये शून्य सिद्ध नहीं होता महाराज न्यायशास्त्र सुनो और वेदान्त का क्या भेद है न्याय का आरम्भ बादहै जैसे तृणको जोड़कर बुहारी बनती है ये प्रमाण से द्विगुणाक त्रिगुणाक होकर सस्थूल होजाताहै सो परिमाणु अनादि है और जगत्की आदिहै सांख्यका परिणाम बाद है अर्थात् प्रकृति जगत्भाव को प्राप्त होजातीहै जैसे दूध दही होजाताहै और वेदान्तियों का विवर्त्त बाद है ॥ अर्थात् बस्तु आप बिगड़ी नहीं परन्तु अन्यरूपसे प्रतीत हुई जैसे सुवर्ण बिगड़ा नहीं और कीट कुण्डल का आकार होगया ऐसे ब्रह्म सदा शुद्धहै परिणामरूप प्रतीत होगया विवर्त्त का यह लक्षण है कि उपादान से तो भिन्नसत्ता होवे और रूप अन्य होवे परिणामका लक्षण यहहै कि उपादान और कार्य्यकी एक सत्ता होवे और रूप उपादान से अन्य होवे और देखो जगत् ब्रह्मके अज्ञात होनेसे भासाहै सो जब तक ब्रह्मज्ञान न होगा तब तक मूलसहित अविद्याका नाश नहीं होसक्ता जैसे रस्सी के अज्ञान से सर्प भासाहै जब रस्सी का ज्ञान होगा तब सर्प का अभाव होगा और देखो कि एक केवल ब्रह्महो सजातीय विजातीय स्वगत भेद से रहितहै और प्रपंच इन भेद सहितहै सजातीय उसे कहते हैं कि जो उसके समान

दूसरा होय जैसे दो घट और विजातीय यह कि कोई दूसरी बस्तु उससे और प्रकार की होवे जैसे घट और पट स्वगत यहहै कि जैसे कपड़े में सूत सो केवल निस्सङ्ग आत्मा है ॥

दो० मायाका बिस्तार सब, अनिर्व्वाच्य तू जान ।
ब्रह्म सदा है एक रस, बृन्दाबन सो मान ॥

महाराज आपका ज्ञान सत्य होगा परन्तु उपासना की बराबरी नहीं करसक्ता अब मैं गणेशजी को मनाकर उपासना का वर्णन करता हूं इसको आप कैसे खण्डन करोगे ॥

दो० हरि गुरु सन्त अनुग्रह, दया साधु की होइ ।
बृन्दाबन सत्सङ्ग मणि, अलखलखावै सोइ॥

श्लो०-श्रीमुखवाग्भक्त्याहमेकयाग्राह्यःश्रद्धयात्माप्रियःसतां ।
भक्तिःपुनाति मनसः श्वपाकानपि सम्भवान् ॥

इसका अर्थ ॥ मैं एक श्रद्धा सहित भक्ति ही से मिलता हूं मेरी भक्ति चाण्डाल जातिको भी पवित्र करदेती है ॥

भगवान् कपिलजी ने भी कहाहै ॥

श्लो०—न पूज्यमानो भक्त्या वै भगवत्यखिलात्मनि ।
सदृशोऽस्ति शिवः पन्था योगिनां ब्रह्मसिद्धये ॥

योगियोंको ब्रह्मसिद्धिके लिये भक्तिके तुल्य कल्याणकारी कोई मार्ग नहीं है बाकी अवतारन की महिमा तो प्रसिद्ध है ॥

भगवान् के पार्षद ने भी कहा है॥

श्लो०—अज्ञानादथवाज्ञानादुत्तमश्लोकनाम यत्।
संकीर्तितमघं हन्ति दहेदेधो यथानलः॥

भगवान् का नाम जानिकै कहै या बेजाने कहै पाप को नाश कर देताहै जैसे अग्नि सूखी लकड़ी को जलादेती है॥

यमराजने भी कहाहै॥

श्लो०—एतावतालमघनिर्हरणाय पुंसां सङ्कीर्तनं भगवतो गुणकर्म्मनाम्नाम्। विक्रुश्य पुत्रमघवान्यदजामिलोऽपि नारायणेति म्रियमाण इयाय मुक्तिम्॥

अर्थ—पाप नाशने वास्ते केवल भगवान्का कीर्तन स्वार्थ है पापी अजामिलने मरते समय नारायण नाम अपने पुत्र को पुकारके मुक्ति पाई (कलौ केवलकीर्तनात्) कलियुग केवल नाम आधार और जो पूर्णभक्त हुयेहैं उनकी महिमा कैसी प्रकट है॥

चौ० भयेप्रह्लाद जगत सबजानी। पिता त्रासदीन्हातिहठानी॥
अति प्रह्लाद टेर कियो जबहीं। खंभ फाड़हरि प्रकट्योतबहीं॥
लीन भक्तको तुरत बचाई। ताकी कीरति सब जगछाई॥
दृढ़आशा जिन जस उपजाई। वृन्दावन हरि प्रकटे आई॥
दासी सुत नारद रहे भाई। पूरबजन्म कथा अस गाई॥
भक्तन की सतसङ्गति पाई। बिरह उठी वन चाले भाई॥
विष्णु देव की आशा लाई। लागे ध्यान करन पुनि जाई॥
बहुत काल असजानो बीता। विष्णुदयानिधि प्रकटेमीता॥
ध्रुवजी ब्रज मण्डल में आये। बैठे अचल समाधिलगाये॥

बहुतकाल असध्यानलगाया। गरुड़ चढ़े आये हरिराया॥
राजा एक मोरध्वज रहिया। प्रेम भक्ति में पूरा भइया॥
धर्म्म नीति मर्य्यादा माहीं। वा सम भूपभयो कोउ नाहीं॥
एक समय अर्जुन के ताहीं। भयोअभिमानबहुतमनमाहीं॥
मोसम भक्त न दूजा कोई। मम बश कृष्ण देव हैं सोई॥
अर्जुन सों भगवान बखाना। मम भक्तनको तू नहिंजाना॥
चले कृष्ण अर्जुन दोउ सङ्गा। नाहर एकसाथ लियोचङ्गा॥
ब्राह्मण रूप धरा भगवाना। अर्जुनको बालक करिआना॥
दोऊ चलि राजा गृहआये। कह्यो हेतु भोजन के धाये॥
राजा कह्यो जो आज्ञा होई। भोजन तुरत मँगाऊं सोई॥
हरि बोले सुन मारग माहीं। यह नाहर मोहिं घेरेउआहीं॥
भोजन को यह भूखा रहिया। मम बालकको मारनचहिया॥
मुझको ले नाहर तू खाई। यह बालक मेरो सुखदाई॥
नाहर कह्यो बूढ़ तन तेरा। कोमल मांस बाल भष मेरा॥
मैं कह्यो बालकममसुखदाई। बालक को नहिं खावो भाई॥
हम तुम चलैं मोरध्वज पाहीं। वाको सुत तोहिं देहँ दिवाहीं॥
सुत अरु मुझे दोउको खाऊ। काहे को तुम भूखे जाऊ॥
राजा कहा देर नहिं कीजै। रानी कहा मुझे भषिलीजै॥
इतने में सुत सुनिकै आया। परिकर्मा करि शीशनवाया॥
नृपसुत कहा दयाबड़िकीन्हा। तुम दयालु जो दर्शन दीन्हा॥
यहतन क्षणभङ्गी नशि जाई। फिर काहूके काज न आई॥
मेरे भाग्य बड़े अधिकाई। तुम्हरे कारज काया आई॥
बाघ कहा आधा तन खाऊं। ताते अपनी भूख बुझाऊं॥
बालक कहा लेहु तुम भाई। जितना चाहो खाओ आई॥
नाहर कहा नहीं अस खाऊं। क्यों अपने शिर पाप चढ़ाऊं॥

कह बालक फिरि कैसे कीजै। करिकै दया भेद कहिदीजै॥
नाहरने यहिविधि समझाई। आरा शिरपर देहु धराई॥
मात पिता दोउ खैंचैं भाई। जुदा बीचते तन होजाई॥
ज्यों आरा सुत शिरपरधरिया। हाहाकार नगर बिचपरिया॥
नृपरानी दोउ खैंचन चाहा। हरिजीहाथपकड़लियोधाहा॥
हरि पुनि भये चतुर्भुजरूपा। नृपको दर्शन दियो अनूपा॥
हरि बोले मांगो वर कोई। जो तुम्हरे मन इच्छा होई॥
भूप कह्यो वर दीजै नाथा। प्रीति रहै तुम चरणन साथा॥
हे दयालु दूजा वर दीजै। भक्तन से कसनी लघु लीजै॥
बरदे के हरिविष्णु दयाला। अन्तर्द्धान भये ततकाला॥
ऐसे बहुत भक्त भये भाई। नामदेव की गाय जिवाई॥
शबरी के फल जूठे खावा। नरसीकी हुण्डी सकरावा॥
तिलोंचन दृढ़ भक्ति कमाई। जिसकी टहल करी हरिआई॥
सेना नाई औ रैदासा। इनकी पूरण कीन्ही आसा॥
मीराबाई दर्शन पावा। धना भक्तका भोजन खावा॥
हरिश्चन्द्र के धर्म निभावा। हाथ पैर जयदेव जो पावा॥
कहँलग भक्ति कि प्रभुतागाऊं। मम बुधि छोटि पार नहिंपाऊं॥
आप ज्ञान अद्वैत बखाना। बिनअस ज्ञानमुक्तिनहिंठाना॥
सब कोइ मुक्ति भक्ति सों गावै। किसबिधि मुक्ति ज्ञानसों पावै॥
पहिलिमुक्ति सालोक्यकहावै। दूजी पुनि सामीप्य ठहरावै॥
तीजी को सारूप्य लखावा। चौथी को सायुज्य बतावा॥
सोई मुक्ति भक्ति से पावै। ब्रह्मज्ञान काज ना आवै॥

और महाराज कथा वार्त्ता में भी यही सुनाहै कि और युगमें तप दान आदि करतेथे आगे बाल्मीकि आदि बड़े बड़े तपस्वी हुये अब कलियुग में मुक्ति

केवल भक्ति और नाम स्मरण से प्राप्त होती है परमहंस पूछते हुये कि उपासना अनेक प्रकार की है कहो किस देव की उपासना सिद्धिदायक है कौनसे नामका स्मरण उचितहै देखो जो गणेश के उपासक हैं वह कहतेहैं कि गणेश अनादि देव हैं त्रिपुरासुर के युद्ध में महादेवजी ने उनकी पूजाकी समुद्रके मथने के समय विष्णुजीने पहिले उनको पूज लियाहै काहेसे गणेशजी सिद्धिदायक हैं यह बात वेदमें और गणेशपुराणमें प्रसिद्धहै॥

दो॰ जेहिस्मृति बन्दतसकल, बिघ्नपराहिं बिलाहिं।
मुद मङ्गल आरोग्यधन, मुक्ति भुक्ति नियराहिं॥

जो पुरुष शक्तिकी उपासना करते हैं वह कहते हैं कि शक्ति प्रधानहै शक्तिका माहात्म्य देवीपुराण में लिखा है बिना शक्ति पुरुष अशक्त होजाता है सबको आधार शक्तिहै इससे सबको शक्ति उपासना उचित है॥ शक्ति दो प्रकार की है एक लक्ष्य दूसरी अलक्ष्य॥

दो॰ जगत बाज सदसतनहीं, भाव रूप त्रैगुण्य।
माया सो लख तबै जब, योग ज्ञान नैपुण्य॥
अव्याकृत अव्यक्त अरु, प्रकृतिप्रधान निधान।
विद्या विद्यादिक महा, माया कहैं सुजान॥
अन्तकाल में सब जगत, जीव चराचर खान।
नाम रूप सब छोड़ के, तामें सोवत तान॥
सृष्टि कालमें सब जगत, ज्यों बीजनते वृक्ष।
अङ्कुर त्यों यह ते सकल, यह दृष्टान्त सदक्ष॥
जब नहिं दर्शन दृष्ट कोउ, शून्य सकल संसार।
अलखबीजसे प्रकट होय, कीन्हप्रथमअवतार॥

महालक्ष्मी नाम सो, मुदमङ्गल को धाम।
कहतसुनतसमुझतजिन्हैं, होतपूर्ण सबकाम॥

चौ०सोइनभपवनअनलजलमाही। सूक्ष्मभूत तन्मात्रा वाही॥
शब्द स्पर्श रूप रस गन्धा। वोई सकललोककर धन्धा॥
ब्रह्मा विष्णु शम्भु हैं सोई। इन्द्रादिक देवा सब वोई॥
यक्ष गंधर्व किन्नर राक्षसगन। भूत पिशाच प्रेत जेते तन॥

दो० भूत भविष्य जो कुछ, वर्त्तमान है जोइ।
भुक्त भोग्य भोगात्मक, जगतचराचर सोइ॥

लक्ष्य के तीनभेद प्रथम महालक्ष्मी महालक्ष्मी ने लोक सुनि देखिके तमोगुणसे दूसरा महाकालीरूप धारण किया फिर सतोगुण से तीसराऱूप महासरस्वती धारण किया तीनोंमें स्त्री पुरुषकी शक्तिहै महालक्ष्मी से ब्रह्मा वा लक्ष्मी पैदाहुई वा महाकालीसे रुद्र वा सरस्वती उत्पन्नहुई महाशक्तिसे विष्णु वा गौरीहुई और उन्हींसे फिर सर्वदेवता वा देवी उत्पन्न हुईहैं जो पुरुष सूर्य्यकी उपासना करतेहैं वह कहतेहैं यह प्रत्यक्ष देवताहैं इन्हीं की पूजा सबको उचित है काहेसे कि यह सकल जगत् का कारणहैं वेदमें सूर्य स्वामीकी महिमा प्रकटहै सूर्य्य के त्रयी में कहतेहैं अर्थात् बेदत्रयी अग्नित्रयी का रूप है काहेसे कि अग्नि का असलरूप उष्णताहै सो सूर्य्य की किरण से प्रकट है और वेद में लिखा वा लोक में प्रसिद्धहै कि सूर्य बर्षामें अपनी किरणसे जल बर्षातेहैं वा जलसे सर्व औषधी लता वृक्ष होतेहैं उनसे फिर नाना प्रकार के जीव उत्पत्ति होते हैं वा जल अग्नि से उत्पत्ति है अग्नि का आधार सूर्य्य प्रत्यक्षहैं इससे सब

को सूर्यकी उपासना करना चाहिये सूर्यसे दिशा वा घड़ी पल मास वर्ष आदिक काल प्रकट हुये जब सूर्य्य नारायण अबर्षणाकर के षोडश कलासे तपते हैं तब प्रलय होजाती है और उसी जल से एक हिरण्यमय अण्डा पैदा हुआ उसी अण्डे से यह सकल जगत् बिराट्रूप उत्पन्न हुआ सूर्य्य जल बर्षाते हैं उससे सर्व चराचर जीतेहैं इससे उत्पन्न पालन प्रलयके कारण सूर्य्यनारायण हैं नाम तो सूर्य्य के अनन्त हैं उसमें बारह नाम मुख्य हैं महीने महीने प्रति सूर्य्य के नाम भिन्न भिन्नहैं सूर्य्यके साथ बारह गंधर्ब बारह अप्सरा बारह नाग बारह यक्ष बारह राक्षस बारह ऋषि चैत्र आदि देके मास मास प्रति ये सर्व गण एक २ बदला करतेहैं सूर्य्यके आगे गंधर्ब गान करतेहैं अप्सरा नाचतीहैं ऋषि वेद स्तुति करतेहैं यक्षरथ खींचतेहैं राक्षस पीछे से ढकेलते हैं नाग रथको बांधे रहते हैं॥

चौ०विष्णु विरंचि महेशशरीरा। निराकार निरगुणगम्भीरा॥

जो महादेवकी उपासना करतेहैं वह कहतेहैं कि शिव सदा देव हैं और अनादिहैं उनके दक्षिण अङ्ग से विष्णु और बामअङ्ग से ब्रह्मा हृदयसे रुद्र उत्पन्न हुये विष्णु बैकुण्ठ में ब्रह्मा ब्रह्मलोकमें रुद्र कैलास पर्वतपर रहते हैं शिवलोक सबसे ऊपर है तीनों देवता शिवके देहसे पैदा हुये परन्तु रुद्र हृदयसे पैदा हुये इससे शिव वा रुद्रमें कुछ अन्तर नहींहै विष्णुजीने महादेवजी की बड़ी आराधनाकी तब महादेवजी ने प्रसन्न होकर सुदर्शनचक्र और शक्ति वा ऐश्वर्य दिया कि विष्णुजी

वे प्रयास तीनों लोकों का पालन करते हैं लक्ष्मीजी महादेवकी सेवा करके विष्णुकी अतिप्रिय वा सर्वोत्तम हुई देखो जब त्रिपुरासुरने सबको व्याकुल किया तब महादेवजीने उसको नाश किया जब समुद्र से बिष निकला तो उसके झारसे सब देवता राक्षस बिह्वल होगये तीनों लोक जरने लगे तब महादेवजी ने उस विष को पी लिया जब नरसिंहजी का परिवार बढ़ा वे सबको सतानेलगे तब महादेवजी ने सरभनाम पक्षीका रूप धर के सबको नाश किया केवल नरसिंहजी को छोड़ दिया जब वाराहजीका बंश बहुत बढ़ा व सब पृथ्वी व्याकुल हुई तब महादेवजी बिठलनाम कुत्ते का रूप धरके एक वाराहजी को छोड़के और सब वंश क्षय करादिया एक समय ब्रह्मा विष्णुसे अपनी अपनी बड़ाई के हेतु बड़ा झगड़ा हुआ तब महादेवजी ने ज्योतिर्लिङ्ग प्रकट किया व आकाशबाणी हुई जो इसका अन्तलै आवै सो बड़ा विष्णुजी नीचेको दूरतक गये किन्तु अन्त न मिला थकके लौट आये ब्रह्मा ऊपर बहुत दूरतक गये अन्त न पाया लौटके बड़ाई के लालच झूठ बोले इससे उनको शाप हुआ कोई उपासना नहीं करता विष्णु सत्य बोले इससे बड़े वा लोकपूज्य हुये सब विष्णु आदिक देवता ईश्वर कहलाते हैं शिवजी महादेव वा महेश्वर कहलाते हैं उनके समान बड़ा और दूसरा कोई नहीं॥

दो० शिवगुरु शिवपरदेवता, शिव हितशिवजगबन्धु।
शिव आतमाशिवजीवहैं, ब्रह्म सदा निर्द्वन्द॥

शिवजलमेंशिवअनलमें, शिवथल में शिवसर्ब।
शिवआकाश शिवभूमिमें, शिवभज सबतजगर्ब॥

जो विष्णुकी उपासना करते हैं वे कहतेहैं कि विष्णु अनादि देवता हैं विष्णुकी नाभिसे कमल उत्पन्नहुआ उससे ब्रह्मा उत्पन्न हुये उसी ब्रह्मा से रुद्र उत्पन्नहुये जिनको महादेव कहतेहैं जगत्‌की उत्पत्ति पालन प्रलय के कारण विष्णु हैं महिमा बेदपुराणोंमें प्रकटहै विष्णु के अनन्त रूपहैं उनमें अवतार बहुत प्रसिद्ध हैं प्रथम महापुरुष अवतारहुआ सकल संसार स्थावर जङ्गम इसीके अन्तरहैं इसको बिराट् भी कहतेहैं २ सनकादिक का स्वरूप धारण करके लोकके कल्याणके वास्ते अतिकठिन सबसे उत्तम कौमार ब्रह्मचर्य ब्रत धारण किया ३ वाराहरूप धारण किया संक्षेपसे कथा उसकी यह है प्रलयमें पृथ्वी डूबगईथी सो जलमें पैठ पाताल से पृथ्वी को अपने एक रोमपर धरके उठा लाये ४ रुचि नाम प्रजापति आकूतिनाम प्रजापतिकी स्त्री से भगवान् सुयज्ञका अवतार लेकै स्वायम्भुवमन्वन्तर में इंद्र हुये वा तीनोंलोककी रक्षा की ५ कर्दम नाम प्रजापति के यहां भगवान्‌कपिलदेव अवतार धरके अपनी माता देवहूतीको सांख्यशास्त्र सुनाया जिससे माताकी मुक्ति हुई ६ धर्मकी मूर्त्ति स्त्री से भगवान् नरनारायणरूप धरके लोकके कल्याण के हेतु बद्रिकाश्रम में तपस्या करते हैं ७ अत्रिमुनिकी अनसूया स्त्री से भगवान् दत्तात्रेय अवतार धरके सहस्रबाहुको योगमार्ग वा प्रह्लाद को आत्मविद्या सिखाई ८ राजा नाभि की कामरूनाम

देवीसे भगवान् ऋषभदेवरूप धरके परमहंस मार्ग जगत् में प्रकट किया ९ श्रीभगवान् महाराजा पृथुका रूप धरके पृथ्वी को दुहा है १० जब हिरण्यकशिपु ने सहित पुरोहित अपने पुत्र प्रह्लादको मारना चाहा उस समय भगवान् नरसिंहका रूप धरके खम्भा फाड़के प्रकट हुये पापी को मारा प्रह्लादको उबारा ११ कमठरूप धरके अपनी पीठपर पृथ्वीको थांभा १२ भगवान् ने धन्वन्तरि रूप धरा १३ मोहनी स्त्रीका रूप धरा १४ कश्यपकी स्त्री अदिति के गर्भ से भगवान् बामनजी प्रकट हुये १५ मच्छरूप धरके राजा सत्यब्रत को पृथ्वीरूप नावमें बैठालके प्रलयके कारण जलमें विहार किया १६ हयग्रीवअवतार धरा १७ हंसकारूप धरा १८ स्वारोचिष मन्वन्तर में बेदछरानाम ऋषि के तुषिता नाम स्त्री से भगवान् बिभु अवतारलेके कौमार ब्रह्मचर्य लिया उनको देख अट्ठासीहजार ऋषि ब्रह्मचारी हुये १९ उत्तम मन्वन्तर में धर्म्म की सूनृता स्त्री से भगवान् सतसेन प्रकटहुये २० तामस मन्वन्तर में हरिमेधा ऋषिकी हरिणीसे भगवान् हरि हुये जिन्होंने ग्राह से गजराज को छुड़ाया २१ रैवत मन्वन्तर बिषे सोभरि नाम ऋषि की बिकुंठा स्त्री बिषे भगवान् बैकुण्ठनाथ जी उत्पन्न हुये जिन्हों ने लक्ष्मी की प्रार्थना से बैकुण्ठलोक रचा २२ चाक्षुष मन्वन्तर में वैराज के सम्भूति स्त्री विषे भगवान् अजित उत्पन्न हुये जिन्हों ने सब जगत्का पालन किया २३ त्रेता में परशुराम का अवतार धरा २४ राजादशरथकी स्त्री कौशल्याजी के

गर्भ से भगवान् रामचन्द्रजी का अवतार धरा २५ द्वापर में पराशरऋषि के यहां भगवान् ब्यासजी उत्पन्न हुये २६ बसुदेवकी स्त्री देवकी के गर्भ से भगवान् रामकृष्ण उत्पन्न हुये २७ कलियुगमें बोधरूपधरा और वेदकी निन्दा की २८ कलियुगके अन्तमें सम्भलग्राम में भगवान् कल्की प्रकट होंगे इनमें चौबीस अवतार बहुत प्रसिद्ध हैं और साधारण महाराज आपने तो बड़ी उत्तम कथा सुनाई पञ्चदेवकी ऐसी महिमा कभी नहीं सुनी थी अवतारोंका हाल भली प्रकार सुनाया आप धन्यहो जो कोई इस कथाको सुनेगा तो ईश्वरकी दयासे सर्व कामना पूर्ण होगी भक्ति प्राप्त होगी बास्तव में बड़ा अमोल पदार्थ है कि थोड़ीसी कथा में इतने पुराणों का सिद्धान्त आपने बर्णन किया॥

परमहंसने कहा अब मेरे भी प्रश्नका उत्तर दीजियेगा नहीं तो महाराज मेरी बुद्धिमें यही आता है कि पांचों देवता की उपासना करतारहे सुनो तुमने कहा कि उपासनासे सालोक्य आदि मुक्ति प्राप्त होती हैं अब जो पांचों की उपासना करोगे तो बताओ कौनसे देवता के लोकमें जावेगा कौनसे देवताके समीप होगा पांचों देवता के स्थान भिन्न २ हैं उनकी रहस्य जुदी जुदी है कोई काल में आपसमें देवताओं में विरुद्ध हो जाता है अवतारों में विरुद्ध बहुत हुआहै और तुमने शास्त्र पुराण और महात्माओं की वाणी में भी सुना होगा कि एककी शरणलेनी उचितहै और तुम जानते हो कि जैसे इस लोकमें कोई अवतार सदा नहीं बना

रहा इसी तरह प्रलय महाप्रलय में कोई स्वरूप कोई लोक न रहैगा महाराज तो पांचों में से किसी एककी उपासना करे मुक्त होजावेगा परमहंसने कहा तुम यह निश्चय करके एकका नाम धरो और विधि उपासना की बताओ और याद रखना कि तुम कह चुकेहो कि कलियुगमें केवल नामसे मुक्ति है ॥

महाराज मेरी शक्ति उत्तर देने की नहीं है आपही कृपा करके मुझे समझादीजिये सुनो तुमने ऐसा कहा है कि हम तो उपासनाका खण्डन करतेहैं सो हम उपासनाका खण्डन तीनकाल नहीं करते उपासना साधन है ज्ञान फल है जब निष्काम निर्गुण उपासना होवै तब मनकी शुद्धिद्वारा ज्ञान प्राप्त होवे तब मुक्तिहो कि जिससे फिर इसको स्थूल वा सूक्ष्म तन धरना न पड़ै निर्गुण उपासना बिना अन्तरवृत्तिकी प्राप्ति नहीं होती और जबतक इसका मन नाम और शब्दमें न लगेगा तबतक अन्तर्वृत्तिकी प्राप्ति कठिनहै और बिना अन्तर्वृत्ति के इसको जीवन्मुक्ति का सुख न प्राप्तहोगा आगे की आशा में बँधा रहता है और एक श्लोक गर्गगीता का सुनो ॥

श्लो०—शास्त्राणि पठते नित्यं नानादेवान्प्रपूजयेत्।
आत्मज्ञानं विना पार्थ! सर्वकर्म्मनिरर्थकम्॥

हां कर्म्म सगुण उपासना निर्गुण उपासना की प्राप्ति के साधन हैं पर मनुष्य भूल से इसीमें फँसे रहते हैं और अपने अपने इष्टका पक्ष करके विवादमें जन्म खोते हैं जो कुछ विवेक होय तो अपने उपास्यकी सर्व

व्याप जाने तब सर्व देव उसीके अङ्ग ठहरैंगे सब विवाद मिट जायगा और देखो कलियुगमें इस जीवके उद्धार के लिये जो सन्तों ने दया करके सुगम मार्ग बतायाहै उस रास्ते पर जो निश्चय सहित चलेंगे तो निस्सन्देह मोक्षको प्राप्त होंगे महाराज ज्ञानी कौन से देवकी निश्चय रक्खते हैं सुनो ॥

चौ०पूरण ब्रह्मज्ञान जब होई। दूजा देव न मानी सोई ॥
निजस्वरूप सबमें दर्शाना। एको ब्रह्मरूप सब जाना ॥
कल्पित सब जग स्वप्नसमाना। जन्म मरण भय भर्म नशाना॥
समदर्शी ज्ञानी है जोई। ताकर आवागमन न होई ॥
भक्ति करै जो देवन केरी। ताकी रहै बासना घेरी ॥
दृढ़ आशा देवन में लावै। आशा बश ताके ढिग जावै ॥
पुण्यक्षीण होवै जब भाई। तब वह मृत्युलोक पुनिआई ॥
निजस्वरूपदरशयनहिंजबलौं। आवागमन मिटै नहिं तबलौं॥
चञ्चलता विक्षेप नशाना। पूरण ब्रह्मज्ञान दरशाना ॥
स्वामी यक सन्देह अपारा। ज्ञानीकसकसकीनव्यवहारा॥
जग असत्य मिथ्या जब होई। फिर व्यवहार बनै नहिं कोई॥
सुन याका सन्देह मिटाऊं। तेरे बुद्धि हेतु समझाऊं ॥
दृढ़ आशा जाकी जामाहीं। सो ताको सतसत दरशाहीं॥
ज्यों बाजीगर खेल बनावै। छोटे बड़े सभी उठ धावै ॥
अज्ञानी नर देखै जाई। सत्य मान निश्चय करै भाई॥
ज्ञानवान देखै जो कोई। मिथ्या लखै खेल वह सोई ॥
बालक सम अज्ञानी होई। सत्य जान मानै तेहिं सोई ॥
ऐसे अज्ञानी व्यवहारा। जगको सत्य मान उरधारा ॥
ज्ञानी जग मिथ्या सब जानो। हानि लाभ तामें नहिं मानो॥

मिथ्या जान करै जो भाई। तामें हानि कहो कस पाई॥

दो० ग्रहणत्यागदोउत्यागके,द्वैत कल्पना नाश।
एकहि ब्यापक पूर है, दूर भयो आभाश॥

चौ० कच्चा भुना अन्न जस होई। देखन में एकै सम सोई॥
रहै अकार दोउ कर नाईं। अंकुर उतपति बीज नशाईं॥
भूने में अंकुर नहिं जामी। आगे की उतपति भइ हानी॥
कच्चे में अंकुर उपजावै। महिजलमिलउपजैनशजावै॥
अंकुर बीज बासना होई। जग उपजावन हेतुक सोई॥
जगको सत्यसत्य जिन माना। दूजे दृढ़कर इच्छा ठाना॥
उपजै बिनशय सो जगमाहीं। आपी अपने हाथ नशाहीं॥
ज्ञानी बीज बासना नाशै। जग भ्रमवत सो ताको भाशै॥
ज्ञानी एक ब्रह्म सब जानै। दूजी दृष्टि नहीं मन आनै॥

दो० मृगतृष्णाको नीर ज्यों,दरशय जलहि समान।
बृन्दाबन वह जल नहीं, कस डूबन की हान॥
ज्ञान पुरुषकी दृष्टि में, जग ब्यवहार लखाय।
बृन्दाबन जब जग नहीं,कौन ब्यवहार बताय॥

चौ०हे स्वामी यक संशय आई। दयादृष्टि कर कहो बुझाई॥
जगब्यवहार कीर्त्तिके माहीं। कोइ ज्ञानी तन त्यागे ताहीं॥
कहँको गये कौन तन पावा। स्वामी याको कहो दरशावा॥
सिन्धु तरङ्ग एकही जानो। भिन्नभेद तामें नहिं मानो॥
पूरण ब्रह्म सिन्धु सम होई। जग तरङ्ग तामें पुनि सोई॥
असपन्दता पवन में जैसे। जगत ब्रह्ममें मानों तैसे॥
ज्ञानी द्विविध भेद नहिं माने। एक ब्रह्म चेतन सब जाने॥
दूजी आशवास नहिं होई। ताते नहिं कहुं जावे सोई॥
ब्रह्मरूप पहिलेही भइया। तन त्यागाजहँका तहँरहिया॥

दो० पूरण ब्रह्म समान है, जग तरङ्ग जहँ माहिं।
प्रारब्धवश तन त्यजे, हानि वृद्धि कुछ नाहिं॥

महाराज सत्यहै सत्यहै बिना ब्रह्मज्ञानके बन्धनकी भ्रान्ति दूर नहीं होसक्ती और मैंने भली प्रकार बिचार करके देखलिया कि मैं सजातीय विजातीय स्वगत भेद से रहित अखण्ड ब्रह्महूं मुझे इसमें अब कोई बिपरीत संशय नहीं रहा महाराज आप धन्य हो धन्य हो महाराज एक यह प्रेमीजी भी आपसे कुछ पूछा चाहती है अब आप इसकी सुनिये और मेरी तो यह दशा है॥

सो० मूलतिमिरभयोदूर, भूल भर्म जातो रह्यो।
बृन्दावन में पूर, आपनलख आपहि रह्यो॥

मसनवी—मरहबा[1] ऐमुरशिदे[2] बागे[3] बक़ा। खूब जाना तू नहींहक़[4] सेजुदा॥ आफरीं[5] तहसीं[6] तुझको ऐ अज़ीज़[7]। करदिया मुझको हर एक से बातमीज़[8]॥ मैं तेराहूं तुझको ऐ प्यारे दिली। तुझको सब रोशन तू रोशन मंजली[9]॥ ज़िक्रसुलतांनुल्[10] अज़कार है सिररे[11] इलाह[12]। बरमने बेचारा मेदारी[13] निगाह[14]॥ मरहबा ऐ अनहदे दिलदार[15] मन। बृन्दावन कावेकाबस खोलाचमन॥ १॥ अरस[16] में सुनहै अवाज़े बाअदा। होरही हरदम मेरे दिलमें सदा[17]॥ मशअलै रोशन नहीं रोगन[18] ज़रूर। जाय[19] दीगर है नहीं ऐसा सरूर[20]॥ है अगर सैतान[21] तेरा राज़दार[22]। कब रहा साबित क़दम ऐ नाबकार[23]॥

धन्य १ गुरु २ मोक्ष ३ सन्त ४ धन्य ५ धन्य ६ प्यारे ७ विवेक सहित ८ प्रकाशित ९ अनहदशब्द १० भेद ११ ईश्वर १२ रखताहै १३ दृष्टि १४ प्यारा १५ गगन १६ आवाज़ १७ तेल १८ दूसरेस्थानमें १९ आनन्द २० कालयम २१ भेदी २२ मूर्ख २३

दिलसे कहता हूं ज़रा तू रह सफ़ा। क्या हुआ जो आ-गये ज़ोरोजफ़ा[१] ॥ बृन्दाबन हक़ से न फेर हरगिज़ नज़र। गंज[२] कारूं भी मिलै तुझको अगर ॥ २॥ दम निकलताहो फ़ाके[३] से अगर । ध्यान मतकरना किसी की नान[४] पर॥ वाज़[५] मुरशिदपर नहीं तुझको अमल। मुहँ छिपाना सकृल सैताने दगल ॥ गोकि तू रखताहै गंजे सीमोज़र[६] । खाकसे वत्तर नहीं हिम्मत अगर ॥ जो हद[७] तकबायह नहीं ऐ बेख़बर । होगये दुरवेश[८] गुदड़ीपहनकर॥३॥ बृंदाबनखाहूत[९] जिसकाहै मुक़ाम। है फना[१०] ज़ातेबक़ा[११] हेला कलाम[१२] ॥ बन्दगी तेरी है सब मकरो दगा । ख़ाल[१३] सनलिल्लाह न इक सि-जदा[१४] किया ॥ बनगये सूफी[१५] नहीं गो सीना[१६] साफ़। बेसफाई इस्क़दर ऐसे खिलाफ[१७] ॥ यह खुदी[१८] बदहै इसे इसला[१९] न कर। ऐब अपना देख मत हो बेख़बर ॥ नफ्स गुमराह[२०] हर घड़ीहै घातपर। और सोहरत[२१] चाहता है सरबसर ॥ हाथ फैलाता है तू बहरेदुआ। क्यों तू बृन्दाबनहै तालिब[२२] अजरका॥४॥ एक दिल उसमें तमन्ना[२३] यहज़ार। सीनयेदिल होगया वस तारतार ॥ दिल जो आलूदा[२४] है अज़ हिरसौ[२५] हवा। पा नहीं सक्ता वह इस राहेखुदा॥ हसब[२६] किसमत जुहै ऐ बेख़बर । उस पै कानै[२७] हो मिलै जो खुशको तर ॥ देख साहे को कि बहरे[२८] मालज़र। वाप को भाई

आपद् १ खज़ाना २ भूख ३ रोटी ४ उपदेश ५ मालधन ६ वैराग्यादि ७ साधु ८ अद्वैत ९ मरजीवा १० अमर ११ निस्संदेह १२ हरहेत १३ दण्डवत् १४ ब्रह्मज्ञानी १५ हृदय १६ उलटा १७ अनात्मअहंकार १८ कभी १९ मनभूलाहुआ २० प्रभुता २१ मंगता २२ इच्छा २३ भराहुआ २४ ईर्षाआदि २५ बराबर २६ सन्तोष २७ वास्ते २८

को मारै बेख़तर ॥ हिम्मते आली जो बृन्दाबन नहीं। औरतोंकी मिस्लहो परदेनिशीं ॥ ५ ॥ नफ्स[1] अम्मारह को मारा चाहिये। हक़ अपना देख खाना खाइये॥ खाय गर एक लुक़मा[2] अज़बजहे हलाल[3]। रोशनीहो दिलपै अज़महरे कमाल ॥ नेकोबद जो कुछ आवे नज़र। सब वहीहै सब वहीहै ऐ बेख़बर ॥ नक़लरखता है ऐ मरदेखुदा। एकदम एक पल न हो उससे जुदा॥ फ़नाफ़िल[4] अफ़ाल हो जब काम है। जात बृन्दाबन को पातबनामहै ॥

तू फ़ना[5] हो पाइगा लज़्ज़त[6] कमाल। उसमें गुमहोय पस इसे कहतेहैं हाल ॥ वह तो तुझमें है नहीं तुझको ख़बर। वास्ते जिसके फिरा तू दरबदर ॥ दिल तेरा हो दोजहांसे बेनियाज़[7]। बेहक़ीक़त छोड़ ऐ नादां मजाज़[8]॥ नंग[9] से और नाम से बश मुँहको मोड़। शीश ये नामूश को पत्थर से तोड़ ॥ आब दरिया[10] मौज[11] मारै गर नई। देख बृन्दाबन सफा पानी वही॥

मन १ ग्रास २ धर्मसहित ३ अफ़र्सा ४ मरजीवा ५ स्वाद ६ निरिच्छा ७ प्रपंच ८ लाज ९ पानी नदीका १० लहर ११ ॥

इस भागको चौबे रघुनाथदास सेवक और गुरुशरणदास साधु बिहारवृन्दाबनी पन्थने छन्दोबद्ध किया ॥

सो० श्रीगुरु सद्गुरु राम, कृपाकरो जन जानिकै ।
पावै मन बिश्राम, बाहँ गहे रघुनाथ की ॥

कवित्तघनाक्षरी ॥ श्रीसद्गुरु रामजी दयालुहैं दयानिधि सन्तनकी कृपा उरमाहिं निजधारीहै । श्री जो बिहार-वृन्दाबनही है बार्तिक शान्तही सो वेदको बिचारचारु सारी है ॥ बिषय वेदान्त जानपावे जो न मोक्षी ज्ञान जीव ईश एकता सम्बन्ध सों बिचारी है । कहै रघुनाथ-दास सद्गुरु राम आश सिद्धि है प्रयोजन रूप आपनो लखारी है १ चौबे रघुनाथदास बास है फिरोजाबाद साधूगुरुशरणके साथ मिलि गायो है । आप अभि-लाषासार श्रीगुरुमहाराज बृन्दाबन आचारज स्वामी जी लखायोहै॥ कहिहौं चौपाई छन्द दोहाहू कवित्त जान मङ्गल सवैया पुनि कुण्डली सुनायोहै। कहै रघुनाथदास सद्गुरु रामआश सतचित् आनन्द स्वरूपही बतायोहै॥

दो० बारबार परणाम गुरु, चरणों में शिर नाय ।
हैं कृपालुरक्षक सदा, क्षण क्षणकरतसहाय॥
हरिगुरुसन्तनभेदकछु, जीमें अखंड अकाश ।
सन्तवेद दो साखिहैं, रविवत स्वयंप्रकाश॥
श्रीगुरु दीनदयालुजी, वृन्दाबन सुखधाम ।
रघुनाथमँगताद्वारपर, पूरण कीजै काम ॥
सर्व्ववाञ्छारहिततुम, परहित वेद उचार ।

हमसे जीव उधारने, लियो जगतअवतार॥
हममतिमन्दअजानहैं, सुन्यो सार असार।
कृपा आपकी पायकै, समुझिपरा संसार॥
दीनदयालु दयानिधि, मृदुलस्वभावसनेह।
कृपादृष्टि चितशांतिहै, बचनफूल झर मेह॥
शांतिवेद जो बार्तिक, भाग पांच निजसार।
जिसमें चौथे भाग को, छन्दोबद्ध बिचार॥

सवैया—दीनदयालु दया कर हेरेहि दोष दलैं क्षण एक न लागै। पारस लोहक भेद न देखत कञ्चन होत स्वरूप सभागै॥ जो सरिता मिलि जातिहि गंगहि नाम स्वरूप सबै पुनि त्यागै। दास कहै रघुनाथ दयाकर दीनदयालु दया बर मांगै १॥

सो॰गुरुपद रजनिजमूल, भर्मभूल सब मेटिया।
तजै हंस अस्थूल, गुरु घट भेदलखाइया॥
दो॰मो मति रङ्क दलिद्दरी, तुम गुणरत्न अमोल।
अनुभवदृष्टि गुरुकृपा, समुझिपरै तब तोल॥

छंद॥ बार बार प्रणाम गुरुके चरण में शिर धरि करूं। कीजे गिरा अति बिमल पावन राम सद्गुरु उच्चरूं॥ मैं दीन तुम समरत्थ दाता भक्तिदान जो दीजिये। रघुनाथ तुम्हरो दास किंकर जानि कर गहि लीजिये १॥

छंदत्रिभंगी॥ सद्गुरुश्रीरामा मनविश्रामा सबसुखधामा भयहारी। गुरु दीनदयाला करत निहाला जन प्रतिपाला सुखकारी॥ वृन्दावन स्वामी चरणनमामी अन्तर्य्यामी टेर सुनो। गुरु शरण तुम्हारो दीन पुकारो

बेग सम्हारो भरम हनो १ गुरुदीनदयाला अतिहि कृपाला सबसुखआला निरबानी। भक्तनहितकारी नरतनधारी दुष्टसँहारी सुखदानी॥ गुरु ज्ञानप्रकाशी भ्रमतमनाशी घटघटबासी अपरपरे। गुरुशरणबिचारी प्रीतिसम्हारी गुरुकृपारी शरणपरे २॥

मङ्गल॥ पापपुण्य के फन्द हैं बन्धन भवमाहीं हो॥ सद्गुरु रामदयाकरो गहिलीजै बाहींहो १ श्रीवृन्दावन चरणकी आशाचितधारीहो॥ आवागमननिवारिकै कीजै मोहिं पारी हो २ पाप पुण्य अज्ञान में मन भर्म भुलाईहो॥ बिषयनीर मन मीनहै आशा लपटाईहो३ दान भक्तिको दीजिये गुरुदीनदयालाहो॥ पल क्षण सुरति न बीसरै नटकरत ख्यालाहो ४ सदासर्वदा सङ्ग रहौं नहिं चरण बिसारीहो॥ आशासर्व समेटिकै द्वैता भ्रम जारीहो ५ अर्जीसुनि कृपाकरौ गुरुलेउ उबारीहो॥ मोको और न ठौर है एक आश तुम्हारीहो ६ भूलि गयो निजदेश को यमजाल पसारी हो॥ सद्गुरु रामकृपा बिना नहिं होवै पारीहो ७ श्रीबृन्दाबन चरण की मन आश लगाई हो॥ गुरु शरण दासरघुनाथने बिनती कहि गाईहो ८॥

दो०सद्गुरु राम मनायकै, करौं ग्रन्थ बिस्तार।
कृपाकरौ सबसन्तजन, बालक बिनय बिचार॥

सो०बर्त्तमान के माहिं, प्रीयलगत बेदान्त अति।
लहैममाखी ज्ञान, करअभ्यासजुनित्यप्रति॥

दो०दर्पण करके माहिंहै, दर्पण माहीं आप।
बृन्दाबनबिहार में, पूरण रहिया व्याप॥

कवित्तघनाक्षरी ॥ बहुधा इस काल माहीं ज्ञान होत सुखदायी सबन को प्यारो जान बेदांत लखायो है । साधन जो कहै चार गुरुमुख चितधार पहलो है विवेक जो वैराग्य दूजो गायो है ॥ सम्पति जो षट मानि मोक्षता ये चारि जानि जोई अधिकारी भयो साधन समायो है । कहै रघुनाथदास सद्गुरु राम आश सद्गुरु आज्ञा पाय गाय कै सुनायो है १ ॥ कवित्त ॥ नित्य वा अनित्यकी समुझ सो विवेक जानि रागन से रहित जो वैराग्यही सुनायो है । सम्पति जो षट् मानि मन सम जानि इन्द्रिय दमन करि दम सोई गायो है ॥ होय उपराम जग उत्पातिहै जानो तब शीत उष्ण द्वन्द्व सहै तितिक्षा बतायो है। श्रद्धा गुरु वेद माहिं समाधान चित्तठाहिं साधन सम्पन्न चारि ज्ञान लाभ पायो है २ ॥ सवैया ॥ साधन चारिजु बेद कहैं गुरु राम कृपा अधिकारि सुजानै । सो निज रूप अनूपलखे जग भेद अभेद सुवृत्ति समानै ॥ राम गुरू बृन्दावन धाम सुजाप करै भव के भय मानै। दास कहै रघुनाथ दया कर ज्ञान सुभानु प्रकाश अमानै ३ ॥ कवित्तप्रमाणी ॥ श्रवण मनन निदिध्यासन ज्ञान जु तत्पद त्वंपद अर्थहि शोधै । मोक्ष परापति ज्ञान प्रकाश गुरूकिरपा मनको नितबोधै ॥ श्रवणआदि जो साधन चारि कहै अन्तरङ्ग हृदयविचमांधै । कर्म स्वई वहिरङ्ग कहे सब मोक्ष लहे अन्तरङ्ग प्रबोधै ४ ॥ कवित्त ॥ साधन जो वहिरङ्ग सधारण मुख्यरहै अन्तरङ्ग सो ज्ञानै । कर्मकरै निष्कामनइच्छित शुद्धीलहे मन वेद प्रमानै ॥ वहिरङ्ग सधारण गुप्त सोई

अन्तरकाल मिलै फलजानै । कर्मन को फल हाल न होतहै बीज जमैं पर बृक्ष बखानै ५ दोय प्रकारको ज्ञान कह्यो अपरोक्ष परोक्ष सुभेद बतायो । परोक्षज्ञान के ब्रह्मकहूं अपरोक्ष स्वरूप सो आप लखायो ॥ शीश कि टोपी पायँपरी भइ दृष्टि अगोचर भेद न पायो । भेद मिल्यो जब चेत भयो यहि ज्ञान परोक्षसों बेद लखायो॥ लक्षि भई जब रूप लख्यो तब दृष्टिभई कछु खोयो न पायो । सद्गुरु राम कृपा रघुनाथ परोक्ष रहा सो प्रत्यक्ष दिखायो ६ बहुधा अब लोगकहैं इस काल नहीं अधिकारी के ज्ञानभयो है । बिना अधिकार वेदान्त श्रवणकरि बाचकज्ञान सो धारलयोहै ॥ कोइमानुष ऐसहि कहतरहा अवधूत तहां इक आइगयो है । उस मानुषने परणामकरी उनको निजनाम सो पूंछिलयो है ७ अवधूत कहा इस देह को नामसो चन्द्रमणी यह भेद दयो है । आपन देह को नाम कहा निज आपन नाम सो क्यों न कह्यो है ॥ कह अवधूत यह देहको नामसो चैतन का नहिं नाम भयोहै । सद्गुरुराम कृपा रघुनाथ सो ब्रह्मसदाई अकर्त्ता रह्योहै ८ पूंछत फेरि कि आपहो कौन दियो पुनि उत्तर ब्रह्म बतायो । आपहौ ब्रह्म तो और कहा सब देश के भेद सो जक्क कहायो ॥ अवधूत कहा दृशमान पदारथ है जगरूप सो मिथ्या लखायो। अरु है सब ब्रह्म यही बिधि के मुख रामकृपा रघुनाथ सुनायो ९ है सब ब्रह्म तो भेद कहा जग नीचहु ऊंचको भेद न कीजै । भोजन हेतु फिरौ घरमांगत रोटी नहीं उपला भष लीजै ॥ कहत बुरा कोइ मारत देहको क्रोध

करो मति दोष धरीजै। ज्ञानप्रकाश भयो जनकादिक लोभ न मोह अहंवृति छीजै १० ब्यासभये जनकादि सुने जिन ज्ञान कि शक्ति सो ऐसी भई है। पृथ्वीको लौटिकै फेरिरचै अगिनी बिच पैर न शोक लई है॥ ज्ञानी सुनै जड़भरतभये जिनके कांधे पर भारदई है। ज्ञानी तौ अन्तर्यामी सदा तुमको अब ज्ञाता कैसी भई है ११ जब ज्ञानभयो जगको क्या भाषत आपको ज्ञान न मालुम कैसो। आपहै ब्रह्म सो कौन प्रकारके कहिये विवेक वैरागहै जैसो॥ षटसम्पतिहै किसभांति तुम्हारि सुमानत ब्रह्म जक्त पुनि ऐसो। सद्गुरु रामकृपा रघुनाथ सो सूरप्रकाश नहीं तम भैसो १२ हमतो हरिदास दुखी भी सुखी कहिहैं असमर्थ सो जीव कहावैं। रक्षामांगतहैं नित रामकी माया कही कछु अन्त न पावैं॥ देव बड़े ब्रह्मादिक ये सब भूलिरहैं हरिके गुण गावैं। जीवकी कौन बिसाति कहा गुरु रामकृपा रघुनाथ सुनावैं १३ गीता भागवत भगवान कही उसके अनुसार सो राह चलेहैं। इच्छा स्वर्गादि सुखनकी राखत साधु मुनीश्वर मेल मिलेहैं॥ सेवाहरिकी नितप्रतिकरै शुभसाधन भक्ति के सङ्ग मिलेहैं। ऐसे मनुष्य कही जबहीं अवधूत सो उत्तर देतभयेहैं १४ अवधूत कहै ब्रह्मईश्वर जीवको देह स्वरूप सो भेद लखीजै। उत्तर प्रश्नको तोहिंमिलै सब संशय शोच हृदयतम छीजै॥ समभ्क न बूझ करै बकवाद सो छोंड़दे राह विलम्ब न कीजै। सद्गुरु रामकृपा रघुनाथ सो देतरहै दृष्टान्त सुनीजै १५ मेंढक कूपमें वासतहां यक हंस कहूं सिन्धुसे चलिआयो। मेंढक पूंछत

कौन तू है कहँ देश तुम्हार सो भेद बतायो॥ मम नामहै हंसरहैं सिंधुमें सोई मेढकको निज भेद लखायो। मेढक पूँछत सिन्धु किता तब हंस कहा बड़ थाह अथायो॥ मेढक एक छलांग लई इतना बड़ सिन्धु सो हंस चुपायो १६ हंसकहा बहु सिन्धुबड़ो तब मेढक दूसर मार छलाँगी। कहि इतना बड़सिन्धु तुम्हार सो हंस कहा बड़ थाह न लागी॥ मेढक फेरि रिसाय कहै लई तीन कुलांच बड़ा कहाजागी। मेढक झूठ कहा जबहीं तब हंस चुपायरहै शठत्यागी १७ क्या मेढक खूब कहा हम को सोई आप बनै निज हंस समानै। अब ईश्वर जीव का भेदकहो अरु देहभई सो कहो परमानै॥ अवधूत कहा यही शुद्ध चैतन्यको रूप अरूप सो ब्रह्म बखानै। माया सहीत जो ईश कहावहि जीव अविद्याके बीच बँधानै १८ मिथ्या जड़ देह असत्यकही दीखत जिमि स्वप्न समान बिलासै। चेतन शुद्ध अनन्द स्वरूप है पूरण ब्यापक ब्याप प्रकासै॥ ब्यापक ब्रह्मको अङ्ग अविद्यामैं नाम वही कूटस्थ प्रकासै। सद्गुरु रामकृपा रघुनाथ सो ईश्वर जीव अनादि सुबासै १९ ब्रह्मको अङ्ग जो भास अविद्यामें जीव सोई कूटस्थ कहायो। कारज देह प्राज्ञ सुनाम है सुन सुषोपति बीच रहायो॥ बुद्धि भई लै जीवप्रकाशित भूलिरह्यो निजरूप न पायो। जागिपर्यो कहि सोये भले हम जीव वही कूटस्थ लखायो २० शुद्ध सतोगुण ब्रह्मको भास जो मायाको घेसि सो ईश कहायो। लोक रचै क्षणमाहिं सबै पल एकमें शक्ति सो देत मिटायो॥ रज तामस सात्त्विक

ब्रह्मको भास भयो स्वई जीव अविद्या बँधायो। जीव
प्रतन्त्र सुतन्त्र नहीं रघुनाथकृपा गुरु रामको गायो २१॥

दो० माया में आभास जो, ईश्वर चेतन मान।
जीव अविद्या भास है, देह कूटस्थ प्रमान॥

चौ० कूटस्थभासबुद्धिबिचआया। प्राज्ञे सुषोपति जीव कहाया॥
बुद्धि सुषोपति माहिं अभावै। ब्रह्म भास कूटस्थ रहावै॥
ईश्वर सर्व समर्थी करता। माया उसकी आज्ञा धरता॥
जीव भोगता बास अविद्या। पाप पुण्य आभासे निन्द्या॥
पाप पुण्यके फल को भोगै। बन्धनजीव जगत भवरोगै॥
ईश्वर में जो अंश अभासा। फल देता दोनों परकासा॥
चेतन अंश एकही जानो। ईश्वर नित्य मुक्ति करमानो॥
शुद्ध सतोगुण में आभासै। चेतन माया ईश प्रकासै॥
राजस तामस सत परधाना। भास जीव परछिन्न सुजाना॥
ईश्वर व्यापक कहत उसीसे। है सारै नहिं भेद किसीसे॥
कालदिशा व्यापक कहलावै। अन्त होइ सर्वज्ञ न पावै॥
वास्तव व्यापक चेतन एकी। उसकी पूजा करै विवेकी॥

दो० सर्वठौर व्यापक सदा, जलथल तृणभरपूर।
पूजन कर इस देवका, निशिदिनहालहुजूर॥
निराकार आकार जो, पूजा फल परछिन्न।
गुरुबृन्दावन बोधबिन, पूरण लख्यो न भिन्न॥
चेतनसर्व अखण्ड है, यह निश्चय परमान।
भेददृष्टि है देह की, सद्गुरुमें नहिं जान॥
अग्निमाहिं जैसे नहीं, शीतलता को लेश।
वृन्दावन तस ब्रह्म में, नाहीं द्वैत कलेश॥

चौ० मैं आपनपौ ब्रह्म बताया। जीव ईश नहिं देही गाया॥

दुख सुख खाना पीना मारन। नाम जाति यह देही धारन॥
है व्योहार धर्म माया के। पृथक् पृथक् नहिं मिटनेताके॥
ज्ञानी धर्म न मेटत भाई। मिथ्या जानै भोग कराई॥
ज्ञानी माया सत्य न जानै। देह भोग प्रारब्धी मानै॥
श्वपच सङ्ग क्या उपला खाये। इससें ज्ञान न वेद बताये॥
देह हेतु भोजन जो भाखा। जगव्योहार सनातनराखा॥
अङ्गीकार करै सो भाई। श्वपच सङ्ग नहिं खाइभलाई॥
श्वपच सङ्ग जो मुक्ती पावे। श्वपचबन्धु बहु भोजनखावे॥
उनकी मुक्ति न होवै भाई। उपलादीमक निशिदिनखाई॥
दीमकही को ज्ञानी जानो। साधनबल कछु नेक न मानो॥
गारी मार खाय चुप रहै। पशू मार गारी नित सहै॥

दो० मूढ़ जीव अज्ञान है, सहै कालकी मार।
भक्षअभक्ष जो खात है, विना विवेक बिचार॥

चौ० सर्व ब्रह्म जो हमने भाषा। उपलाश्वपच ब्रह्मही आपा॥
ब्रह्म बिना कोइ दूजा नाहीं। है अधिकार ब्रह्मके माहीं॥
कहूँ एक दृष्टान्त सुनाई। मन निश्चय करि सुनिये भाई॥
ज्ञानी यक बेदान्त पढ़ाया। अपने चेले को समझाया॥
जीव ब्रह्मकी एकता आई। चेतन ब्रह्म एक दरशाई॥
चेला कहै ब्रह्म में स्वामी। चेतन कहा एक गुरु नामी॥
पीछे गुरु ने पानी मांगा। चेला ब्रह्म कहन तब लागा॥
पानी कैसे लाऊँ नाथा। मैं हूँ कौन गुरू कहि बाता॥
पानी लाना पीना कहिये। गुरु चेला क्या धर्म बतइये॥
चेला चुप्प जवाब न आया। सर्वरूप चेतन कहि गाया॥

कवित्त लक्षि स्वरूपमें भेदनहीं कछु देहके भावसे धर्म बखान्यो। चेलागुरूकर तत्त्व सबै पुनि देह के भास में

सत्य सो मान्यो ॥ सेवक सेव्यके भाव बिना भवपार न पावत जीव भुलान्यो । देहधरे जस कर्मकरे अरु ज्ञान स्वरूपमें भेद न जान्यो १

चौ० अब शक्ती सामर्थ्य सुनाऊँ। शक्ति पदारथ ईश्वर ठाऊँ ॥
मैं अपने को ईश न भाखा। शक्ति प्रयोजन रंच न राखा ॥

दो० ईश्वर शक्ति समर्थ है, मायाकृत व्यवहार ।
पार न पावै है मृषा, स्वप्नसृष्टि बिस्तार ॥

चौ० माया मिथ्या पार न पावे। मृगतृष्णा जल भर्म भुलावे ॥
आदि अन्त रचना के माहीं। मायाकृत विचार कछु नाहीं ॥
कहै अशक्तिवानि जो ज्ञानी। सुनिये भेद सहित सहदानी ॥
ज्ञानी कहिये दो परकारा। एक युंजान युक्ति दो न्यारा ॥
दो प्रकार योगी जू जाना। कोई अधिक प्रारब्ध बखाना ॥
कोई न्यून प्रारब्धै राखै। योगी युक्ति ईश कहि भाखै ॥
मैं नहिं कह्या ईश अवतारा। व्यासादिक से भेद है न्यारा ॥
जनकादिक युंजानै जानो। ऐश्वर्यवान भये सो मानो ॥
मम प्रारब्ध देह की ऐसी। नहिं ऐश्वर्य भोग फल जैसी ॥
ज्ञान माहिं कछु अन्तर नाहीं। वास्तव रूप अभेद सदाहीं ॥
अस प्रारब्ध जनक क्यों पाई। भेद कहूं सुनिये मनलाई ॥
जाके भई भावना जैसी। सो उपासना ठानत तैसी ॥

दो० सह कामी फल पावते, परारब्धको भोग ।
निष्कामी की भक्ति जो, ज्ञान मोक्ष संयोग ॥
दोनों करी उपासना, जनक लह्यो ऐश्वर्य ।
निष्कामीकर ज्ञानबल, भयो असत्यसुबर्य ॥

चौ० ज्ञानी जगत अभाव सुजानै। ऐश्वर्य को मिथ्याकरिमानै ॥
ऐश्वर्य अधिक होइ जो भाई। जीवन्मुक्त सुखे नहिं पाई ॥

थोड़े ऐश्वर्य में सुखभारी। ज्ञानी रहै उपाधि निवारी॥
तुम जो कहा वैराग्य न ऐसा। विधि वेदान्त कहत पुनि तैसा॥
हम तुमसे पूछत हैं भाई। हमने क्या धन सम्पति चाई॥
जिससे तुम वैराग्य न जाना। यह तुमने कैसे कर माना॥
हम तुमसे कछु मांगा भाई। तुमने कौन परीक्षा पाई॥
धन सुख इच्छा हम नहिं कीन्हा। अहन सत्य तुम कैसे चीन्हा॥
जनक आदि जो ज्ञानी भाई। राज्यभोग प्रारब्धी पाई॥
ज्ञानीकी कछु हानि न जानो। दांत तोड़ि भय सर्प न मानो॥
दो प्रकार कह्यो वैरागा। दोषदृष्टि मिथ्या जग त्यागा॥
दोषदृष्टि यह कहियत भाई। दुख सुख सहे न त्याग कराई॥
दो० यह तरङ्ग वैराग्य है, कछू न किया विचार।
भोगप्राप्तिकेहोतही, बँधे लोभ की लार॥
चौ० दुखको पाइ फ़क़ीरी लीन्हा। सुख के हेतु छोड़ि घर दीन्हा॥
इहां महन्त कहावन लागे। हाथीप्रति निशाननित आगे॥
परारब्ध माया ने घेरे। ममता मोह किये पुनि चेरे॥
ज्ञानवान मिथ्या करिजानै। ब्रह्मलोक सुख नश्वर मानै॥
देह प्रारब्ध भोग सुख आवै। निर इच्छित सो भोग करावै॥
परारब्ध आधीन शरीरा। निश्चल सदा रहै गम्भीरा॥
ज्ञानी कछू शंक नहिं मानै। दुख सुख सहै अकर्त्ता जानै॥
रूखा सूखा टुकड़ा खावै। धूपछाँह सहि चित न डुलावै॥
मिथ्या समुझि भयो वैरागा। स्वर्गादिकसुखतृणसमत्यागा॥
यही तीव्र वैराग्य कहावै। निर इच्छित सबकालरहावै॥
तुम जो कहा पटसम्पति नाहीं। कहा मुमोक्षी भोग कराहीं॥
रूखा सूखा टुकड़ा खाते। पृथ्वी माहीं शयन कराते॥
दो० भूखप्यास भी सहतहैं, शीतउष्णभी खायँ।

परमारथ के कारणे, स्वारथदेत न पायँ॥

चौ० जो तुमको यह निश्चय भाई। धूप छाहँ सहि मोक्ष कराई॥
सब दिन धूप मजूर जो खावै। रोगदोष कछु निकट न आवै॥
ज्ञानी उनको जानो भाई। धूपछाहँ सहते नित आई॥
इसका यही भेद पहिंचानो। धूप छाहँ मिथ्या करि मानो॥
परमारथ में रुकै न भाई। शीत उष्णसुखदुखसमताई॥
दो मनुष्य छाया में बैठे। गरमी ऋतु खसटट्टी लेटे॥
आकर कहा एक ने भाई। साधू एक अपूरब आई॥
एक मनुष्य सुनत हर्षाना। दर्शन को निश्चयकर जाना॥
दूजा कहै धूप है भाई। हमसे तो कहुं चला न जाई॥
वह मनुष्य दर्शन को गयो। धूप छाहँ दो सम करलयो॥
काम अवश्य होइ जो भाई। धूप छाहँ समझै समताई॥
तुम अपना बृत्तान्त बखाना। सोहै सत्य उचित परमाना॥
दासभाव शुभ कर्म बखानै। कथाश्रवणसुमिरणअरुध्यानै॥
गुरुसेवा सबही को मूला। गुरुमुख पावै भेद अतूला॥

दो० पहिले साधन है सही, कर्म उपासनजान।
ज्ञान उदयपरनास में, भेदाभेद बखान॥

चौ० त्रयकाण्डी यह भेद बखानै। कर्मउपासन है फिर ज्ञानै॥
तुम देखो वह हृदय बिचारी। चौका रोटी हेतु सम्हारी॥
जबतक भई रसोईं नाहीं। चौका को अधिकार रहाहीं॥
रोटी खाय लई जब भाई। चौका को अधिकार उठाई॥
चौके का कुछ ध्यान न होई। कोई जाउ छुवो पुनि कोई॥
जबतक ज्ञान होइ नहिं भाई। तबतक साधन सर्व कराई॥
बन्धन नहीं ज्ञान के पाछे। बिना ज्ञान दुख सुख बिचनाचे॥
श्रीभगवान भागवत माईं। उद्धव से यह कहा बुझाई॥

सर्वभूत में भाव न होवै । तबतक मन वच काया धोवै ॥
करै भक्ति जबताईं मेरी । ज्ञान प्रकाश न साधन फेरी ॥
हम तुमको नहिं झूठ बतावा । साधनको फल ज्ञान लखावा ॥
तुम चाहे सो भाषो भाई । तुम्हरो नहिं अपराध कहाई ॥

दो० भूखेको हीरा मिल्यो, कदर न वाकी पाय ।
दाने मिलते अन्न के, तासे भूख बुझाय ॥

चौ० हीराकी कुछकदर न जानी । फेंकदिया मूरख अज्ञानी ॥
हीरा ज्ञान अमोलक भाई । बिना जौहरी कदर न पाई ॥
बिना कदर कछु हाथ न आवै । मूरख पचि पचि जन्मगँवावै ॥
यक संशय मेरे उरमाहीं । वाचक भी होते या नाहीं ॥
परमहंस बोले तब भाई । कर्म्मकाण्ड बिचपाखँडआई ॥
पशू मनुष्य जाति मैं भाई । पक्को में कच्चै कहलाई ॥
फुलवाड़ी बिच घास रहाई । कांटे भी होते हैं भाई ॥
तब यह कहा सत्य महराजा । लक्ष्य ज्ञानको कहिये साजा ॥
एक रूप कहनी कहि गावै । तासे लक्ष्य समुझ नहिंआवै ॥
बाचक ज्ञानी अधिक सुनावै । लक्ष्यज्ञानकी समुझ न पावै ॥
अब किरपाकरि देउ लखाई । परमहंस बोले सुनु भाई ॥
पहिले कर्म उपासन कीन्हा । साधनचारिमाहिंचितदीन्हा ॥

दो० श्रवणमननिदिध्यासनै, तत्पद त्वंपद शोध ।
ब्रह्माकार सो बृत्ति है, लक्ष्य सुज्ञानीबोध ॥

छन्द वेदान्त श्रवण मनन कर निदिध्यासनै जो कररहै ।
अर्थतत्पदत्वङ्क पद के शोधि करि निश्चल भये ॥
बृत्ती जो ब्रह्माकार होकर लक्ष्य ज्ञानी सो कहै ।
कीन्ही न कर्म उपासना साधन न सुमिरण भवबहै ॥

चौ० गुरुद्वारसाधन नहिंसाधा । बाचक ज्ञान बचन गहिबाधा ॥

पहिले कर्मउपासन कीन्हा। बचनज्ञान के चितधरिलीन्हा॥
वाचक ज्ञानी कर्महिं त्यागा। इधर उधर नहिं पाई जागा॥
कर्मउपासन करिकै भाई। गये कुकर्म भई समताई॥
मन इन्द्रिनको वश में कीन्हा। गुरुद्वारे साधन सब लीन्हा॥
गुरुकी कृपा लक्ष्य जब पाई। ज्ञानभान हिरदे प्रकटाई॥
लक्ष्यज्ञान प्रकट्यो जब भाई। तम अज्ञानसो गयो नशाई॥
समता भई ईर्षा नाशी। स्वयंरूप घटघट परकाशी॥
शोक मोह मत्सर भ्रमनासै। ज्ञानी रहै अनन्दहुलासै॥
शुभ अरु अशुभ कर्म हैं दोई। निरइच्छित शुभकरतासोई॥
फल की इच्छा रही न काई। जीवों को परबृत्ति कराई॥
वाचक ज्ञानी कर्म्म करावै। करै कुकर्म सुकर्म बतावै॥

दो॰ वाचकज्ञानी कर्म्म में, रहै कुकर्महिं चीन।
गुणछोड़ै अवगुणगहै, कागदृष्टि परवीन॥

चौ॰ चहिये प्रथम साधुगुरु सेवा। सद्गुरु से नहिं राखै भेवा॥
तनधनमन गुरुहेत लगावै। गुरुबचनन में श्रद्धालावै॥
श्रवणमननिदिध्यासनकरही। विधिवेदान्तमाहिंचितधरही॥
पहिले गुरु मुखता चितधारै। गुरुआज्ञा चितसे नहिंटारै॥
जग व्योहार गौन कर राखै। गुरुमुखश्रवणनित्य चितआखै॥
अधिकारी जब होवै भाई। तनमनधन गुरुहेत लगाई॥
अनुभव दृष्टि गुरू जब देवै। सार असार लखै निज सेवै॥

दो॰ ज्ञानभानु घटमें खिल्यो, तमअज्ञान नशाय।
सर्वपदारथ लखि परे, दीन्हाअसुभसुभआय॥
ज्ञानी रहै पहाड़ सम, खटपट व्यापै नाहिं।
वृन्दावनवह शान्तिकर, रह प्रसन्न घटमाहिं॥

चौ॰ ज्ञानी रुचि सुकर्म में नाहीं। कभी कुकर्म न करता भाई॥

वचन ज्ञान के कहत सुनाई। लक्ष्यज्ञान नहिं पाया भाई॥
कसरिमनन निदिध्यासनकेरी। मननिदिध्यासनलक्ष्यलखेरी
जो यह कहत लोग वहुतेरे। ज्ञानी कर्म न करते हेरे॥
ज्ञान कौन विधि जानिय पूरा। विन उपासना होइ न शूरा॥
जन्म जन्म में कर्म कराई। जन्म अनेकन जीव धराई॥
जन्म अनेकन को फलभाई। सिद्धिहोइ ज्ञानै प्रकटाई॥
गीता में भगवान वखाना। सिद्धी कोटिनजन्मप्रधाना॥
कर्मउपासन पहिले कीन्हा। उसकी यही परीक्षा चीन्हा॥
परमारथ की प्रीति रहावै। करे सुकर्म कुकर्म डरावै॥
साधु गुरू की सेवा करै। दुखसुख सहै भजनचितधरै॥
भजन गीत मङ्गलउत्साहा। चित उदार सन्तनसँगचाहा॥
पहिले कर्म किये नहिं भाई। उसकी प्रकृति विप्र जे गाई॥
रहै सदा बिपरीत इसीसे। ज्ञान भक्ति नहिं मेल किसीसे॥

दो० महाराज तुमने कहा, जग मिथ्या व्योहार।
बिना भया भासै सदा, यह सन्देह अपार॥

स० आप कह्यो जगको कस झूठ बिनाई भये नित भासिरह्योहै। बात नहीं यह आवति ध्यानमें है प्रत्यक्ष सुदेखि कह्यो है॥ भांतिहि भांति अनेकनये सब राज भये व हुं राज्य गयो है। शाहफकीर भये अवतार महा बलवान सुराज्य लयो है १ देखत एक दुखी परिवार सुखी धनधान्य प्रधान नयोहै। ज्ञान गुरू उपदेश करे चरचाकरते अरु आप कह्योहै॥ पूजन ध्यान करें सबही विधि वेद पुराण जु भेद दयो है। राम गुरू रघुनाथ कृपाबिन बन्धनमूल न दूरि भयो है २ जो तुमने यह बात कही सब सांच न झूंठहु नेकहुमानी। देखि

बिचार करो मन में जग है स्वपना कछु भेद न जानी ॥ देखत देखत आपुरचै मनजागिपरे तबनाहिं दिखानी। एक कहूं दृष्टान्त सुनो अब साहभये स्वपना सुखसानी ३ साह बड़े लड़िके बहुपाइन ब्याहि बहू बड़धूम सुआनी। जातिहि आदिकी पांतिकरी सब काज करे बड़ मानगुमानी ॥ पूजन शास्तर वेदपढ़े कछुरोग भयो नहिं होत अरामी। राम गुरू रघुनाथकृपाबिन जागतही नहिं भूल बखानी ४ रोग अराम भयो जबहीं भइ देह निरोग रह्यो सुखसानी। फेरि बिराम भयो लड़िका बहु वैद्य दवाकरि रोगबढ़ानी ॥ छूटिगयो तन साह सुरोवत पीटत मूड़ महादुखमानी। भाई बन्धु सबै समुझावत पण्डित साधहु कहत बखानी ५ शान्ति न होति दुखी बहु भांति सुसाधु कहा जग स्वप्न समानी। साह कहै तुम्हरे कछु होत तौ दुःखमें रोवत स्वप्न न जानी ॥ देउ जगाय तुम्हैं किरपाकर साधु अवाजदई सुजगानी। स्वप्नपदारथ दूरिभयो दुख आपहि आप मिटी सुगलानी ६ जागि पड़े अब देखत साह सुमाल कुटुम्ब न देत दिखाई। साधु जगायदये हमको सुसाधन दीखत शोचत भाई ॥ धन परिवार कुटुम्ब कहां बहु रोइ रहीं जहां लोगलुगाई। जैसइ को तैसई रहेव मनकी रचना मनमाहिं समाई ७ शास्तर वेद पुराण गुरू अरु ज्ञातन ज्ञान गये न रहाई। देखतही सब सांचहि सांच सुजागि परे कछु हाथ न आई ॥ जागतके सम स्वप्न पदारथ शास्तर वेद गुरू सुखदाई। सद्गुरु रामकृपा रघुनाथ सो जागिपड़े स्वपना नहिं खाई ८ स्वप्नपदारथ और कहै

कछु जक्ककहै कछु और बखानी । स्वप्नमें देखि कही बस्तूसुन ध्यानरहै सोइ स्वप्न समानी ॥ अवधूतकहै यह झूंठ सबै जिस बालको ध्यानसो भागनजानी । बहुबस्तु रहै अपने अस्थानपै यह अपने अस्थान बखानी ९ केवल ध्यानकी याही करै पुनि स्वप्न में यह नहीं बातहि मानी । वस्तु कुभोगत जाग्रतके सम दृष्टादृष्ट सो दृश्य समानी ॥ स्वप्नसम स्त्रीभोग त्वचा बिन ध्यान से भोग न होत दिखानी । घोड़े की बात सुनाइ कहूं रघुनाथ कृपा गुरु रामकी जानी १० तुम आपही शोच विचार करो घोड़ा तुम्हरे सुतबोलन माहीं । स्वप्नमें घोड़ेको ध्यान कर्यो घोड़ेपैचढ़े सुकहौ केहिठाहीं ॥ स्वप्नमें चित्त ने और रच्यो सोइ जाग्रतमें घोड़ा घरमाहीं । स्वप्नमें बीच बजार सवारहो सैरकरी पुनि घास खिलाहीं ११ स्वप्न सुदेखि बिचारकरौ कहु जाग्रत ध्यान न भोग कराई। बस्तुनई जु रचै मनहीं सब जाग्रत स्वप्नलखौ समताई ॥ चित्तही चेत न काज करै सब जाति कुजाति रचै जगआई । सद्गुरु रामकृपा रघुनाथ सो वार न पाररहै सबठाई १२ तुमने पूछा बृत्तान्त कहा तप भोगसे राज्य सुकर्म कराई । राज्य को भोग सो नरकहि भोगत ज्ञान भयो सब स्वप्न दिखाई ॥ ऋषि मुनि आदिक भेद सो पूछत आयु जो बर्ष हजारोंकी पाई। कौनसे काम के हेतु भयो तनकाज कहा नहिं भोग कराई १३ अब जु कहो नहिं पावत आयुको नामकी राह सदा सुखदाई । कोटिनजन्ममें मुक्ति नहीं कलिमें गुरुरामने सहजलखाई॥ सोहं शब्द सुतन्तरश्वास में नामजपो मनघेरि घुमाई।

सद्गुरु रामकृपा रघुनाथ सो श्रीवृन्दावन सन्तलखाई
१४ सर्प को भर्म्म भयो रसरी बिच देखत आप पहाड़
कुधाये। लाऊं शिला इस सर्प को मारिये सर्प न दीखत
भर्म्म नशाये॥ ज्ञान गुरू उपदेश कियो जब जाग्रत
स्वप्न सो भर्म्म न पाये। सद्गुरु रामकृपा रघुनाथ सो
रामगुरू वृन्दावन गाये १५ कहत मनुष्य जो आप
कहा सब सत्यही सत्य प्रयोजन भाखे। जक्त समान
कहो स्वप्ना एक मिथ्या रूप सुसत्य न आखे॥ स्वप्नमें
सत्य सुसत्यहि भाषत त्यों अज्ञानमें जाग्रत साखे।
स्वप्नसे जाग्रत है तबहीं कछु स्वप्न कि सृष्टि न देखिये
लाखे १६ होत असम्भव चिह्न न पावत ऐसेही जाग्रत
ज्ञान प्रकाशय। यह स्वप्ना निश्चय जगभासत ज्ञान
उदयपर भर्म्म सुनाशय॥ सद्गुरु रामकृपा रघुनाथ
सो ज्ञानगुरू घट कीन सुवाशय। रामगुरू वृन्दावन
धाम सो एकहि रूप न दूसर आशय १७ जिसको ज्ञान
भयो परिपूरण जगत् असत्य स्वप्न सम भासय। एक
बड़ा सन्देह इसी में स्वप्नकी सृष्टि को मूल बिनाशय॥
ज्ञानभये पर जक्त रहै पुनि देहरहै व्योहार प्रकाशय।
अवधूत कहा दृष्टान्त यथारथ तुम समझसो ठीकहै आ-
शय १८ जो तुमने सन्देह किया उसका उत्तर प्रारब्ध प्र-
काशै। प्रारब्धको तीर जु छूटिगयो पुनि वेगकु पाइ गिरै
बल नाशै॥ ज्ञान भये पर देह रहै जग भासत है त्यों
सत्य न बाशै। सद्गुरु रामकृपा रघुनाथ सो जक्त अ-
भाव है अन्त पै नाशै १९ मुक्त विदेह कहै उसही को
ज्ञानभये तब जक्त बिलाई। औरहुहै दृष्टान्त कुम्हार को

दण्ड से चक्र फिराइ घुमाई ॥ दण्ड अलग्ग किया जब चक्र से चक्र फिरै कुछ देर न भाई । ऐसेहि ज्ञानी को ज्ञान भये पर भासत है जगदेत दिखाई २० कर्म को दण्ड जु दूरिभयो जिस कारण स्वर्गहु नरक नचाई । देखि अँधेरे में सर्प रजू बिच भ्रम्म भयो भय चोटहु खाई ॥ दीपक लेकर देखिलियो रसरीनिकसी गयो सर्प नशाई । चोटलगी सोइ भोगकरे अब ज्ञानभये प्रारब्ध रहाई २१ ॥

दो० खाना सोना बोलना, ज्ञानी के सम जान ।
सबको जानै ब्रह्ममय, दूजाभाव न मान ॥
ऐसा भी देखा सुना, ज्ञानी जगत अभाव ।
यों ऐसा ज्ञानी भयो, देह वर्ष बिच जाव ॥

चौ० अरु ऐसा भी देखा भाई । ज्ञानी जगत अभाव कराई ॥
जगत अभाव होतही भाई । खानपियनतनसुधिबिसराई ॥
देह वर्ष छः महिना माहीं । पात होय ठहरेगी नाहीं ॥
सब ज्ञानी नहिं एक समाना । परारब्ध निज भेद बखाना ॥
परारब्ध आधीन शरीरा । ज्ञानी बास्तवरूप गँभीरा ॥
एकपुरुष स्वप्न से जागा । स्वप्नबातकाख्यालसुत्यागा ॥
अरु दूसर स्वप्न से जागा । स्वप्नपदारथ सुमिरन लागा ॥
दुख सुख कछू न करता भाई । सुमिरन स्वपना चित्तरहाई ॥
तीसर मनुष्यस्वप्न से जागा । स्वप्नबातका दुखसुखलागा ॥
पश्चात्ताप करत बहुतेरा । स्वप्न राजकरि मानत मेरा ॥
क्योंनहिंसत्य हुआ यह भाई । चुप्परहा मनमें पछिताई ॥
चौथा जागा स्वप्न से जानो । स्वप्न को फल सत्य समानो ॥
राज्यकिया स्वप्न में भाई । अबहूं दूजी कहत सुनाई ॥

दो० जो कुछ देखा स्वप्न में, राज्य भोग कङ्गाल।
लोगोंसे पूछत फिरै, स्वप्न सत्य तत्काल॥
चौ० स्वप्नराजमिथ्या नहिंजानै। सांचमानि सुखदुखलपटानै॥
पंचम जगा स्वप्न से भाई। शोचबिचार करत सो जाई॥
जब जब स्वप्न दिखाई देवे। बुरा देखि डरता दुख लेवे॥
मनमें शोच बिचार सुकरता। सोतानहीं भर्म्म चितधरता॥
छठा पुरुष जागा सुन भाई। प्रथमदशा सुमिरनहोआई॥
मैं ना इसका ना यह मेरा। सोइ रहा अस्थान सुडेरा॥
यह जो कुछ दीखत है भाई। सब स्वप्ना मिथ्या हो जाई॥
जागिचलो उठि देर न कीजै। शिर मारत झूठा क्यालीजै॥
मनुष्य सातवां जागा भाई। यहीदशा नहिं मन दुचिताई॥
कहत परन्तु सैर करलीजै। हानिलाभबिचमननहिंदीजै॥
तुम तौ जागे पीछे वोई। होगे और न दूजा कोई॥
देखै सैर मनै मन माहीं। दशा आपनी बिसरत नाहीं॥
दो० दशा आपनीसुमिरकर, दुखसुखमानतनाहिं।
नहिंहँसना नहिंरोवना, स्वप्नसृष्टिजगमाहिं॥
चौ० कछुक देरतक सैर कराई। जागि उठे कछु कीजै भाई॥
अपनाकाम करन तब लागा। फिरिसोवै आनँदसुख पागा॥
इसमें लाभ न है कछु भाई। जागिउठे सब भांति लजाई॥
देखहु पुरुष सातहू जागे। भेद अवस्था बना सु आगे॥
ज्ञानी की सोइ दशा बिचारो। वास्तवएक अवस्था न्यारो॥
महाराज जो आप सुनावा। हमयहभेद कहीं नहिं पावा॥
तुम जो कहा सत्यही होगी। मेरेही कछु भाग अयोगी॥
मुझको ज्ञान नहीं जो होता। दया आपका भ्रम सब खोता॥
महाराज तुमने असभाखा। भ्रमकरजगतभासनहिंराखा॥

भर्म्मवस्तु सब कहौ लखाई। मेटो मनकी यह दुचिताई॥
कह अवधूत सुनो मन लाई। भर्म्म कहैं इससों सुनि भाई॥
होइ कछू फिर और दिखावै। रस्सी में जो सर्प लखावै॥

दो० सीपी में भासै रजत, मृगतृष्णा में नीर।
भर्म्मरूप ये हैं सही, अज्ञ सहै नितपीर॥

चौ० वास्तवमें रस्सी है भाई। दोष दृष्टि से सर्प दिखाई॥
सीपी माहिं रजत भ्रम होई। रजत भर्म्म सीपी है सोई॥
मृगतृष्णा का रेत कहावै। नीर जानिकर भर्म्म भुलावै॥
ब्रह्म एक यहि भांति रहाई। भर्म्मात्मकयहजगतादिखाई॥
ब्रह्मज्ञान जब हृदय प्रकाशै। आतमरूप जगत सबभाशै॥
जबतक जगत यथारथ दीसै। ब्रह्मज्ञान नहिं बिस्वेबीसै॥
बिद्या पढ़े ज्ञान नहिं होई। सद्गुरुकृपा पाव कोइ कोई॥
गुरुमुख गुरुकी आज्ञा धारै। लहै ज्ञान भव सङ्कट टारै॥
बिद्या कथनी भ्रमना नाशै। विन अभ्यास न ज्ञानप्रकाशै॥
ब्रह्म लाभ सो पावत भाई। गुरु सेवा मनस्थान धराई॥
शान्तवृत्ति जब मनमें आवै। ब्रह्मभास निजरूप लखावै॥
निर्मल जलसम अन्तस होई। आपनरूप लखै सब कोई॥

दो० बिद्या कथनी कूर है, जोअभ्यास न होय।
वृन्दाबनअभ्यासबिन, ब्रह्मलाभ गयोखोय॥
शान्तिवृत्तिजापुरुषकी, ताको भासै आय।
जैसे निर्मल जलबिषे, आपनरूपदिखाय॥

स० दीनदयालु सदा गुरुराम दयानिधि दीनन के हितकारी। जो भवसिन्धु अपार भरा भयदायक लोग सबै नर नारी॥ देखत मोहिं लगे भयदारुण राम गुरू अब आश तुम्हारी। राखिलियो गज ग्राह ग्रस्यो जब सोई

दशा अब होति हमारी १ द्रौपदि चीर दुशासन खैंचत दीन पुकारत चीर बढ़ारी। और अनेकन तारिदिये गिनती नहिं शारद शेष सम्हारी॥ दीन दुखी रघुनाथ पुकारत श्री वृन्दाबन नाम अधारी। जो अवतार भये युग अन्तर सो गुरु रामहिं बेद पुकारी २ दीनदयालु सुनो अब टेर न देर करौ भव सङ्कटभारी। कालकराल महाबिकराल भये पशु मानुषबृत्ति बिसारी॥ कामहिं क्रोध बँधे ममताबश लोभ कि फांस गले बिचडारी। कालकरेराहि मोल पुकारत मारत काजनत्रास पुकारी ३ मातुपिता सुतनारि सुबान्धव प्रीति यही धनहेतु बिचारी। जे धन होतहि प्रीति करैं सब जो धननाहिंत देत निकारी॥ मैं अति दीन दुखी सबही बिधि राम गुरू यह आश तुम्हारी। श्रीबृन्दाबन दीनदयालु कहै रघुनाथ सुलेहु उबारी ४॥

दो० सुदर्शनसिंह की बीनती, बार बार शिरनाय।
सद्गुरुरामके चरण में, सुरतरहै लवलाय॥
कृपा आपकी पाय कै, मनमें बढ़्योअनन्द।
यक संशय मन में रहा, मेटो सो सुखकन्द॥

इति श्री शान्तवेद चौथाभाग का प्रथम बिश्राम सम्पूर्णम्॥

चौ० हेमहराज भर्म्मजब होई। सत्य पदारथ दीखा कोई॥
रज्जू में जो सर्प्प दिखाना। सच्चा देख झूठ भ्रम माना॥
सीपी रेत माहिं भ्रम होई। आतमरूप जो जग भ्रम होई॥
सत्य कौनसा जगत बताया। तिसको देखि भर्म्म भयपाया॥
ब्रह्ममाहिं जग भासत कैसे। भर्म्म भयो कहिये पुनि जैसे॥

परमहंस ने कहा बुझाई। संस्कार जन्यत स्वपनाई॥
पहिले देखी वस्तु सोभाई। संस्कार बासना रहाई॥
अन्तःकरण माहिं सो वासा। उस अनुसार स्वप्न सो भासा॥
यह कुछ नेम नहीं सुन भाई। सच्चा देखि भर्म्म जो पाई॥
भानुमती का सर्प सु झूठा। देखा तिसपर भर्म्म सुऊठा॥
रस्सी माहिं भर्म्म सोइ होई। मिथ्या सर्प लखा पुनि सोई॥
पहिले जन्म माहिं जगदेखा। सो असत्य कछु रूप न रेखा॥
सोई ब्रह्म माहिं जगभासा। भर्म्म भयो अज्ञान विलासा॥
यह सिद्धान्त हमारा भाई। जगमायादिक षट कहलाई॥

दो० षट अनादि ये हैं सही, माया जगत विचार।
ब्रह्म ईश सम्बन्धजिव, गुरुमुखभर्म्मनिवार॥

चौ० हे महराजजगत भ्रमहोई। मृगतृष्णा को जलभ्रमसोई॥
जग में जल से प्यास बुझावै। मृगतृष्णा जल प्यास न जावै॥
फिर मृगतृष्णा समजगभासै। है अनादि झूठी सुप्रकासै॥
परमहंस बोले सुन भाई। इसका भेद कहूं समुझाई॥
सृष्टी कहिये तीन प्रकारा। परमारथ दूसर व्यवहारा॥
तीसर प्रतिभाषित पहिंचानो। भिन्न भिन्नकर भेदबखानो॥
व्यवहारिक जो सृष्टि कहावै। ईश्वरकी रचना श्रुति गावै॥
जाकी प्यास जाहि से जाई। मुखको काम न आंखिकराई॥
जीवसृष्टि प्रतिभाषिक कहिये। जाकी प्यास जाहिसे जइये॥
भेद परस्पर अङ्ग न माहीं। इन्द्री भिन्न न कर्म कराहीं॥
ब्रह्मसृष्टि परमारथ सत्ता। वर्त्तत तीनों काल अवस्था॥
प्रतिभाषिक सत्ता को नासा। ब्रह्मज्ञान बिन मिटै न भासा॥

दो० व्यवहारिकईश्वर बिभव, बिना ज्ञान नहिंजाय।
प्रतिभाषिकसूक्षमहृदय, अनुभवदृष्टिलखाय॥

चौ॰प्रतिभाषिकनहिंमूलबिनाशै। उग्रज्ञान से होवै नाशै॥
जो घट फूटिगया सुनु भाई। माटी में माटी मिलिजाई॥
मृतिका नाश कभी नहिं होई। प्रतिभाषिक सत्ता रह जोई॥
परमार्थक सत्ता उर आवै। तौ प्रतिभाषिकमूलनशावै॥
कहै मनुष्य सत्य सो जाना। स्थूलभ्रम को करो बखाना॥
दै दृष्टान्त भेद समझावो। हृदय बिषे सन्देह मिटावो॥
बाजे पुरुष कहत हैं ऐसे। जगमानो नहिंमानोभयसे॥
इसका भेद कहौ समझाई। संशय रहै न दृष्टि लखाई॥
परमहंस तब बचन सुनायो। दै दृष्टान्त भेद समझायो॥
एक बैश्य के कन्या भाई। कार्तिकमास दिवाली आई॥
एक दिना पहले सुन भाई। गेरू लोटा बीच घुलाई॥
लड़की खाटपास रखिदीन्हा। माता भरा नीर सो चीन्हा॥

दो॰ माता लड़िकी सोरही, बीती निशा भयान।
लोटा लीन्हों बैश्यने, दिशागये सुखमान॥

चौ॰आब दस्त जबलीन्हा भाई। देखि पृथ्वीपर रुधिर बहाई॥
यह मनमें निश्चयकरमाना। जादूकियामरण निजजाना॥
कै बीमारी ऐसी आई। सर्व देह को खून गिराई॥
शोचमाहिं व्याकुल बहुभांती। सुधि बुधिभूलिनआवैबाती॥
बहुत कठिनकर घरको आये। सुस्त खाटपरकोइनसुहाये॥
स्त्रीआदि सकल घबराई। पूछै दशा सुसाह चुपाई॥
सहित कुटुँब सबरोवनलागे। बैश्य क्रोधकर कहै अभागे॥
मम देही की आश न जानो। घड़ी दोयमें होत चलानो॥
मेरे गिरयो सबेरे लोहू। सुस्ती छाय रही अब सोहू॥
वैद्य हकीम अनेक बुलाये। शोच बढ़्यो सबही घबड़ाये॥
लड़की लोटा ढूंढ़न लागी। लोटा कहां गयो कहि जागी॥

लड़की रोवै मिलै न लोटा। माता कहै देखि उठि कोटा॥

दो॰ लोटा राखा खाटतर, को लैगयो उठाय।
आपपड़ा सब सुनरहा, उठा तुर्त अकुलाय॥

चौ॰ गेरूसमुझिरोगसबगयो। भयो निरोगी आनँद लयो॥
इतनी देर भर्म दुख पाया। वृथाकाल यहिभांति गँवाया॥
जगकी माननता सुनि भाई। दै दृष्टान्त कहूं समुझाई॥
वैश्य एक परदेशसिधावा। बारहवर्ष व्यतीत रहावा॥
लड़का वर्ष एक का भाई। छोड़िगये घर भइ तरुणाई॥
चला पितासे मिलने भाई। पिता उलटिघरकोचलिआई॥
एक शहर बिचलड़काआया। डेरा बीच सरायँ कराया॥
दिन से ठहर रहाथा भाई। सन्ध्या समय वैश्यतहँआई॥
जिसकी कोठरी लड़काठहरा। उसमें वैश्य किया चह डेहरा॥
लड़का वैश्य दिया निकलाई। आप टिके सुख आनँदपाई॥
लड़का शीत रातिदुख पावा। रोइरोइ कर राति गवाँवा॥
वैश्य निठुर कछु सुनै न भाई। लड़के का दुख कहा न जाई॥

दो॰ प्रातकालके होतही, वैश्य भयो जब त्यार।
लड़कासे पूछतभयो, तू को कहो बिचार॥

चौ॰ लड़केने निजदेश बताया। जागि पिताको नाम सुनाया॥
वैश्य सुनत खन कराठलगाई। तू लड़का मेरा है भाई॥
रात्रि समय में दुख जो दीन्हा। पश्चात्ताप बहुतविधिकीन्हा॥
परमहंस बोले तब भाई। दो दृष्टान्त कहे समुझाई॥
पहिला जो दृष्टान्त लखाई। भर्म सिद्धि यों करताभाई॥
दूजा जगकी मानन भाई। शत्रु मित्र मानन दुखदाई॥
लड़का वही राति के माहीं। मानन कर सुखदुःखकराहीं॥
इसी भांति यह जग को मानो। माननकर जग जीवबधानो॥

महाराज जग नाहिं रहाई। सर्व शून्य आकाश कहाई॥
कछू बस्तु आकाश न होई। व्यापकब्रह्म अकाशलखोई॥
परमहंस बोले सुनु भाई। तुम जो ब्रह्म अरूप बताई॥
रूपब्रह्म के तीन बखाने। सच्चित् आनँद कहे समाने॥

दो० तुम जोकहाकछु ब्रह्मनहिं, स्थूलरूपसो नाश।
हे अरूप यह सब विषे, चेतन ब्रह्मप्रकाश॥

चौ०जड़ आकाशरूप है भाई। उत्पति हुआ नाश होजाई॥
चेतन ब्रह्म सदा अविनाशी। अलखरूप सुखज्ञान प्रकाशी॥
तुमने सूनसान ही जाना।गतिबिहीनक्योंकरपहिचाना॥
देखे सूनसान जब होवे। कछू वस्तुकी ज्ञाति न जोवे॥
सूनसान के ज्ञाता भाई। अधिष्ठान सब तुमहिं कहाई॥
तुम मौजूद कहत सब बाता। सूनसानकेहिभांति लखाता॥
ज्ञान सत्यही ब्रह्म से होई। अंतस इन्द्री जड़वत सोई॥
जड़ में शक्ति कछू नहिं भाई। ब्रह्म सदा परकाश कराई॥
जिह्वा श्रवण नासिकाजानो। त्वचा नेत्र ये पाँच बखानो॥
इनका साक्षी आतम भाई। मेलसहित सब भोग कराई॥
फुरना लीन भये जगनाशा। केवल एक ब्रह्मकी आशा॥
ब्रह्म विना कछु होइ न भाई। सदा अकर्त्ता ब्रह्म रहाई॥

दो०जिह्वा रसना नासिका, त्वचा नेत्र यह जोय।
इनको साक्षी आत्मा, निश्चय मानो सोय॥
फुरना होवै लीन जब, भयोजगतको नाश।
वृन्दावन तब रहिगयो, केवल ब्रह्मप्रकाश॥
ब्रह्मविना कछुहोतनहिं, ब्रह्म अकर्त्ता होय।
धूमक लोह संयोग कर, रेल चलावै सोय॥
ब्रह्मजगत् यह नामसब, जबलगज्ञाननहोय।

मिट्यो द्वैतता भाव जब, नामरूपगयोखोय॥
बुद्धि गुरू अरु शास्त्र यह, मिलैं न तीनों साथ।
जब कुछ दीखै ठौर की, बस्तु पड़ै तब हाथ॥
जैसे जग स्वपने विषे, बिन सामग्री होय।
वृन्दावन तस यह जगत्, चिदाकाशहै सोय॥

चौ०हे महराज सत्य तुम कहेऊ। मेरे उर कछु संशय रहेऊ॥
ज्ञानी के ढिग देखत स्वामी। एक दोय कोइजाय अकामी॥
बहुतक ज्ञानी रहे अकेले। सूनसान नहिं होवत मेले॥
ज्ञान किसी की समुझ न आवै। कौन लाभ मिलने से पावै॥
अरुजो ज्ञान सीख भी लीन्हा। कोरा कोरा साही चीन्हा॥
ब्रह्म नहीं कछु देत दिखाई। शास्त्रनको वकवाद कराई॥
अब उपासका कहूं बृतांता। बहुत मनुष्य जुरे परतांता॥
आते जाते रहै सदाई। बहुत लेय उपदेश सो धाई॥
कथा वार्ता नित प्रति होई। खूब प्रसाद बँटत है सोई॥
धूम धाम से घंट बजावै। ठाकुर को शृङ्गार करावै॥
दर्शन कर प्रसन्न चित होई। बड़े बड़े उत्सव नित सोई॥
हरिकानाम जपतकरिध्याना। गुणानुबाद करत हैं गाना॥

दो० यहिविधि पूजा भक्ति में, भीरभार नित होय।
सेवक नित प्रतिबहुतसे, करत प्रशंसासोय॥

चौ०अरु तीरथ अस्नानकराई। गद्गद कण्ठ प्रेम उर छाई॥
तात्पर्य्य हम यह लखिपावा। जो असत्यआनँदक्योंआवा॥
जो वेदान्त पढ़ै वा सुनई। अभिमानीहो बाद जो ठनई॥
और पुरुष निर्भय होजाई। साधु गुरू से भाव न लाई॥
महा अनर्थ बुद्धि होजावै। वहँ यह दशाकहाफल पावै॥
कौन कौन से पंथन माहीं। मत वेदान्ते ज्ञान कराहीं॥

ज्ञानी कौन भये सो भाषौ। गुरु नानक कैसे थे आषौ॥
वाणी उनकी कहौ बिचारा। कैसी ज्ञानरूप विस्तारा॥
परमहंस तब कहा बुझाई। हम तुमको कब ज्ञान सिखाई॥
हम तुमसे पहिले कह दीन्हा। तुम उपासना करौ अकीन्हा॥
तन मन धन कुटुम्ब सब भाई। कथा सुनो अरु धर्म कराई॥
तीरथ न्हाउ दान बहु दीजे। व्रत पूजा शृङ्गार करीजे॥
दो॰ छापा तिलक लगायकर, नाचकूद कर गान।
झांझ मृदङ्ग बजाइये, नाहक पूछो ज्ञान॥
चौ॰तुमयहबात भलीकहिगाई। आपनकरौ सो कहौ बताई॥
ज्ञानहि ज्ञान दियो उपदेशा। ताते दीखे कछू बिस्नेशा॥
परमहंस बोले सुनु भाई। अपनीफिकिरकरौ तुमजाई॥
हमरी फिकिर कछू नहिं कीजै। तुम्हरे मन आवै सो लीजे॥
खट्टा मीठा नोन मिलाई। जस जस रुचि सोई तस खाई॥
मीठा स्वाद कहै सब गाई। वाजे को नहिं स्वाद लगाई॥
त्यों काहू को भीड़ सुहावे। मन उपाधि के सङ्ग रहावै॥
कोइएकान्तशान्तिवृत्तिभाई। करै विचार उपाधि मिटाई॥
उत्सव करै उपासन कोई। भीड़भाड़ बहुतक जहँ होई॥
ताकी महिमा कहूं बुझाई। भीड़ बहुत तहसीली माई॥
डिपुटी कमिश्नरी में भाई। वैसी भीड़ न देत दिखाई॥
जो कुछ भीड़ यहां भी होई। सोकि कमिश्नर कै नहिं कोई॥
कोइ राजा अपीलको जावै। भीड़ भाड़ कछु रहन न पावै॥
अब तुमसे पूछत हैं भाई। कौन बड़ा सुख काहि रहाई॥
उनमें चीफ कमिश्नर कहिये। को अधिकारी हुक्म करैये॥
तुमभी सांच कहतहो भाई। तीरथ न्हान चलै मनलाई॥
दो॰न्हाने को लाखौं चलैं, कथा माहिं दशबीस।

ज्ञानी के ढिग एक दो, बँधै लोककी रीस॥

चौ० जो तीरथपर सैर तमासा। कथा माहिं सो एक न भासा॥
तीरथ यहि विधि बड़ा कहाई। गीता शास्तर छोट रहाई॥
ज्ञानी दरशलाभ क्या होई। तुम पूंछा सुनियो अब सोई॥
ज्ञानी का जो दर्शन पावै। शुभ इच्छा मन कपट न लावै॥
साठि तीनसै तीर्थ नहाये। एकबार दर्शन फल पाये॥
कथा सुनै दश बर्ष पुराणा। ज्ञानी यकपल संग प्रमाणा॥
ज्ञानी की सत्संगति भाई। महिमा अपरम्पार कहाई॥
एक आदमी पै धन होई। अपनी समुझभोग फलसोई॥
जो धन देय तौ लालच लावै। बिना ब्याज पैसा नहिं जावै॥
बिना ब्याज जो देवै भाई। तौ हज़ार औसान कराई॥
शोच बिचार करै बहुतेरा। सच्चा जान देय धन फेरा॥
एक मनुष्य नशे में भाई। धन थैली उस पास रहाई॥

दो० ख़बर न उस धनकी कछू, सुखइच्छा नहिं भोग।
जो कोइ चाहै लेउ धन, कहु को भेटन योग॥

छन्द तीरथउपासन भोग कारण लाभचित हिरदयधरै।
अभिमान करि सो भोगचाहै औरका दुख क्यों हरै॥
आपुन फिरै कंगाल भूखे उदर क्यों दूजा भरै।
चाह अग्नि न लगी जा घट रातादिन चिन्ता जरै १
ज्ञानी करै शुभ कर्म जेते मान नाहिं चितमें धरै।
फलकी न इच्छा भोग करने चाह चिन्ता नहिं जरै॥
शुभकर्म का फल होयगा जो कभी इच्छा नहिं करै।
यह धन इकट्ठा रहै उनके दरश कर सेवक तरै २
कोई कुकर्म कदाचि होवै ताहिले निन्दक धरै।
दर्शन किये निष्कपट इच्छा सर्व गठरी लै परै॥

बिन यत्न पायो मालगठरी साहसो फिर है खरै।
बड़भाग पूरण जानि तिनके दर्शकरिसचमनश्रै ३
ज्ञानीकरै उपकार निशिदिन दर्शकरि मनमलहरै।
कहैबचनकिरपाकरिकदाचितहृदयबिचशान्तीकरै॥
निष्कपट हो जो चरण सेवे कमल जलभव में तरै।
रघुनाथ सद्गुरु रामसेवै जन्म जन्म के भय टरै ४॥

दो० कहूं एक दृष्टान्त अब, बैश्य बड़ा धनवान।
द्रव्य सौंपि परदेश गो, धरी धरोहरजान॥

चौ० जबकिबैश्यबाहरसेआया। धन मांग्योबनिया मुकराया॥
हुआ बैश्य हैरान बहूता। सबसे करै फरियादसुनूता॥
कछु न भयो राजा तक जाई। राजाने वह बैश्य बुलाई॥
राजा हुक्म दिया तब भाई। कल्हि सवारी मेरी आई॥
जिसको धन तैं सौंपा भाई। उसकी हट्टी बैठो जाई॥
जभी सवारी आवै मेरी। तू उठिकै अइयो मम नेरी॥
मैं तुम और कान जब लाई। कहि दो बात जाइयो भाई॥
ऐसेही दो दिना बिताने। दशा देखि बनिये घबराने॥
सब मौजूद धरो धन भाई। तुम्हरी लई परीक्षा आई॥
तुम्हरा धीरज हमने तोला। लेउ धरोहरि कहौ न बोला॥
एक क्षणक राजा सँग पायो। गई धरोहरि सर्व छुटायो॥
राजा संग पलक यक माहीं। लाभ होय दुख दोप नशाहीं॥

दो० पहिले करी फिरादिबहु, काहु न सुनी पुकार।
राजाको सँग होतही, मिल्योमालनिजसार॥

छन्द तुमतौ कहतहौ ज्ञानकोरा देखिही हमको परै।
आनन्दनहिं कुछब्रह्मदीखैसूझबिन क्यों भ्रमटरै॥
परख हीरों की लखै जो जौहरी सोइ जानियै।

नाज परखत बैश्य जानो जौंहरी नहिं मानिये १
तुम कहत ब्रह्म जो नाहिं दीखै शास्त्रिकहूंबखानिये।
रघुनाथ सूरजखिलरहा जगअन्ध दोष लगानिये॥
अज्ञान आंखी माहिंजाले सूर ज्ञान न भासही।
उल्लू सदा दिनरात करता भर्मरूप प्रकाशही २॥

दोहाप्रमाण के॥

है नेरे सूझै नहीं, नालति ऐसी जिन्द।
तुलसी या संसार को, भयो मोतियाविन्द॥
तनसुखाय पिंजरकरै, धरै रैनि दिनध्यान।
तुलसी मिटैनबासना, बिना बिचारे ज्ञान॥
दर दिवारदर्पणभयो, जितदेखोतिततोहिं।
ककरी पथरी ठीकरी, भई आरसी मोहिं॥
एक समानासकल में, सकलसमानातोहिं।
कबीरसमाना बूझ में, तहां दूसरा नाहिं॥
आपहि कियाकराइया, आपहि करनीयोग।
नानकआपहिरमिरहा, दूसरहुआ न होग॥

चौ० और एक दृष्टान्त सुनाई। एक फ़क़ीर रहै कहिं भाई॥
एक मस्त हाथी चलि आवा। हाथीवान पुकार सुनावा॥
सो फ़क़ीर ने चित नहिं धारी। माहुत कहता फेरि पुकारी॥
तब फ़क़ीर बोले मस्ताने। सर्ब रूप में ख़ुदा समाने॥
माहुत ने फिरि टेर सुनाई। रस्ता से हटिजावो भाई॥
हमरे भी तो बीच ख़ुदाई। तुम्हरी अभी मिटी न जुदाई॥
तुरतै गयो फ़क़ीर हटाई। उत्तर कोइ न चुप्प रहाई॥
भाई जो तुम कहा बुझाई। सुनि वेदान्त निडर होजाई॥
अरु अभिमानी मान करावै। बाचक ज्ञान ताहिको गावै॥

ज्ञानी सब के पार रहाई। मन मदादि मल रहै न काई॥
लड़का प्रथम डरै जो आई। हेतु परीक्षा डरत रहाई॥
छाया देखि बाल ज्यों डरहीं। भूतमानि उर शंका धरहीं॥
जब वह लड़का होय सयाना। छाया निरखि नहीं डरमाना॥
त्योंहीं ज्ञानवान को जानो। छाया निरखि नहींभ्रममानो॥

दो० सर्बसुक्ख बैराग्य में, तेज तपस्या माहिं।
भक्ती में प्रभुता बड़ी, मुक्तिज्ञानबिननाहिं॥

छन्द भयो ज्ञानवान प्रकाशघटमें मोहनिशा नशावही।
भागे उलूक जो भेद बादी तरकतरुहि गहावही॥
उड़ते फिरै नहिं राह पावै भर्म्म करि भरमतरहै।
रघुनाथसद्गुरुरामबिनजगत्रासयमकीनितसहै १

कुण्डलिया प्रमाण की॥

जो यासों वा एक है, कौन होय हैरान।
ज्ञानसमाधिजाकेलगी, सो क्या लावै ध्यान॥
सो क्या लावै ध्यान, ध्यानद्वितियाकहलावै।
आप भये बादशाह, फिरकौनकेमुजरेजावै॥
लिया निशाना मारि, तुपकअबकौनचलावै।
मनका संकल्प भजन, रूप अपना दरशावै॥

चौ० सभी भर्ममिटावो अपना। यहसंसार सकल है स्वपना॥
भर्मे सुर नर देवी देवा। भर्मे सिध साधक अभेवा॥
भर्मि भर्मि मानुष डहकाये। दुस्तर महाविषम यह माये॥
भर्मि भर्मि भय मोह मिटाया। नानक तेहि प्रेम सुखपाया॥

छन्द एको एक कहै सब कोई हौमें गर्भ व्यापै।
अन्तरबाहरयक पहिचाने यो घरमहल सिञ्झापै॥
प्रभु नेरे हरि दूरि न जानो एको सृष्टि सबाई।

यक ॐकार अवर नहिं दूजा नानक एक समाई ॥

छन्द आपै उपदेशै समझै आपै। आपहि रचिया सबके साथ॥ आप कीन्हों आपन बिस्तार । सब कुछ उसका वह करनीहार ॥ उससे भिन्न कहो कछु होई। थानथनन्तर एकौ सोई ॥ आपनचरित आप करनेहारा। कौतुककरे रंग अपारा ॥ मनमें आप मन अपने मांहि । नानक की मति कही न जाहि ॥

दो० सेवा गुरु अरु साधुकी, ज्ञानी के सुधभाव।
उपासक सेवै फलन को, रागै द्वेष बधाव ॥

छन्दछैया साधु गुरू की सेवा ज्ञानी सदा प्रीति से करते।
रागद्वेष फलधरेउपासक मनथिर शरण न परते॥
ज्ञानी समुझ बूझ यह करता साधुगुरू दरशाये।
ईश्वरकी कुछ चाह न राखी ब्रह्म सोआप लखाये॥
ज्ञानी के ब्योहार माहिं यक साधुगुरूकी सेवा।
जिसकारणनिजरूपलखानासमुझिपरीसवभेवा॥
ज्ञानीशुभ कर्म्मन को कर्त्ता सुतै सुभावक होई ।
जोकि उपासक साधु गुरूकी तीरथध्यान कराेई॥
द्वैयाकहितीरथठाकुरकी पूजाचित्तनथिरताराखै।
बड़ेकष्ट कर्मों बिचकरता सिद्धि होइ सुखआखै॥
फलइच्छाकरि कर्म करै सब चित उपासनाधारे।
ज्ञानी सदा स्वतन्त्र रहावै कर्म्म करै शुभसारे ॥
ज्ञानी ऐसा कौन भया जग जिनसाधुगुरूनहिंसेये।
तीरथ भजन ध्यानस्मरण नितज्ञानी सदाकराये॥
खण्डन कर्म्म उपासनकरते बिनाउपासनज्ञाने।
केवल ज्ञान न चलै ब्योहार कर्म्म उपासबखाने॥

है दृष्टान्त अन्ध पंगुलका भूखे मेल कराये।
मेवाको इक वृक्ष ताहिपर मेवाफल सो आये॥
अन्धेको दीखत कछु नाहीं पंगुल चढ़ा न जाई।
दोनोंने मत एक बिचारा फलका यत्न कराई॥
अन्धे ने पंगुलको अपने कन्धे पर धरलीन्हा।
पंगुल मेवा तोड़ि वृक्षसे मिलकर खात प्रवीना॥
दोनों अलग अलग थे भाई मेवा हाथ न आई।
ऐसे कर्म्म उपासनके बिन ज्ञानहिं पंगु रहाई॥
तुमको ऐसी समुझ चाहिये निन्दा करौ न कोई।
निन्दा बुरी पापकी जड़है नशि उपासना जाई॥
जब ज्ञानीकी निन्दाकीन्हीं फिर उपासना नाहीं।
जो नहिं ज्ञान समुझमें आवे बुद्धी छोट रहाहीं॥
निन्दा के पापनसे वाचे तौ भी अच्छा भाई।
करि बिचार देखो तो ज्ञानी निरउपाधि सुखदाई॥
और उपासक इच्छा कारण धूमउपाधि उठावे।
अपने नाम होन की आशा कर्मवीच लपटावे॥

चौ० अरु जो तुमने कहा बुझाई। असत्य वस्तु से स्वप्न पाई॥
देखो भानमती का खेला। है असत्य सुख मानै मेला॥
स्वप्न सृष्टि सब झूठी भाई। सुख दुख देत प्रत्यक्ष दिखाई॥
यद्यपि सुख स्वप्नेका होई। है मिथ्या सुख मानत सोई॥
स्वप्नेका दुख मिथ्या जानै। स्वप्ने माहिं बड़ा करि मानै॥
अरु पहिले या तुम कहि आये। कही जाति वैराग्य न पाये॥
ज्ञानी में वैराग्य बतावो। निन्दा करके हमें सुनावो॥
यह कैसा अपराध उपाया। निन्दा पाप मूल जगछाया॥
ज्ञानी सुखी सदा सब ठाई। आगे पीछे देखि सदाई॥

तुम उपासना महिमा गाई । अधिकारीप्रति सत्य बताई ॥
सुख सुषुप्तिकी सुनिये भाई । सबसे बढ़कर रहै सदाई ॥
कथा श्रवण पहरोंतक कीना । पूजा भजन ध्यान लवलीना॥
दो० सबकारज को करचुके, सुख सुषुप्ति यह जान ।
सोवै तब आनँद लहै, सुख घट भीतर भान ॥
चौ०सोनेका सुख कहिये भारी । कथा ध्यान सब देत विसारी॥
जो इसके भीतर सुख नाहीं । सोइगये सब दुःख नशाहीं ॥
देखि सुषुप्तिमाहिं नहिं कोई । तनमनधननहिं कुटुँबलखोई॥
साधु गुरू नहिं सेवा भाई । सबसे बढ़कर सुक्ख रहाई ॥
ज्ञानीको सुख अस सब काला । प्राप्त रहै आनन्द विशाला ॥
अज्ञानी बिषयी सुख माने । विषय पदारथ माहिं लुभाने ।
अपने में सुख अज्ञ न जाने । वाहर सुख ढूंढ़त हैं अयाने ॥
वास्तव में सुख अपने माहीं । सोई सुषुप्ति माहिं रहाहीं ॥
नाम मृगा कस्तूरी होई । ढूंढ़त फिरै बनहिंबन सोई ॥
सुक्ख सदा इस पास रहावै । मन विषया बन में भरमावै॥
सुख पदार्थ में है कुछ नाई । सुषुप्ति में यह नाहिं रहाई ॥
तब यह सुक्ख आप में पावै । बिषयबासना को छिटकावै ॥
दो० सुखहि पदारथमाहिं जो, तो सबकाल रहाय ।
धन कुटुम्ब गृह तन त्रिया, फिरक्योंकरदुखपाय॥
चौ०धन सम्पतिकुटुम्बसबभाई । जिन्हैं आपमें सुखदिखलाई॥
उनके पास पदार्थ न एका । ज्ञानी सदा विचार विवेका ॥
सुखीरहै निशि दिनसब भांती । कोई नाहिं उपाधि तिन साथी॥
मनका यह स्वभाव है भाई । इच्छाकर सुख दुःख कराई ॥
मन इच्छा पूरण सुखमाने । फिर क्षणमें दुख लहै अयाने॥
इच्छा दूसर फेरि बँधाई । डगमग डोलै भर्म भुलाई ॥

इच्छा पूरण मन सुखपावे। इच्छा सुख दुख माहिं नचावे॥
सुषुप्ति में कछु इच्छा नाहीं। मनको सुख आनन्द रहाहीं॥
इससे सिद्धहुआ सुन भाई। मनको निश्चलता सुखदाई॥
सुक्ख पदारथ में कुछ नाहीं। ज्ञानी मन वैराग्य सदाहीं॥
करिविवेकनिश्चलमनकीन्हा। सर्व पदारथ मिथ्या चीन्हा॥
परारब्ध आधीन जु आवे। बहुतसमुझिकरभोगलगावे॥
जैसे समुझदार नर कोई। बाजीगर को स्वांग लखोई॥
दो० भानमती के स्वांग को, देखि खुशी ज़ो होय।
बालक देखै सत्यकर, नर असत्य कर जोय॥
चौ०बुद्धिमान मिथ्याकरिजानै। लड़का सत्य जानि लपटानै॥
त्यों ज्ञानी अज्ञानी भाई। दोनों भोजन करैं बनाई॥
ज्ञानी कछुहू सुख नहिं मानै। मनइच्छा पूरण करि जानै॥
बिन आहार बिचार न आवै। बिन बिचार नहिं मन ठहरावै॥
सुख नाहीं कछु भोजन माहीं। सुख मन में ही रहत सदाहीं॥
मनठहरे परसुख को देवै। चञ्चलमन निशि दिनदुखसेवै॥
थिर पानी में मुख दिखलाई। मनठहरे सुषुप्ति सोइ भाई॥
अज्ञानी भोगन सुख मानै। निश्चलतामनकी नहिं जानै॥
भोग पदार्थ सुनो सो भाई। हैं झूठे निशिदिन दुखदाई॥
करि वैराग्य विवेक बिचारा। मननिश्चलकरिरूपसंहारा॥
मन थिर सदा कहीं नहिं जावै। क्षुधा पियासा आनि सतावै॥
तुम पूछा किस पुस्तक माहीं। ज्ञान वेदंते कथा सुहाहीं॥
दो०पुस्तकको क्या अन्त है, रुचि अपनी परमान।
पञ्चदशी गीता पढ़ौ, अष्टावक्र सुजान॥
चौ०योगवशिष्टपढ़ौ तुम भाई। यक विचार सागर सुखदाई॥
निश्चलदास करी सो भाषा। बहु उत्तम है ग्रन्थ प्रकाशा॥

तिसके पढ़ने से सुनु भाई। ज्ञान होय तत्काल लखाई॥
हमने जो तुमको समझाया। इन पुस्तक के द्वार लखाया॥
अरु ज्ञानी बहु जग में जानो। ब्रह्मरूप ये साधु बखानो॥
रागजीदास कृपालु दयाला। दादूपन्थी ज्ञान बिशाला॥
गुरुनानक जो बाणी गाई। भये सन्त दोउ दीन पुजाई॥
उनकी महिमा कहा बखानों। बाणी अमृतरूप सो मानों॥
बाणी श्रवण करै चितलाई। तीनि तापसे शान्ति कराई॥
पक्षपात नहिं निन्दा भाई। केवल नाम अखण्ड लखाई॥
मालिकका अनुराग लखाया। सुरति शब्दका मेल कराया॥

दो० प्रथम सुखमनी ग्रन्थको, पाठ करो मनलाय।
अर्थपदारथ लखि परै, तृष्णाअग्नि बुझाय॥

चौ० महाराज है सत्य सु ऐसा। करी प्रशंसा सुनियत जैसा॥
मैंने भी निज नयनन देखा। ब्राह्मण पन्थ पूजते भेखा॥
सर्व गुरूकी बाणी पढ़ही। निन्दा दृष्टि न चितमें धरही॥
महाराज तुमने जो भाषा। सुख सुषुप्ति सो बढ़िकै आषा॥
सोने की निन्दा बड़ि भारी। परमहंस तब कहा बिचारी॥
यह दृष्टान्त दयो सुनि भाई। एक अङ्ग कर भेद लखाई॥
सोरहना कछु नीक न भाषा। बिनापदारथ सुखको आपा॥
सोता सदा रहै भी कोई। ऐसा भया न होगा सोई॥
जो कोइ अधिक सोवता भाई। जब जागै तब दुख अधिकाई॥
इस सोने में लाभ न कोई। रहत बासना मन दुख होई॥
धन्य धन्य तुम बड़े कृपाला। भेद बताय भूल भयटाला॥

दो० धन्यधन्य तुम धन्यहौ, महिमा अगम अपार।
भेदभूल सब नाशिकै, लीन्हों मोहिं उबार॥

सवैया बारहिबार प्रणाम करौं अब, शीशधरौं चरणोंबिच

माथा। मोसम दीन न है जगमें कहुँ, आपहि दोषहरौ सुखदाता॥ मैंमतिमन्द कुचालि कुसेवक, पालत आप जिमैं पितु माता। अवगुण मोर सबै प्रभु जानत, कालहि के वश भर्म भुलाता १ मोहिं न ठौर कहूं करुणानिधि, जीव कहै तुम ब्रह्म सनाथा। एकहि आश न और कछू अब, संग सदा निज चाहुं सुसाथा॥ जीवन मीन सदा जलही हित, रासगुरू चरणोंबिच माथा। श्रीवृन्दावन नाम अधार सु, दास कहै रघुनाथ अनाथा २ दीनदयाल सुनौ अरजी, सरजी निज जानि करो जु बिचारी। कारण कौन बिसारि दियो निज, जानत महिमा वेद पुकारी॥ जानत हौ सब पाप दयानिधि, आपहि काहि न लेउ सम्हारी। पापिन तारि दियो बिन साधनहि, भालु तरे कस साधन धारी ३ आप कृपा नयन हित पृच्छा, शेष विरंचि सरत कहि हारी। ताहि ठौर बिराज सनातन, महिमा चारहु वेद पुकारी॥ दीन दुखी रघुनाथ दयानिधि, द्वार खड़ो अब टेरत हारी। श्रीवृन्दावन धाम सनातन, कारण कौन न जाहि बिसारी ४

जीवमाहिं जो जातिधर्म है बनियांतन क्योंपायो॥
जीव वही अबहूं है भाई जो पहले था सोई।
अज्ञानी का जीव जातिको अपनो धर्म लखोई॥
यद्यपि जाति आत्मासेती मेल नहीं कुछ जानो।
सूरतिएकनआतमव्यापकपरछिनजातिसोमानो
जाति भर्म आतममें भाई भयोभूल अज्ञाने।
ब्रह्ममाहिं यों भर्मजगतको कह रघुनाथ बखाने॥
हे महराज ब्रह्मपरकाशी रूप सूर्यवत भासै।
जगत अँधेरेके सदृश है क्योंकर जगत प्रकासै॥
परमहंस बोले सुन भाई अग्नि काष्ठमें होई।
नहिं दीखै नहिं लकड़ी जारो यों चैतन्य रहोई॥
इसप्रकार चैतन्य समाने अज्ञाबिरोध न होवै।
साधकहै सबकाल एकरस प्रकटभये तमखोवै॥

दो० महाराज माया कहौ, सत्य असत्य कि होय।
भर्मरूप यह है कहा, निश्चय कहिये सोय॥

चौ० परमहंस बोले सुन भाई। मायाका बृत्तान्त सुनाई॥
बादी शून्य असत्य बतावै। है नाहीं अनहुई लखावै॥
कहैं असत्य ख्याती भाई। रस्सी में जो सर्प दिखाई॥
है असत्य अस्थानहु माहीं। सर्प असत्य भर्म भयपाहीं॥
है बिज्ञान बाद मत भाई। आतम ख्याती कहतसुनाई॥
रस्सी कभी सर्प नहिं भाई। बुद्धी में है सर्प लखाई॥
बुद्धी से बाहर नहिं भाई। बुद्धि सर्प आकार धराई॥
बुद्धी क्षणक्षण [illegible] फिरिजावै। बाहरजग अस्थूल दिखावै॥
बु[illegible] भाई। दीखत है सो भर्म लखाई॥
न्य[illegible] अन्यथा ख्याती गाई॥

बामी देश सर्प है सच्चा। नेत्रदोष उसको जिन रच्चा॥
मालुम पास होत है भाई। रोग दोष से देत दिखाई॥

दो० जिसके नैनन रोग है, ताको भर्म दिखाय।
नेत्रदोष बामी निकट, भ्रान्ती सर्प लखाय॥
और ख्याति बादी कहैं, जो असत्य अर्थात।
बिनाभई बस्तू लखै, गीदड़ सींग दिखात॥

छन्दद्वैया यों असत्य ख्याती है मिथ्या रज्जु सर्प क्षण भासै।
क्षणभरका कुछ नेम नहीं है घंटों सर्प प्रकासै॥
बुद्धी क्षणाक्षण माहीं बदलै इस्से बात असत्ते।
आतमख्यातीकहै अशुद्ध मिथ्याख्याति अनित्ते॥
ज्ञानपदारथ के अनुसारे होता है सुन भाई।
रस्सीरूप पदारथ सच्चा सर्पभ्रान्ति जो पाई॥
इससे यही सत्य है निश्चय सांचे सर्प धियाने।
सोइ ध्यान रस्सीबिच आया सच्चसर्प भयमाने॥
अनूमान रज्जु का ज्ञानै अख्यातबादी कहते।
दूसर ज्ञान अस्मृतीबादी जानि यही चित धरते॥
यह भी मत अशुद्ध है भाई सच्चे बिन क्यों डरते।
भर्म भुलाने भेद न जाने नाहकपचिपचि मरते॥
रस्सी सन्मुख पड़ी देखि कै क्योंकर फेरि डरावै।
साँच सर्पका ध्यानकिया जब रस्सी सर्प दिखावै॥
एक कालमें ज्ञान न दोई होसक्के नहिं भाई।
इससे कही अनिर्वचनी यह शुद्ध वेदान्त लखाई॥
माया अनिर्वचनीहै भाई सत्य असत्य न कहिये।
सत्य असत्य मिला भी नाहीं भर्म जेवरी लहिये॥

छन्द अन्तःकरणकी वृत्ति नेत्रोंसे निकल जिसपर परै।

जीवमाहिं जो जातिधर्म है बनियांतन क्योंपायो॥
जीव वही अबहूं है भाई जो पहले था सोई।
अज्ञानी का जीव जातिको अपनो धर्म लखोई॥
यद्यपि जाति आत्मासेती मेल नहीं कुछ जानो।
सूरतिएकनआतसव्यापकपरछिनजातिसोमानो
जाति भर्म आतममें भाई भयोभूल अज्ञाने।
ब्रह्ममाहिं यों भर्मजगतको कह रघुनाथ बखाने॥
हे महराज ब्रह्मपरकाशी रूप सूर्यवत भासै।
जगत अँधेरेके सदृश है क्योंकर जगत प्रकासै॥
परमहंस बोले सुन भाई अग्नि काष्ठमें होई।
नहिं दीखै नहिं लकड़ी जाख्यो यों चैतन्य रहोई॥
इसप्रकार चैतन्य समाने अज्ञाबिरोध न होवै।
साधकहै सबकाल एकरस प्रकटभये तमखोवै॥

दो० महाराज माया कहौ, सत्य असत्य कि होय।
भर्मरूप यह है कहा, निश्चय कहिये सोय॥

चौ० परमहंस बोले सुन भाई। मायाका वृत्तान्त सुनाई॥
बादी शून्य असत्य बतावै। है नाहीं अनहुई लखावै॥
कहैं असत्य ख्याती भाई। रस्सी में जो सर्प दिखाई॥
है असत्य अस्थानहु माहीं। सर्प असत्य भर्म भयपाहीं॥
है बिज्ञान बाद मत भाई। आतम ख्याती कहतसुनाई॥
रस्सी कभी सर्प नहिं भाई। बुद्धी में है सर्प लखाई॥
बुद्धी से बाहर नहिं भाई। बुद्धि सर्प आकार धराई॥
बुद्धी क्षणक्षण में फिरिजावै। बाहरजग अस्थूल दिखावै॥
बुद्धी से बाहर जो भाई। दीखत है सो भर्म लखाई॥
न्याय और वैशेषिक भाई। कहै अन्यथा ख्याती गाई॥

हाथी घोड़ा मुल्क मकाना। सूक्षममें किस भांति समाना॥
सो सन्देह कृपाकर नाशौ। परमहंस बोले सुनि आशौ॥
वेद वचन यह भाषा भाई। स्वप्नसृष्टि मन रचत बनाई॥
देह गले के भीतर जानो। नाड़ी सूक्षम तहां बखानो॥
नाड़ी में सब रचता भाई। बिना प्राण बाहर क्यों जाई॥
प्राण मनै को घोड़ा जानो। इन्द्री सर्व प्रजाकर मानो॥
प्राण गये इन्द्री सब जावें। बिना प्राण नहिं टिकनेपावें॥
मनहु प्राण बाहर जब जाई। देह मृतक होजाती भाई॥

सो० मन इन्द्री अरु प्रान, कण्ठमाहिं रचना करै।
स्वप्नकलपना जान, सच्चपदारथ भासभ्रम॥

चौ०मनमें ज्ञान शक्ति है भाई। कर्मशक्ति नहिं कर्म कराई॥
स्वप्न माहिं चहिये सब कर्मा। कर्म प्राण इन्द्री को धर्मा॥
इन्द्री प्राण बिना तन भाई। मिरतक भयो कहत है ताई॥
इससे मन बाहर नहिं जाई। कण्ठमाहिं सब रचता भाई॥
घोड़ा हाथी मनुज रचाई। कल्पित इन्द्री देह बनाई॥
स्वप्ने में सोइ देखत भाई। राजभोग सुख दुख सब पाई॥
स्वप्ने में तन घाव लगाना। इसतनपर कछु चिह्न न आना॥
इससे सिद्ध भया सुन भाई। कल्पित देह सो और रहाई॥
स्वप्न साक्षी भास रहावै। जाग्रत इन्द्री देह न पावै॥
आप कहा जग स्वप्न समाना। मोरि बुद्धि में भर्म रहाना॥
रेल तार मिथ्या क्यों होई। वर्त्तमान में दीखत सोई॥
खबरि एक दो घंटे माहीं। कोस हजारन पहुँचे जाहीं॥

दो० जगतभर्म स्वप्ना कहा, रेल तार जगमाहि।
भले भर्म में पड़े हौ, अचरज मानत काहि॥

चौ०परमहंस बोले सुन भाई। बिरथा पड़े भरम में आई॥

सोई पदारथ रूपके सम्मान होजाती करै॥
तिमिर दूरि पदार्थको करि फिर पदारथलखिधरै।
प्रकाशरूप सुभास जानौ होसहायक भ्रम हरै॥
छन्दछैया जहँरस्सी में सर्प भासता बाहर वृत्ति सुजाई।
रस्सी के सँग लपटि रहीहै दोपतिमिर भयदाई॥
अन्धकारके दोषधार उर नाहिं यथारथ भासै।
वृत्ती और अविद्या मिलकर सर्पाकारप्रकासै॥
चौ० जोकि अविद्याकारज होई। सत्य न देखी मिथ्या सोई॥
ज्ञान भये रस्सी के भाई। सर्प दूरि तब होता जाई॥
जभी ज्ञान रस्सी का होवै। सर्प अभाव दृष्टि नहिं जोवै॥
इसे सत्य नहिं कहते भाई। जो असत्य तो देत दिखाई॥
इससे सत्य असत्य न कहिये। सत्य असत्य मिलीनहिं रहिये॥
कहा अनिर्वचनी सो भाई। बीज माहिं जो वृक्ष समाई॥
तोड़े बीज वृक्ष नहिं भासै। वृक्ष नहीं तो प्रकट प्रकासै॥
बीज वृक्ष में रह्यो समाई। बाहर प्रकट भयो सुदिखाई॥
इसको माया नाम बखानो। यही अनिर्वचनी कर जानो॥
जैसे सर्प अविद्या काही। हो परिणाम न भरम रहाही॥
ऐसे सर्प वृत्तीमें भाखा। है परिणाम अविद्या बाखा॥
ज्ञान अनिर्वचनी सोइ जानो। अन्तःकरण वृत्ति पहिचानो॥
दो० वृत्ति जो अन्तःकरणकी, होता ज्ञान सुजान।
तो अभाव नहिं सर्प का, रहता भर्म समान॥
चौ० हे महराज सत्य सब भाषा। हिरदय से सब संशय नाशा॥
एक रहा सन्देह हमारे। स्वप्न नई रचना मन धारे॥
तनबाहर मन रचना करही। तौ स्वप्ने तन मिरतक चहही॥
सूक्षम देह स्वप्न की होई। तीनि लोक रचना मन सोई॥

हाथी घोड़ा मुल्क मकाना। सूक्षममें किस भांति समाना॥
सो सन्देह कृपाकर नाशौ। परमहंस बोले सुनि आशौ॥
वेद बचन यह भाषा भाई। स्वप्नसृष्टि मन रचत बनाई॥
देह गले के भीतर जानो। नाड़ी सूक्षम तहां बखानो॥
नाड़ी में सब रचता भाई। बिना प्राण बाहर क्यों जाई॥
प्राण मनै को घोड़ा जानो। इन्द्री सर्व प्रजाकर मानो॥
प्राण गये इन्द्री सब जावें। बिना प्राण नहिं टिकनेपावें॥
मनहु प्राण बाहर जब जाई। देह मृतक होजाती भाई॥
सो० मन इन्द्री अरु प्रान, कण्ठमाहिं रचना करै।
स्वप्नकल्पना जान, सच्चपदारथ भासभ्रम॥
चौ०मनमें ज्ञान शक्ति है भाई। कर्मशक्ति नहिं कर्म कराई॥
स्वप्न माहिं चहिये सब कर्मा। कर्म प्राण इन्द्री को धर्मा॥
इन्द्री प्राण बिना तन भाई। मिरतक भयो कहत है ताई॥
इससे मन बाहर नहिं जाई। कण्ठमाहिं सब रचता भाई॥
घोड़ा हाथी मनुज रचाई। कल्पित इन्द्री देह बनाई॥
स्वप्ने में सोइ देखत भाई। राजभोग सुख दुख सब पाई॥
स्वप्ने में तन घाव लगाना। इसतनपर कछु चिह्न न आना॥
इससे सिद्ध भया सुन भाई। कल्पित देह सो और रहाई॥
स्वप्न साक्षी भास रहावै। जाग्रत इन्द्री देह न पावै॥
आप कहा जग स्वप्न समाना। मोरि बुद्धि में भर्म रहाना॥
रेल तार मिथ्या क्यों होई। वर्त्तमान में दीखत सोई॥
खबरि एक दो घंटे माहीं। कोस हजारन पहुँचे जाहीं॥
दो० जगतभर्म स्वप्ना कहा, रेल तार जगमाहि।
भले भर्म में पड़े हौ, अचरज मानत काहि॥
चौ०परमहंस बोले सुन भाई। बिरथा पड़े भरम में आई॥

रेल तार आदिक जग माहीं। जग से भिन्न दीखता नाहीं॥
स्वप्न सहित जग मिथ्या होई। रेल आदि क्यों सत्य लखोई॥
स्वप्नमाहिं तुमही सब करते। अद्भुत नये पदारथ रचते॥
स्वप्नसृष्टि तुम्हरी रचनाई। वारापार नहीं कहि जाई॥
स्वप्नअवस्था में मन भाई। ताते लाभ होत सुखदाई॥
स्वप्न जगत में प्रकट दिखावै। लेन देन सब काम चलावै॥
धातु स्वभाव धूम्र बल भाई। रेलआदि यहि भांति बनाई॥
रेल चलन सो भेद बताऊं। चलन रीति वाकी दरशाऊं॥
रोटी करै एक भठियारी। चूल्हे ऊपर डेग चढ़ारी॥
डेग माहिं पानी भरि धरेऊ। ऊपर ढकना थारी दयऊ॥
जल औटा धुवां नहिं चाला। थारी थरथर कँपै सुहाला॥
थारी ऊपर तार लगाया। तार सिरा मकान बँधाया॥

दो० उसी तारका सिरा ले, बांध्यो बीच मकान।
जस जस थारी हिलत है, तार हिलत सो जान॥

चौ० सिरा तार का लेकै भाई। दूजे महल निकासा जाई॥
ज्यों ज्यों थारी हलती भाई। त्यों त्यों तार हिलै सू जाई॥
उसने तो यह खेल बनाया। बुद्धिमान कल रेल चलाया॥
धूवाँ के बल गाड़ी चलई। यकनलराह धुवाँ जो भरई॥
हाल तार का कहौं सुनाई। धातु धातु से मेल रहाई॥
धातौं में बल भी कुछ होवै। धातु दूसरी मेल करोवै॥
पोली धातु होति कोइ वैरी। कोई ठोस देखो बलकेरी॥
फूल धातु की छड़ी बनावो। लम्बी कर यकछोर गहावो॥
सिरा छोड़ ज्यों ठोंको भाई। सोइ झनकार अन्ततक जाई॥
लोहेकी पुनि छड़ी जो होई। एक छोरपर ठोंको सोई॥
पर अवाज जहँकी तहँ रहई। अस २ ठोसधातु पुनि कहई॥

इसीप्रकार तार यह भाई। कई धातु को मेल कराई॥
खबरि भेजनी जबहीं होवै। तार सिरा पारे बिच डोवै॥
दायें बायें तार हिलावै। वही हिलाना तार ले जावै॥
तार सिरा जहँ होवै भाई। सिरे बीच दो सुई लगाई॥
सुई हलै दायें को जबहीं। कः अक्षर पहिंचानो तबहीं॥
बाईं तरफ़ सुई हलि गिरही। लः अक्षर समझोगति अहही॥

दो० दोनों अक्षर जोड़ि कै, कल जु हुआ असरीति।
इसी तरह अक्षर सबै, चिह्न होत सोइ नीति॥

छन्दद्वैया दायेंबायें सुई गिरति है दायें का है भाई।
बायां अक्षर लःपहिचानौ दोनोंकल सुकहाई॥
हैं तो बड़ी बुद्धिकी बातैं पर यह भी जगब्यवहारे।
ब्रह्मज्ञान कछु और बातहै मायाकृतसे न्यारे॥

दो० शोधन करै सुनारकर, जो कुन्दन लावै हाथ।
बृन्दाबन अस ज्ञानमें, जगत रह्यो नहिं साथ॥
माया के संयोग से, जो चेतन भो जीव।
सो चेतन निजरूप को, त्याग कियो नहिं पीव॥
दर्पण जलके माहिं जस, छाया दूसर होय।
बृन्दाबन जो बिम्ब है, नहीं हुआ वह दोय॥
मनफुरना सो रहतकर, कौने बिधि सो होय।
चहै भक्ति चह ध्यानकर, चहै ज्ञान से खोय॥

छन्दद्वैया महाराज आपने भाषा परारब्ध नहिं मिटते।
जोप्रारब्धअमिटनहिंमिटत्तीवेदयत्नक्योंलिखते॥
यत्न करै तो फलको पावै बिना यत्न कुछ नाहीं।
जप तप पूजा से धनपाया प्रारब्ध न रहाई॥
परमहंस ने कहा कि सुनियो ये झगड़े अज्ञाने।

तुमतौ ब्रह्म बिचारहि करते कहां जाइ उरझाने॥
हम इसका वृत्तान्त कहतहैं तुम स्मरणयहराखो।
हमरा तो सिद्धान्त यहीहै अनिर्वचनी यहभाखो॥
शास्त्र वेद रीति अनुसारे यत्न किया धनपाया।
इससे परारब्धिनहीं मिटती ऐसीसमझलखाया॥
इसी मार्ग से धनका होना लिखा रहे सुन भाई।
कोइ नौकर कोइ करै दुकानै कोई कथा कराई॥
जसजस लिखा होय प्रारब्धे तसतसही संयोगे।
बिना लिखा नहिं पावै भाई दुखसुखकर्म सुभोगे॥
यह संयोग बियोगे दोनों परारब्धियक कोई।
जसजस होनहारई होवै तसतस प्रकटै सोई॥
दो० जैसी हो होतव्यता, तैसी उपजै बुद्धि।
होनहार हिरदै वसै,बिसरिजायसबसुद्धि॥
चौ०है है वही जोरामरचिराखा। को कहि तर्क बढ़ावै शाखा॥

प्रमाण दोहा॥

महाराज अब निडर मैं, कछू करौंगो नाहिं।
जोकुछलिखासोभोगिहौं,यहनिश्चयमनमाहिं॥

चौ०परमहंसने कहा बुझाई।परारब्ध संयोग कराई॥
जो कुछ करना लिखा न तोरे। तुम करिहौ सोई चितजोरे॥
जो कुछ लिखा कर्म में करना। तौ यह समुझ रहै नीडरना॥
जो कुछ नहिं करने में भाई। तुम्हरे भागे सुक्ख लिखाई॥
तौ सुख प्रापत तुमको होई। लिखलिखदुखदुखपैयोसोई॥
एक कहूं दृष्टान्त सुनाई। दो मनुष्य झगड़ेथे भाई॥
एक बड़ा उद्योग बतावै। एक मुख्य प्रारब्धे गावै॥
कोइ मनुष्य ने लिये बोलाई। कोठे में दोउ बन्द कराई॥
जिसने मुख्य भाग्य को माना। सोइरहा चादर को ताना॥

जो कुछ होना होगा सोई। हमरे करे न दूजा होई॥
जिन उद्योग बड़ा बतलावा। उसने हृदयबुद्धि उपजावा॥
कुछ उद्योग करौ किन भाई। नाहीं तो भूखे मरिजाई॥
कोठा फोड़िगयो सो जानो। करि उद्योग पदारथ आनो॥
दो० प्रारब्धी भूखा रहै, हम पहिले कस खायँ।
आधोपारसदीजिये, करतब मुख्य लखायँ॥
चौ०कोठे में यक छेद कराई। प्रारब्धी से पूछत जाई॥
भूखे मरो लेउ यह भाई। बिना करे कछु हाथ न आई॥
कहै प्रारब्धवान ला भाई। जो कुछ दिया सो लीना खाई॥
पीछे कहा देखु अब तूही। परारब्ध हमरी ही हूही॥
परारब्ध बड़ भयो हमारा। तैं उद्योग किया अतिभारा॥
तब खाने को तुमने पाया। हमको सोते आनि खिलाया॥
यह सिद्धान्त समुझिये भाई। मूल बड़ी प्रारब्ध कहाई॥
करके ध्यान समुझिये ऐसा। बिन उद्योग प्राप्त नहिं पैसा॥
बिनउद्योग न भोजन आया। परारब्ध नहिं उठिकर धाया॥
परारब्ध उद्योगै भाई। दोनों कही बराबर गाई॥
विना तेल बत्ती के भाई। दीपक कभी न बरता आई॥
दो० तेल भयो बत्ती नहीं, तो क्यों होय प्रकाश।
बत्तीहै अरु तेल नहिं, नहिं जलने की आश॥
सवैया है इतना अन्तर प्रारब्ध कु तेल बिना नहिं दीपक भासै। है उद्योग समानवती कहि छोटिहु बाती देर प्रकाशै॥ जो थोड़ा होय तेल बती बड़ थोरही देर में दीप बिनाशै। जो प्रारब्ध भई चैतन्य तौ थोड़े करना बहुत सुभासै १॥ कवित्तघनाक्षरी॥ चैतन्य प्रारब्धहोइ थोड़े ही उद्योग सोइ पूराकाम होतासही निश्चय जियजा-

निये । प्रारब्ध मलीन पाय सहस्र उद्योग धाय निष्फल होत जैसे मन कल्पना समानिये ॥ मुख्यही प्रारब्ध जानि पाछही उद्योग मानि तेल बाती दोनोंमेल दीपक ज्यों जारिये । कहै रघुनाथदास सद्गुरु रामआश पहलेई कर्मकरि प्रारब्ध विचारिये २ ॥ कवित्त ॥ महाराज संशय एक भाषतहै वेदभेष पहले जन्म कर्म्म किये सोई भोग पायोहै । कर्म्मफल दुःख सुख प्रारब्धके अनुसार जहां जहां जाई तहां ऐसोई सुनायोहै ॥ जगतमें दीखत है दुःखसुख भोगमान कोई कोई इच्छा शुभ अशुभ जगायोहै । दोनोंही को बीज कौन सुनो जैसा बृक्ष जौन कोई फल मीठा अरु कडुआ कहायोहै ३ मीठा अरु कटुकता फल में है एकसार त्योंही सुगन्ध दुर्गन्ध अ बसाइये । इच्छाशुभअशुभ दोगन्ध दुरगन्धजान क शुभ करै फल बासना समाइये ॥ इच्छा शुभलाभदे सु कर्महीको हेतु जान ऐसेही कुकर्म दूर बासना लखाइये शुभ अरु अशुभ कर्म इच्छाअनुसार भो जैसा जो कम करै सोई फल पाइये ४ महाराज कहो और जिते शुभ अशुभ कर्म दोनों के फल समान भोग भुगताइये सुकर्म किया अधिक कुकर्म कछु थोड़ेहैं दोनोंही के भोगकै अशुभ मिटिजाइये ॥ मनभर तो कुकर्म शुभ कर्म मन दो जान दोनों फल भोगै के पापन भोगाइये कहै रघुनाथदास सद्गुरु रामआश भोगफल दोनो मिलैं निश्चयही लखाइये ५ ॥

चौ० परमहंस तब कहा बुझाई । दोनों फल भोगत हैं जाई । शास्त्रहु वेद कहा क्यों ऐसा । कर प्रायश्चित मिटै अनैसा ॥

परमहंस बोले सुनु बाता। अपनीसमझमाहिंअसआता॥
शास्त्र यही प्रयोजन राखा। बच कुकर्म प्रायश्चित भाखा॥
वह तो लगा प्रायश्चितमाहीं। सर्व लोग पुनि देत भलाहीं॥
अब कुकर्ममें रुचि नहिं आवै। शुभइच्छा शुभकर्म करावै॥
फल कुकर्मका दुख है भाई। फल सुकर्मका सुख रहजाई॥
सुक्ख सुकर्मनका फल पावै। दुख कुकर्मफल ध्यान न आवै॥
फल कुकर्मका हटभी जावै। कछुक काल पीछे फिर आवै॥
एक कहूं दृष्टान्त सुनाई। एक एक को मारा भाई॥
एकमनुष्यको उन कछु दीन्हा। बदला दोऊ चहतहैं लीन्हा॥
जिसको मार दई है भाई। वह बदला लेने को धाई॥

दो० लेनेका सुख पाइकै, दुःख न मालुम देय।
ऐसे भोग कुकर्मका, शुभफल नाश करेय॥

चौ० सुखकाबलजबहोताभाई। कुछ दुख सहना सुगम कराई॥
मनभरकी गठरी यक होई। शिर बीमार के राखो सोई॥
जोकि मनुष्य निरोग रहाई। शिरगठरीधरि नहिं अकुलाई॥
देखो जाइ कचहरी माहीं। नम्बर से इन्साफ कराहीं॥
जो मुक़द्दमा खूनी आवैं। नम्बर सबी धरे रहजावैं॥
वह मुक़द्दमा पहले होई। जस सुकर्मफल जानो सोई॥
फल कुकर्मको देत हटाई। शुभइच्छा शुभफल सोइपाई॥
शुभकर्मनको फल सुखदाई। अशुभकर्मको दिया भुगाई॥

दो० महाराज अच्छा कहा, दूरिकिया सन्देह।
यहझगड़ाक्योंजानिये, मेटत भर्म कलेह॥

कवित्त ज्ञानीके न देह चाह राखनकी इच्छा नाहिं
प्रारब्धी यत्नका तो झगड़ाही लखाइये। जिस ग्राम को
न जाना मारगके कोस गिनै झगड़ाही जानि देखि कौन

निये। प्रारब्ध मलीन पाय सहस्र उद्योग धाय निष्फल होत जैसे मन कल्पना समानिये॥ मुख्यही प्रारब्ध जानि पाछही उद्योग मानि तेल बाती दोनोंमेल दीपक ज्यों जारिये। कहै रघुनाथदास सद्गुरु रामआश पहलेई कर्मकरि प्रारब्ध विचारिये २॥ कवित्त॥ महाराज संशय एक भाषतहै वेदभेष पहले जन्म कर्म्म किये सोई भोग पायोहै। कर्म्मफल दुःख सुख प्रारब्धके अनुसार जहां जहां जाई तहां ऐसोई सुनायोहै॥ जगतमें दीखत है दुःखसुख भोगमान कोई कोई इच्छा शुभ अशुभ जगायोहै। दोनोंही को बीज कौन सुनो जैसा बृक्ष जौन कोई फल मीठा अरु कडुआ कहायोहै ३ मीठा अरु कटुकता फल में है एकसार त्योंही सुगन्ध दुर्गन्ध अरु बसाइये। इच्छाशुभअशुभ दोगन्ध दुरगन्धजान कर्म शुभ करै फल बासना समाइये॥ इच्छा शुभलाभदे सुकर्महीको हेतु जान ऐसेही कुकर्म दूर बासना लखाइये। शुभ अरु अशुभ कर्म इच्छाअनुसार भो जैसा जो कर्म करै सोई फल पाइये ४ महाराज कहो और जिते शुभ अशुभ कर्म दोनों के फल समान भोग भुगताइये। सुकर्म किया अधिक कुकर्म कछु थोड़ेहैं दोनोंही को भोगकै अशुभ मिटिजाइये॥ मनभर तौ कुकर्म शुभ कर्म मन दो जान दोनों फल भोगै के पापन ...
कहै रघुनाथदास सद्गुरु रामअ...
मिलैं निश्चयही लखाइये ५॥

चौ०परमहंस तब कहा बुझाई। दोनों फल भो...
शास्त्रहु वेद कहा क्यों ऐसा। कर प्रायश्चित मि...

परमहंस बोले सुनु बाता। अपनीसमभझमाहिंअसआता॥
शास्त्र यही प्रयोजन राखा। बच कुकर्म प्रायश्चित भाखा॥
वह तो लगा प्रायश्चितमाहीं। सर्व लोग पुनि देत भलाहीं॥
अब कुकर्ममें रुचि नहिं आवै। शुभइच्छा शुभकर्म करावै॥
फल कुकर्मका दुख है भाई। फल सुकर्मका सुख रहजाई॥
सुक्ख सुकर्मनका फल पावै। दुख कुकर्मफल ध्यान न आवै॥
फल कुकर्मका हटभी जावै। कछुक काल पीछे फिर आवै॥
एक कहूं दृष्टान्त सुनाई। एक एक को मारा भाई॥
एकमनुष्यको उन कछु दीन्हा। बदला दोऊ चहतहैं लीन्हा॥
जिसको मार दई है भाई। वह बदला लेने को धाई॥

दो॰ लेनेका सुख पाइकै, दुःख न मालुम देय।
ऐसे भोग कुकर्मका, शुभफल नाश करेय॥

चौ॰ सुखकाबलजबहोताभाई। कुछ दुख सहना सुगम कराई॥
मनभरकी गठरी यक होई। शिर बीमार के राखो सोई॥
जोकि मनुष्य निरोग रहाई। शिरगठरीधरि नहिं अकुलाई॥
देखो जाइ कचहरी माहीं। नम्बर से इन्साफ कराहीं॥
जो मुक़द्दमा खूनी आवैं। नम्बर सबी धरे रहजावैं॥
वह मुक़द्दमा पहले होई। जस सुकर्मफल जानो सोई॥
फल कुकर्मको देत हटाई। शुभइच्छा शुभफल सोइपाई॥
शुभकर्मनको फल सुखदाई। अशुभकर्मको दिया भुगाई॥

दो॰ महाराज अच्छा कहा, दूरिकिया सन्देह।
यहझगड़ाक्योंजानिये, मेटत भर्म कलेह॥

कवित्त ज्ञानीके न देह चाह राखनकी इच्छा नाहिं प्रारब्धी यत्नका तो झगड़ाही लखाइये। जिस ग्राम को न जाना मारगके कोस गिनै झगड़ाही जानि देखि कौन

लाभ पाइये ॥ माया अनिर्वचनीय कही हम बारबार ओसकी बूंद से प्यास ना बुझाइये। कहै रघुनाथदास सद्गुरु रामआश स्वप्नेको खेलसम स्वप्नासमझाइये १ महाराज सत्य कह्यो दूरिकरे भर्म सब ब्रह्महीकी विद्या अब कृपाकैबखानिये। कहै अवधूत तुझे पूछना सोपूछिले महाराज मेरी माति दुःख सुख मानिये॥ छोटा असमर्थरूप ब्रह्म है अनन्द बड़ा पूरण है सर्व ठौर क्योंकर सो जानिये। कहै रघुनाथदास सद्गुरु रामआश अंतसके धर्मजानि ब्रह्ममें न आनिये २ कहै अवधूत सुनो दुःख सुख सामर्थ्य न्यून धर्म अन्तःकरण के दृष्टान्त बखानिये। मैं तो जग द्रष्टा भयो अधिष्ठान कौन कहो दृष्टान्त चैतन्य अधिष्ठान सोई मानिये॥ स्वप्ने में द्रष्टा अधिष्ठान आप दोनों एक जाग्रत में जगत्रूप ऐसेई जानिये। कहै रघुनाथदास सद्गुरु रामआश मिथ्याजग अधिष्ठान हानीनहींमानिये ३ जैसे मृगतृष्णा जलपृथ्वीको न गील करै रजूमाहीं सर्पभ्रम विष नहीं पाइये। जलाकाश घटाकाश मेघाकाश महाकाश कहने को चारिरूप एकही लखाइये ॥ आपही सङ्कल्प नरक स्वर्गहू बनाये आप बालकही छाहँदेखि भूत भयपाइये। चारौंमें उपाधि भेद अवश्यहै इसीभांति साक्षीहै जीवकूटस्थ ईश गाइये ४ ब्रह्म है चैतन्यरूप एकही ये चारमानि भेद है उपाधि ताहि मिथ्या जल भासीहै । जलाकाश कहै ताहि घटाकाशमें जु बिम्ब दीन्हो अवकाश सो अकाशही प्रकाशी है ॥ घटाकाश कहै ताहि जितनो अवकाश पाय मेघाकाश बादल नौजगहै जलराशी है। महाकाश पूर्ण सब

जीव ईश ब्रह्म जानि चैतन्य सो स्वयं रूप एक सर्वबासी है ५ जीव ईशकी उपाधि मिथ्या कर जानो सोय ज्ञान कहै मूल ताहि सर्व सुखराशीहै । महाराज लक्षण कथा लक्षणा है तीनिकहै जहतीहै अजहतीहै भागत्याग आशी है ॥ जहती है ताहिजान सर्वबचन त्यागमान गङ्गामें गाउँ कहै सर्ववाक्य नाशीहै । कहै रघुनाथदास सद्गुरु राम आश लक्षण है अजहती जो सर्व वाक्य भासी है ६ ॥

कवित्तप्रमाणी ॥ लक्षण अहतीक कहतहै ताहि सुग्रहणकरै सब अक्षर भाई । काहू कहा रँग लाल उड़ातहै लालहि रङ्ग सुपक्षी उड़ाई ॥ भागत्याग कहू जिसमें कछु ग्रहण किया कछु जात छुटाई । ईश्वर जीव उपाधिको त्याग सो चैतन्यभाग जो ग्रहणकराई ७ अन्तःकरण कहै जड़-रूपहो दुःख नहीं सुख भोग है तामें । अवधूत कहा तुम सत्य कहो पर तेरीहै चैतन्यशक्ति सुवामें ॥ कारण ताहि के सुक्ख लहै दुख अन्तसज्ञान सुहोतहै जामें । दीपक कै परकाश यथारथ दृष्टिदई नहिं कर्म सुतामें ८ जस दीपकके प्रकाशभये पर ज्वारी जुवाकोइ पोथिहि बांचै । पर दीपके कर्मको मान नहीं तुहि चेतनरूप हृदय बिच सांचै ॥ तेरहिचेतन भासलिये अन्तससुखदुःख सुभोगतनाचै । मुझको उन कर्मको लेश नहीं चैतन्य सुदीपकरूपही राचै ९ रूपकी बस्तुका होत अभास सुभिन्न पड़े स्थानसे जाई । व्यापक चेतन आप कहा आभास पड़े स्थान कहाई ॥ सुनिशब्द अरूप का ध्वनि प्रतिविम्ब सुव्यापक व्योम अरूप लखाई । जलमें प्रतिविम्ब अकाशको भासत अन्तसबुद्धि चैतन्य दिखाई १०

व्यापक मोहिंकहा महाराज यह कारण कौन सुभेद बताइये। केवल अन्तस भोग करै सब देह नहीं क्यों भोग कराइये॥ अन्तस देह दोऊ जड़रूप सुभोगत एकन भोग कहाइये। कहै अवधूत सुनो मृतिका जड़ दर्पणमाहिं स्वरूपलखाइये ११॥ कवित्त॥ अन्तःकरण सुदर्पणरूप है देह भई जस भीति समानै। दर्पणमें प्रतिबिम्ब लखो निज भीतिमें दीखत नाहिं सुजानै॥ प्रकाश पदारथ रूपकहै सम भीति मलीन न रूप दिखानै। दर्पणनिर्मल अन्तसजानिसुचेतनभास पड़े सो बखानै १२ चैतन्य प्रकाश समान सदा नहिं भीति में दीखत देह सो जानो। दर्पणमें प्रतिबिम्ब पड़े मृतिकाहि बिकार सुदर्पणमानो॥ त्यों जलबीच अकाशको भासहै औरहु भूमि पै नाहिं दिखानो। चेतन व्यापक है सब देहमें अन्तसमें प्रतिबिम्ब लखानो १३ देह तमोगुण को है कारण अन्तःकरण सतोगुण जानो। अन्तस हीरा सदृशहै निर्मल फूलकि लाली झलकसमानो॥ पाथरमें नहिं रंग सुभासत चेतन अन्तस बीचलखानो। है चैतन्यसमान सुदेहमें अन्तसभास चैतन्य दिखानो १४ तो महराज सम्पूरण देहमें दुख सुख क्योंकर देत दिखाई। अन्तःकरण तहां दुख चाहिये देह सबै सुखदुःख सो पाई॥ अवधूतकहै स्थान हृदय में अन्तसवृत्ति सुदेहसमाई। सूरज एक अकाश में बास है भास किरणयसभूमिपै छाई "अन्तस एक स्थान कह्यो पुनि व्यापक है सब देह कि नाई" १५॥

दो॰ महाराज यह कहो अब, ज्ञान कौन को होय।

अहंब्रह्म को कहत है, भेद बतावो सोय ॥

चौ०परमहंस ने कहा बुझाई। चेतन भास बुद्धि माहाई ॥
सो यह कहैं उसीको ज्ञाना। बुद्धी में चैतन्य समाना ॥

दो० महाराज आभासतो, ब्रह्म नहीं कछु होय।
भिन्न कहतहै ब्रह्मसे, और प्रकारे सोय ॥

चौ०परमहंस बोले सुन भाई। बुद्धि सहित आभास कहाई ॥
अरु अभास को होवे ज्ञाना। कहै अभास कूटस्थ बखाना ॥
साक्षी का अभिमान कराई। आपअभास स्वरूप लखाई ॥
साक्षी के स्वरूप को जानै। अपना आपहि लख्यकरानै ॥
कहै अभास ब्रह्म के साथा। कहै एक वेदान्त सनाथा ॥
बाध्य समानाधिकरण भाई। जस दर्पणमें रूप समाई ॥
वह स्वरूप अपने को बाध्यक। असलरूप में जाइ समाध्यक ॥
जस मनुष्यकी है परछाहीं। सो मनुष्यमें जाइ समाहीं ॥
देखन माहिं दूसरी भासै। बस्तु एकही असल प्रकासै ॥
जो कुछ बस्तु दूसरी होई। आप अकेली रहै न कोई ॥

दो०हरिहरजन दोउ एकहैं, बिवाबिचार कुछ नाहिं।
जल से उठै तरंग ज्यों, जलही बिषे समाहिं ॥
महाराज तुव कृपा से, समुझि परी सब बात।
प्रलयज्ञान में अन्तरा, सो करिये बिख्यात ॥
प्रलयमाहिंकछुरहैनहिं, ज्ञानदृष्टि जगनास।
ज्ञानी कस देही तजै, कैसे भोग बिलास ॥

चौ०परमहंस तब कहा बुझाई। परलय का वृत्तान्त सुनाई ॥
जब ईश्वर जीवन के ताईं। कर्म भोगफल देत सुनाई ॥
तब परलय होजावे भाई। बस्तू संस्कार रहिजाई ॥
संस्कार माया में रहई। जीव कर्म बाकी जो अहई ॥

माया में सब रहै समाई। संस्कार कर्मादिक भाई॥
जब सब कर्म भोग पकि जावै। ईश्वर के इच्छा अस आवै॥
जगरचना करनी अब चहिये। इच्छा मायारूप सुलहिये॥
माया तमो प्रधान सो भाई। पंचतत्त्व उत्पन्न कराई॥
माया से आकाश सो जानो। शब्द समेत भयो सो मानो॥
नभसे उत्पति बायु भई है। वायुसे उत्पति अग्नि कहीहै॥
अग्निहि से जल उत्पतिभाई। जल से पृथ्वी रची बनाई॥
दो० पांच पूत उत्पति भये, माया को परपञ्च।
पञ्च बिषय प्रकृती भई, भिन्नभिन्न बरणांच॥
चौ० अबपच्चीसप्रकृति सुनुभाई। एक एक की पांच कहाई॥
हाड़ मांस नाड़ी त्वचरोमा। पञ्चप्रकृति पृथ्वी की होमा॥
अस्तिभाग पृथ्वीमुख राखा। चारिभाग चारों को आंखा॥
मांस दिया जलको सुनु भाई। अग्निरूप नाड़ी कहिगाई॥
त्वचा पवन को रोम अकासा। पञ्चप्रकृति पांचौंके पासा॥
जलकी पांच प्रकृत्ति बखानों। रेत श्वेत रक्त पित मानों॥
लार पांच एकही बखानी। रेत भाग जल आपुरखानी॥
श्वेत पवन को दीन्हा भाई। रक्तभाग पृथ्वी ने पाई॥
पित्त अग्निकोदिया सोजानो। लारदई आकाशै मानो॥
पञ्चकढू पवनी की गाई। धावन पसरन उछलन भाई॥
चञ्चलता संकोच कहावै। पांचोप्रकृति पवनकी गावै॥
धावन भाग पवन मुख लीन्हा। चारभाग चारों को दीन्हा॥
पसरन दयो पृथ्वी को भाई। उछलन अगिनी को बरताई॥
चञ्चलता जलकी पहिंचानौ। है संकोच अकाश बखानौ॥
पंच प्रकृति अगिनी की भाई। भिन्नभिन्न करि कहौं सुनाई॥
क्षुधा पिपासा आलस भाई। निद्राक्रान्ति अग्नि से गाई॥

क्षुधा भाग अग्नीसुख राखा। दई पिपासा पवन सुआशा॥
आलस दियो पृथ्वी को भाई। निद्रारूप अकाश कहाई॥
कान्तिदईजलकोपहिंचानो। अबअकाशकीप्रकृतिबखानो॥
अहंकार क्रोधे अरु लोभा। मत्सर मोह पंच है शोभा॥
अहंकार राख्यो आकाशा। क्रोध अग्नि को रूप प्रकाशा॥
लोभ पवन को दीनो भाई। मोहदियो जलको बरताई॥
मत्सररूप पृथ्वी को जानो। पचीसप्रकृतियहभेदबखानो॥
पंचतत्त्व की इन्द्री भाई। एक एक की दो कहिगाई॥
श्रवण ज्ञान बाक्य है कर्मा। इन्द्री दो आकाश सुधर्मा॥
नेत्र ज्ञान पग इन्द्री दोई। अग्नि तत्त्वकी कहियतसोई॥
त्वचा ज्ञानकर कर्म बखानै। पवन तत्त्व दो इन्द्री जानै॥
रसना ज्ञान उपस्थ बखाना। इन्द्री दो जलकी ये माना॥
नासा ज्ञान गुदा है भाई। इन्द्री दो पृथ्वी की गाई॥
तत्त्वों का सात्त्विक गुण भाई। अन्तस इन्द्री ज्ञान बनाई॥
सो० अन्तस इन्द्री ज्ञान, अंश सतोगुण से भई।
इन्द्री कर्म बखान, अंश रजोगुण मानिये॥
चौ०प्रलयज्ञानमें कितना भेदा। ज्ञानी कभी न करते खेदा॥
परलय के पीछे सुनु भाई। पैदा जीव होत फिरि आई॥
ज्ञानी ब्रह्म माहिं लयहोई। फेरि जन्म धरता नहिं सोई॥
ज्ञानी को कुछ संशय नाई। देह रहै कै अब छुटिजाई॥
तीरथ जङ्गल एक समानै। ज्ञानवान कछु शंक न मानै॥
जोकि किसी ज्ञानी ने भाई। देशकाल का ध्यान कराई॥
हित अज्ञानिन को उपदेशा। आप रहैं निरलेप हमेशा॥
वशिष्ठादि ज्ञानी जो भाई। अधिकारी आपुहि वहु पाई॥
इनकी देह कल्प यक रहई। पर इनको आतमसुखअहई॥

जन्म मरण कबहूं नहिं भासै। स्वयं आत्मारूप प्रकासै॥
महाराज अस सुना सु मैंने। देह जीवकी तीनि सो कहने॥
परमहंस बोले सुनु भाई। तीनों देह कहौं समुझाई॥
कारण देही एक कहावै। शून्य सुपोपति बीच रहावै॥
दूसर लिङ्ग शरीर कहाया। सत्रहितत्त्व वेद अस गाया॥
पांच कर्म इन्द्रिय यह जानो। पांच ज्ञान इन्द्रियां बखानो॥
पंच प्राण मन बुद्धि कहाये। सत्रह तत्त्व शरीर बनाये॥
तीसर तन अस्थूल बखानै। आतमा भिन्न सबनसे मानै॥
पंच कोष तीनों तन माहीं। भिन्नभिन्न करि कहौं सुनाहीं॥
कोष अन्नमय कहूं बखाना। देहस्थूल कोष यह माना॥
कारण निमित रजोगुण भाई। तामस उपादान कहि गाई॥
सात्त्विकगुण समवायु सो जानौ। देह भई चैतन्य सु मानौ॥
तब अज्ञानी मरता भाई। मम मेरा चित भाव रहाई॥
जिसपर ममता मोह रहेऊ। ताहिरजोगुण व्यापत भयऊ॥
इस्त्री पुरुष मेल जब होई। पिताबिन्दु जलकहियेसोई॥
रक्त पृथ्वी का रूप कहावै। गर्भ बीच दो तत्त्व मिलावै॥
दोनों में जो रगर अति होई। अग्नि तत्त्व कहियतहै सोई॥
मातु उदर जो पोल रहाई। रूपअकाश द्वार छिपिजाई॥
उदर माहिं जो पवन रहाई। छिद्रहिद्वार प्रवेश कराई॥
पञ्चभूत को पुतरा भाई। गर्भ माहिं जड़ बढ़ता जाई॥
लेह्य चोष्य अरु भोज्य कहावै। भक्ष्य चारि भोजन कहलावै॥
लेह्य नाम जल भोजन जानौ। पेय दूधरस कहा बखानौ॥
भोज्य कहे फल आदिक भाई। भक्ष्य अन्न यों चारि कहाई॥
माता भोजन जोई पावै। नारद्वार तन पुष्टि करावै॥
दो० कारण निमित रजोगुण, उपादान तम सोय।

पञ्च भूत यकठे किये, गर्भबीच जड़जोय॥
लगत पांचये मास के, अन्तससतो सुपाय।
सर्व देह चैतन्य भइ, फूलसुगन्धलखाय॥
चौ०नवें मास बाहर जब आया। दूधसाथ पाली निजकाया॥
आप अन्न जब खाने लागा। भयो पुष्ट तनरस सुखपागा॥
कोष अन्न मैं कहा बखानी। बड़ादचारिन्तहिबिचजानी॥
बसा रसा गृसा पहिंचानौ। कसा चारि ये बन्धन मानौ॥
देह हंगता मानि बसा है। कुलके कर्मन बीच रसा है॥
जाति धर्म बिच ग्रस्यो सुभाई। तीनि लाजबिच गयो कसाई॥
कुल अरु लोकवेद तिहुं लाजा। कस्योजीवजगकरतसुकाजा॥
दूजा कोष प्राणमय जानौ। दश प्रकारकी पवन बखानौ॥
प्राण उपान बियान समानै। है उद्यानै पञ्च बखानै॥
प्राण पवन ऊपर को जावै। कहै उपान जो बायु सरावै॥
नाड़ी द्वार घूमती सोई। ब्यानपवन कहियत हैं वोई॥
रोमरोम बिच रही समाई। पवन समान कही स्वइगाई॥
कै उद्गार जाके सँग होई। कहै उद्यान पवन है सोई॥
पांच पवन औरो हैं भाई। इनके भीतर कही बुझाई॥
नाग डकार कहत हैं भाई। कूरम आंखी पलकचलाई॥
कृकल नाम छींक को जानो। देवदत्त जमुहाई मानो॥
पवन धनञ्जय कहिये सोई। मृतक देह फूलावत जोई॥
दश प्रकारकी पवन बखानी। कोप प्राणमय भेदसुजानी॥
तीसर कोष मनोमय जानो। पांचकर्म इन्द्री मनमानो॥
सातैं अहंकार है भाई। कोप मनोमय कह्यो सुनाई॥
चौथा कोप कहै विज्ञाना। चित्तबुद्धि इन्द्री पँचज्ञाना॥
पञ्चम कोष अनन्द बखानौ। बुद्धी कारण देह सुमानौ॥

पांचौ कोष कहैं सुनु भाई। जाग्रत स्वप्न सुषोपति गाई॥
कोष म्यानके सम है भाई। आतमा काढ़ै कन कहलाई॥
कोइ यह देह आतमा भाखै। इन्द्रिनको कोइ आतमा आखै॥
कोइ प्राण कोइ बुद्धि अनन्दे। कोइ कोइ आत्माकहैं सुविन्दे॥
अज्ञानै के कारज जानो। सुनो सुपोपति सर्व बिलानो॥
दो० स्वप्नमाहिं अस्थूल नहिं, भाषत सूक्षम देह।
सुषुप्ती में सूक्ष्म नहिं, आत्मा भानकरेह॥
चौ० सुखस्वरूप आतमा होई। सुख सुषुप्ति प्राप्ति भइ सोई॥
सुख सुषुप्ति में नाहीं होई। तौ क्योंकर उठिकहता सोई॥
हमतो बड़े अनन्दित सोये। भूलिगये जगदुखसुखकोये॥
आतम तीनि अवस्थामाहीं। वर्तमान सुख रूप सदाहीं॥
पांचौ कोष अवस्था माहीं। वर्तमान व्यापक नहिं भाई॥
बस्तु कभी होवे नहिं होई। व्यापक सत्य न कहते सोई॥
सब मत पांचकोष में बांधे। आत्मा भिन्न न सूझै आंधे॥
आत्मा सब से भिन्न रहावै। इन सबको प्रकाशादिखलावै॥
आत्मा सत् चित् आनँदरूपा। उसमें गुण नहिं सदा अनूपा॥
गुण नाशै प्रकटै कहि होई। आत्मा सत् चित् आनँद सोई॥
यह स्वरूप आतम का भाई। दाहस्वरूप अग्नि जो गाई॥
जो कोइ इसमें तरक लगावै। दाह अग्निको मन्त्र बुझावै॥
दो० मन्त्रहु केवल अग्नि को, मुख में लेते धारि।
मुखनहिं जलताताहिसे, कहते गुणाहिबिचारि॥
चौ० जो स्वरूप अग्निका होता। मन्त्रमाहिंनहिं रूपहि खोता॥
सो यह बात झूठ है भाई। अग्निदाह नहिं दूरि कराई॥
प्रमंत्र नवल मुख के माहीं। प्रद्दा अग्नि बीच रहिजाई॥
इससे मुख जरता नहिं भाई। अग्नि दाह का रूप सदाई॥

इससे बिदित हुआ सुनु भाई। व्यापक निजस्वरूप दर्शाई॥
ब्रह्मज्ञान से मिलता नाहीं। ब्रह्मज्ञान नहिं भेद रहाहीं॥
ब्रह्म दूसरी बस्तु न कोई। ब्रह्म आप है भूल लखोई॥
बन्धन ब्रह्म न जाना भाई। लख्यो ब्रह्म सो मोक्ष कहाई॥

दो० बाणी बचन न कहिसकै, बचनमाहिंवहहोय।
कह्योअवाच्यजिसब्रह्मको, बाणी बोलै सोय॥
जैसे स्वप्नहि के बिषे, राजा मांगी भीक।
वृन्दाबन जबहीं जग्यो, था वह राजा ठीक॥
अज्ञानी को कर्म वश, इच्छा उत्पति होय।
वृन्दाबन वह बासना, जन्म धरावै सोय॥

चौ० अरु भाई उत्पत्ति कहावै। प्रलय महापरलय श्रुतिगावै॥
यह सब माया भर्म कहाई। इसका नहिं बिचार सुखदाई॥
जिस बस्तू को करना दूरी। तिसमें चित क्यों धरो हजूरी॥
माया को बृत्तान्त न कीजै। निश्चयकरि मिथ्याकरिदीजै॥
ज्यों बरूद का हाथी भाई। नहीं प्रशंसा रूप धराई॥
जितना उड़ै मुख्य सो जानौ। माया रूप असत्य बखानौ॥
मायाकृत ए पदारथ सोई। सर्व झूठ निश्चय नहिं कोई॥

सो० मायाकृत व्योहार, मिथ्याकरि सब जानिये।
समुझ हेतु विस्तार, निश्चयकरिनिजरूप को॥

इति श्रीशान्तवेद चौथा भाग का तृतीय बिश्राम सम्पूर्णम्॥

श्रीसद्गुरुरामजी सहाय॥

चौ० महाराज वहुठीक बखाना। ब्रह्म जीवका भेद नसाना॥
ॐकार का भेद नहिं कहा। सो मेरे मन संशय रहा॥
मैंने सुना वेदान्ती ज्ञानी। ॐकार उपासना बखानी॥

अहंग्रह उपासना कहहीं। ॐकार ब्रह्म चित्त में धरहीं॥
परमहंस बोले सुनु भाई। ब्रह्म चिन्तवन ॐ कहाई॥
ॐकार स्वरूप सो जानौ। करिकै अहंध्यान सो मानौ॥
ॐकार अक्षर है भाई। ब्रह्मस्वरूप सन्त श्रुतिगाई॥
अभ्यासी सुमिरन को करता। ॐकार ब्रह्म चित्तमें धरता॥
ब्रह्म स्वरूप मैंहींहूं जानै। निर्गुणब्रह्म पारको मानै॥
निरगुण ब्रह्मसुमिरना चहिये। जिससे मोद पदारथ लहिये॥
अरु जो अपरब्रह्म को ध्यावै। ब्रह्मलोक प्रापत होजावै॥
जो निरगुण उपासना भाई। ब्रह्मलोक इच्छा जुरहाई॥

दो० इच्छा ब्रह्म जु लोककी, होय मोक्ष नहिं मान।
ब्रह्मलोक होइ प्रापती, हिरण्यगर्भ पहिंचान॥

चौ० हिरण्यगर्भसमसुखभोगाई। ज्ञान होय तब मुक्ती पाई॥
अब निर्गुण उपासना गावों। मारग है सो सत्य लखावों॥
जो कुछ उत्पन्न हुआ सो जानौ। जिसनेउत्पन किया सो मानौ॥
सो सब ॐकार है भाई। नामरूप सब वस्तु लखाई॥
नामरूप दो भाग सो जानौ। नामस्वरूप पृथक् नहिं मानौ॥
जाको यक दृष्टान्त सुनावों। भिन्न भिन्न करि भेद लखावों॥
जैसे बैल कहा सुनु भाई। ज्ञान बैलका होता ताई॥
नहिं समझैगा रोटी भाई। इसमें नामस्वरूप मिलाई॥
सर्व नाम मूलहि ॐकारा। प्रणव शब्द है वेद पसारा॥
ॐकार से वेद भये हैं। वेद भेद सब नाम कहे हैं॥
इसमें नाम रूप दो भाई। ॐकार में रहै समाई॥
इसी प्रकार नाम सब रूपा। रहै ब्रह्म में ब्रह्म अनूपा॥
ब्रह्मवाच्य वाचक ॐकारा। वाचक वाच्य न भेदनियारा॥
ब्रह्म आत्मा अरु ॐकारा। एकरूप सब किया पसारा॥

हिरण्यगर्भ बैराट् कहावा। ईश्वर तत्पद लक्षि सुनावा॥
साक्षी ब्रह्मभाग ये चारी। इसी प्रकार आतमाधारी॥
विश्व व तेजस प्राज्ञ सु जीवा। त्वंपद लक्षि साक्षीथीवा॥
चारो पद आतमा के जानौ। ॐकार के कहूं बखानौ॥
कहैं अकार उकार मकारा। अर्द्धमात्री शुन्न सुधारा॥
चारौ पद ॐकार कहाये। भिन्न भिन्न कहि सब वे गाये॥
करो एकता अब सब केरी। एकै रूप नहीं कुछ फेरी॥
ॐकार में प्रथम अकारे। रूप बिराट् नहीं ये न्यारे॥
पहिला भाग ब्रह्म को भाई। नाम बिराट् कहा पुनि गाई॥
प्रथम भाग आतमा का जोई। विश्वव नाम जीव पुनि सोई॥
विश्वव अरु बैराट् सो एकी। भेददृष्टि नहिं जानौ नेकी॥
कहै उकार नाम जो दूजा। हिरण्यगर्भ दूजा सो हूजा॥
तेजस जीव दूसरा भाई। हिरण्यगर्भ से भेद न काई॥
हिरण्यगर्भ उकार सो एकी। भेदाभेद न करै विवेकी॥
तीसर अक्षर कहै मकारा। ईश्वर तीसर पद बिस्तारा॥
दोनों एक रूपही जानौ। जीवपराज्ञ ईश यकमानौ॥
ॐकार की मात्रा जोई। चौथो अर्द्ध कहै पुनि सोई॥
ब्रह्म भाग चौथा जो कहिये। ईश्वर साक्षी नाम सु सहिये॥
चौथा हिसा आतमा केरा। जीव साक्षी एक नें फेरा॥
चारौ एक रूपही गाये। ऐसहि चिंतवन मनमें लाये॥
कहै उपासना निर्गुण भाई। चिंतवनलय यक रूप लखाई॥

दो० कुछ समाधिकाभेद अब, कहिये कृपानिधान।
सुनो समाधी दोय हैं, करिहौं भेद बखान॥

चौ० निर्विकल्प है एक समाधी। साविकल्प दूसरी सुसाधी॥
साविकल्पमें त्रिपुट रहाई। ध्याता ध्याने ध्येय कहाई॥

द्वैत ब्रह्मही रूप प्रतीता। रुपया चांदी एकलखीता।
रुपया चांदी रुपही जानौ। चांदीसे कछु भिन्न न मानौ॥
कहै समाधिनि विकल्प भाई। त्रिपुटीरहै न देय लखाई॥
जो पानी में लोन घुलाना। नोन सहीपर नहिं दिखाना॥
देखौ शून्य सुपोपति माहीं। अन्तसको अभाव होजाहीं॥
निर्विकल्प में अन्तस होवै। वृत्ती सहित रहै सब जोवै॥
घुरेलोन के सदृश सुभाई। निर्विकल्प फल वृत्ति लखाई॥
जैसे बूंद नीर को जानौ। गर्मलोहपर परत समानौ॥
ऐसे अन्तसकरण सुभाई। वृति ब्रह्म में लय होजाई॥
सुषुप्तिमें अन्तसवृति जोई। अज्ञानबीच लय है सोई॥
दो० समाधि सुषोपति भेदहै, इतनाही तू जानि।
लयावृती अज्ञान में, रहै सुषोप्ती मानि॥
चौ० निर्विकल्पमेंविघनसोचारी। लय विक्षेपक खाय विचारी॥
रसास्वाद चौथा है भाई। विघ्नचार या कहै बुझाई॥
लयनिद्रा करि वृत्ति अभावा। है विक्षेप वृत्ति घबरावा॥
वृत्ती ब्रह्माकार न होई। झीनारूपलक्ष नहिं सोई॥
वृत्ती गइ घबराइ सो भाई। लौटि आय विक्षेप कहाई॥
संस्कार राग अरु द्वेषा। यहकखाय दुखसहै हमेशा॥
रसास्वाद चौथा है भाई। विक्षेपरहित वृत्ती जो आई॥
वृत्ती ब्रह्माकार न होवै। सहविकल्प पुनि सुखको जोवै॥
हे महराज आप जो भासा। सब सन्देह हृदयसे नासा॥
बड़े बड़े यहि भांति सुनावैं। विष्णुशिवादिकध्यानलखावैं॥
पूजादिक तुम सबै उड़ाई। ध्यानादिक षट भेद लखाई॥
परमहंस बोले सुनि भाई। याकहँ भेद कहौं समुझाई॥
दो० विष्णू शिव अरु शक्तियह, गणपतिसूरजआदि।

यह उपजे उस एक से, सो है देव अनादि॥
अजर अमर वह एक है, नहिं कृत्रिमहै सोय।
बृन्दाबन आकार जो, महाप्रलयगयोखोय॥

चौ० महाराज यह कहौ बुझाई। मारगबाम कहै क्या गाई॥
नास्तिकमतका भेद लखावो। बाहिरबेदकि बेद बतावो॥
परमहंस तब कहा सुनाई। इनमें सार कछू नहिं भाई॥
पर यह सब वृत्तान्त सुनावों। मारग बाम भेद दरशावों॥
मारग बाम कहै यह भाई। भगकी पूजा करै बनाई॥
इस्त्री अयुत एकही बारा। भगपूजा मिलि मुक्तिबिचारा॥
जीतेजियत मुक्ति वै गावैं। मदिरा को तीरथ गोहरावैं॥
प्याजनाम को व्यास बखानैं। बेदों से बिपरीति सुमानैं॥
ऋग्यजुसामअथर्वण भाई। चारोंमें यह रीति न गाई॥
लोग कहैं यह मारग होई। शिवने उत्पति कीन्हा सोई॥
असकुछ समुझि परत है भाई। बैष्णवमत से उलटि न खाई॥
वैष्णव जिसकी निन्दाकरहीं। अच्छामानि ताहिचितधरहीं॥

दो० इससे ऐसा बिदित है, आचारज इनकेर।
सिद्धिकरी है एकता, अच्छा बुरा न फेर॥

चौ० अच्छा बुरा एकसम मानैं। याही से वै सिद्धि बखानैं॥
स्वप्नेका विष और मिठाई। दोनों झूठ एक सों भाई॥
मीठे से नहिं भूंख बुझाई। विषके पिये नहीं मरिजाई॥
पर परसन्द मिठाई भाई। अच्छे कर्म सदा सुखदाई॥
बुरे कर्म हैं ज़हर समाना। भ्रष्टवस्तु विन बुरी निदाना॥
मारग वाम कहा यह भाई। कर्म विपुज्य सबै करवाई॥
शक्ति दक्षिणावनामत गावै। दूषण इसमें कोइ न आवै॥
पूजा शुद्ध शक्ति की जानो। वैष्णव शक्ति पूजते मानो॥

उसँसे शक्ति लोकही पावै। पूजा शुद्धि शक्ति की ध्यावै॥
अरु शक्ती जिन निर्गुणमाना। व्यापकरूप करै जो ध्याना॥
उनकी गति उत्तम है भाई। शुद्ध सतोगुण शक्ति कहाई॥
जिस पूजा में हिंसा होई। मदिरापान प्रवृत्ति कराई॥
दो० यह मारग परवृत्तिका, कभी न मुक्ती होय।
इससे यह संक्षेपसों, बरणि सुनायों सोय॥
चौ० तुम प्रसिद्ध देखलो भाई। सत्यस्वभाव लक्ष्मी गाई॥
उनकी पूजा शुद्ध कहावै। हिंसादिक कछु होन न पावै॥
उसी शक्ति का रूप भवानी। कालीनाम तमोगुणजानी॥
राक्षसदुष्ट किये जिन नाशा। धरातमोगुण रूप प्रकाशा॥
उत्तमपुरुष समय आधीना। क्रोधभरा उहिं करै यकीना॥
समयदेखिनहिं मिलनाचहिये। उत्तमकाम न उनको कहिये॥
उसीसमय की भक्ति न कीजै। छोटभाग जो चित धरिलीजै॥
शुद्ध सतोगुण रूप छुड़ाई। तमोरूप से प्रीति बढ़ाई॥
शुभपूजा शुभ कर्महिं त्यागे। अशुभकर्म पूजा विचलागे॥
अशुद्धकर्म धर्मन को साधैं। शास्तरवेद रीति तजआधैं॥
नास्तिक मत यह कहिये भाई। कर्ता जगको कहै न गाई॥
जगत आपही उत्पति होई। आपहि नाश कहै पुनि सोई॥
दो० चारितत्त्व जहँ मिलिगये, बनता कछूअपार।
जीव जन्तु वा आदमी, तत्त्वों का व्यवहार॥
चौ० बातीतेलदिया अरु भाई। अग्नी चारों एक मिलाई॥
चारों एक होय अस्थाना। दीपक तुर्त प्रकाश कराना॥
चारितत्त्व यों मेलि मिलाना। चैतनता उत्पन्न बखाना॥
सर्व प्रपञ्च बनायो भाई। दूसर कोइ न कर्ता आई॥
तत्त्वों के कर्ता कहै सोई। जगको कर्ता और न कोई॥

तत्त्व मेल जब होता आई। चैतन्यता प्रकट होजाई॥
वाही को सब जीव बखानैं। चारतत्त्व रचना सब ठानैं॥
अब देखौ तत्त्वन को भाई। नास्तिक ने कर्ता ठहराई॥
तत्त्वों के अनुसार सो जानौ। चारोंमिलि यक रूप बखानौ॥
देखो जो कुछ काम कहाये। ईश्वर में सबने कहिगाये॥
नास्तिकतत्त्व चारिमें भाखै। कर्ता चारि तत्त्व को आखै॥
जो कोइ कर्ता नाहीं भाई। उत्पातियों नहिं होती आई॥
बिना किसी कारण के जोई। उत्पति आप आपसे होई॥
नेम न ऐसा चहिये भाई। जो कछु ईश्वर रचा बनाई॥
एक आदमी सौ गज़ केरा। दूसर भयो पांच गज़ फेरा॥
नयन एक के शिरपर चहिये। दूजे के चरणों विच लहिये॥

दो० लाखबर्ष की आयुबल, एक कहूकी होय।
एक जीव दो चारदिन, नियम न यामेंकोय॥

छन्दछैया उत्पति में यह बात न भाई इससे यही बिचारे।
उत्पति करी बिचार किसी ने भये इरादा वारे॥
नास्तिक ने तत्त्वोंको माना यई इरादा करते।
कर्ता चारि इन्होंने माने तत्त्वचारि बिस्तरते॥
चारि तत्त्व का मिलना भाई शक्ति पांच भी गाई।
ऐसे भये सपूत जिन्होंने कर्ता पांच कराई॥
है अनादि बर्तमान देखियत स्वीकार भी मानैं।
फिर नास्तिक बनतेहैं मूरुख अपना भेद न जानैं॥
मारग वाम नास्तिक के मत आप कहा समझाये।
बिरथा कालव्यतीतभयायहहाथकछूनहिंआये॥
महाराज सन्देह बड़ा है वेद शास्त्रनमाहीं।
शास्त्रोंका आशय तो एकी आतमविषय लखाहीं॥

यह वेदान्त शास्त्रहै भाई कीन्हा व्यास बखानैं।
ईश्वरके अवतार व्यासजी सब मतवाले मानैं॥
और दूसरे शास्तर भाई युंयानयोगी गाये।
दूधसार वेदान्त निकास्यो छांछ जगत भर्माये॥
हांड़ी दूध दही अरु लकड़ी सब सामग्री जोरे।
माखनसारनिकासिलियाजब सर्वजगतनभयेकोरे॥
शास्तरतौ वेदान्त दूध है और शास्त्र सब रस्सी।
मथ्योदूधब्रह्मज्ञाननिकास्योछांछजगतबिचपरसी॥

दो० बुद्धि इन्द्रियां आदि सब, द्वैत भयो जग नाश।
बृन्दाबन जो रहिगया, सो है ब्रह्म प्रकाश॥

चौ० अबमहराजकृपाकरिकहिये। स्वप्नसृष्टि जग एक लखइये॥
स्वप्न जगत में भेद बहूता। स्वप्नपदार्थ मिले नहिं सूता॥
जाग्रत काल बस्तु जो होई। दूसर जाग्रत मिलती सोई॥
स्वप्न पदारथ एक न पावै। दूसर स्वप्न औरही आवै॥
स्वप्नसृष्टि जाग्रत त्यों एकी। किस प्रकारलखिसकैविवेकी॥
परमहंस ने कहा बुझाई। देखो स्वप्न सृष्टि प्रभुताई॥
जैसे स्वप्न एकही काला। आपहि बनता देखनवाला॥
सब सामग्री पैदा लिखता। स्वप्न माहिं सबउसको दिखता॥
यह सामग्री पहिली होई। कल थी वही आज है सोई॥
शयन माहिं युग बर्ष महीनै। दिन अरुपहरघड़ीपल चीन्है॥
इसी प्रकार अविद्या जानौ। कारण एक काल कर मानौ॥
जाग्रत जीव प्रपंच बनाया। खेल अविद्या यह उपजाया॥

दो० ऐसा मालुम होतहै, यह कलिहका सामान।
अंश अविद्या सतोगुण, होवै रूप अज्ञान॥

चौ० अंश तमोगुण घटको रूपा। दोनों एकै काल अनूपा॥

पैदा दोनों एकहि काला। सतो तमोगुण अंशबिशाला॥
मुख्य वेद सिद्धान्त बखाना। इससे भेद बिदित सब जाना॥
कालिह पदार्थ रहे जो भाई। आज नहीं सो देत दिखाई॥
पैदा नष्ट और ही होई। लक्षण यही अविद्या सोई॥
जे अनुहुये पदारथ भाई। देखि पड़ैं सब वैसेइ आई॥
काल समय हर बस्तु अनेका। देखि पड़ैं सच्चे सब लेका॥
सबै अनिर्बचनी पहिंचानौ। यामें कछू न संशय मानौ॥
जो तुम कहौ कि जाग्रत केरा। घड़ा कुलाल दण्ड महि हेरा॥
स्वप्न अविद्या घड़ा बनावै। सब सामग्री स्वप्न दिखावै॥
चक्र कुलाल दण्ड सब भाई। स्वप्न माहिं घट यही बनाई॥
जो घट रात्रि स्वप्न में पाया। तुमने मोल लिया तब आया॥

दो० गये दुकान कुम्हारकी, घटका दीन्हा मोल।
घड़ा बनाते लखा तुम, चक्रदण्ड घटतोल॥

चौ० वास्तवमें कोइ हता न भाई। है प्रपंच सो देत दिखाई॥
केवल तुम्हरी फुरना होई। सर्व पदारथ रचती सोई॥
जब अस्फुरना होइ सो भाई। बर्तमान जग देत दिखाई॥
जब फुरना नहिं तुम्हरी होवै। जग जाग्रत नाहीं कछु जोवै॥
स्वप्ने में अस्फुरना भाई। जग सम्पूरण सन्मुख पाई॥
सुषुप्ति में फुरना नहिं होवै। जगत् स्वप्नका पता न जोवै॥
तुम्हरी वृत्ति जहां को धावै। सोइ पदारथ प्रकट दिखावै॥
वृत्तिध्यान नहिं गया तुम्हारा। क्या गुमान कछु वस्तु न सारा॥
जहँ तुम नहीं वहां कछु नाहीं। तुमको तो अनहुआ सदाहीं॥
तुम अपने बिचार करि माना। किसी वस्तु को ध्यान कराना॥
तब उसका होना सो भासै। वृत्तिध्यान बिन नहीं प्रकासै॥
जब तुम्हरी वृति वस्तू एका। ग्रहण करै नहिं होय विवेका॥

दो० जग फुरना के साथ में, उतपन होता मीत।
कलका नहीं बिचारिये, नदीप्रवाहलखीत॥
चौ०दीपक नदी प्रभावसो जानौ। जिस २समय देखि सो मानौ॥
उस उस समय दीपकी ज्योती। पल क्षण रूप नवीनै होती॥
ऐसे नीर नदी का जानौ। क्षणपलनीर नवीनसो मानौ॥
दृष्टी सृष्टि बाद यह भाई। जगत् अनित्य प्रवाह सदाई॥
हे महराज समुझ अब मेरी। भई और कुछ दई सुकेरी॥
चर्चा आप कही जो ऐसी। दर्पण सम दीखे जस तैसी॥
शब्द बिलावल है परमानै। गुरु नानक यह भांति वखानै॥
श० अतुलक्यों तुलीयाजाय। दूजाहोय तौ सोझीपाय॥
तिससे दूजा नाहीं कोय।तिसदीकीमतिकाकोहोय॥
गुरुपरसाद बसै मन आय। ताके जाने दुबिधा जाय॥
रहाव आपसराफ़कसौटीलाये।आपहिपरखैंआपचलाये॥
आपहि तौले पूराहोय। आपहि जानै साँचा सोय॥
मायाकारूपसमतिसे होय।जिसनूमेलसो निर्मल होय॥
जिसनूलायेलागेतिसआय। सबसचदिखालेतासचसमाय॥
आपलिबधातुहै आपहि। आप बुझाय आपहिजापहि॥
आपहिसद्गुरुशब्दहै आपहि।नानकआखसुनायेआपहि॥
दो० महाराज मैं आपको, बहुत परिश्रम दीन।
बात और दो चारभी, कहिदीजै परवीन॥
कह्यो एक स्थान पै, मैंहूं ब्रह्म बखान।
फेरि दूसरे कहत हो, सबही ब्रह्म समान॥
कहि ईश्वर कर्ता कहौ, कहि माया विस्तार।
एक खुलासा कीजिये, लख्योजाइतवसार॥
चौ०परमहंस बोले सुनु भाई। इसको विधिनिषेध कहि गाई॥

सर्वब्रह्म यहि बिधि पहिंचानौ। मैंहूं ब्रह्म निषेध बखानौ॥
दोनों एक प्रयोजन भाई। कहूं एक दृष्टान्त सुनाई॥
कोइ अस्थान बिदित है भाई। दश मनुष्य बैठे तहँ आई॥
एक आदमी किया उपावा। नौ मनुष्य को चाह उठावा॥
तौ हरेक से बोले भाई। तूभी जा तू जा तू जाई॥
केवल यहां रहूंगा मैंही। इस कहनेकी समुझ लखैही॥
जो कछु दृष्टिमान है भाई। सो सब जावै मैंही रहाई॥
यह निषेध मुखबचन सुनावा। नौ मनुष्य गिनदये उठावा॥
आपहि रहै और जो ऐसे। कहि देता कि एकही तैसे॥
कहि देता की एक रहाई। तौ बिधि बचन भये सुनभाई॥
इससे यह आशय पुनि होई। नौ मनुष्य दशमै लय सोई॥

दो० बिधिकर सब जग ब्रह्महै, करनिषेध जगजीव।
दो प्रकारकी कहन से, एकी रहा सो पीव॥

चौ० क्यों महराज ब्रह्मजगहोई। परमहंस कहै जग भ्रम सोई॥
ज्यों रस्सी में सर्प दिखाना। इस प्रकार जब ब्रह्म समाना॥
और ब्रह्म से इस परकारा। जगत नहीं बनता है सारा॥
जस कुम्हार अरु माटी भाई। घट बनता सो देत दिखाई॥
ब्रह्ममाहिं जगभर्म स्वरूपा। आदि अनादि सुब्रह्मअनूपा॥
हे महराज आपने भाखा। माया को कर्ताकरि राखा॥
माया भर्म रूप है सोई। उससे जग उत्पति क्यों होई॥
परमहंस बोले सुनु भाई। सूरज आप प्रकाशित आई॥
अरु सबको परकाश दिखावै। माया भर्म रूप सोइ गावै॥
माया आप भ्रमै है भाई। भर्मरूप कारण कहलाई॥
तुम्हैं एक दृष्टान्त सुनाऊं। मनके सब सन्देह मिटाऊं॥
इसको समझ लेउगे भाई। फिर न तुम्हैं सन्देह रहाई॥

जब कोइ बालक घूमै आई। घूमत सर्व मकान दिखाई॥

दो० जो बालक निर्बुद्धि है, जानत फिरै मकान।
उसका सांचा ज्ञान है, घूमत रहै दिखान॥

चौ० बालक तो यह जानै भाई। फिरै मकान हवेली आई॥
तुम मिथ्या या सत्य कहौगे। मिथ्या भ्रम के रूप लहौगे॥
फिरउ मकान हवेली भाई। सो यह ज्ञान असत्य कहाई॥
तीनिउकाल मकान न फिरहीं। है असत्य कोइ चित्त न धरहीं॥
सत्यज्ञान वह कहिये भाई। ज्ञान ज्ञेय अनुसार रहाई॥
महल हवेली स्थिर होई। घूमति देखि परी पुनि सोई॥
यहै असत्यज्ञान भ्रम जानौ। भ्रमको कारण घूमसो मानौ॥
घूम पदारथ कछू न भाई। चञ्चलबालक खेल कराई॥
अब दृष्टान्त सुनौ चितलाई। यह परपंच भरम सब गाई॥
आवागमन भरम सब जानौ। ब्रह्मविकाररहित थिरमानौ॥
ब्रह्म माहिं परपंच न कोई। अज्ञानी परपंच लखोई॥
माया अरु माया को कारज। दीखै सत्य भरम सो जारज॥

दो० माया को कारज लखै, अज्ञानी सो जान।
ज्ञानी देखै ज्ञान से, भर्मरूप पहिंचान॥

चौ० बालकफिरत हवेली जानै। ज्ञानवान घूमनी बखानै॥
ज्ञानी को निश्चय है भाई। परारब्ध आधीन रहाई॥
देखै सबी प्रपंच निदाना। परअसत्य भ्रमरूप सो माना॥
जब तक रहै घुमेरी भाई। तबतक फिरती देत दिखाई॥
ज्ञानी की प्रारब्ध रहाई। पहिली रची गई सो पाई॥
उस अनुसार दीखता सोई। सत्य पदारथ लखै न कोई॥
अब यह तात्पर्य पहिंचानौ। मायाकार्य भरम दोउ मानौ॥
आभूषण सोने ही रूपा। नाम रूप दो भिन्न स्वरूपा॥

ऐसे ब्रह्म जगत् है भाई। नामरूप मिथ्या कहि गाई ॥
जो परपंच भरम सब होई। अन्तःकरण भरम पुनि सोई ॥
भरमरूप अन्तस की वृत्ती। आतमकोक्योंकरचितधरती॥
परमहंस कहें देखौ भाई। वृत्तिब्रह्म नाहिं देखति आई ॥

दो० देखौ वृत्ती को बिषय, ब्रह्मनहीं कछुहोय।
नाहिं देखतिसो ब्रह्मको, देति अविद्या खोय॥
ब्रह्मको वृत्ती व्यापती, कहै वेदान्तसुनाय।
भई अविद्या दूरि जब, निर्मलवृत्तिलखाय॥
केवलब्रह्महिरहिगया, भई अविद्यानाश।
मिट्योदोष अज्ञानको, सूरज ज्ञान प्रकाश॥

चौ० सुनिवेदान्त शास्त्रमें भाई। ईश्वर उपादान कहिगाई ॥
कारणनिमित कह्योपुनि ईशा। वही रीति है बिस्वे बीशा ॥
जैसे घट का कारण भाई। उपादान मृत्तिका कहाई ॥
कारणनिमित कुलालसुजानौ। चक्रआदि सबही पहिंचानौ॥
इसी प्रकार जगत को भाई। माया उपादान कहिगाई ॥
कारणनिमितचैतन्यसोजानो। मकड़ीकी गति कहूं बखानो॥
जैसे मकड़ी जाल पुरावै। उपादान मकड़ी तन गावै ॥
जहां से उत्पन जाला कीन्हा। कारणनिमितताहिकोचीन्हा॥
मकड़ीका चैतन्य सो मानो। कारणनिमितताहिपहिंचानो॥
अब चैतन्य ईश मकड़ी का। प्रथमरहा वह ज्ञान रवी का॥
चैतन्य ईश्वर ज्ञान स्वरूपा। पृथक नहीं वह सदा अनूपा ॥
जगको कर्ता ईश बतावा। ज्ञान दृष्टि में गाय सुनावा ॥

दो० जगत ईश दोउ भर्म है, केवल शुद्धस्वरूप।
अज्ञानीकीसमुझाहित, ईश्वर कारणरूप ॥

चौ० जबकिअनाजबोउना होई। खेतमाहिं हर चलता सोई॥
बीज डालकर पानी देवै। करै नेराव घास चुनिलेवै॥
राति दिवस रक्षा नित करहीं। कोई हाथ न लावै कबहीं॥
जब अनाज पकिजावै भाई। मालिक अपने हाथ कटाई॥
देखो एक दिना वह होई। कितनी रक्षा करता सोई॥
एक दिना काटत है आपै। गिनै न कछू पुण्य अरु पापै॥
इसप्रकार अज्ञान सो भाई। ईश्वर महिमा सत्य लखाई॥
बड़ी बड़ी महिमा कहि गाई। पालक रक्षा करत सदाई॥
जभी ज्ञान का भया प्रकाशा। मायारूप असत्य सो भासा॥
मायाकी वह दशा बिचारो। पके नाजसम काटि निवारो॥
चेतन मात्र निरन्तर होई। और न दूजा रहता कोई॥
और एक दृष्टान्त सुनाऊं। तेरे मन के भर्म नशाऊं॥

दो० रोग दूरिही करन को, वैद्य जो देत जुलाब।
महिमा करै जुलाबकी, इससे रोग नशाब॥

चौ०अन्तमाहिंजुल्लाबहि भाई। दूरिहि करना परत सुजाई॥
अरु जुल्लाब पेट में रहई। तौ वह दुख काहे तू अहई॥
इससे वैद्य जुलाब निकारै। करै निरोग रोग सब टारै॥
इसप्रकार पहिले सुनि भाई। ईश्वर सत्य कहै सुखदाई॥
सब दुख दूरि करत है जानो। ज्ञानभये ईश्वर अलगानो॥
यह भी भूल जाइगो भाई। मैं हूं ब्रह्म कहै यों गाई॥
यह सब ब्रह्मरूप कहि गावै। निर्विकल्प सामाधि कहावै॥
जबतक देह रहत है भाई। ज्ञानी का प्रारब्ध कहाई॥

सो० ज्ञानी का उत्थान, परारब्धि के बेग से।
हेतु यही पहिंचान, अग्रगामी जीव है॥

दो० बुद्धि ब्रह्म की तरफ को, पहिले जाती मीत।
जीव मिलै कूटस्थ संग, होत एकता नीत॥
बुद्धी फिर लौटायकर, लाती है सो जान।
जीव मिला कूटस्थ में, भेदाभेद न मान॥

चौ०सुनौएकयहससुभिबिचारी। कर्म बोध श्रुति ने बिस्तारी॥
क्रिया सिद्धि ब्रह्मको करही। संशयगत प्रमाण सु अहही॥
ब्रह्म जगत का कारण होई। यहै प्रधान कहत हैं सोई॥
परमेय गत संशय कहै भाई। जगकारणपरधान लखाई॥

दो०ब्रह्मस्वतः सिद्धक अहै, वृथा आदि जो जान।
जानाजाय प्रमाणगत, असम्भावना मान॥

छन्दछैया ब्रह्मस्वतै सिद्धि होने करिके श्रुति ब्रह्मको गावै।
प्रतिपादन बिषये निष्फलताश्रुतिकर्मबतलावै॥
गतप्रमाणकहैसोनिश्चयबिपरीतभावनाकहिये।
सद्गुरुरामकृपा रघुनाथ भेद सबन को पहिये॥
षटकारण अरु कारज भाई सदृशरूपहीवाले।
दीखेहैं और जगत ब्रह्मके सदृश्यता नहिं टाले॥
प्रधानादिक जगका कारण ऐसा निश्चय भाई।
गत प्रमेय बिपरीत भावना इसकानामकहाई॥
हेमहराज सत्य तुम भाषा भयो एक सन्देहा।
जग तेरी फुरना से कहिये दुख फुरना नहिं एहा॥
दुखफुरना मैंनेनहिं कीन्हीफिरदुखक्योंकरआया।
परमहंस ने कहा सुनो अब जगकी फुरना पाया॥
जब फुरना में सबी बस्तुहैं सुख दुख दोनों होई।
रात्री की फुरना जो कीन्हीं अन्धकार ये होई॥
चन्द्र नक्षत्तर सबी राति में दुख सुख जत्तर होई।

जगतेरी अस्फुरनामाहीं कहे रघुनाथ सुगोई॥

चौ० महाराज आपने भाषा। चैतन्यज्ञान स्वरूप सुआषा॥
चेतन को जग भासत होई। नहिं तो ज्ञानस्वरूप न सोई।
परमहंस बोले सुनु भाई। चैतन्य ज्ञान स्वरूप रहाई
जगका ज्ञान नहीं कुछ करता। जगतज्ञानअन्तसकीविरत...
वृत्ति जुअन्तसकी सुनि भाई। ज्ञान शक्ति चैतन्य से पाई॥
जैसे दीपक महल जगाई। आप न दीखै नेत्र दिखाई॥
नेत्रन को सब देत दिखाई। विनपरकाशशक्तिनहिं भाई॥
चेतन ज्ञानप्रकाश न होवै। अन्तःकरण वृत्ति क्या जोवै॥
जैसे अन्धकार में भाई। नेत्रों को नहिं देत दिखाई॥
दीप प्रकाश होतही भाई। नेत्रों को सब देत दिखाई॥
जैसे दीपक आप न देखै। देय दिखाइ रूप सब भेखै॥
दीपक रूप प्रकाशित होई। ब्रह्म जगत को द्रष्टा सोई॥

दो० कारण ज्ञान स्वरूप है, ज्ञाता द्रष्टा जान।
ब्रह्मप्रकाशन सर्व मय, अन्तःकरणालखान॥

चौ० उसकी यहांरीतिहै भाई। गोलालोह गरम करवाई॥
अग्नि समान रूप जिनपाया। लगा देह गोले भुरसाया॥
गोलाकी सामर्थ्य न भाई। देह आदिको देय जलाई॥
यह सामर्थ्य अग्निकी जानो। अग्निबिना नहिंदेहजरानो॥
अग्नी जो गोला में भाई। गोले का सो नाम धराई॥
इसी प्रकार समुझना चहिये। ज्ञातापन वृत्ती में लहिये॥
आश्रय चेतन के सुनु भाई। इससे ज्ञाता ब्रह्म कहाई।
हे महराज आप जो गावा। यह अज्ञान असत्य बतावा॥
इससे यह अज्ञान सो ऐसा। वन्ध्यापुत्र कहै पुनि जैसा॥

लड़के के सन्तान न होई। वास्तव आपभयोनहिंकोई ॥
ऐसे ही अज्ञान कहाई। रचना क्योंकर करी बनाई ॥
कछू वस्तु अज्ञान न होई। जगरचना चाहिये नहिं सोई ॥
आप कहा सुषुप्ति के माहीं। जगत बाध्यवतलायासाहीं ॥
अन्धेको भी जगत न भासै। जगतबाध्यनहिंसिद्धिसुभासै॥

दो०परमहंस ने कहा सुनि, सत्य जो नहिं परपंच।
बन्ध्यासुत अज्ञान है, ज्ञान दृष्टि नहिं संच ॥

चौ० बन्ध्यासुत जो दीखै भाई। उसके भी सन्तान रहाई ॥
जो बन्ध्या के पुत्र न कोई। तौ सन्तान कभी नहिं होई ॥
हमरा यही प्रयोजन जानो। अज्ञानी बन्ध्यासुत मानो ॥
करै चिन्तवन निशिदिनभाई। सो उसके सन्तान दिखाई ॥
जग अज्ञान सत्य करि मानै। ज्ञानवान मिथ्या दोउजानै ॥
अन्धे विषय कहा तुम जोई। जगतबाध्य ज्ञानी को होई ॥
अज्ञानी की दृष्टी माहीं। जगत सत्यही रहै सदाहीं ॥
अरु जबतक ज्ञानी की देही। तबतक जगत भासता तेही ॥
ज्ञानी का कुछ बिगड़ै नाहीं। मृगतृष्णासम भर्म लखाहीं ॥
मृगतृष्णाजल देखिसुलीन्हा। यामें जाइ न करै अकीन्हा ॥
मृगतृष्णा जल भासै भाई। ज्ञानी कभी न धोखा खाई ॥
वास्तव में जब काहु न जानो। चमकरेतकर नीर दिखानो ॥

दो०पहिले कहा जो आपने, ज्ञानी के सब कर्म।
संचित हैं सो जरिगये, प्रारब्धी के धर्म ॥

चौ० परारब्धि कहि हेतुरहाई। क्यों नहिं कर्म जरै कहो गाई ॥
परारब्धि के कर्म नशाता। जगतें असय तुरत होजाता ॥
कहूं एक दृष्टान्त सुनाई। इसी प्रकार समुझिये भाई ॥

एक मनुष्य ने मदिरा भाई। एकगिलास पिया पुनि आई॥
और एक बोतल उस पासा। दूरिकरन की शक्ति खुलासा॥
पिईहुई मदिरा जो भाई। वह तो नशा अवश्य कराई॥
यों प्रारब्ध दूरि नहिं होई। दुख सुख देह भोगता सोई॥
महाराज ज्ञानी के ताईं। कर्माधीन जगत सुख पाईं॥
प्रापत हुये भोग कर्मन ते। भोगनलगा न जीवनमुकते॥
जीवन्मुक्त सुखन को त्यागा। जगतसुखदमान्योअनुरागा॥
ज्ञानी भोग करै यों भाई। विदेह मोक्षका त्याग कराई॥

दो० देह पातके होतही, जीव पुष्टिका जोय।
भई लीन आकाश में, निश्चयमानो सोय॥
यह प्रपंच यकभर्म था, सर्परज्जु में भान।
वृन्दाबन रजु ज्ञानते, सर्प लीन नभजान॥

चौ० देहबियोग भयेपर भाई। ज्ञानी सत चैतन्य समाई॥
अन्तस चेतन माहिं अभावै। परारब्ध बन्धन मिटिजावै॥
मूल अविद्या भई अभावा। रज्जुज्ञान से सर्प नशावा॥
रस्सी में जो सर्प दिखाना। रज्जुज्ञान नभ सर्प समाना॥
ढूंढ़ै सर्प नहीं कहुं पावै। मूल अविद्या सहित नशावै॥
ज्ञानी भोग करै जो भाई। सत्य न समझै भोग कराई॥
इससे जीवन्मुक्त न त्यागै। अधिकसुखाहिजगमेंनहिंपागै॥

दो० ज्ञानी जीवन्मुक्त है, जग दुख सुख नहिं कोय।
परारब्धका भोग तनु, आप अकर्ता सोय॥

इति श्रीशान्तवेद चौथा भागका चतुर्थ विश्राम सम्पूर्णम्॥

चौ० महाराजयकसंशयआया। वेदजगत उत्पति कहिगाया॥
कइप्रकार से उत्पति भाखी। समुझिनआवैकहोसोसाखी॥

एकवेद कइ भांति बखानै। रचना भिन्न २ करि ठानै॥
परमहंस कहै सुनौ पियारे। मिथ्या यह परपंच बिचारे॥
हुआ नहीं अनहुआ दिखावै। वस्तु असत्य जन्म कहँपावै॥
दो०मायाकी रचना सबी, माया सत्य न जान।
कही अनिर्वचनीययह, इससे वेद प्रमान॥
चौ० वेदउचितजहँ जैसादेखा। वही कहा वृत्तान्त विशेखा॥
रचना सत्य होय जो भाई। एक प्रकार कहै सब गाई॥
सबमतबिषे विरुद्ध बखानै। उतपति और औरही ठानै॥
जैसा जिसकी बुद्धिसमाया। वैसाही लिखि गाय सुनाया॥
और पचास मनुष्यन भाई। मनोराज की सृष्टि बनाई॥
यहभी सत्य सत्य सब कहई। उत्पति सृष्टि आपनी अहई॥
जसजसकही सही सब जानो। वास्तव सत्य एक नहिं मानो॥
जिनपचासको किया वृतंता। सबको भरमहुआ यह मंता॥
ना कुछ उत्पति नाश कराई। चेतन पहिले एक रहाई॥
अरु पीछे ईश्वर यक रहिया। बीचमाहिंईश्वरस्वइ कहिया॥
आदि अन्त मध्यहु के माहीं। चेतन एक भर्म जगछाहीं॥
मध्य माहिं कुछ औरै होई। अन्तमाहिं कस ईश्वर सोई॥
दो०जैसे दूध दही हुआ, तरुण सो वृद्ध बिचार।
दहीदूध नहिं होसकै, वृद्ध न तरुण सम्हार॥
चौ० जैसे दूध सत्य है भाई। वैसेइ दही सत्य करि गाई॥
जो तुम ऐसी मान न मानौ। जगईश्वरसे पृथक बखानौ॥
अरु जो ईश्वर थिर है भाई। वैसेई जग थिरइ रहाई॥
जो यह जगत ईश नहिं होई। तौ परपंच सत्य ही सोई॥
सब छोटे बड़ मते विचारो। प्रभू शेप जग निस्स्वर सारो॥

जो दीखै सो हैहै नासा । नाशवान सब भर्म खुलासा ॥
इससे यह निश्चय करिजाना । जगसे भिन्न न ईश्वरमाना ॥
वस्तु दूसरी कोइ न भाई । ईश्वर से जो भिन्न रहाई ॥
ईश्वर पृथक भरमसे जाना । ब्रह्म सम्पूर्ण जगत बखाना ॥
चेतन कछू और नहिं होई । चेतनब्रह्म न कहिये दोई ॥
जो ऐसा कहते हैं गाई । ईश शून्यते रचता भाई ॥
शून्य कोई अस्थान कहावै । ईश्वर तहँ वर्तमान रहावै ॥

सो० ईश्वर का अस्थान, शून्य माहिं नहिं होसकै ।
यक ईश्वर यक शून्य, दो होना साबित नहीं ॥

चौ० एक शून्य यक ईश्वरभाई । हुआ दोय तो एक न गाई ॥
जोकि शून्यअस्थान नहीं है । तो ईश्वर सर्वत्र कहीं है ॥
फिरिईश्वरउत्पाति कस करता । बिनाईशको जग बिस्तरता ॥
महाराज सत्य है सोई । आप कहो सो मृषा न होई ॥
जब केवल ईश्वर था एकी । उसी समय यह जगत न देखी ॥
कोइकोइमतवालेअसकहिया । ईशशक्तिसे जग सब भइया ॥
सब उत्पातिकी शक्ति सुमूला । शक्ति कहांसे भई अतूला ॥
शक्ती शक्तिवान भइ कहिये । शक्तिवानसे भिन्न न पइये ॥
जो कुछ शक्ती में से आया । शक्तिवान से भिन्न न पाया ॥
शक्तिवान केवल यक होई । शक्ती शक्तिवान बिच सोई ॥
जो कुछ उत्पाति शक्ती कीन्हा । शक्तिवानसे भिन्न न चीन्हा ॥
शक्तीवान ब्रह्म यक होई । सो साक्षात प्रकाशत सोई ॥
परमहंस बोले सुनु भाई । नयनू कपड़ा बुटी सोहाई ॥

दो० नयनू का कपड़ा लखौ, बूटा बेलि कढ़ाय ।
कपड़े से नहिं पृथक है, अज्ञपृथक दर्शाय ॥

चौ० पत्थर में मूरति जो भाई। अज्ञानी को पृथक दिखाई॥
वास्तव में पत्थरही जानो। कपड़ा बूटा बेलि बखानो॥
हे महाराज सत्य है सोई। जगत भर्म चेतन यक होई॥
व्यापक एकहि ब्रह्म कहावै। अन्तःकरणभास कस आवै॥
अन्तःकरण हुआ जो जानौ। व्यापक ब्रह्म न होय समानौ॥
यक अस्थान वस्तु हैं दोई। व्यापक एक न कहिये सोई॥
परमहंस कहै सुनो सयाने। माया अन्तःकरण बखाने॥
मायाको कारज भ्रम होई। अन्तस माया कारज सोई॥
सर्परज्जु यक समय सो भाई। यकअस्थान मिले पुनिआई॥
सर्प दीखता रजू न जावै। रस्सी वर्तमान ही पावै॥
इससे भर्म दशा में भाई। एकस्थान दो बस्तु लखाई॥
व्यापक सबआकाश सुजानो। जलमें भास स्वरूप दिखानो॥

दो० व्यापक सब आकाश है, जलमें रूप दिखाय।
ब्रह्म प्रकाश अभास जो, अन्तःकरण लखाय॥

चौ० महाराज अवएकसुनइये। मुक्ति भये बैकुण्ठहि पइये॥
वहुत मनुष्य कहैं यह बाता। मुक्ति भये बैकुण्ठहि पाता॥
विना ब्रह्म देखे क्या होई। ब्रह्म भया मानै कस सोई॥
उनकी कहिये दशा विचारी। परमहंस कहैं सुनु चितधारी॥
जिन उपासना कीन्ही पूरी। निस्सन्देह फल पावैं भूरी॥
कल्पित वे बैकुण्ठहि भोगै। जन्ममरणका मिटै न रोगै॥
जैसे जाग्रत में सुनु भाई। जिस वस्तू में ध्यान रहाई॥
वह स्वप्न में प्रापति होई। यामें कुछ सन्देह न सोई॥
गीता में भगवान वखाना। क्षीणपुण्य मृतलोक समाना॥
फिरभी जन्म धराना होई। आवागमन मिटा नहिं सोई॥

जो बैकुण्ठ माहिं भी जावै। वहँ भी ईर्षा दुःख सतावै॥
अपने अपने हैं अधिकारा। बैठनको अस्थान सम्हारा॥
दो० कोइ समीप भगवानके, कोइ कोइ दूरिरहाय।
एक एक की ईरषा, धरैं जन्म फिरिआय॥
चौ० इसजगमेंसुखअधिककहावै। विषयानँद मन साथ रहावै॥
मय बैकुण्ठ पदारथ होई। शिर ऊपर मन बोझा सोई॥
आवागमन मिट्यो नहिं भाई। अन्तकाल फिर धक्के खाई॥
पर मनुष्यकी समुझ अनेरी। आशयअसलसमुझिनहिंहेरी॥
बेदरु शास्त्र पुराण बखानैं। है बैकुण्ठ प्रशंसा ठानैं॥
फिर गीता अरु वेद पुराना। पुण्यदान निष्काम बखाना॥
जो शुभकर्म करो तुम भाई। हरिहि समर्पण कीजै जाई॥
इसका यही प्रयोजन जानौ। मनशुद्धीहित कर्म बखानौ॥
जो बैकुण्ठ दिवायो चहिये। तो अर्पण क्यों कर्म करइये॥
इससे साफ़ बिदित है भाई। श्री भगवान वेद यह गाई॥
लोग करैं शुभकर्म बनाई। लोभदियो बैकुण्ठ लखाई॥
कर्ममोहिं जो अर्पण करई। तौ मनके मल संशय हरई॥
दो० कर्म करै निष्कामना, हरिअर्पण करिदेय।
अन्तस मनशुद्धी लहै, ज्ञान पदारथ लेय॥
चौ० हरिकेअर्पण कर्म जु करही। मनशुद्धी फल ज्ञानहि लहही॥
मुक्ति हेतु शुभकर्म बखानै। जीवन्मुक्त बैकुण्ठहि मानै॥
बेड़ी लोह काटि जिनडारी। सोना तौंक गले बिचधारी॥
भूत प्रेत आदिक जो मानै। तिनसे अच्छे शुद्ध बखानै॥
पूजै भूत परेत मसाना। भक्तिजानि तिनमें उरझाना॥
जगके दुःख सुखहिकरि मानै। निजसुखकाकुछ भेद न जानै॥

सर्व वस्तु में रहा समाई। अस्ती भाती प्रीय लखाई॥
है प्यारा सबका हित जानो। नामरूप मायाकृत मानो॥
नाशवान मायाकृत होई। प्रीय रूपको नाश न कोई॥
अस्ती भाति प्रीय सबकाला। बर्तमान पल क्षण दरहाला॥
जैसे आटा मालुम होई। प्यारा श्वेत दीखियत सोई॥
नाम रूप रोटी बनि पाया। आटेका सब रूप गवांया॥

दो० ज्यों रोटी के बनतही, आटा रूप नशाय।
अस्ती भाती एक प्रिय, बर्तमानसो लखाय॥

चौ० जबतकब्रह्मज्ञाननहिंभाई। तबतक त्रिपुटी जगत रहाई॥
ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय ये तीनौं। बने रहैं द्रष्टा सो चीनौं॥
जबतक बस्तु होयगी जौलौं। देखनहार रहैगा तौलौं॥
अरु देखना रहैगा भाई। तबतकमोक्ष कभी नहिं पाई॥
अतिशयप्याराजबमिलिजावै। इच्छा यही एक होजावै॥
उसी समय इच्छा यह होई। मैं वह एकरूप रह सोई॥
बस्तु बहुत अच्छी कोइ होई। पेटमाहिं रखिलीजे सोई॥
इसे अनन्द असल सो भाई। एक होय द्वैता बिसराई॥
ईश्वर के समीपहू जावै। लाभ कौन बैकुण्ठहि पावै॥
फिर तुम यहभी कहते भाई। ईश्वर इच्छा जोर न काई॥
मालिक भला बुरा जो करई। हरि आज्ञा शिरऊपरधरई॥
तुम अपने को सदा सुभाई। अपराधी समझत होआई॥

दो० ईश्वरके सन्मुख भये, किया कोइ अपराध।
इच्छा जो भइ ईशकी, दुखसुख दीन्हेंबाध॥

छन्दसैया तुम अपराध नहीं भी कीन्हा ईश्वर इच्छा भाई।
इच्छाके अनुसार भोगसब कहौ मुक्ति क्या पाई॥

तुमको तो यहभी नहिं निश्चय स्वर्गकर्मसे पावै।
धोखेमें नहिं इधर उधरके लाभ कहौ क्या आवै॥
दावाकरो ईश से कोई तौ अपराध बँधाये।
ईश्वरकी इच्छामें तुमने दखल दिया फलपाये॥
इससेअधिकगुप्तहीभेदातुमाहिंअसम्भव जानौ।
निश्चय नहीं है एक बस्तुकाकपटकर्म लपटानौ॥
अरु जो तुमने कहा कि भाई बिना ब्रह्मके देखे।
निश्चयकैसे होय ब्रह्मका स्वर्ग आदि तुम पेखे॥
वह बैकुण्ठ देखि तुम आये ताकोनिश्चयकीन्हों।
कहौकि वेदशास्त्रमें भाषातबस्वर्गादिक चीन्हों॥
ब्रह्मज्ञान क्या वेद न कहते शास्त्र भेद नहिं देवै।
बड़े बड़े सब ब्रह्मज्ञान को अवतारादिक सेवै॥
जरा ध्यानसे देखो सुख दुख बुद्धि आदिमें होई।
नहिं देखा निश्चय क्या लाते बिनदेखेभ्रमसोई।
जौन बस्तु देखीनहिं भाई किसप्रकारतुम जानो
इन नेत्रोंसे ब्रह्म न दीखै तत्परहो पहिंचानो।
श्रवणमननकरोनिदिध्यासनआपुहिब्रह्मलखोगे।
वेद शास्त्र अरु सन्तबखानैंसोसुनिआपतकोगे॥
महावाक्य जो वेद बखाने ताको भेद बताऊं।
चारि वेद के चारि वाक्यहैं एकै रूप लखाऊं॥
अहंब्रह्म अस्मी जो भाई तत्त्वमसी बखानै।
प्रज्ञानंद वेदकी शुरती सुनौ भेद पहिचानै॥

श्रुतिः॥

(ॐसत्यं ज्ञानमनन्तम्ब्रह्म नेहनानास्ति किंचन।
सर्वं खल्विदं ब्रह्मेति)

छैया-उतर मिमांसा शास्त्र भाई यह भी है या नाहीं।
यह तो वेद और शास्त्र की दई गवाही माहीं॥
अब गुरुनानक बचन उचारे और सन्तभी गावैं।
सब सन्तनकी साखि बिचारो एकैरूप लखावैं॥

गुरू के बचन॥

निरंकार आकार आप निर्गुण सगुण एक। एकहिं एक बखानो नानक एक अनेक॥ आपै आप आप उपजायो। आपहि बाप आपही मायो॥ आपहि सूक्ष्म आपहि अस्थूला। लखी न जाई नानकलीला॥ जिन्ह आप रच्यो परपंच अपार। तिहूं गुणमें कीन्ही बिस्तार॥ पाप पुण्य तहि भई कहावत। कोऊ नरक कोउ स्वर्गबझावत॥ आल जाल माया जंजाल। होमैं मोह भरम भयभार॥ दुःख सुक्ख मान अपमान। अनेकप्रकार किये बखान॥ आपन खेल आपकरि देखै। खेलसंकोचै नानक एकै॥

कबीरबचन-(साधो हरिमें हरिको देखा)

टेक-आपहि माली आप बगीचा आपहि सींचन हारा। आपहि कली आपही फूला आपहि सूंघनहारा॥ आपहि दुनिया आपहि दौलति आपहि माल खजाना। आपहि लूटै और लुटावै हाथलिये यक प्याला॥ कहै कबीर सुनो भाई साधो घटही में ठाकुरद्वारा॥

दो०कबीर जिसको खोजते, पायो सोई ठौर।
सोई फिरकर तू भया, जिसको कहता और॥
कबीरवृक्ष पूछ बीजको, बीज बृक्षके माहिं।

जीव जो ढूंढ़ै ब्रह्मको, ब्रह्म जीवके माहिं॥
कबीरआदिहुतीसबआपसमें, सकलहतीतामाहँ।
ज्यों तरुवर के बीज में, डार पात फल छाहँ॥
हेरत हेरत हेरिया, रहा कबीर हिराय।
बुंद समानी समुद्र में, सो कित हेरीजाय॥
चौ०सत्यलोककीअकह कहानी। सोनिजसद्गुरुहैसहिदानी॥
रूपबरण जहँ वहँ नहिं देशा। तीनलोकअचरजसोभेशा॥
नहिं तहँ पांच तत्त्वकी काया। सत्यपुरुषआपहिनिरमाया॥
दो० बुन्दसमानी समुद्र में, यह जानै सबकोय।
समुद्र समाना बुन्द में, बूझै बिरला कोय॥

पलटूदासजी के वचन॥

शब्द—जगन्नाथ जगदीश जगमें व्यापिरहा॥
टेक—चारि खानि में लखचौरासी और न कोई दूजा। आपहि ठाकुर आपहि सेवक करत आपनी पूजा॥ आपहि दाता आपहि मँगता आपहि योगी भोगी। आपहि विश्व आपही बिशुनी आपहि वैद्य आपही रोगी॥ आपहिं ब्रह्मा बिष्णु महेश्वर सुर नर मुनि हो आया। आपहि कारण आपहि कारज बिश्वरूप दरशाया॥ पलटूदास दिव्यदृष्टि तब आवै सन्त करैं जब दाया॥

तुलसीदास के वचन॥

सो० हमपियापियाहमएक, लखिविवेकसन्तनकही।
भई अगमरस भेष, देखा दृग पिय एकहो॥
हमरा सकल पसार, वारपार हमहीं कही।
सन्तचरणकी लार, आदि अन्त तुलसीभई॥

राग बसन्त ॥

मतिभ्रमरेघरमेंदिदार । टुकआंखखोलगाफिलबिसार ॥

टेक—ब्यापककहै सबमें अखंड । ब्रह्मछांड़ि भटकदुनिया को भर्म ॥ युगयुग भर्मत करिकरि बिचार । सुरत नयन नित सतसुधार ॥ बन भुलान घर बिसरबाट । ठग सँग कीन्हो घरनघाट ॥ दिना चार तन की चिन्हार । छूटत तन भुगतत होनहार ॥ बूझ समझ घर खोज रोज । अन्दरमें मन मारे मोज ॥ सँगसद्गुरु करले निराधार । भटक भूल सबदे निकार ॥ जिनजिन सद्गुरु शरण लीन्ह । तिनतिन पायो अगम चीन्ह ॥ अगमगली यक बिधिबिचार । तुहीतुही तुलसी वारपार ॥

दो० वार पार तुलसी लखै, पगौ चरणके माहिं ।
छकौअगम रसब्रह्मको, थकौ थीर मनमाहिं ॥

गोसाईंजी का पद ॥

मैं हरिसाधन करिय न जानी । जस आमयभेषज तस कीन्हा दोष कवन दरवानी ॥ टेक ॥ स्वपने नृपको ग्रस्यो विप्र बध बिकलफिरै अघलागे । बाजिमेध शत-कोटि करै नहिं सुधि होवै बिन जागे ॥ स्वर्गमें सर्प वि-पुल भयदायक प्रकट होय अविचारे । बहुआयुध धरि बल अनेक करि मारहि मरै न हारे ॥ निजभ्रमताकर सम्भवसागर अतिही भय उपजावै । अवगाहत बोहित नौकाचढ़ि कवहुंक पार न पावै ॥ तुलसिदास जग आप सहत जबलग निर्मूल न जाई । तबलग कोटि उपायकरी मरिये तरिये नहिं भाई ॥

दो० ब्यापकब्रह्मजोबिरजअज, अकुल अनीहअभेद।
सोकि देह धरि होय नर, जाहि न जानत बेद ॥

चौ०ब्यापकब्रह्मअखण्डअनंता। अखिलअमोघशक्तिभगवंता॥

दो० यथा अनेकन रूप धरि, नृत्य करै नट कोय।
स्वइ स्वइ भावदिखावही, आपहिहोय न सोय॥

पद ॥ कोइ कहै सत्य झूठ कहै कोई युगुल प्रबल कर जानै । तुलसिदास पद हरैं तीनि भ्रम सो आपन पहिचानै ॥

दादूजी ने कहा ॥

दो० नहीं तहांते सबहुआ, फिर नाहीं होजाय।
दादू नाहीं हो रहै, साहब से लवलाय ॥
कृत मनहीं सो ब्रह्म है, घटै बढ़ै नहिं जाय।
पूरण निश्चल एकरस, जगत न नाचै आय॥
उपजै बिनशै गुण धरै, यह माया को रूप।
दादू देखत थिर नहीं, क्षणछाया क्षणधूप ॥

जगजीवनदास ने कहा ॥

शब्द ॥ तुमहीं घट बोलत तुमहीं डोलत तुमहींहौकरतार।
तुमहिंखवावत पानी प्यावत मैंमनकरीबिचार॥
तुमहीं ब्रह्मा बिष्णू तुमहीं तुमहीं योग पसार।
तुमहींसन्तनकेमनमानीहौ तुमनिर्गुणनिरंकार॥

चौ०शुभअरुअशुभकहोसबमाहीं। और दूसरो जानत नाहीं ॥

स०॥श्वासहि श्वासचलै जब आपहि है सो अखण्ड टरै नहीं टारो। बाहर भीतर है भरपूर सुढूंढ़त कहां है नहीं न्यारो॥ चरणदास गुरुभेद दयो भ्रम दूरि जो थो

अतिभारो। दृष्टि अदृष्टि जो रामको देखत रामभयो पुनि देखनहारो॥

बलिने कहाहै॥

दरियाव को मौजपर जाइ देखो कहांजाना कहां आनाहै। दरियावमें उठताहै फेरि दरियाव में समाना है॥ यहां और नहीं कुछ करना है में ते का भेद मिटा-वनाहै। दरियाव अद्वैत अखण्डबली ना कुछ खोना है ना कुछ पावना है॥

ग़ज़ल—हुबाबकी तरह अपने तईं बनाके तोड़। तेरेहक़ में यही तोड़है खुदासे जोड़॥ बदन के तोड़े हवा के सिवा ना निकलेगा। खुदाही निकले जो दीजे खुदी का भांड़ा फोड़॥ ताईं उन्नतके नुक्तों से है कसीर अहद। यही है एक वह दस सौ हज़ार लाख करोड़॥ सनम को पूजे ब्राह्मण हरम को मानैं शेख। ये दोनों एक हैं मानूँ किसे किसेदूँ छोड़॥ सिवाय हस्ती हक़के जो कुछ नज़रआवै। यक़ीन जानो कि देवे ख़याल कीहै खोड़॥ अजल से लेके अबदतक वही जोहै सो है। बरंग बहरे रवां जिसमें है न तोड़ न जोड़॥ अबसहै शेर सखुन की यह तोड़ जोड़ नियाज़। यश अपने ज़िक्र की और फ़िक्र की तरफ़मुँह मोड़॥

सवैया॥ श्वास श्वास राति दिन सोहं सोहं होय जाप यही माला बारबार दृढ़के धरत है। देह परे इन्द्रीपरे अन्तःकरण परे एक सो अखण्ड जाप तापको हरतहै॥ काठ रुद्राक्ष और सूत ऊनहूं की माला। इनके फिराये कौन

कारज सरत है। सुन्दर कहत एक आतमा चैतन्यरूप आपको भजन सो तो आपही करत है॥

छन्दछैया—निस्सन्देह यही महाराजा जीवब्रह्म एकरूपा।
ज्ञानवान एकैकरि मानै अज्ञानी भ्रम कूपा॥
ज्ञानीकीजो समुझअभेदे निजस्वरूप दरशाये।
अज्ञानी नानात्व समुझकर मायाभर्म भुलाये॥
जगतअनहुआभासैंस्वामीस्वप्नजिमेंबिस्तारा।
एककालमें बाप पूतसब कुल कुटुम्बरचिडारा॥
इसी प्रकार जाग्रत जानौ जगतस्वप्न समहोई।
जोब्योहार जगत बिच दीखैस्वप्नेसांचलखोई॥
स्वप्ने में मकान बनवाया राज मजूर लगाये।
राज मजूर परस्परमें सब हैं सम्बन्ध बँधाये॥
कोई बाप कोइ बेटा भाई कोई भतीजा होई।
तात्पर्य यह हर देहींमें भास अनन्त लखोई॥
एक देहमें भास होत है पुत्र जन्मधर पाये।
देह दूसरी में यह जानत वाका पुत्र कहाये॥
वास्तवमें रचनासब एकी क्षणकमाहिं भइसोई।
जबजागे तब भई सर्बलय दृष्टिपरत नहिंकोई॥
पर महाराज ब्रह्म है चेतन तो चैतन्य रहावै।
किसी पदारथमें चेतनता रहैस्वतन्त्र दिखावै॥
सो वह कहो पदारथ न्यारा चेतनताते हिमाहीं।
परमहंसकहैभेदसुनौअबमिसरीमाहिंमिठाहीं॥
मिसरीसे नहिं मीठान्यारा त्यों चेतनसबहोई।
रूप मिठाई मिसरी का सब चेतनरूप लखोई॥
गुणहोताहै भिन्न गुणीते गुण न गुणीकारूपा।

महाराजतौ ब्रह्म कछू नहिं शून्यहिंरहाअनूपा॥

सूत्र॥ लक्षणप्रमाणाभ्यां वस्तुसिद्धिः॥

छन्दछैया लक्षण और प्रमाणोंकरके वस्तुसिद्ध जोहोई।
तुमने शून्यकौनबिधिजानानहिंजानाकहुसोई॥
जो जाना तौ शून्य कहाहै नहिं जानातौकैसा॥
तो तुम शून्य कहतहौ कैसे वहजैसेका तैसा॥
कोई लक्षणप्रमाणनहींहै शून्य सिद्धिनहिंहोई।
न्याय सांख्यवेदान्तबिषयमें भेदकहाक्यासोई॥
वादारम्भ न्यायका कहिये तिनकेजोड़ बटोरे।
ताकी एक बुहारीबांधी अणु परमाणु सुजोरे॥
व्यणुकअनुकहोकरअस्थूलाहोजातापरमाणं।
हैअनादिअरुजगत्आदिहैसांख्यवादपरिणामं॥
प्रकृति जगत् भावको प्रापति होजातीहै जैसे।
दूध दही होजाता भाई दही दूध नहिं कैसे॥
वाद बिवर्तकहै वेदान्तहि बस्तुन बिगड़ीकोई।
अन्यरूप परतीतिभईहै कुण्डल सुबरणदोई॥
सुवरण एकरूपहीजानो कुण्डलकिरीटबनाये।
यों अकाररूप है सर्वे ब्रह्म शुद्ध कहि गाये॥
है परिणामरूप परतीता लक्षण सुनो बिवर्ते।
उपादान सेतौ भिन्नसत्ता अन्यरूप सों धरते॥
यहलक्षण परिणामकहाहैउपादानअरुकारज।
सत्ताहोवे एक औरही रूप अन्य हो वारज॥
उपादान अरु कारज की एकसत्ता होवे भाई।
उपादानसे रूपअन्यहैं और देखि जगआई॥
जगत्ब्रह्म अज्ञातहुयेसे भासत जबतकजानो।

कारज सरत है । सुन्दर कहत एक आतमा चैतन्यरूप आपको भजन सो तो आपही करत है ॥

छन्दछैया—निस्सन्देह यही महाराजा जीवब्रह्म एकरूपा ।
ज्ञानवान एकैकरि मानै अज्ञानी भ्रम कूपा ॥
ज्ञानीकीजो समुझअभेदे निजस्वरूप दरशाये।
अज्ञानी नानात्व समुझकर मायाभर्म भुलाये॥
जगत्अनहुआभासैस्वामीस्वप्नजिमेंविस्तारा।
एककालमें बाप पूतसब कुल कुटुम्बरचिडारा॥
इसी प्रकार जाग्रत जानौ जगत्स्वप्न समहोई।
जोव्योहार जगत् विच दीखैस्वप्नेसांचलखोई॥
स्वप्ने में मकान बनवाया राज मजूर लगाये ।
राज मजूर परस्परमें सब हैं सम्बन्ध बँधाये ॥
कोई बाप कोइ बेटा भाई कोई भतीजा होई ।
तात्पर्य यह हर देहीमें भास अनन्त लखोई ॥
एक देहमें भास होत है पुत्र जन्मधर पाये ।
देह दूसरी में यह जानत वाका पुत्र कहाये ॥
वास्तवमें रचनासब एकी क्षणकमाहिं भइसोई।
जबजागे तब भई सर्वलय दृष्टिपरत नहिंकोई ॥
पर महाराज ब्रह्म है चेतन तो चैतन्य रहावै ।
किसी पदारथमें चेतनता रहैस्वतन्त्र दिखावै ॥
सो वह कहो पदारथ न्यारा चेतनतातेहिमाहीं।
परमहंसकहैभेदसुनौअबमिसरीमाहिंमिठाहीं॥
मिसरीसे नहिं मीठान्यारा त्यों चेतनसबहोई।
रूप मिठाई मिसरी का सब चेतनरूप लखोई॥
गुणहोताहै भिन्न गुणीते गुण न गुणीकारूपा।

महाराजतौ ब्रह्म कछू नहिं शून्यहिंरहाअनूपा॥

सूत्र॥ लक्षणप्रमाणाभ्यां वस्तुसिद्धिः॥

छन्दछैया लक्षण और प्रमाणोंकरके वस्तुसिद्ध जोहोई।
तुमने शून्यकौनबिधिजानानहिंजानाकहुसोई॥
जो जाना तौ शून्य कहाहै नहिं जानातोकैसा।
तो तुम शून्य कहतहौ कैसे वहजैसेका तैसा॥
कोई लक्षणप्रमाणनहींहै शून्य सिद्धिनहिंहोई।
न्याय सांख्यवेदान्तविषयमें भेदकहाक्यासोई॥
वादारम्भ न्यायका कहिये तिनकेजोड़ बटोरे।
ताकी एक बुहारीबांधी अणु परमाणु सुजोरे॥
द्यणुकअनुकहोकरअस्थूलाहोजातापरमाणं।
हैअनादिअरुजगत्आदिहैसांख्यवादपरिणामं॥
प्रकृति जगत् भावको प्रापति होजातीहै जैसे।
दूध दही होजाता भाई दही दूध नहिं कैसे॥
वाद बिवर्तकहै वेदान्तहि बस्तुन बिगड़ीकोई।
अन्यरूप परतीतिभईहै कुण्डल सुबरणदोई॥
सुबरण एकरूपहीजानो कुण्डलकिरीटबनाये।
यों अकाररूप है सर्वे ब्रह्म शुद्ध कहि गाये॥
है परिणामरूप परतीता लक्षण सुनो विवर्ते।
उपादान सेतौ भिन्नसत्ता अन्यरूप सों धरते॥
यहलक्षण परिणामकहाहैउपादानअरुकारज।
सत्ताहोवे एक औरही रूप अन्य हो वारज॥
उपादान अरु कारज की एकसत्ता होवे भाई।
उपादानसे रूपअन्यहैं और देखि जगआई॥
जगत्ब्रह्म अज्ञातहुयेसे भासत जबतकजानो।

ब्रह्मज्ञान नहिंहोगाजबतकमूलाज्ञान सुमानो॥
रस्सी के अज्ञान भये से सर्प भासता भाई।
जब रस्सी का ज्ञानयथारथ सर्पअभावकराई॥
अरुदेखो एककेवल ब्रह्महि भेद सजाति नहोये।
और बिजातीसुक्क भेदसे ब्रह्म सुरहत लखोये॥
भेद सहित है यह परपंचै कहै सजाती वासे।
होय समान दूसरा कोई घटके ढिगघटजासे॥
कहै बिजाती उसको भाई वस्तु दूसरी होये।
घटअरु पट यहभेदबिजाती सुक्कसूत्रपटसोये॥

दो० माया का विस्तार सब, अनिर्वाच्य तू जान।
ब्रह्म सदा है एक रस, वृन्दावन सो मान॥

चौ०हे महाराज आपको ज्ञाना। सत्य कहा सो सब मैं जाना॥
पर उपासना के सम नाहीं। मैं गणपतिसुमिरतमनमाहीं॥
मैं उपासना बर्णन करहूं। इसको कैसे खण्डन करहूं॥

दो० हरि गुरु सन्त अनुग्रह, दया साधु की होय॥
वृन्दाबन सत्सङ्ग मणि, अलख लखायोसोय॥

श्लो० भक्त्याहमेकयाग्राह्यः श्रद्धयात्मा प्रियस्सताम्॥
भक्तिः पुनाति मन्निष्ठा श्वपाकानपिसम्भवान् १॥

चौ०मैं यक श्रद्धा भक्ति सहाई। भक्ति अनन्यमिलों तेहिआई॥
मेरी भक्ति श्वपचहू पावै। होय शुद्ध ममलोक सिधावै॥

कपिलभगवानुवाच॥

श्लो०न पूज्यमानयाभक्त्या भगवत्यखिलात्मनि॥
सदृशोस्ति शिवः पन्था योगिनां ब्रह्मसिद्धये २॥

अर्थ–चौपाई॥

योगिनको ब्रह्म सिद्धि सु होई। भगवतभक्ति तुली नहिं कोई॥

कोइ मारग कल्याण न जानो। कीर्तन भक्ति प्रसिद्धबखानो॥

भगवान् के पार्षद ने भी कहा है॥

श्लो० अज्ञानादथवा ज्ञानादुत्तमश्लोकनामयत् ॥
संकीर्तितमघं हन्ति दहेदेधो यथानलः ३ ॥

अर्थ—चौपाई॥

जान अजान नाम हरि गावै। पापलेश कछु रहन न पावै॥
जैसे अग्नि प्रज्वलित होई। करै भस्म बनलकड़ी सोई॥

यमराजउवाच॥

श्लो० एतावतालमघनिर्हरणाय पुंसां संकीर्तनं भगवतो गुणकर्मनाम्नाम् ॥ विक्रुश्य पुत्रमघवान् यद जामिलोपि नारायणेतिम्रियमाण इयाय मुक्तिम् ४ ॥

अर्थ—चौपाई॥

पाप नाश करने को भाई। केवल भगवत् नाम उपाई॥
अजामील पापी बड़ भारी। मरणसमय सुत नामपुकारी॥
नाम पुकारत मुक्तिहि पाई। पुत्र नाम नारायण गाई॥
कलि में केवल कीर्तन सारा। कलियुगमें निजनामअधारा॥
औरहु भक्त भये बहुतेरे। महिमा अगम प्रकट हरि हेरे॥
चौ० भये प्रह्लाद भक्तसब जानी। पिता त्रास दीन्हा तेहिठानी॥
अतिप्रह्लादटेर कियो जबहीं। खम्भफारि हरि प्रकटे तबहीं॥
लीन भक्त को तुरत बचाई। ताकी कीरति सबजगछाई॥
दृढ़आशा जिनजासि उपजाई। वृन्दावन हरि प्रकटे आई॥
दासीसुत नारद रहैं भाई। पूर्वजन्म की कथा असगाई॥
भक्तन की सतसंगति पाई। विरह उठी बनचालेहिभाई॥
विष्णुदेव की आश लगाई। लगे ध्यान पुनि करने जाई॥
बहुतकाल अस जानो बीता। विष्णुदयानिधि प्रकटे मीता॥

ध्रुवजी ब्रजमण्डल में आये। बैठे अटल समाधि लगाये॥
बहुतकाल अस ध्यान लगाया। गरुड़चढ़े आये हरिराया॥
राजा एक मोरध्वज रहिया। प्रेमभक्ति में पूरा भइया॥
दो० भक्तिहि वश भगवान हैं, भक्तन के रक्षपाल।
प्रथम कसौटी सत्य की, पीछे करतनिहाल॥
चौ० धर्म नीति मर्यादा माहीं। वा सम नृपति भयो कोइनाहीं॥
एक समय अर्जुन के ताहीं। भयोअभिमानबहुतमनमाहीं॥
मोसम भक्त न दूजा कोई। ममवश कृष्णदेव हैं सोई॥
अर्जुन सों भगवान बखाना। मम भक्तनको तू नहिं जाना॥
चले कृष्ण अर्जुन दोउ संगा। नाहरएक साथ लिय चंगा॥
ब्राह्मणरूप धरा भगवाना। अर्जुन को बालककरआना॥
दोऊ चलि राजा गृह आये। कह्यो हेतु भोजन को धाये॥
राजा कह्यो जो आज्ञा होई। भोजन तुरत मँगाऊं सोई॥
हरि बोले सुनु मारग माहीं। यह नाहर मोहिं घेरो आहीं॥
भोजन को यह भूखा रहिया। मम बालककोमारनचहिया॥
मुझको ले नाहर तू खाई। यहबालक मेरो सुखदाई॥
नाहर कहै बूढ़ तन तोरा। कोमलमांस बाल भष मोरा॥
मैं कह्यों बाल मोर सुखदाई। बालक को नहिंखावोभाई॥
हम तुम चलैं मोरध्वज पाहीं। वाको सुततोहिंदेउँदिवाहीं॥
सुत अरु मुझे दोऊ को खावो। काहे को तुम भूखे जावो॥
राजा कहा देर नहिं कीजै। रानी कहा मुझे भषिलीजै॥
इतने में सुत सुनकर आया। परिक्रमाकरि शीशनवाया॥
नृपसुतकहा दयाबड़ि कीन्हा। तुमदयालु जो दर्शनदीन्हा॥
यहतन क्षणभंगी नशिजाई। फिर काहू के काज न आई॥
मेरे भाग्य बड़े अधिकाई। तुम्हरे कारज काया आई॥

बाघ कहा आधा तन खैहौं। ताते अपनी भूख बुझैहौं॥
बालक कहा लेउ तुम भाई। जितना चाहौ खावो आई॥
नाहरकहा नहीं अस खाऊं। क्यों अपने शिर पाप चढ़ाऊं॥
कह्यो बाल फिरि कैसे कीजै। करके दया भेद कहिदीजै॥
नाहर ने यहिबिधि समझाई। आरा शिरपर देउ धराई॥
मात पिता दोउ खैंचैं भाई। जुदा बीचसे तनु है जाई॥
ज्यों आरा सुत शिरपर धरिया। हाहाकार नगरबिच परिया॥
नृपरानी दोउ खैंचन चाया। हरिजीहाथपकरिलियोधाया॥
हरि पुनिभये चतुर्भुज रूपा। नृपको दर्शन दियो अनूपा॥
हरि बोले मांगो बर कोई। जो तुम्हरे मन इच्छा होई॥
भूप कह्यो बर दीजै नाथा। प्रीतिरहै तुव चरणन साथा॥
हे दयालु दूजा बर दीजै। भक्तन से कसनी लघु लीजै॥
बरदेकर हरि विष्णु दयाला। अन्तर्द्धान भये तत्काला॥
ऐसे बहुत भक्त भये भाई। नामदेवकी गाय जिवाई॥
शबरी के फल जूठे खावा। नरसी की हुंडी सखरावा॥
त्रयलोचन दृढ़भक्ति कमाई। जिसकी टहलकरी हरिआई॥
सेना नाई अरु रयदासा। इनकी पूरण कीन्हीं आसा॥
मीराबाई दर्शन पावा। धनाभक्तका भोजन खावा॥
हरिश्चन्द्र को धर्म निभावा। हाथ पैर जयदेव जो पावा॥
कहँलग भक्ती प्रभुता गाऊं। ममबुधि छोटि पार नहिंपाऊं॥
आप ज्ञान अद्वैत बखाना। बिनअसज्ञान मुक्तिनाहिंठाना॥
सबकोइ मुक्ति भक्तिसे गावै। किसबिधि मुक्ति ज्ञानसे पावै॥
पहले मुक्ति सालोक्य कहावै। दूजी पुनि समीप्य ठहरावै॥
तीजी कै सारूप्य बतावा। चौथी को सायुज्य लखावा॥
सो मुक्ती भक्ती से पावै। ब्रह्मज्ञान कछु काज न आवै॥

अरु महराज कथाके माहीं । यही सुनाहै दूजा नाहीं ॥
और युगन में तप मख दाना । करत रहै पायो विश्रामा ॥
बाल्मीकि आदिक तपधारी । बहुतक भये नाम उरधारी ॥
अब कलि केवल मुक्ति प्रधाना । भक्तिनाम स्मरण से जाना ॥
और भाँति कोइ मुक्ति न पावै । वेद पुराण शास्त्र अस गावै ॥
छन्दछैया परमहंस पूछतहैं भाई बहु उपासना कहिये ।
कहु उपासना कौनदेवकी सिद्धिहोय फललहिये ॥
कौन नामका सुमिरणकीजै गणपति प्रथममनाये ।
जोकि उपासक गणपतिजीके आदिगणेशबताये ॥
त्रिपुरासुरसे युद्धकिया जब शिव गणेश को पूजे ॥
मथ्यो समुद्र विष्णु भगवानैं पहले पूजन हूजे ॥
गणपतिदेव सिद्धिदायक हैं वेद पुराणहु गाये ।
महिमा और गणेशपुराण में देवप्रसिद्ध सुनाये ॥
दो० जेहिसुमिरत वन्दतसकल, विघ्नपराहिं विलाहिं ।
मुदमङ्गल आरोग्य धन, मुक्ति भुक्ति नियराहिं ॥
छैया जो उपासना करत शक्तिकी शक्ति प्रधान बतावैं ।
शक्ति माहात्म्य है पुराण में देवी पाठ करावैं ॥
बिना शक्ति के पुरुष अशक्ती होजाते सब कोई ।
सब आधार शक्तिके जानो मुख्य शक्तिहै सोई ॥
दो० इससे सबको शक्तिकी, उचित उपासन जान ।
शक्ती दो परकार की, लक्ष्य अलक्ष्य सुमान ॥
जगतबीज सदसतनहीं, भावरूप त्रयगुण्य ।
माया सों लखु तबै जब, योग ज्ञान नैपुण्य ॥
अव्याकृतअव्यक्त अरु, प्रकृतिप्रधान निधान ।
विद्याविद्यादिक महा, माया कहैं सुजान ॥

अन्तकाल में सब जगत्, जीव चराचर खानि।
नाम रूप सब छोड़िकै, तामें सोवत तानि॥
सृष्टि कालमें सब जगत्, ज्यों बीजनते वृक्ष।
अंकुर तत्त्वों ते सकल, यह दृष्टान्त सदृक्ष॥
जब नहिं दृश्य न दृष्टिकोउ, शून्य सकल संसार।
अलख बीजसे प्रकट हो, कीन्हप्रथमअवतार॥
महालक्ष्मी नाम सो, मुद मङ्गलको धाम।
कहतसुनतसमभ्रमतजिन्हें, होत पूर्ण सब काम॥
चौ० सोईनभपवनअनलजलमही। सूक्ष्म भूत तन्मात्रा वही॥
शब्द स्पर्श रूप रस गन्धा। वोही सकल लोककर धन्धा॥
ब्रह्मा विष्णु शंभु हैं सोई। इन्द्रादिक देवा सब वोई॥
यक्ष गंध्रब किन्नर राक्षसगन। भूत पिशाच प्रेत जेते तन॥
दो० भूत भविष्यत् जो कछू, वर्त्तमान है जोइ।
भुक्त भोग भोगात्मक, जगत चराचर सोइ॥
चौ० लक्ष्मीभेद तीनि कहिगाये। महालक्ष्मी प्रथम कहाये॥
लोकहि शून्य देखिकै भाई। तमगुण दूसररूप धराई॥
नाम महाकाली स्वइ जानो। सद्गुण महासरस्वति मानो॥
तीनों रूप शक्ति के भाई। स्त्री पुरुष शक्ति सवगाई॥
महालक्ष्मी से दो भइया। ब्रह्मा और लक्ष्मी कहिया॥
महाकाली से दो ये जानो। रुद्र सरस्वति उत्पति मानो॥
महा सरस्वति से सुनुभाई। विष्णु गौरि उत्पत्ती गाई॥
उनसे देवी देव वखानै। रज तम सत उत्पति सच ठानै॥
दो० सूर्य उपासक पुरुष हैं, कहैं सूर्य वड़देव।
देव प्रत्यक्ष सु पूजिये, जगके कारण भेव॥
चौ० जोकि पुरुष सूरय को सेवै। कहै प्रत्यक्ष सर्वमय देवै॥

इससे उचित सूर्यकी पूजा। कारण जगत देव नहिं दूजा॥
प्रकट वेदमें महिमा गाई। सूर्य त्रयीमय वेद सुनाई॥
वेदत्रयी अग्नि त्रयरूपा। सकलउष्णता अग्निस्वरूपा॥
सूर्यकिरणि से उष्ण बखानो। प्रकट उष्णकिरणों से मानो॥
लिखा वेदमें भेद है भाई। सूर्यकिरणि जलको बर्षाई॥
जलसे सब औषधि हैं जानो। वृक्षलता उत्पति जियमानो॥
जलहु अग्निसे उत्पति होई। अग्निअधार प्रकट रवि सोई॥
इससे सबहि सूर्यको मानो। आदि सर्वकी सूर्यहि जानो॥
विदिशा दिशा घड़ी पल मासा। काल प्रकट वर्षादिक नासा।
जबहिं सूर्य आवर्पण करहीं। षोड़शकला तपैं पुनि अहहीं।
तबहिं प्रलय होजावे भाई। उस जलसे यक अण्ड उपाई।
सो० उस जलसेती एक, हिरण्यमय अण्डा भयो
उसी अण्डसे जामि, सकलजगत उत्पतिकह्यो।
चौ०सूर्य जलहि वर्षावें भाई। उससे सब चर अचर जियाई।
इनसे उत्पति पालन जानो। कारण प्रलय सूर्य भगवानो॥
नामसूर्य के कहे अनन्ता। द्वादशनाम मुख्यभगवन्ता॥
मास मास प्रतिके जो नामा। भिन्नभिन्न जपु पूरण कामा॥
द्वादश गन्धर्व रहैं सो साथा। द्वादश रहैं अप्सरा जाथा॥
नाग यक्ष राक्षस ऋषि भाई। द्वादश द्वादश संग रहाई॥
चैत्र आदि दै मास बखाने। मास मास प्रति सेवा ठाने॥
एक एक गण बदलत भाई। गन्धर्व गानकरत हैं आई॥
नृत्य अप्सरा करत सुजानै। वेदस्तुति ऋषि करत बखानै॥
यक्षरथै खैंचत हैं भाई। राक्षस रथै ढकेलत आई॥
रथ को बांधे नाग कराला। सूर्यदेव सबके प्रतिपाला॥
दो०सूरज की महिमा सबी, भाषै सूर्य पुराण।

आदि अन्त मधि सूर्य हैं, परकट देवबखान ॥

चौ० विष्णुबिरञ्चिमहेशशरीरा। निराकार निर्गुण गम्भीरा ॥
जो कोइ महादेव की अर्चा। शिव अनादि दूसरनहिंचर्चा॥
शिव के दक्षिण अङ्ग से भाई। विष्णू प्रकट भये स्वइगाई ॥
बाम अङ्ग से ब्रह्मा भयेऊ। रुद्रहृदय से उत्पाति कहेऊ॥
विष्णु लोक बैकुण्ठ बिराजै। ब्रह्मलोक में ब्रह्मा राजै॥
रुद्र बास कैलास बखाना। शिव का लोक उच्च अस्थाना॥
शिव से तीनों देव बखानै। रुद्रहृदय शिव भेद न मानै॥
विष्णूने शिव भक्ती कीन्हा। शिव प्रसन्नह्वै अस वर दीन्हा॥
चक्र सुदर्शन शक्ति सुभाई। ऐश्वर्य दियो लोक प्रभुताई ॥
विष्णूतीनिलोक प्रतिपालहिं। श्रीय लक्ष्मी सेवा चालहिं ॥
महादेव की सेवा कीन्हा। विष्णू सर्ब पदारथ लीन्हा ॥
देखो जब त्रिपुरासुर बाढ़ा। व्याकुल देव किये घरकाढ़ा॥

दो० त्रिपुरासुरको नाश करि, देवन को सुख दीन।
जो बिषनिकसासिन्धुसे, महादेव सो पीन ॥

चौ० जब नृसिंह बाढ़ो परिवारा। सबको लगे देन दुख भारा ॥
महादेव तब बपु बिस्तारा। शरभ रूप पक्षी को धारा ॥
सबको नाश किया सुनु भाई। केवल नरसिंह दिये बचाई ॥
जब वाराह बंश बहु भैया। सब पृथ्वी व्याकुलदुख पैया ॥
तब महादेव भये प्रकटाई। कुत्ता रूप बिटलना गाई ॥
वाराह बंश नाशकरिदियऊ। वाराहजी को छोड़तभयऊ ॥
ब्रह्मा विष्णु वाद एक ठयऊ। आपसमें झगड़त सो भयऊ ॥
ब्रह्मा बड़े आप को मानैं। विष्णू बड़े आप को जानैं ॥
शिवज्योतिर्मयलिंगप्रकटाया। यहअकाशवाणी कहिगाया ॥
इसका अन्त ले आवे सोई। उसको बड़ा कहें सबकोई ॥

आदि अन्त मधि सूर्य हैं, परकट देवबखान ॥

चौ० विष्णुबिरञ्चिमहेशशरीरा। निराकार निर्गुण गम्भीरा ॥
जो कोइ महादेव की अर्चा। शिव अनादि दूसरनहिंचर्चा॥
शिव के दक्षिण अङ्ग से भाई। विष्णू प्रकट भये स्वइगाई ॥
बाम अङ्ग से ब्रह्मा भयेऊ। रुद्रहृदय से उत्पाति कहेऊ ॥
विष्णु लोक बैकुण्ठ बिराजै। ब्रह्मलोक में ब्रह्मा राजै ॥
रुद्र बास कैलास बखाना। शिव का लोक उच्च अस्थाना ॥
शिव से तीनों देव बखानै। रुद्रहृदय शिव भेद न मानै ॥
विष्णूने शिव भक्ती कीन्हा। शिव प्रसन्नह्वै अस वर दीन्हा॥
चक्र सुदर्शन शक्ति सुभाई। ऐश्वर्य दियो लोक प्रभुताई ॥
विष्णूतीनिलोक प्रतिपालहिं। श्रीय लक्ष्मी सेवा चालहिं ॥
महादेव की सेवा कीन्हा। विष्णू सर्ब पदारथ लीन्हा ॥
देखो जब त्रिपुरासुर बाढ़ा। ब्याकुल देव किये घरकाढ़ा॥

दो० त्रिपुरासुरको नाश करि, देवन को सुख दीन।
जो बिषनिकसासिन्धुसे, महादेव सो पीन ॥

चौ० जब नृसिंह बाढ़ो परिवारा। सबको लगे देन दुख भारा ॥
महादेव तब बपु बिस्तारा। शरभ रूप पक्षी को धारा ॥
सबको नाश किया सुनु भाई। केवल नरसिंह दिये बचाई ॥
जब बाराह बंश बहु भैया। सब पृथ्वी ब्याकुलदुख पैया ॥
तब महादेव भये प्रकटाई। कुत्ता रूप बिटलना गाई ॥
बाराह बंश नाशकरिदियऊ। बाराहजी को छोड़तभयऊ ॥
ब्रह्मा विष्णु बाद एक ठयऊ। आपसमें झगड़त सो भयऊ ॥
ब्रह्मा बड़े आप को मानैं। विष्णू बड़े आप को जानैं ॥
शिवज्योतिर्मयलिंगप्रकटाया। यहआकाशवाणी कहिगाया ॥
इसका अन्त ले आवे सोई। उसको बड़ा कहें सबकोई ॥

इससे उचित सूर्यकी पूजा । कारण जगत देव नहिं दूजा ॥
प्रकट वेदमें महिमा गाई । सूर्य त्रयीमय वेद सुनाई ॥
वेदत्रयी अग्नि त्रयरूपा । सकलउष्णता अग्निस्वरूपा ॥
सूर्यकिरणि से उष्ण वखानो । प्रकट उष्णकिरणों से मानो ॥
लिखा वेदमें भेद है भाई । सूर्यकिरणि जलको वर्षाई ॥
जलसे सब औषधि हैं जानो । वृक्षलता उत्पति जियमानो ॥
जलहु अग्निसे उत्पति होई । अग्निअधार प्रकट रवि सोई ॥
इससे सबहि सूर्यको मानो । आदि सर्वकी सूर्यहि जानो ॥
बिदिशा दिशा घड़ी पल मासा । काल प्रकट वर्षादिक नासा ॥
जबहिं सूर्य आवर्षण करहीं । षोड़शकला तपैं पुनि अहहीं ॥
तबहिं प्रलय होजावे भाई । उस जलसे यक अगड उपाई ॥
सो० उस जलसेती एक, हिरण्यमय अण्डा भयो ।
　　उसी अण्डसे जामि, सकलजगत उत्पतिकह्यो ॥
चौ०सूर्य जलहि वर्षावैं भाई । उससे सब चर अचर जियाई ॥
इनसे उत्पति पालन जानो । कारण प्रलय सूर्य भगवानो ॥
नामसूर्य के कहे अनन्ता । द्वादशनाम मुख्यभगवन्ता ॥
मास मास प्रतिके जो नामा । भिन्नभिन्न जपु पूरण कामा ॥
द्वादश गन्धब रहैं सो साथा । द्वादश रहैं अप्सरा जाथा ॥
नाग यक्ष राक्षस ऋषि भाई । द्वादश द्वादश संग रहाई ॥
चैत्र आदि दै मास वखाने । मास मास प्रति सेवा ठाने ॥
एक एक गण वदलत भाई । गन्धब गानकरत हैं आई ॥
नृत्य अप्सरा करत सुजानै । वेदस्तुति ऋषि करत बखानै ॥
यक्षरथै खैंचत हैं भाई । राक्षस रथै ढकेलत आई ॥
रथ को बांधे नाग कराला । सूर्यदेव सबके प्रतिपाला ॥
दो०सूरज की महिमा सबी, भाषै सूर्य पुराण ।

आदि अन्त मधि सूर्य हैं, परकट देवबखान ॥

चौ० विष्णुबिराञ्चिमहेशशरीरा। निराकार निर्गुण गम्भीरा ॥
जो कोइ महादेव की अर्चा। शिव अनादि दूसरनहिंचर्चा ॥
शिव के दक्षिण अङ्ग से भाई। विष्णू प्रकट भये स्वइगाई ॥
बाम अङ्ग से ब्रह्मा भयेऊ। रुद्रहृदय से उत्पाति कहेऊ ॥
विष्णु लोक बैकुण्ठ बिराजै। ब्रह्मलोक में ब्रह्मा राजै ॥
रुद्र बास कैलास बखाना। शिव का लोक उच्च अस्थाना ॥
शिव से तीनों देव बखानै। रुद्रहृदय शिव भेद न मानै ॥
विष्णूने शिव भक्ती कीन्हा। शिव प्रसन्नह्वै अस वर दीन्हा ॥
चक्र सुदर्शन शक्ति सुभाई। ऐश्वर्य दियो लोक प्रभुताई ॥
विष्णूतीनिलोक प्रतिपालहिं। प्रीय लक्ष्मी सेवा चालहिं ॥
महादेव की सेवा कीन्हा। विष्णू सर्व पदारथ लीन्हा ॥
देखो जब त्रिपुरासुर बाढ़ा। व्याकुल देव किये घरकाढ़ा ॥

दो० त्रिपुरासुरको नाश करि, देवन को सुख दीन।
जो बिषनिकसासिन्धुसे, महादेव सो पीन ॥

चौ० जब नृसिंह बाढ़ो परिवारा। सबको लगे देन दुख भारा ॥
महादेव तब बपु बिस्तारा। शरभ रूप पक्षी को धारा ॥
सबको नाश किया सुनु भाई। केवल नरसिंह दिये बचाई ॥
जब बाराह बंश बहु भैया। सब पृथ्वी व्याकुलदुख पैया ॥
तब महादेव भये प्रकटाई। कुत्ता रूप चिटलना गाई ॥
बाराह बंश नाशकरिदियऊ। बाराहजी को छोड़तभयऊ ॥
ब्रह्मा विष्णु बाद एक ठयऊ। आपसमें झगड़त सो भयऊ ॥
ब्रह्मा बड़े आप को मानैं। विष्णू बड़े आप को जानैं ॥
शिवज्योतिर्मयलिंगप्रकटाया। यहआकाशवाणी कहिगाया ॥
इसका अन्त ले आवै सोई। उसको बड़ा कहैं सबकोई ॥

विष्णू नीचे को गये भाई। अन्त न मिला लौटि पुनि आई॥
ब्रह्मा ऊपर को उठि धाये। अन्त न मिला लौटि फिरि आये॥
दो० ब्रह्मा बोले झूठ कहि, लालच बड़े कहाय।
इससे पूजा है नहीं, झूठ छोड़ दुखदाय॥
चौ० ब्रह्मा झूठ कहा सुनु भाई। शाप भयो पूजा नहिं पाई॥
विष्णु देव सब सत्य बखाना। तीनों लोक पूज्य करि माना॥
ब्रह्मादिक सब देव कहावैं। अथवा ईश्वर पदवी पावैं॥
शिव महादेव महेश्वर भाई। सबसे बड़े बड़े सुखदाई॥
और दूसरा देव न कोई। सब शिवरूप रूप शिव सोई॥
दो० शिवगुरु शिव परदेवता, शिवहित शिवजगवन्द।
शिवआत्मा शिवजीव है, ब्रह्म सदा निरद्वन्द॥
शिवजलमें शिवअनलमें, शिव थल में शिवसर्व।
शिवअकाश शिवभूमिमें, शिवभजु सबतज गर्व॥
चौ० विष्णू की उपासना करहीं। सो कहें विष्णु अनादि सुअहहीं॥
विष्णु नाभि से कमल सो जानो। ब्रह्मा भये कमल से मानो॥
ब्रह्मा से भये रुद्र सुभाई। जिनको महादेव कहि गाई॥
जग उतपति पालन लयकारी। महिमा विष्णु प्रकट जग भारी॥
महिमा वेद पुराणन गाई। विष्णु अनन्तरूप हैं भाई॥
उनमें ये अवतारहि जानो। बहुत प्रसिद्ध वेदविधि मानो॥
प्रथमहि महापुरुष अवतारा। सब संसाररूप जिन धारा॥
इसको ही बैराट् बखानैं। जड़ चेतन सब अन्दर जानैं॥
दूसर सनकादिक भये चारी। बालरूप ब्रह्मचर्य व्रतधारी॥
तीसररूप बराह बखाना। कथा कहूं संक्षेप सुजाना॥
परलयमें पृथ्वी जल माहीं। डूबि गई जल था सब ठाहीं॥
जल में पैठे पृथ्वी लाये। महिमा सब पुराण विच गाये॥

चौथी रची प्रजापति भाई। आकूती स्त्री कहि गाई॥
पञ्चम यज्ञपुरुष अवतारा। स्वायंभू मन्वन्तर सारा॥
छठयें इन्द्र भये सुनु भाई। लीला सबी पुराणन गाई॥
कर्दम नाम प्रजापति केही। कपिलदेव अवतार धरेही॥
माता देवहुती को भाई। सांख्यज्ञान उपदेश कराई॥
सांख्यशास्त्रजिनवर्णनकीन्हा। सो अवतार सातवों चीन्हा॥
धर्म पिता मूरति है माता। नर नारायण पुत्र सुहाता॥
तीनि लोक कल्याणहि अर्था। बद्री खगड तपस्या करता॥
सो अवतार आठवों जानो। तीनिलोक हितकारी मानो॥
अत्री मुनिकी नारि सुहाई। अनसूया पतिव्रत सो भाई॥
दत्तात्रेय अवतार भयेऊ। सहस्रबाहुको योग सो दयेऊ॥
आतम विद्या सकल पढ़ावा। जन प्रह्लाद मुक्तिस्वइपावा॥
यह अवतार नवां है भाई। कीरति सकल पुराणनगाई॥
नाभराज मरुदेवी रानी। ऋषभदेव भगवान बखानी॥
ऋषभदेव दशयें अवतारा। परमहंस मारग विस्तारा॥
पृथुकारूप ग्यारवां धारा। पृथ्वीदुही विदित संसारा॥
हिरनाकुश भक्तन दुखदीन्हा। पुत्र पुरोहित मारन चीन्हा॥
जनप्रह्लाद त्रास बहु दयऊ। खम्भफारि हरि परकटभयऊ॥
नृसिंह रूप बारहवां धारा। हिरणाकुश पापी संहारा॥
त्रयोदशरूप कमठको धारा। पृथ्वी थांभ लई सबभारा॥
चतुर्दशे धन्वन्तरि भयऊ। वैद्यक शार्ङ्गधर निर्मयऊ॥
मोहनी रूप पन्द्रहवां भाई। अमृत देवन पान कराई॥
कश्यप की स्त्री सुनु भाई। अदितीरूप अनूप सुहाई॥
बावनरूप भयउ भगवाना। बलिछलिराज्यलियोजगजाना॥
सो अवतार सोल्हवां जानो। लीला प्रसिद्धपुराणबखानो॥

मत्स्यरूप धारण हरि कीन्हा। प्रलयदिखायनृपतिकोदीन्हा॥
सत्यब्रत राजाको भाई। पृथ्वीरूप नौका दिखलाई॥
नौका में नृपलियो चढ़ाई। जलप्रलय बीहार कराई॥
यह अवतार सत्रहवां भाई। हयग्रीव अवतार सुगाई॥
हंस रूप धारा प्रभु मानो। ब्रह्मा के हित प्रकट बखानो॥
स्वारोचिष मन्वन्तर माहीं। वेदशिरा नाम ऋषि पाहीं॥
तुषिता नामा स्त्री जानो। बिभुअवतार लियोभगवानो॥
ब्रह्मचर्य को मार्ग सुधारा। सहसअठासी ऋषिभयेलारा॥
उत्तम मन्वन्तर में भाई। धर्म सूनृता स्त्री गाई॥
सत्यसेन अवतार सो लीन्हा। प्रकटहुये भगवान सुचीन्हा॥
तामस मन्वन्तर के माहीं। हरिमेधा ऋषि हिरणी पाहीं॥
हरि अवतार लियो जब भाई। ग्राहसेगजको दियो छुटाई॥
रैवत मन्वन्तर में जानो। विषयशुभ्रऋषि नामसुमानो॥
बिकुँठा स्त्री नाम बखानो। वैकुण्ठनाथजन्मे भगवानो॥
लक्ष्मी की प्रार्थना जु पाई। रचा लोक वैकुण्ठ बनाई॥
चाक्षुष मन्वन्तर में जानी। वै राजा सम्भूती रानी॥
अजितभगवानलीन्हअवतारा। सबजगका पालन निरधारा॥
त्रेता परशुराम अवतारा। जिनकी कथाविदितसंसारा॥
नृपदशरथ कौशल्या रानी। रामचन्द्र अवतार सो जानी॥
द्वापर ऋषि पाराशर जानो। जन्म व्यास लीन्होभगवानो॥
फिरभये रामकृष्ण अवतारा। भक्तन हित लीला विस्तारा॥
कलि में बौद्धरूप हरि धारा। वेदनकी निन्दा करिडारा॥
कलिके अन्त कलंकी भाई। जन्म लियो सम्भल में आई॥
हरि अवतार भये स्वइ जानो। हैं चौबीस प्रसिद्ध बखानो॥
हे महराज आप जो गावैं। नई नई सब कथा सुनावैं॥

पञ्चदेव की महिमा जानी। कभी न सुनीभलीकरिमानी॥
आप धन्य हो कृपानिधाना। भली प्रकार भेद मैं जाना॥
जो कोइ इसको सुनै सुनावै। मनइच्छित सोई फल पावै॥
निष्कामी जो कथा बिचारै। भक्ती मिलि भवसंकट टारै॥
बड़ा अमोल पदारथ जाना। थोड़ीसी सिद्धान्त पुराना॥
परमहंस बोले सुनु भाई। हमरा उत्तर देउ सुनाई॥

दो० महाराज मम बुद्धि में, यह बिचार अब होय।
पूजा पाँचों देव की, नित प्रति कीजै सोय॥

छन्दछैया परमहंस कहते सुनु भाई तुम आगेकहिआये।
मुक्तिकहीसालोक्यआदितुमकिसउपाससेपाये॥
पञ्चदेव की करि उपासना क्यहिकेलोकसिधैहौ।
कौन देव के पास रहोगे जहँ तहँ धक्का खैहौ॥
पञ्चदेवता भिन्न भिन्नहैं जुदे जुदे अस्थानै।
उनकी राहसबपृथकपृथकहै एकमुक्तिकसजानै॥
कोई काल आपस में भाई देव बिरुद्ध जोहोई।
अवतारन में भयो बिरुद्धै असपुराणकहैसोई॥
शास्त्र पुराण सन्तकी बाणीशरण एक कीगावै।
अरु तुमभी जानतहो भाईथिर नहिंलोकरहावै॥
जैसे इसी लोकके माहीं थिर न रहै अवतारै।
प्रलय में कोईरूप लोक नहिं रहिहैयहीबिचारै॥

दो० महाराज इन पांच में, करूं एक की सेव।
तासे मुक्ती पाइये, पायो मुक्ति सुदेव॥

छन्दछैया परमहंस बोले सुनु भाई निश्चयकरकेकहिये।
एक देवकानामधरो तुम बिधिउपासनागहिये॥
यह भी याद राखना भाई तुम आगेकहिआये।

कलिमें केवल मुक्ति नामसे नामकहौसोगाये॥
महाराज मेरी अब शंकी कोई आपन जानै।
अब उत्तरकोईनहिंआवै आपहिकहौबखानै॥
आपकृपाकरिबोधदीजिये और न कोईउपाये।
सुरतिशब्दकोसन्त बखानेसोभी कहियेगाये॥
परमहंस बोले सुनुभाई महिमा नाम सुनीजै।
सुमिरणपहिलेकरैनामकोनामीप्रकटजुकीजै॥
नामीनाम भेद नहिं कोई नाम सर्वज्ञबखानै।
बिनानामनामीनहिंप्रकटैनामसोसत्यसमानै॥
कुण्डलिया सद्गुरु राम सुनाम है सो सर्वज्ञ अतोल।
व्यापकव्याप्यसोजानियेमहिमाअगमअमोल॥
महिमा अगम अमोल नाम सों सर्व पसारा।
जहां नाम को जाप वहीं नामी नहिं न्यारा॥
सूत्रमाहिं जो बस्त्र बस्त्र में सूत्र रहाई।
सत्य रहै सब ठौर गुरू सब भेद लखाई॥
राम सर्व में रमिरहा घटघट आवै बोल।
सद्गुरु राम सो नामहै महिमा अगम अतोल॥
नामी नामहि माहिं है नाम सुनामी जान।
नाम बिना नहिं पाइये नामी का अस्थान॥
नामीका अस्थान नाम सर्वज्ञ सुजानो।
सूरज सूर्यप्रकाश सूर्यसे भिन्न न मानो॥
बिनानाम के जाप प्रकट नामी नहिं होवै।
नामी माहीं नाम जापुकरि हृदय में जोवै॥
सतचित आनँदरूप हैं सद्गुरु राम समान।
नामी नामहिं माहिंहै नाम सुनामी जान॥

सत्य सत्य सो सत्य है गौतमरूप प्रकाश।
राम रमासो रमिरहा जल थल पूर अकाश॥
जल थल पूर अकाश सद्गुरू राम सुजानो।
भेदाभेद न कोइ दृष्टिबिन नाहिं दिखानो॥
सूरज को परकाश सर्व को दीखै भाई।
उल्लू नयनन दोष प्रकट दिन राति कराई॥
जीव हृदय अज्ञानहै नाम प्रकट नहिं भास।
सत्य सत्य सो सत्यहै गौतमरूप प्रकास॥
जो कोइ सुमिरै नामको नामी परकट होय।
नामी वह सर्वज्ञ है नामी नाम न दोय॥
नामी नाम न दोय नामसे नामी पावै।
नाम न जानै मूल नाहिं नामी प्रकटावै॥
अलख लक्ष्यके बीच नाम कहिये सो साखी।
वारपारहै नाम कियो नामी बश भाखी॥
रघुनाथ सद्गुरू रामजी व्यापकव्याप्य लखोय।
जो कोइ सुमिरै नामको नामी परकट होय॥
रूपनाम आधीनहै रूप विना नहिं नाम।
रूप न पावै नाम विन सतचित सद्गुरु राम॥
सतचित सद्गुरु राम वेद अरु सन्त पुकारा।
है अखण्ड भरिपूरि सर्वमय सव के पारा॥
नाम पुकारो आय तुरत नामी चलिआवै।
नाम न होवै याद नाहिं नामी को पावै॥
रघुनाथ सद्गुरू रामजी घट घट पूरण धाम।
रूपनाम आधीनहै रूपविना नहिंनाम॥
परोक्षरहा सो प्रकटहै प्रकट परोक्ष सुमान।

परोक्ष प्रकट करि पाइये नामी नाम सुजान ॥
नामी नाम सुजान नीर जस पृथ्वी माहीं ।
कहीं दूरि कहिं निकट बिना खोदे नहिं पाहीं ॥
ग़ाफ़िल से है दूरि निकट चैतन्य के मानो ।
घट घट में भरिपूरि न तिल भरि खाली जानो ॥
रघुनाथ सद्गुरु रामजी मूलमंत्र है जान ।
परोक्षरहा सो प्रकट है प्रकट परोक्ष सो मान ॥
दो० नामी व्यापक नाम में, नामसो नामी एक ।
व्यापक अग्निसोकाष्ठमें, गुरुमुखकरतविवेक ॥
नाम विवेकी जो भये, तिनने पायो सार ।
रघुनाथ घाट घट भीतरे, नामवार अरु पार ॥

छंदत्रिभंगी ॥

गुरुपद निज मूला काटैशूला भ्रमजन भूला गगनगिरा ।
जब निरखिनिहारी सुरतिसिधारी प्रेमपियारी मनैफिरा ॥
सुरति पद्मपकाई श्यामसमाई घन गाहिराई झलकझरै ।
रघुनाथ बिचारी दीन पुकारी गुरू सम्हारी भई परै ॥
कोटरा परमहंस बोले सुनु भाई तुम ऐसा कहि आयेहो ।
तुमउपासनाखण्डनकरतेहमनहिं खण्डनगायेहो ॥
हम उपासनाखण्डन कबहूं तीनिकालनहिंकरतेहैं ।
साधनहैउपासनाफलहै ज्ञानशुद्धाहितचितधरतेहैं ॥
जब निर्गुणनिष्कामउपासक तब मनशुद्धीपावैहै ।
ज्ञान प्राप्ती होवै तबहीं केवल मुक्ति कहावैहै ॥
फिर अस्थूल न सूक्षमतनकछु धरनापड़े न भाईरे ।
सद्गुरु रामकृपा रघुनाथ कहै रघुनाथ सुनाईरे ॥
जबतकनहींउपासनानिर्गुण अन्तरवृत्ति न होवैरे ।

ज्ञानप्राप्त रूपनहिं पावै मन घट उलटि न जोवैरे ॥
जबतक इसका मननहिंलागै नाम शब्दकेमाहींरे ।
तबतक अन्तरवृत्ति न प्रापतकठिन लक्ष्यहै भाईरे॥
अन्तरवृत्ति कियेबिन इसको जीवन्मुक्त न होवैरे ।
सुख नहिं मुक्तिकी प्रापती आशा बंधन जोवैरे ॥
गीता गर्गमाहिं यह भाष्यो कहि श्लोक सुनावोंरे ।
सद्गुरु रामकृपा रघुनाथै बन्धनमूल नशावोंरे ॥

श्लो० नानाशास्त्रञ्च पठते नानादेवान्प्रपूजयेत् ॥
आत्मज्ञानंविना पार्थ ! सर्वकर्मनिरर्थकम् १

कोटरा कर्मउपासना सगुण भाई निर्गुणके सबसाधनरे ।
पर मनुष्य भूलै सगुण में फँसे रहै भव बाधनरे ॥
अपने अपने इष्ट पक्ष मों करते वादविवादैरे ।
खोवै जन्म भेद नहिं जानै बिन विवेक भय आँधैरे॥
कछु विवेक अन्तरमें होतो तो उपास्य सर्वज्ञारे ।
अपना देव व्यापि सर्वज्ञा अंगदेव अल्पज्ञारे ॥
सब विवाद मिटिजावैं भाई निज उपास्यको जानैरे।
सर्वदेव उस अंग समाने और न दूजा मानैरे॥
अरु देखो कलियुगमें भाई जीवनके हितकारीरे ।
जीवन के उद्धार करनको सन्तन दया विचारीरे॥
मार्ग सुगम सुबताया भाई जो जन लावै निश्चयरे ।
मोक्षप्राप्त सहजै में होई रूप आपनो पावैरे ॥
महाराज ज्ञानी का निश्चय कौन देवको मानैरे ।
परमहंस सिद्धान्त कहें अवसुनो भेद यह जानैरे ॥

चौ० पूरणब्रह्म ज्ञान जब होई । दूजा देव न मानै कोई ॥
निज स्वरूप सबमें दरशाना । एकौ ब्रह्मरूप सबजाना ॥

कल्पित सब जग स्वप्न समाना। जन्ममरणभयभरमनशाना॥
समदृष्टी ज्ञानी है जोई। ताकर आवागमन न होई॥
भक्ति करै जो देवन केरी। ताको रहै वासना घेरी॥
दृढ़ आशा देवन में लावै। आशावश ताके ढिगजावै॥
पुण्य क्षीणहोवै जब भाई। तबवहमृत्युलोकहिपुनिआई॥
निजस्वरूप दर्शय नहिं जबलौं। आवागमनमिटैनहिंतबलौं॥
चञ्चलता विक्षेप नशाना। पूरणब्रह्म ज्ञान दरशाना॥
स्वामी यक सन्देह अपारा। ज्ञानीकसकीन्ह्योव्यवहारा॥
जग असत्य मिथ्या जब होई। फिरव्यवहारबनैनहिं कोई॥
सुनु याका सन्देह मिटाऊं। तेरे बोध हेतु समझाऊं॥
दृढ़ आशा जाकी जा माहीं। सोताकोसतिसतिदर्शाहीं॥
ज्यों बाजीगर खेल बनावैं। छोटे बड़े सबै उठि धावैं॥
अज्ञानी नर देखै जाई। सत्यमानिनिश्चयकरिभाई॥
ज्ञानवान देखै जो कोई। मिथ्यालखै खेल वह सोई॥
बालक सम अज्ञानी होई। सत्य जानि मानै तेहिसोई॥
ऐसे अज्ञानी व्यवहारा। जगको सत्यमानि उरधारा॥
ज्ञानी जग मिथ्या सब जानै। हानिलाभ तामें नहिं मानै॥
मिथ्या जानि करै जो भाई। तामें हानि कहौ कस पाई॥
दो० सहनत्यागिदोउत्यागिकै, द्वैत कल्पना नास।
एकहि व्यापक पूर है, दूरिभयो आभास॥
चौ० कच्चा भुना अन्न जस होई। देखतमें एकहि सम सोई॥
रहै अकार दोउ कर भाई। अंकुरउत्पाति बीजनशाई॥
भूने में अंकुर नहिं जामी। आगेकी उत्पतिभइहानी॥
कच्चे में अंकुर उपजावै। महिजलमिलिउपजैनशिजावै॥
अंकुर बीज बासना होई। जग उपजावन हेतू सोई॥

जगको सत्यसत्य जिनमाना। दूजो दृढ़कर इच्छा ठाना॥
उपजै बिनशै सो जग माहीं। आपी अपनेहाथ नशाहीं॥
ज्ञानी बीज बासना नाशै। जगभ्रमवतसोताकोभाशै॥
ज्ञानी एक ब्रह्म सब जानै। दूजी दृष्टि नहीं मन आनै॥
दो० मृगतृष्णाको नीर ज्यों, दरशै जलहि समानि।
बृन्दाबन वह जल नहीं, कसडूबनकी हानि॥
अन्य पुरुषकी दृष्टिमें, जग व्यवहार लखाय।
बृन्दाबन जब जगनहीं, कौन व्यवहार बताय॥
चौ० हेमहराज सत्य सब भाषा। ब्रह्मज्ञान बिन बन्ध न नाषा॥
भ्रान्ति दूरनहिं आन उपाई। ब्रह्मज्ञान निजरूप लखाई॥
मैंने भल प्रकार करजाना। भेदरहितनिजरूपसोमाना॥
सजातिबिजातिसुगतिजुभेदा। सबसे रहित रूप निरवेदा॥
सो० अनिर्वाच्य है मूल, रूप अनामी जो धरै।
जन्मादिकही शूल, बृन्दाबन ज्ञानी तरै॥
दो० ऊपर नीचे कलपना, यही अज्ञानस्वरूप।
मायापदकोत्यागकरि, बृन्दाबन लखु रूप॥
सर्वलोकके पारलखि, अकहिअनाद सम्हार।
बृन्दाबन पूरण लखो, अमररूप आधार॥
सो० अलखअगमकेपार, देश अनामी निरखकर।
अनिर्वाच्य से न्यार, सद्गुरुरामसतचित्तधर॥
पूरण पदको नाम, निकट आपने ताहि लख।
मायाकृत को नाम, ताको मनसे दूर रख॥
मूलतिमिर भयो दूर, भूल भर्म जातोरह्यो।
बृन्दावन में पूर, आपन लख आपै रह्यो॥
आरती॥ सद्गुरु रामकी आरति कीजै। बृन्दावन जो

शरण लीजै ॥ चेतनराम सब सन्त लखावा। सद्गुरु रामनाम रस पीजै ॥ शब्दका थालसत्र पालंगी। अलख लोक तामें दीप धरीजै ॥ अगमलोकबाती बटिडाली। लोक अनामी घिरत रखीजै ॥ अजर लोक तामूल धराओ। अमरापुर कापूर करीजै ॥ लोक अनादी तिरगुण रूपा। जाको लैकर मालगुहीजै ॥ कर्म भक्ति मिलि चौर ढुलावैं। निष्कामभक्ति भोग धरिदीजै ॥ कोटिसूरजी पुरुष जहँ ठाढ़े। अलख अगम दरशनरस पीजै ॥ पुरुषअनामीऔअजराजी। अमर अनादी लखमनभीजै॥स्वर्गवैकुण्ठ आदि जो धामा। ब्रह्मादिक जहँ बास करीजै ॥ चेतन चितकर रूपचितारा। बलिहारी यही शब्द कहीजै॥ सद्गुरु रामकी चरण परशो। ज्ञानप्रकाशी ज्योति जगीजै ॥ सभी पुरुष लै आरति कीन्हीं। तुम्हीं तुम्हीं ध्वनि यही सुनीजै ॥ महा आरती अद्भुत गाई। ज्ञानी गुरु से भेद लहीजै॥ रूप अद्वैत बिलासहि जानो। सद्गुरु राम बिना सब छीजै ॥ रघुनाथ गुरुशरण बड़भागी। पूरण सद्गुरु राम लखीजै ॥

सो० दूरिभयो भयमूल, सद्गुरु रामके दरशकरि।
लखानिजातमरूप, सत्‌चित् आनन्दीरह्यो ॥

इति॥

बिहारबृन्दावन ॥



अथ पाँचवांभाग ॥

१ ॐ सत्यनाम सद्गुरु-समर्थदीनदयालु ॥

दो० नाद वेदकी आदिहै, गगनमाहिं भरपूर ।
बृन्दाबन सुखधाम है, बाजै अनहदतूर ॥

नादके ध्यानीका जो मिलना प्रेमी पुरुष से जिसका वृत्तान्त चौथेभागके अन्तमें आयाहै महाराज परमहंस जी से जिन्होंने चौथेभागमें अद्वैतज्ञानको सिद्ध कियाहै दण्डवत् प्रणाम करके पूछताहुआ कि महाराज बहुत से सन्त महात्माओं ने मोक्षको नादके ध्यानसे कहाहै कहिये नादके ध्यानोंको मोक्षकी प्राप्तिहै या क्या ? और इस समयमें इस मार्गकी सिद्धता होसक्तीहै या क्या ? परन्तु महाराज दयाकरिके पहिले यह समझा दीजिये कि यह मन जगत्के विकारोंसे कैसे हटे परमहंसजीने कहा सुनो जगत्में बड़ा विकार इच्छा है सो जब यह मनुष्य जगत्के पदार्थों को देखै है या उनका वृत्तान्त सुनै है तो उनको सुखदायी जानकर उनके पानेकी इच्छा करताहै जो कदाचित् प्राप्तहुये तो कुछ दिन विशेष सुख पावै है और जो प्राप्त न हुये तो दुःखी रहताहै और जो पदार्थ मिलजाता है सो स्थिर नहीं रहता है उसके जानेका दुःख सहताहै और जो कदाचित् कोई पदार्थ बहुत काल रहाभी तो उसका सुख समान हो

जाताहै फिर और दूसरे विशेष सुखकी इच्छा करकर तपा करताहै और जो पदार्थ पासहै उसका सुख विस्मरण होजाताहै और देखो पदार्थोंकी प्राप्ति से जो सुख उपजैहै सो बिजलीकी चमकके समानहै और जो सुख बिचारकरके प्राप्त होताहै वह पूनो के चांदकी उजियाली के सदृशहै बिजली की चमक में उजियाला विशेषहै पर स्थिर नहीं चांदका उजियाला समान पर स्थिरहै सो विशेष सुख जो पदार्थों से मिलताहै सो ठहरता नहीं इससुखको तुम ऐसा जानो जैसे झूठी पोत की झलक और समान सुख ऐसाहै जैसे सच्चे मोतीकी आब सो मूर्ख पोतकी झलकको देखकर मोहितहोजाते हैं और अन्तको दुःखपाते हैं और जो सावधान पुरुषहैं वह मोतीको उत्तम जानैहैं और पोतकी प्राप्ति व हानिमें सुख दुःख नहीं मानै हैं अब तात्पर्य यह निकला कि जगत्के पदार्थोंकी इच्छा दुःखका मूल है सो बहुत करके पदार्थों के देखने या उनकी प्रशंसा सुनने से उपजै है सो जिस पुरुषमें वैराग्य होगा और कुसंगी न होगा उस पुरुष के विशेष सुखकी इच्छा उत्पन्न न होगी क्योंकि उसका समय सत्सङ्ग ध्यान बिचार में व्यतीत होगा जिनकी ऐसी रहनहै उनको सदा सुखकी प्राप्ति है और उन में ही नाम रूप स्थान और अवधि वैराग्य सन्तोषकी विदितहोगी और प्रेम विरह से हर समय चैतन्य होगा और भाई ! सब से बढ़के रोग मान बड़ाई का है इस से बचना बड़ेही शूरमा का काम है ॥
दो० कामगयो तो क्रोध न जाई, क्रोधगयो तो लोभा।

लोभगयोतोमोहनजाई, मोहगयोतोमानबड़ाईशोभा॥

कोई साधुथे मनसेइच्छा मानबड़ाईकी थी किसीदेश को गये वहां महाराजकी बड़ी प्रशंसा हुई उस देश का राजा भी आया अब महाराजको बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ यहां तक कि महाराज दूधाधारी थे एक सेर दूध का आहारथा सो जिस दिन राजा आये उस दिन महाराजसे पावसेर दूधभी न पियागया क्योंकिं मान बड़ाई के आनन्द से पेट भरगया फिर किसी कारणसे राजा का आना न हुआ अब महाराज बड़ेशोच और फ़िक्र में हैं भीतर आगबलै है अब महाराज की इतनी भूख बढ़गई कि सेरभर चनेसे भी पेट नहीं भरता सो भाई यह मान बड़ाई बड़ा रोग है मालिक से बिमुख करावै है अहंकार बढ़ावैहै और प्राप्तिसे कोरा रक्खैहै इसका ध्यान हरसमय रखनाचाहिये जब यह न होगी तोदुःख पास न आवैगा महाराज धन्यहौ एक सन्देह और दूर कीजिये ऐसा कहैहैं कि सत्सङ्ग में जाति पांतिका कुछ विचार न करना चाहिये सुनो पलटूदासजीका वचनहै॥

कुण्डलिया—सर्बङ्गी सोई नाम का रहनी सहित बिवेक।
पलटू ऊपर राखै कुल धरम भीतर राखै एक॥
भीतर राखै एक एक कर सबको जानै।
खान पियन में जुदा नहीं एकै में सानै॥
लिये रहै मर्याद तजै नाहिं नेम अचारा।
धर्मसनातनशुभौ अशुभ दोउ करत विचारा॥
बोलै शब्द अघोर रहै अद्वैत अभङ्गी।
निर्मल कारज करै सोइ पूग सर्बङ्गी॥

और जो तुमने कहा सो भी सत्य है हज़ारों वचन वैसे भी हैं सो इसका निर्णय अपनी बुद्धिमें यह आता है कि वचन अधिकारी प्रतिहै पर यह निस्सन्देह है कि नेम आचार ऊपरका कर्महै भाई अपनासा दुःख दूसरे का भी समझो जीवकी रक्षा करो भूखेका पालन करो मालिक की याद में रहो ॥

शब्द—नापढ़ पापदी पट्टी उमर दिना दिन घट्टी वे।
भूखेनंगेनूबारी देंदाहीरहैदावे सुफल उनादीखट्टी॥
धीआपुतादेवारी कारजकरदावभरदाजगदीचट्टी।
शाहहुसेनफ़क़ीर साईंदा फूंक कपट दी टट्टी॥

अब कुछ बचन पारस भागके कहते हैं मनुष्य यह जानता है कि मरना सत्य है परन्तु हँसने खेलने में रचाहुआ है यह जगत् बिनाशीहै तोभी इसपर भरोसा करताहै सब काम हुक्मके अनुसारहुये हैं फिर गईहुई का शोच करताहै दिन गुज़रे जाते हैं और मालके बटोरनेमें उमर खोरहाहै नरककी अग्नि अत्यन्त कठोर है और फिर पाप करताहै स्वर्ग सत्यहै परन्तु धर्मके काम में देर कररहाहै कर्ता एकहै और उसका कोई शरीक नहीं है और प्रीति दूसरे के साथकरता है ऐसे मनुष्योंकी दशा देखकर बड़ा पश्चात्तापहै अफ़्सोस और धिक्कार है कि प्रत्यक्ष संसारके संशयका मूल देखताहै और फिर भूलताहै ऐसेपुरुषोंसे मालिक बचायेरहै एकसाईं का बचन है कि मैंने चारहज़ार पोथियां पढ़ीहैं उनमेंसे चार बातें अंगीकारकी हैं दिनभरमें उन बातों को चारहज़ार बेर पढ़ताहूं १ ऐ मन जो बन्दगी साईंकी करनीहै तो करदिये

नहींतो उसका दिया रिज़क मत खा २ ऐ मन जो उसके में राज़ी न होवै तो और दूसरा साईं ढूंढ़ कि बहुतसा देवै ३ ऐ मन जो कर्म ईश्वरने निषेध किये हैं उनसे बच नहीं तो उसके देशते बाहर चलाजा ४ ऐ मन जो तू पाप किया चाहै तो पहिले कोई जगह उत्पन्न करले जहां तुझे ईश्वर न देखे नहीं तो पाप मत कर एक और फ़कीर का बचन है जो बन्दगी कर सक्ताहूं तो अपराध किस वास्ते करूं, जो मैं सत्य बोल सक्ताहूं तो झूठ काहेको बोलूं,जो हलाल का खानामिले तो हरामका किसवास्ते खाऊं, जो मैं अपने अवगुणों पर दृष्टि करसक्ताहूं तो दूसरोंके अवगुण क्यों ढूंढूं, जो मालिककी यादमेंहूं तो दुनिया से यारी क्यों करूं, किसी परमार्थी किताब का बचनहै कर्ता कहै है कि ऐ बेटे आदमके तू नहीं डरता मेरी बादशाहत सदा स्थिर है खानेका भय मतकर मेरा ख़ज़ाना भरपूरहै जो तेराकाम अटकै मेरा ध्यानकर मैं तेराकाम भले प्रकार कर दूंगा मैं तुझको मित्रसमान रखताहूं तू भी मेराहो और मुझे दोस्त रक्खे मुझसे भयरख मैंने तुझको मिट्टी और पानीको बूंदसे बनाया है इसमें मुझको कुछ यत्न नहीं करनापड़ा सो तू रोटीके पैदाकरनेका शोच क्यों करताहै जो कुछ कि उत्पन्न किया है सब तेरे लिये और तुझको अपनी बन्दगीके लिये सो तू इनका गुलाम हुआ तूने जानबूझके अपने को मुझसे हटाया सब जानवर और आदमी अपने मन के सुख के हेतु तुझको ढूंढ़ते हैं और मैं तुझको चाहताहूं सो तेरे भलेके वास्ते और तू मुझसे भागता है

अपनेमनके लिये तू मेरे ऊपर क्रोध करताहै परन्तु मेरे वास्ते अपने मनके ऊपर क्रोध नहीं करता तेरा काम बन्दगी करनेका है मेरा काम भोजन पहुँचानेका तू बन्दगी भूलताहै पर मैं भोजन देता रहता हूं तू कलके वास्ते मुझसे भोजन मांगताहै परमैं कलकेलिये कर्म नहीं मांगता फ़क़ीरोंके बचनहैं कि विद्वानोंको तीनवस्तु कठिनहैं १ संसार जो परमार्थ में हानि करताहै २ काल धर्मसे रोकताहै ३ मन चञ्चल ईश्वरसे सन्मुख नहींहोने देता लोगदुनियाके पीछेपड़े फिरतेहैं पर यह नहीं जानते कि मौत उनके पीछे लगी फिरती है अचानक मारलेगी जो मालिकको भूल कर पाप करते हैं वो यह नहीं जानते कि पाप का फल दुःख होगा लोग हँसदेते हैं यह नहींजानते कि इस गल ते साईं राज़ीहै या नहीं जो मनुष्य साईं से बिमुखहैं और दुनिया से सन्मुख हैं जब साईंके द्वारमें जावैंगे तब एक बुढ़िया माई जिसका मुँह काला बिल्ली कीसी आंखैं बड़े बड़े दांत ऊपरका ओठ तले को लटकाहुआ और नीचेका ओठ ऊपरको चढ़ा हुआ हाथ पैर नीले महाभयानक वहां खड़ी होगी उस समय दरगाहसे आवाज़ आवैगी कि हे लोगो इसको पहिचानतेहो तब सब कहैंगे कि इस हत्यारी चुड़ैल से बचा हम इसे नहींजानते दूसरी आवाज़होगी कि यह तुम्हारी प्यारी दुनिया है जिसकी तुम सदा प्रशंसा करते रहे और इसके हेतु ग़रीबों को दुःख देते रहे धर्मको बेचतेरहे अपना पेट पोषण भलीप्रकार से करतेरहे साईं को सर्वस बिसार दिया सो यह वह दुनिया

है जो तुम्हारी अत्यन्त प्यारी थी तब हुक्म होगा कि दुनियाको नरक में डालदो उस समय दुनिया पुकारैगी कि कहां हैं मेरे पुराने दिली साथी संगी और मेरे आज्ञाकारी तब हुक्म होगा सत्य है इसके प्यारोंको भी इसके साथ नरकमें बास दो जो दोनों को बिछोह का दुःख न हो बचन है जो दोनों लोकों का राज्य मिले तो भी राज़ी न हो क्योंकि यह स्थिर नहीं जो दोनों लोकों का राज्य प्राप्तहो और वह छीना जावे तो उदास न हो तब दौलतमन्द है दुनियाकी बड़ाई पाकर भूलैनहीं भूलना काम कमहिम्मतोंका है एक फ़क़ीर साहब ने खुश होकर किसी सेवकको आशीर्बाद दिया साईं तुझ को हिम्मत देवे कि तू दुनिया को दोस्त न करै और कंगाली को धन कर जान और दुःख को सुखकर मान और फ़क़ीरों की संगतिकर और खुवारीको बड़ाईकरके मान और जीते को मरना पहिचान मालिकके भरोसे गुज़रानकर बचन है कि जो छः स्थानों में दुनिया की बात करै तो तीन बर्ष की बन्दगी जाती रहै धर्मशाला, बिद्वानों के सम्मुख, मुर्दे के पीछे, समाधों के पास, पिछली रात, भजनके समय, एक समय खुदाने मूसा पैग़म्बरसे फ़र्माया कि जब तेरे पास कंगाल आवे तो खुशीहो यह नेकों की निशानी है और जिस समय दौलतमन्द आवे तो जान कोई गुनाह कियाहै दुनियामें आठ बातें बहुत भलीहैं स्त्रीको लाज, जवानको तोबह, बिद्वान्से बन्दगी, धनवान् उदारहो, मित्रों में प्यारहो, सुन्दरसे निर्बाहहो, राजा से न्याय, फ़क़ीरोंसे परमार्थ,

और यहभी कहाहै कि बिना लाज स्त्री ऐसी है जैसे भोजन बिना नोनका, जवानहोकर तोबह न करे सीप है बिना मोती के, विद्वान् बन्दगी न करै, बृक्षहै बिना फलका, दौलतमन्द उदार न हो, नाला है बिना पानी, मित्रसे प्यार नहीं, जान देह है बिना चैतन्य, सुन्दर है और वफ़ा नहीं, अर्थात् निर्वाह नहीं जान कि कमान है बिना चिल्लेकी, बादशाह में न्याय नहीं जान बादल है बिना मेहका, फ़क़ीरहै बिना परमार्थके जान निश्चय मान दियाहै पर प्रकाशसे शून्यहै साईंने फ़र्माया है कि टूटे दिल में मेराबास है लुक़मान हकीम का बचन है जिस समय नमाज़ पढ़ै दिलपर दृष्टिरख, जब साधू लोगोंकी संगति में होवै ज़बान पर निगाह रख, खानेके समय हलक़पर निगाह रख, जब घरआवै आंखों पर निगाह रख, साईंको मत भूल, मौतको यादरख, किसी की नेकीको मत भूल, बचन है दुनिया सदा जवान है, किसी फ़क़ीरने पूछा कि हे दुनिया तू ने बहुतसे ख़सम किये पर किस कारण से जवान बनी रही दुनिया ने जवाब दिया कि जो मर्द थे वो मुझसे भागते रहे और जो नामर्दथे वह मुझपर मरतेरहे इसलिये मैं जवान बनीरही बचनहै कि साईं को सदा सम्मुख जानके डरता रहै दुनिया से भाग तो दुनिया का प्यारा होगा दौलत-मन्द वह है कि जो किसीसे कुछ न चाहै हराम अर्थात् अनर्थ का खाना मत खा तेरी दुआ क़बूल होगी जो भलाहुआ चाहता है तो मा बापको राज़ी रख बचनहै कि चिन्ता उमरको खाती है कंजूसता धनकी हानि

करती है निन्दा बन्दगीको खाती है तोबह गुनाह को नाश करतीहै पुण्य आपदाको दूर करताहै बचन है कि पांच नसीहत लड़कोंसे सीख १ रोटीकाशोच मत करिये २ जब दुःख होवे तब मालिक पर क्रोध मतकर ३ जो लड़ाई होजाय तो जल्दी मेलकर ४ जो कोई धमकावे तो रोदे ५ कुछ ज़खीरा मत रख महाराज धन्य हो बड़े अमोलक बचन सुनाये महाराज आपने फ़र्माया कि सर्व जीवों पर दया करै पर महाराज जीवका मारना तो कुरान अंजील और पुराण में लिखा है यह कैसे सुनो कुरान आदि में यह बात कहीं एक दो जगह लिखी होगी सो भी उसमें सन्देह है कि किसी ने पीछे से लिख दिया है और दया और जीवकी रक्षा हज़ारों जगह लिखी हैं अब हज़ार जगह की बात माननी योग्य है कि एक जगह की दूसरे हम पूछते हैं कि जो और हज़ारों आज्ञा कुरान पुराण में लिखी हैं उनका भी कोई निर्वाह करता है या केवल मांस खानाही लिखा है भला जो और अंजील कुरान पुराण में और शिक्षा लिखी हैं तो उन सब का धारण हो तो मांस भी खावो जो पाप का बदला मिलैगा तो पुण्य क्या व्यर्थ जायगा अब इसको हम क्या करैं जो शुभ बातें तो सब त्यागदीं और स्वाद के कारण अशुभ को ग्रहण किया अब क्या हिन्दू क्या मुसलमान क्या और यह कहते हैं कि ईश्वर की आज्ञा का निर्वाह इस समय में नहीं होसक्ता है पर जीवहिंसा उसकी आज्ञा के अनुसार करना बनता है कहिये इस समझ पर क्या

और यहभी कहाहै कि बिना लाज स्त्री ऐसी है जैसे भोजन बिना नोनका, जवानहोकर तोबह न करे सीप है बिना मोती के, विद्वान् बन्दगी न करे, बृक्षहै बिना फलका, दौलतमन्द उदार न हो, नाला है बिना पानी, मित्रसे प्यार नहीं, जान देह है बिना चैतन्य, सुन्दर है और वफ़ा नहीं, अर्थात् निर्वाह नहीं जान कि कमान है बिना चिल्लेकी, बादशाह में न्याय नहीं जान बादल है बिना मेहका, फ़क़ीरहै बिना परमार्थके जान निश्चय मान दियाहै पर प्रकाशसे शून्यहै साईंने फ़र्माया है कि टूटे दिल में मेराबास है लुक़मान हकीम का बचन है जिस समय नमाज़ पढ़ै दिलपर दृष्टिरख, जब साधू लोगोंकी संगति में होवै ज़बान पर निगाह रख, खानेके समय हलक़पर निगाह रख, जब घरआवै आंखों पर निगाह रख, साईंको मत भूल, मौतको यादरख, किसी की नेकीको मत भूल, बचन है दुनिया सदा जवान है, किसी फ़क़ीरने पूछा कि हे दुनिया तू ने बहुतसे खसम किये पर किस कारण से जवान बनी रही दुनिया ने जवाब दिया कि जो मर्द थे वो मुझसे भागते रहे और जो नामर्दथे वह मुझपर मरतेरहे इसलिये मैं जवान बनीरही बचनहै कि साईं को सदा सम्मुख जानके डरता रहै दुनिया से भाग तो दुनिया का प्यारा होगा दौलत-मन्द वह है कि जो किसीसे कुछ न चाहै हराम अर्थात् अनर्थ का खाना मत खा तेरी दुआ क़बूल होगी जो भलाहुआ चाहता है तो मा बापको राज़ी रख बचनहै कि चिन्ता उमरको खाती है कंजूसता धनकी हानि

करती है निन्दा बन्दगीको खाती है तोबह गुनाह को नाश करतीहै पुण्य आपदाको दूर करताहै बचन है कि पांच नसीहत लड़कोंसे सीख १ रोटीकाशोच मत करिये २ जब दुःख होवे तब मालिक पर क्रोध मतकर ३ जो लड़ाई होजाय तो जल्दी मेलकर ४ जो कोई धमकावे तो रोदे ५ कुछ ज़खीरा मत रख महाराज धन्य हो बड़े अमोलक बचन सुनाये महाराज आपने फ़र्माया कि सर्व जीवों पर दया करै पर महाराज जीवका मारना तो कुरान अंजील और पुराण में लिखा है यह कैसे सुनो कुरान आदि में यह बात कहीं एक दो जगह लिखी होगी सो भी उसमें सन्देह है कि किसी ने पीछे से लिख दिया है और दया और जीवकी रक्षा हज़ारों जगह लिखी हैं अब हज़ार जगह की बात माननी योग्य है कि एक जगह की दूसरे हम पूछते हैं कि जो और हज़ारों आज्ञा कुरान पुराण में लिखी हैं उनका भी कोई निर्वाह करता है या केवल मांस खानाही लिखा है भला जो और अंजील कुरान पुराण में और शिक्षा लिखी हैं तो उन सब का धारण हो तो मांस भी खावो जो पाप का बदला मिलैगा तो पुण्य क्या व्यर्थ जायगा अब इसको हम क्या करैं जो शुभ बातें तो सब त्यागदीं और स्वाद के कारण अशुभ को ग्रहण किया अब क्या हिन्दू क्या मुसलमान क्या और यह कहते हैं कि ईश्वर की आज्ञा का निर्वाह इस समय में नहीं होसक्ता है पर जीवहिंसा उसकी आज्ञा के अनुसार करना बनता है कहिये इस समझ पर क्या

धूलडाले भाई पहिले तो जीव हिंसाकी आज्ञाही में धोखा है दूसरे उस समय के लिये हो कि जब मनुष्य भी पशुही थे कुछ बुद्धि न थी नाज नहीं होता था और अब वह समय नहीं है महाराज मैंने सुना है कि जीव नहीं मरता और देह जड़ है सत्य है परन्तु जब मारना खाना है तब जीव प्राण को कहते हैं प्राण का देही से बियोग मरना है सो महापाप है बिना प्राणकी वस्तु अन्नआदि का खाना दोष नहीं हां जिसको अपने प्राण की सुधि न रहै वह चाहै सो करै और जबतक अपने प्राणकी गम है तबतक दूसरे के प्राण का बियोग करना महाहत्या है महाराज ॐ सोहं का जपना कैसा है वह स्वार्थ परमार्थ दोनों का कार्य बनाता है सब महात्माओं ने बड़ी महिमा की है देखो ॐकी महिमा गीता में कही है ॥

श्लोक ॥ॐमित्येकाक्षरं ब्रह्मव्याहरन्मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमाङ्गतिम् १ ॥

सोहं अजपा है इनका ध्यान मुख्य है महाराज वाहगुरु का जाप कैसा है वाह अत्यन्त उत्तम है देखो वाहगुरु चार अक्षर हैं वाहगुरु सत्ययुग में वासुदेव का जाप था सो व अक्षर से होता है द्वापर में हरका जाप त्रेता में गोबिन्द का जाप और कलियुग में राम का जापहै हरका जाप ह से गोबिन्द का जाप ग से राम का जाप र से चारोंयुगों का जाप वाहगुरु में है दूसरे वाह के अर्थ यह हैं गुरुपद का अर्थ यह है गु नाम तिमिर का रु नाम प्रकाश का जो तिमिर अर्थात् अज्ञान

को दूरकरके प्रकाश करै सो गुरू और जो दीक्षा का देनेवाला है उसे भी गुरू कहते हैं और गुरूको ईश्वर कहा है अब देखो वाहगुरू कहने में ईश्वर तक का धन्यवाद हुआ और मुसल्मानों की किताब में लिखा है कि वाह आवाज़ ईश्वर की है और आदि में यही शब्दहुये हैं महाराज छायापुरुष का ध्यान क्या होता है सुनो पहिले दिन में और पीछे रात में भी तिरमिरे देखा करते हैं सिद्धान्त इसका सिद्धिहै मोक्षदाता नहीं महाराज इस जगत् का तो हाल कुछ औरही है परमार्थ को कोई नहीं समझता परमहंस ने कहा ठीक है सुनो जगत्का सुख प्रसिद्ध और स्थूलहै और परमार्थका सुख गुप्त और झीनाहै सो जिस पुरुषकी बुद्धि सुकर्म करिकै निर्मल हुई है उसको परमार्थ के सुखकी भान होती है परन्तु अब जीवों की बुद्धि मोटी है इसीकारण से झीने पदार्थ में प्रवेश करनेयोग्य नहीं होती हां सत्पुरुषों का सत्संग प्राप्तहो तो कार्य सहजमें बनजाय महाराज मेरे पहिले प्रश्नका जवाब दीजिये परमहंसने कहा कि नाद की उपासना सब उपासनाओं से उत्तमहै और अन्तको साक्षात् ज्ञानकी प्राप्ति है किन्तु इसमें इतनी श्रेष्ठताहै कि जो अनहद शब्द का ध्यान करते हैं उनकी किसी दशामें हानि नहीं होसक्ती है और जिसने उपासना की औरबातें जैसे नामका स्मरण साधु गुरु की सेवा बाणी का पाठ दयाधर्म शील सन्तोष आदि विधिपूर्वक किया है तो उसके न कोई भ्रमउत्पन्न होताहै न मनकी चञ्चलता सतातीहै और थोड़ेही समयमें अनहदशब्द सुन

खण्डन होती है क्योंकि श्रुति का यह अभिप्राय है कि (एकहूं अनेक होजाऊं) जोतुम आकाशको पहिले मानो तो यह कहना असत्य होगा और शास्त्र का कहना सब प्रकारसे सत्यहै आकाशकी उत्पत्तिसे पहिले श्रुति हुई परन्तु यह ध्यान से पहिले समझनेकी बात है कि अक्षर बिना जिह्वा और आकाशके नहीं निकल सक्ता और पुरुषके जिह्वा का होना नहीं कहा जासक्ता क्योंकिवह हाड़ मांस चर्म का बनाहुआ नहीं है इसके विशेष जब स्वामी आपही सब स्थानों पर पूर्ण और व्यापक था तो आकाश कहां था इससे ये संस्कृत के अक्षर (एकोऽहं बहु स्याम्) ब्रह्माजीके मुखसे निकले हैं और इन अक्षरोंकी मूल वेद की ऋचा हैं जिसको ब्रह्माजीने समझा उसमें अक्षर नहीं वह ध्वनिके समान है वह ध्वनि ॐकारसे उत्पन्नहुई है अब इस ध्वनि और ॐकारका मूल जो शब्द है वह सत्शब्द है वह शब्द आकाशका गुण नहीं है तथाच जिसको सद्गुरु का उपदेश हुआहै वह अनहदशब्दसे निकलकर ॐकार की ध्वनि में पहुँचकर शून्य महाशून्यकेपार सत्शब्द में पहुँचता है अब वह सत्शब्द और पुरुष एकही है बहुधा भेद नहीं और तुमने पूछा इससमय में ध्यान बनसक्ताहै या नहीं सुनो इस कलियुगमें कर्मउपासना के योग्य कोई भी नहीं बनसक्ता केवल एकनाम का स्मरण या शब्दका ध्यान यही सुगम है और प्रत्यक्ष में मनकी एकाग्रताका कारणहै और मनकी एकाग्रता और मनकी अन्तरवृत्ति हुये बिना कार्य सिद्ध नहीं हो-

कर मुख्य शब्द अर्थात् सत्शब्द में पहुँचकर सद्गुरु के स्थानमें उन्मत्त होजाताहै अर्थात् सुरति मायाके प्रपञ्च से गुज़रकर अपने निज स्वरूपमें लयहोती है और जिसने पूरी उपासना नहीं की है उसको अनहद शब्द बहुत से समयमें सुनाई देताहै और मन अत्यन्त संकल्प बिकल्प उठाया करता है चित्त जमने नहींपाता परन्तु कोई नुक़्सान की सूरत नहीं है हां वेदान्तको बिना अधिकार के सुनने से वाचिकज्ञानी होजाने का भयहै कि फिर वह मनुष्य किसी अर्थका नहीं रहता न ज्ञानहीं आया और न उपासना में मन लगाता है महाराज नादके ध्यानी तो यह कहतेहैं कि पिण्डे सो ब्रह्मण्डे और जोकि देह असत्यहै फिर महाराज देहमें शब्द किसप्रकार सत्य होसक्ता है दूसरे शब्द आकाश का गुण है सो आकाश जड़है और गुणगुणीमें रहता है इससे नाद के ध्यानी की लय आकाश में होनी चाहिये क्योंकि शब्द की लय आकाश में होगी परम-हंसने कहा सुनो जैसे आकाश ब्यापक है और देहहू में है ऐसे शब्द भी ब्यापक है और देहमें है इसरे सत्शब्दका देहमें होना साबितहै और जो तुमने कहा कि नाद के ध्यानी की लय आकाश में होनी चाहिये सुनो जो शब्द आकाशका गुण है वह शब्द नक़लीहै यथार्थ में शब्द आकाशका गुण नहीं परन्तु आकाश के कर्ता का कर्ता है देखो यह वेदकी श्रुतिहै (एकोऽहं बहु स्याम्) जो तुम कहो कि यह शब्द आकाश का गुण है तो पहिले आकाश हुआ पीछे शब्द तो श्रुति

खण्डन होती है क्योंकि श्रुति का यह अभिप्राय है कि (एकहूं अनेक होजाऊं) जोतुम आकाशको पहिले मानो तो यह कहना असत्य होगा और शास्त्र का कहना सब प्रकारसे सत्यहै आकाशकी उत्पत्तिसे पहिले श्रुति हुई परन्तु यह ध्यान से पहिले समझनेकी बात है कि अक्षर बिना जिह्वा और आकाशके नहीं निकल सक्ता और पुरुषके जिह्वा का होना नहीं कहा जासक्ता क्योंकिवह हाड़ मांस चर्म का बनाहुआ नहीं है इसके विशेष जब स्वामी आपही सब स्थानों पर पूर्ण और व्यापक था तो आकाश कहां था इससे ये संस्कृत के अक्षर (एकोऽहं बहु स्याम्) ब्रह्माजीके मुखसे निकले हैं और इन अक्षरोंकी मूल वेद की ऋचा हैं जिसको ब्रह्माजीने समझा उसमें अक्षर नहीं वह ध्वनिके समान है वह ध्वनि ॐकारसे उत्पन्नहुई है अब इस ध्वनि और ॐकारका मूल जो शब्द है वह सत्शब्द है वह शब्द आकाशका गुण नहीं है तथाच जिसको सद्गुरु का उपदेश हुआहै वह अनहदशब्दसे निकलकर ॐकार की ध्वनि में पहुँचकर शून्य महाशून्यकेपार सत्शब्द में पहुँचता है अब वह सत्शब्द और पुरुष एकही है बहुधा भेद नहीं और तुमने पूछा इससमय में ध्यान बनसक्ताहै या नहीं सुनो इस कलियुगमें कर्मउपासना के योग्य कोई भी नहीं बनसक्ता केवल एकनाम का स्मरण या शब्दका ध्यान यही सुगम है और प्रत्यक्ष में मनकी एकाग्रताका कारणहै और मनकी एकाग्रता और मनकी अन्तरवृत्ति हुये बिना कार्य सिद्ध नहीं हो-

सक्का वेद शास्त्र व महात्माओं का यही सिद्धान्त है कि मन निश्चल होवे इससे मनका निश्चल होना और क्रिया कर्मों से असंभव है किन्तु मन और भी भ्रमात्मक होजाताहै और नेती धोती प्राणायाम इस कलियुग में न्यून अवस्था और स्वल्प पराक्रम होने के कारण नहीं होसक्के और जो कि मन बहुत मलीनहै वेदान्तके श्रवणकाभी अधिकारी होना कठिनहै सत्यनाम का स्मरण और भूखे को दान और शब्द का ध्यान कलियुग के लिये उपकारी समझ के महात्माओं ने दृढ़ाया है सो बड़े प्रारब्धियों को प्राप्त होगा ॥

अरिल्ल ॥ एक आश बिश्वास कहोमुख नामरे । गृह में रहे उदास करो सबकामरे ॥ उरतुलसी की माल सुभग शिर सोहता । अरे हांरे पलटनाम भेद जब चीन्ह देख यम रोवता ॥

गुरूनानकसाहका वचन ॥

नानक सद्गुरु भेटिये जो पूरी होवे युक्ति । हसंदिया खेलंदिया पहनंदिया खानंदिया बिच होवे मुक्ति ॥

महाराज आप धन्यहौ खूबमेरे चित्तको बिश्वासित किया अब दया करिकै दोचार भजन ऐसे सुनादीजिये कि जिससे शब्द की महिमाका बृत्तान्त विदितहो अच्छा प्रेमीजी सुनो ॥

राग मलार किवार महला १ श्लोक २६ ॥

घरमें घर दिखाय दे सो सद्गुरु पुरुष सुजान । पञ्चशब्द ध्वनिकार तिहि बाजै शब्द निशान ॥ दीप लोय पाताल तहँ खण्ड मँडल हैरान । तारघोर बाजंत्र

तहँ सांच तख़्त सुल्तान ॥ सुखमन के घर राग सुनु मण्डल लवलाय । अकथकथा बिचारिये मनसामनहिं समाय ॥ उलटि कमल अमृत भरिया यह मन कतहुँ न जाय । अजपा जाप न बीसरै आदि युगादिसमाय ॥ सब सखियां पंचै मिलें गुरुमुख निज घरबास । शब्द खोजि यह घर लहै नानक ताको दास ॥

शब्द॥चुवतअमीरसभरततालजहँशब्दउठैअसमानीहो।
सरिता उमड़िसमुद्रसोखैंनहिंकुछजातबखानीहो ॥
चांद सूर्य तारागण नाहीं नहिं वहरैनिबिहानीहो ।
बाजै बीन सितार बांसुरी ररंकार मृदुबानी हो ॥
कोटिझिलमिलीजहँवहझलकैंबिनजलबरषतपानीहो ।
शिवअजविष्णुसुरेशशारदानिजनिजमतअनुसारीहो ॥
दशअवतार एकततराजेअरतुतिसहजसहानीहो ।
कहै कबीर भेदकी बातैं बिरला कोइ पहिचानीहो ॥
करिपहिचानफेरिनहिंआवै यमजुल्मीकीखानीहो ॥

शब्द॥महरम होइ सो जानै साधो ऐसा देश हमारा ।
वेद कितेक पार नहिं पावैं कहन सुननसों न्यारा ॥
जात वर्ण कुल क्रिया नाहिंनहिं संध्यानेमअचारा।
बिन जल बूंद पड़ैं जहँ भारी है मीठा नहिं खारा ॥
शून्य महल जहँ नौबत बाजै किंगरीबीनसितारा ।
बिन बादल जहँबिजुलीचमकैबिनसूरजउजियारा॥
बिनानयन जहँ मोती पोहै बिनस्वरशब्द उचारा ।
जो चलिजाय ब्रह्म यह दर्शै आगे अगमअपारा ॥
कहै कबीर वहरहन हमारीकोई बूझैगुरुमुखप्यारा॥

शब्द ॥ आदि अन्तठिकानी बातैं कहोआपनीदेखाहो ।

राह अजान पन्थको पावै त्रिकूटी घाट उतारा हो।
अबिगतनगर जाइ जहँ पहुँचे मारग बिहँग बिचारा हो॥
बायें चन्द्र सूर्य्य हैं दहिने सुषमन सुरतिसमानी हो।
सोहं सोहं शून्य में बोलै वही शब्दकी खानी हो॥
तुर्य्या बैठा जाग्रत योगी लगी उन्मनी नाड़ी हो।
इंगला पैठा सहजसमाजी पिंगला पवन अहारी हो॥
हदपर बैठा सद्गुरु बोलै बेहद बोलै चेला हो।
अजपाजाप छूटी है दुतिया अनुभव भया अकेला हो॥
सुनु सम्बत द्वादश है अठवां चारतत्त्वसे न्यारा हो।
पलटू यह टकसाली सिक्का परखैगा कोइ प्यारा हो॥

तिल्लाना॥ ततरंग रतरंग लवलाई कंज कमलपर बाजति अनहद उठतरंग धम धम धरणि दिशि निशि दिन सखि सुनि ध्वनि लागी भागभवन सुधिपाई॥ शंख मृदंग मधुर ध्वनि धधकत तादिम तादिम तुमतुम तरण। करत घोर घनघोर पपीहा पिव पलक पलक लखमाहीं॥ महल भरम मंद घर तुलसी चरण चाले चमचम चरण॥

आरती॥ यहिबिधि आरती रामकी कीजै। आत्मानन्द बार नहिं लीजै॥ तनमनचन्दन प्रेमकी माला। अनहदघण्टा दीनदयाला॥ ज्ञानका दीपक पवनकी बाती। देवनिरञ्जन पांचो पाती॥ आनँदमंगल भाव की सेवा। मनसा मन्द आतमा देवा॥ भक्ति निरन्तर में बलिहारी। दादू न जानै सेवा तुम्हारी॥

शब्द॥ जाके लग अनहद तान सोई निर्गुण नामकी।
जिकर करके शिखर हेरै फिकर रारा कारकी॥

जाकेलगैअजपागगनझलकीज्योतिदेखिबिशालकी।
मध्यमुरली मधुर बाजे बायें किंगरी सारँगी ॥
दहिने जो घंटा शंख बाजे गैबध्वनि झनकारकी ।
अकहकी यह कथा न्यारी सखा नाहीं आनहै ॥
जगजीवन पराने शोधके मिलरहे सतनाम है १

जब से अनहद घोर सुनी ।
इन्द्री थकित गलितमन हूआ आशासकलभुनी ॥
घूमतनयनाशिथिलभइकायाअमल जो सुरनसुनी।
रोमरोम आनन्दउपजकरि आलस सहजभनी ॥
मतवारे जो शब्द समाया अन्तर भीजिकनी ।
कर्म धर्म के बन्धन टूटे बिपदा सकलहनी ॥
आपा बिसरि जगत सब बिसरोकितरहे पंचजनी ।
लोक भोग सुधिरही न कोई भूले ज्ञान गनी ॥
रहे लवलीन चरणही दासा कहै शुकदेव मुनी ।
ऐसा ध्यानभाग्यसेपायेचढ़िरहेनितशिखरअनी ॥

तिल्लाना ॥ मुरलिया हमरे मन भाईलो । श्रवणसुनत गइ भूलि सुधिबुधि सप्तस्वरन और तीनि ग्रामामिलि नइनइ तान सुनाईलो ॥ रुनक झुनक घुंघुरू जहँ निरतत मुहर मुरचंग बीन सारंगी सहनाई । गति बाजत मृदंग धधकारा धिरकट धिरकट धेतला मता किड किडधा किड किडधा उलटि पलटि लखि अक्षर त्रिकुटी घाट तानादिर दिरतीम तिलाना गाईलो ॥ प्रथमघाट लखि बाट त्रिलोकेमधि ज्योति उज्यारी जगमगात धारा अमी झर वरसे । गर्जत गगन घनानना घनानना सम्मुखसदा भरिपूर शूर पीया ताके बलि बलिजाई लो ॥

राह अजान पन्थको पावै त्रिकुटी घाट उताराहो ।
अबिगतनगर जाइ जहँ पहुँचे मारग बिहँगा बिचाराहो ॥
बायेंचन्द्र सूर्य्यहैं दहिने सुषमन सुरतिसमानीहो ।
सोहं सोहं शून्य में बोलै वही शब्दकी खानीहो ॥
तुर्य्या बैठा जाग्रत योगी लगी उन्मनी नाड़ीहो ।
इंगला पैठा सहजसमाजी पिंगलापवनअहारीहो ॥
हदपर बैठा सद्गुरु बोलै बेहद बोलै चेलाहो ।
अजपाजापछूटीहै दुतियाअनुभवभयाअकेलाहो ॥
सुनु सम्बत द्वादश है अठवां चारतत्त्वसे न्याराहो ।
पलटू यह टकसालीसिक्का परखैगा कोइ प्याराहो ॥

तिल्लाना ॥ तलरंग रतरंग लवलाई कंज कमलपर बाजति अनहद उठतरंग धम धम धरणि दिशि निशि दिन सखि सुनि ध्वनिलागी भागभवन सुधिपाई ॥ शंख मृदंग मधुर ध्वनि धधकत तादिम तदिम तुमतुम तरण । करत घोर घनघोर पपीहा पिव पलक पलक लखमाहीं ॥ महल भरम मंद घर तुलसी चरण चाल चमचम चरण ॥

आरती ॥ यहिविधि आरती रामकी कीजै । आत्मानन्द बार नहिं लीजै ॥ तनमनचन्दन प्रेमकी माला । अनहदघण्टा दीनदयाला ॥ ज्ञानका दीपक पवनकी बाती । देवनिरञ्जन पांचो पाती ॥ आनँदमंगल भाव की सेवा । मनसा मन्द आतमा देवा ॥ भक्ति निरन्तर में बलिहारी । दादू न जानै सेवा तुम्हारी ॥

शब्द ॥ जाके लग अनहद तान सोई निर्गुण नामकी ।
ज़िकर करके शिखर हेरै फ़िकर राराकारकी ॥

जाकेलगैअजपागगनझलकीज्योतिदेखिबिशालकी।
सध्यमुरली मधुर बाजे बायें किंगरी सारँगी ॥
दहिने जो घंटा शंख बाजे गैबध्वनि झनकारकी।
अकहकी यह कथा न्यारी सखा नाहीं आनहै ॥
जगजीवन पराने शोधके मिलरहे सतनाम है १

जब से अनहद घोर सुनी।
इन्द्री थकित गलितमन हूआ आशासकलभुनी ॥
घूमतनयनशिथिलभइकायाअमल जो सुरनसुनी।
रोमरोम आनन्दउपजकरि आलस सहजभनी ॥
मतवारे जो शब्द समाया अन्तर भीजिकनी।
कर्म धर्म के बन्धन टूटे बिपदा सकलहनी ॥
आपा बिसरि जगत सब बिसरोकितरहे पंचजनी।
लोक भोग सुधिरही न कोई भूले ज्ञान गनी ॥
रहे लवलीन चरणही दासा कहैं शुकदेव सुनी।
ऐसा ध्यानभाग्यसेपायेचढ़िरहेनितशिखरअनी ॥

तिल्लाना ॥ मुरलिया हमरे मन भाईलो। श्रवणसुनत गइ भूलि सुधिबुधि सप्तस्वरन और तीनि ग्राममिलि नइनइ तान सुनाईलो ॥ रुनक झुनक घुंघुरू जहँ निरतत सुहर मुरचंग बीन सारंगी सहनाई। गति बाजत मृदंग धधकारा धिरकट धिरकट धेतला मता किड किडधा किड किडधा उलटि पलटि लखि अक्षर त्रिकुटी घाट तानादिर दिरतोम तिल्लाना गाईलो ॥ प्रथमघाट लखि बाट त्रिलोकेमधि ज्योति उज्यारी जगमगाल धारा अमी झर बरसे। गर्जत गगन घनानना घनानना सम्मुखसदा भरिपूर शूर पीया ताके बलि बलिजाई लो ॥

शब्द ॥ यह अचरजकी बात कहो कासों कहौंरी सखी ॥
इक दिन निशा समय के माहीं सूरत चढ़ी अकास ।
गगनघोरध्वनिगर्जनलाग्योफटकिभुवनभयोभास॥
पुनिप्रतिरोजरोजअसहोईखुलिखुलिखेलदिखात ।
न्यारी न्यारी ध्वनि धधकार मुरली बीन सुहात ॥
अलख पलकके पार द्वार से शून्य शहर दर्शात ।
जगमगज्योतिहोतउजियारीपुनिब्रह्माण्डलखात ॥
दीनदास गुरुसूर कृपाते अधर अलोक लखात ।
सुन्दर प्यारा सबसे न्यारा निरखिनिरखिमुसुकात॥

शब्द ॥ जिनकी सुरति नामही रमी ।
नेह नौबत झरत तन घर कबहूं नहिं नगमी ॥
शान्तभ्रान्त बिहीनमन बिच बपुष छलसम क्षमी ।
लहर लालच लोलप न बिसराइ विषरस अमी ॥
शुद्ध श्वास शब्द से नाम महिमधुजमी ।
युगल अमलआननसूरातिक्षणक्षण पियतप्यालाअमी ॥

लावनी ॥ जो सद्गुरु के हैं साथ नरद जुगधारी । बृन्दाबन सो जगपार जीत नहिं हारी ॥ टेक ॥ बिन सद्गुरु के आधार शूर नहिं होना । प्यारे जन्म जन्म हुइहानि रत्न धन खोना ॥ पिया बिन जानी तू जान अरी मरनारी । जो हर बिन है चितधीर नहीं तरनारी ॥ सद्गुरु भराभंडार भूख नहिं प्यासा । जो पावै सतद्वार पूरी सब आसा ॥ जिनके बिरह का जख़्म लगा नहिं कारी । वै रहे सबहि झखमार जन्म धिरकारी ॥ पिया ढूंढ़ा मैं हरदेश पता नहिं लगता । अली तन मन दीना जारि हुई मैं मँगता ॥ घरघर मांगी भीख

लाज नहिं लाई। अरी जन्म मरण ब्योहार बंद नहिं आई॥ इस बिरहिनि का दुख देखि देखि अग्नि बुझिजाती। डाइनि दुबिधा लाग जिगर को खाती॥ मारैं मिलकर तानैं तान मरद औ नारी। क्या सुजन्म हुआ जगमाहिं हाय सबखारी॥ प्यारे रोवै हैं दिन रैनि चैननहिं पाया। कहो क्योंकर राखें धीर सैनबिन काया॥ नहिंकोइ पड़ना इसराह सफ़र है भारी। प्यारे जीते जानो मौत टरै नहिं टारी॥ सब सखियां चित्तकठोर करी बेदरदी। अली तन मन दीना जारि हुई मैं हरदी॥ भरतीहूं ठंढी हाय हुआ जलजारी। जलभुनके मैं ख़ाक हुई सब सारी॥ एरी सुनिये अचरज बात रोय दुख दीन्हा। सखी भली अभागिन साथ हाय सँग लीन्हा॥ दुख रोवै है शिरकूट छोड़ दे प्यारी। क्यों आई मैं तुझ पास रहो तुम न्यारी॥ सद्‌गुरु राम अपार मुक्ति को भूला। सोई अभागिन जान सारपद भूला॥ सो मूरख हैं बीमार नहीं आरामा। एरी शिरपर भूलाकाल बृथा नरजामा॥ एरी कर्मकला बिस्तार पार नहिं पाना। सुख दुख में भरमाइ जाल उरझाना॥ शब्द बिना संसार मूल अँधियारी। अली अन्त साधलासार सोई बिसरारी॥ सत सत सद्‌गुरुराम झूठ जगजानो। मन इन्द्री को प्रेम विषय परमानो॥ एरी अगम अगोचर जासु वारनहिं पारी। बृन्दाबन चितधार काल शिरमारी॥

मलार॥ अरी एरी मगन मन हर्ष ज्यों ज्यों बदरिया दरशैं॥ टेक॥ चमक चमक बिजुलीकी चाँदनी दिखाई

रुनझुन ज्यों मेघा बर्षै ॥ बूंदियों की झनकार सुनि सुनि हर्षाई अनहद की ध्वनि ज्यों परशै। सुनत पिया प्यारी मिलि तन सुधि बिसराई मेलभया जब बर्षै॥ एकही स्वरूप देखो वही सतरूप पेखो छूटिगई इस झूंठे घरसे। बृन्दाबन सतलोक में बासागहि पकड़ो दोऊ करसे ॥ अमीरस बर्षैरी मेरो तन मन हर्षाई काली बादली उमड़ घुमड़ बिजुली की चमक मेरो हियाहुलसैरी। क्षण में धूंधरी धमारी घोर आँधियारी मेरा जियरा कांपैरी ॥ सुरति सुहागिल पियाकी सनेही नौबत सुनि सुनि धमकैरी। मीठीमीठी ध्वनि धधकारें आई शंख मृदंग ध्वनि गरजैरी ॥ काम क्रोध चक्र बहु कीन्हें पग धरणि पर बरजैरी। सद्गुरु राम सहायी दाता काल कला डरपैरी ॥ ॐ सोहं झीनझीनी ध्वनि ही अमृतजल बर्षैरी। बृन्दाबन निशिदिन रहो हर्षाई काहे मेरा मन तरसैरी ॥

सावन ॥ मेरी तो सुरत लागी भवन में पिया संग भयोरी मिलाप ॥ टेक ॥ चढ़े नयन श्यामसे कंजा लखा जो रूप। बंकनालके पारहो जगमग ज्योतिस्वरूप ॥ त्रिकुटीघाट उतार हो सुना जो मधुराराग। शीतल वर्षा अमीकी झड़ी जो सावनलाग॥ तनमनकी सुधि ना रही बसी जो पूरणधाम। लखा रूप निर्गुण कलापूरण सद्गुरुराम॥ गगनमाहिं सोहं ध्वनि गाजै आठों याम। बृन्दावनजो पहुँच है पूरण होवै काम ॥ मंगल सोहं राम समीपजो रमता दर्शिया॥ मुक्तपदारथ हाथ जो सद्गुरु पर्शिया १ बिन सूरज उजियार चहूंदिशि होरहा ॥ शीतल जलकी

धार अमीरस बहिरहा २ उलटे नयनन देखि अलख प्रकाश है ॥ पीयअमृतमतवार सहज बहिबासहै ३ शून्य शिखरके माहिं जो नौबत बाजती ॥ सुरति पगीजा माहिं मधुरध्वनि गाजती ४ बिन स्वाती और सीपजो मोती उपजिया ॥ होगया मेल मिलाप वही दुःख बिनशिया ५ बंकनाल के पार ठिकाना जिन किया ॥ सहज समाधी पाइ अनाहद चीन्हिया ६ तीन शून्य के पार जो चौथा देखिये ॥ सद्गुरुहाथ दुर्बीन अगमको निरखिये ७ अटपट औघटघाट सबोंसे पारहो ॥ हंसगती को पायशब्द सेतारहो ८ मन निश्चल होजाय तो आपी आप है ॥ द्वैत कलपना नाश नहीं कुछतापहै ९ संगल मंगल होत पियासँग बास हो ॥ दुबिधा दुर्मत दूरि भरमको नाशहो १० बृन्दाबन बिहारजो दशवेंद्वार में। पूरण होगयो तीन गुणाके पारमें ॥

आरती ॥ पूरण पुरुष आरती लावो। सोहं रामगुरू पदध्यावो ॥ दीपक ज्योति सुरति करि बाती। अनहद शङ्ख अखण्ड बजावो ॥ घण्टानाद निरन्तर ध्याना। प्रेमके पुष्प सुफल वरषावो ॥ दयाधर्म मेवा मिष्टाना। शील सुमत के थाल सजावो ॥ सेवा सुमिरन कर सब साज। शब्द सोधार मधुर ध्वनि गावो ॥ शान्तिसरोवर जल भरिलीजै। आनन्द छींट सुगम छिरकावो ॥ वृन्दावनविहार लखो घट। आरति परसादअमरफलपावो ॥

श्री सद्गुरु रास के पन्थके श्रीमहन्तकी और कुछ साधुओं की और कुछ भक्तों की वाणी लिखते हैं ॥

दो० जगत उधारण कारणे, आचारज बाणी कीन्ह ।
हेमरत्न को छोड़कर, सार अंश लवलीन्ह ॥
आचारजकी कृपासे, सब ग्रन्थन पढ़िलीन्ह ।
श्री महन्त कृतार्थ, शब्द ब्रह्मसो चीन्ह ॥

चौ०प्रथम भागमें शब्द प्रधानो ।द्वितीयमाहिंसबमतकोजानो॥
पञ्चदेव सम्वाद जो कीन्हों । तृतीयभाग सोभी लखिलीन्हों ॥
चौथे में वेदान्त प्रकाशेउ । सद्गुरु कृपाकरी सो भाषेउ ॥
जीवनमुक्तिक साधन जोई । पञ्चम में भाषेउ पनसोई ॥
नाद कि विद्याकरि परकाशा । जासे सर्वदुःख का नाशा ॥
सन्त साधु की बाणी जोई । यामें प्रमाण प्रकट कहे सोई ॥
अमृतभरी हजूरकी बाणी । कछुक और भी कहूं बखानी ॥
श्री महन्तकी हरो पियासा । अनहद शब्द करोपरकासा ॥

दो० स्वाति बूंद सम बचनहै, मनहै सीप समान ।
पड़ै सीपमें स्वाति जल, मोती उपजै जान ॥
आचार्य बड़े परस्वारथी, बोलैं अमृतबैन ।
चित चञ्चल कठोर को, करि देते हैं चैन ॥

श्रीमहन्तकृत मङ्गल ॥

अवगुण सिन्धुसमानहै गुण एकौ नाहींहो । श्रीवृन्दावन पुरुष दयालुकी आशा मनमाहींहो ॥ मोसम पतित न आन है देखा मनमाहीं हो । भौजल अगम अथाह है बूड़ा तामाहीं हो ॥ सद्गुरु वेगि उबारिये पकड़ौ गहि बाहींहो । कामक्रोध मद लोभ सदा यह दुख-

दायीहो ॥ स्वामी निजजन जानिके राखो शरणाईहो। जन्म जन्म भुगतत फिरौं भवसागर माहींहो ॥ तीरथ बरत न देवकी आशा मनमाहीं हो। अब सद्गुरु के चरण बिन भावै कोई नाहींहो ॥ नरतन दुर्लभ देवको सबकहत सुनाई हो ॥ यह तन नौका तरण को आगे फिरि नाहींहो ॥ यह तन मोती ओसका तिमितन नशि जाईहो। बिनसद्गुरु कोइ दूसरो तारणको नाहींहो ॥ जिमिस्वपने की सम्पदा देखत नशिजाईहो। सुरति शब्द पाये बिना कछु हाथ न आईहो ॥ मृग भ्रमवारि बिलोकिये जल दीखत माहीं हो। ज्यों मकड़ी मुखतार जग उरझी भवमाहींहो ॥ ज्यों तरवर पाता झरैं फिर लागत नाहींहो। त्यों नरतन चेतन तुझे फिरिपावत नाहींहो ॥ रूप अखण्ड व्यापक पूरण सब घट माहीं हो। अटल स्वरूप की बीनती साहब अन्तसहाई हो ॥

बिनती श्रीमहन्तकी समाप्तम् ॥

आरती॥आरतीसद्गुरुरामकी गावो। सूर्यचांदपरदृष्टिजमावो॥
अनहद शब्द बजै दिन राती। दशमद्वारमें ज्योतिको पावो॥
उलटे कमल सुधाकर राखो। श्वासा का चमर डुलावो॥
वीन बांसुरी घड़ी औ घण्टा। ॐ ध्वनि में जाइ समावो॥
गगनथाल सबसाधन मेवा। अटलस्वरूपश्रीबृन्दावनध्यावो॥

दो० सद्गुरुरामकीध्वनिकरो, आचारय का ध्यान।
विषय वासना नाश है, उपजै निर्मल ज्ञान॥
सोई ध्वनिअब कहतहौं, चितको सुनो लगाय।
सन्ध्याकाल में जो करै, सर्व पाप मिटि जाय॥

श्रीसद्गुरु रामकी ध्वनि ॥

वाह गुरूजी सद्गुरू राम । श्री बृन्दावन सद्गुरु राम ॥
सद्गुरुराम नाम सद्गुरु राम । श्री बृन्दावन सद्गुरु राम ॥
मेरेमन वसरहे सद्गुरु राम । श्री बृन्दावन सद्गुरु राम ॥
सद् बलिहारी सद्गुरु राम । श्री मातासत्ता सद्गुरु राम॥
तूकृपालुहै गुरुजी सद्गुरु राम । श्री बृन्दावन सद्गुरु राम ॥
जलथल में तू है सद्गुरु राम । श्री बृन्दावन सद्गुरु राम ॥
घट घटके बासी सद्गुरु राम । श्री बृन्दावन सद्गुरु राम ॥
पूरण न्यारे सद्गुरु राम । श्री बृन्दावन सद्गुरु राम ॥
अलख अगमहै सद्गुरु राम । श्री बृन्दावन सद्गुरु राम ॥
सत्यलोकनिवासीसद्गुरु राम । श्री बृन्दावन सद्गुरु राम ॥
शब्द अशब्दी सद्गुरु राम । श्री बृन्दावन सद्गुरु राम ॥
नाम अनामी सद्गुरु राम । श्री बृन्दावन सद्गुरु राम ॥
सत्त अनादी सद्गुरु राम । श्री बृन्दावन सद्गुरु राम ॥
सदा रहै यक सद्गुरु राम । श्री बृन्दावन सद्गुरु राम ॥
मारे कंसरावणा सद्गुरु राम । श्री बृन्दावन सद्गुरु राम ॥
प्रहलाद उबारे सद्गुरु राम । श्री बृन्दावन सद्गुरु राम ॥
हां नाहीं सो सद्गुरु राम । श्री बृन्दाबन सद्गुरु राम ॥
जो कुछ है सो सद्गुरु राम । श्री बृन्दावन सद्गुरु राम ॥
सेवा साधुबताई सद्गुरु राम । श्री बृन्दावन सद्गुरु राम ॥
सत्यनामजपाया सद्गुरु राम । श्री बृन्दाबन सद्गुरु राम ॥
अजपाजापजपायासद्गुरुराम । श्री बृन्दावन सद्गुरु राम ॥
शब्द सो पाया सद्गुरु राम । श्री बृन्दावन सद्गुरु राम ॥
घण्टाशङ्खबजायासद्गुरुराम । श्री बृन्दावन सद्गुरु राम ॥
दश पञ्च स्वरूपी सद्गुरु राम । श्री बृन्दावन सद्गुरु राम ॥

मुरली बीणबजाई सद्गुरुराम। श्री बृन्दाबन सद्गुरु राम॥
ॐ सोहं सद्गुरु राम। श्री बृन्दाबन सद्गुरु राम॥
मन थिरकिया सद्गुरु राम। श्री बृन्दावन सद्गुरु राम॥
सत्यनाम कहाये सद्गुरु राम। श्री बृन्दावन सद्गुरु राम॥
ज्ञान प्रकाशी सद्गुरु राम। श्री बृन्दावन सद्गुरु राम॥
शान्तवेद लख सद्गुरु राम। श्री बृन्दाबन सद्गुरु राम॥
आवनजानमिटायासद्गुरुराम। श्री बृन्दावन सद्गुरु राम॥
कुछ नाहीं सो सद्गुरु राम। श्री बृन्दाबन सद्गुरु राम॥
महाकाल सो सद्गुरु राम। श्री बृन्दाबन सद्गुरु राम॥
सर्व रूप है सद्गुरु राम। श्री बृन्दावन सद्गुरु राम॥
सन्तशिरोमणि सद्गुरु राम। श्री बृन्दाबन सद्गुरु राम॥
आवासनसगोचर सद्गुरुराम। श्री बृन्दावन सद्गुरु राम॥
सर्व प्रकाशी सद्गुरु राम। श्री बृन्दावन सद्गुरु राम॥
स्वयंप्रकाशी सद्गुरु राम। श्री बृन्दाबन सद्गुरु राम॥
अटल स्वरूपी सद्गुरु राम। श्री बृन्दावन सद्गुरु राम॥
सद्गुरु राम नाम सद्गुरुराम। श्री बृन्दावन सद्गुरु राम॥

श्रीमाताजी की स्तुति श्रीमहन्तकृत॥

छन्द॥ सुनो मातु मेरी दीनकी पुकारा। बहेजात को बांह गहिकरो पारा॥ तुही आदि सत्ता ज्योतिस्वरूपी। निर्गुण निरीह हैगी अनूपी॥ तुही सरस्वती होय रची वेदबानी। करे है मर्यादा बड़ी है सयानी॥ दीनजान कर जल्द होवै कृपाला। सद्गुरुराम के पन्थपर होवो दयाला॥ तुही ब्रह्मा होकर जगत को उपाया। तुही शिवहो के सबको खपाया॥ तुही विष्णुहोके प्रतिपाले जी माता। तीन लोकमें तूही तो है विख्याता॥ तुही

सत्यनामी अनामी कहावै । पञ्च शब्द का भेद तुही तो बतावै ॥ तुही तो पञ्चदेव माता रचीहै । कहूं प्रकट कहूं गुप्त छिपी है ॥ तुही लक्ष्मी आदिशक्ती अनन्ता । कोई भेद ना पावै हैगी वे अन्ता । तुही पञ्च ज्योति होकर प्रकासै । दशम द्वार और हृदय में भासै ॥ पञ्च भूत माताजी तुही तो बनाया । सब जगत दीसे मात तेरी तो छाया ॥ सच्चित आनन्द तेरा स्वरूपा । चतुर्दश भवन की तुही तो है भूपा ॥ सुर असुर जन कोई भेद न पावैं । नेती नेत करके वेदा बतावैं ॥ तुही निर्गुणी सगुणी उभय माता । ज्योतिस्स्वरूप सब में विख्याता ॥ शक्तिस्वरूप सब में बिराजै । सब के आदि कर तत्त्वको तुही साजै ॥ कहांलों बर्णों मातु उपमा तुम्हारी । कहन में न आवै सब से तू न्यारी ॥

दो० मैं दीनहूं सद्गुरु राम, सुनिये मेरी पुकार ।
दूसर उपाय ना सूझता, हार पड़ाहूं द्वार ॥

चौ०सद्गुरुराम सुनिये पुकारा । क्योंकर होय मोर निस्तारा ॥
बिषय भोगमें चित्त लगाया । सुरति शब्दका मर्म न पाया॥
डूबत हूं भवनिधि के माहीं । हे सद्गुरुजी पकड़ो बाहीं ॥
मातु पिता जिवकर प्रतिपाला । दीन जानकर होहु दयाला ॥
बार बार मैं भूलन हारा । तुम बिनकोनले मेरी सारा ॥
कृपा कर तैं सब कुछ दीना । कृतघ्नी क्षण नाम न लीना ॥
रत्न जन्म मानुष तनु कीन्हा । बिना नाम खाक कर दीन्हा॥
चौरासी लख योनि है जेती । मानुष तनुसे तुले न तेती ॥
विद्या पढ़ी शान्ति ना आई । व्रत अरु नियम करै बहु भाई॥
एक उपाय कहों सुनि लीजै । सुरति शब्दमें चित्तको दीजै॥

आचार्यरूप धरि जगमें आये। सब मारग प्रकटकर गाये ॥
बिहारबृन्दाबनजहाजअधारा। हेजनो चढ़कर उतरो पारा ॥
आचार्य तुलाधार विख्याता। भवनिधिमें गोता क्यों खाता॥
कंज कमल पर सुरति लगावैं। अलख पुरुषमें जाय मिलावैं॥
ऐसे सद्गुरु दीन दयाला। मनमत में भूला बेताला ॥
नाहक तैंने जन्म गँवाया। दशम द्वारका भेद न पाया ॥
पीछे भूला तो अभी चितारो। अब दूसर ना करो बिचारो॥
सद्गुरु राम मुझे है प्यारा। अटल स्वरूप जिसने है तारा॥
दो० अटलस्वरूपकेसद्गुरु,रामह दूसरहु आनकोइ।
बार बार बलिहार ने, जिहकहि देखो सोइ ॥

शब्द—रागकाफी ॥

मेरामन मातारी माता क्यों नहिं सद्गुरुराम तू गाता॥ रत्नजन्म तू वादे खोवै मारैगा यमलाता। विषय भोग यह चार दिवसके आखिर तू पछिताता॥ काल नगारा शिरपर बाजै ताकी सुधि नहिं लाता। धन दारा सुत यहां के साथी कोई सङ्ग न जाता॥ काल भुजङ्गम आनि डसैगा ताका भय नहिं लाता। अतिनगीच पिया है तेरे ताका खोज न पाता॥ सुरति शब्दका मारग बिखड़ा कोइ कोइ साधू आता। श्रीवृन्दाबन अटलने पाया मिटगई यमकी घाता॥

कुंडलिया ॥रे मन मूरख बावले तू समभै नहिं एक ॥
तू समभै नहिं एक में बहुकर समभावा।
अचार्यजी कृपा करी मन शून्य में लावा॥
पञ्च शब्द निहहोरहे सुख कहा न जाई।

शान्ति तो सबही कह गये किनेखबर न पाई ॥
नवद्वारे तहँ प्रकट भाई दशवां गुप्त रखाया ।
नौबत झड़ै अगमकी सद्गुरुने भेद बताया ॥
सद्गुरुराम सर्वत्रमें अटलने करा बिवेक ।
रे मन मूरख बावले तू समझै नहिं एक ॥
बँगलेमेंयक बँगला देखातिसमें पुरुष अलेख ॥
तिसमें पुरुष अलेख बिनजिह्वा बाणी बोलै ।
जिसपर कृपा करै कपाट देवै तिस खोलै ॥
देय ज्ञान उपदेश भर्म को दूर मिटावै ।
लेकर साधु उपदेश आनन्द के मङ्गलगावै ॥
सद्गुरु रामका जाप ताहि शिरोमणि जानो ।
दुबिधा दुर्मति दूर पाप होवैं सब हानो ॥
शिवदीनदासकेगुरू श्रीबृन्दावनपायोपुरुषअलेख।
बँगलेमेंयक बँगला देखातिसमेंपुरुष अलेख॥

शब्द॥काहे सद्गुरुराम बिसरायो ।
प्यारे नाहक जन्म गँवायो ॥
बिरह अग्निनेतनमनजाराशवासाभरिभरिआयो ॥
लिखलिखपतियांभेजूंसजन पै कोईखबर न पायो।
निशिदिननीरबहैमोरेनयनोंपियापरदेशसिधारयो ॥
कौनउपाय करौंमेरीसजनीजासोंपियाघरआइयो ।
अनहदनादकी डोरगही सुरति शब्द सोलायो ॥
सुन्न महासुन्न पार उतरकर भवँरगुफाचढ़िधायो ।
सतगुरुश्रीबृन्दावनपूरणहरीदासचरणनलपटायो॥

शब्द—सद्गुरु रामका मैंहूं चेरा ॥
चढ़ी सुरति गगनके माहीं यमसे करा न बेड़ा ।

अवध गलीकी राह में पाई करा अलख में डेरा ॥
सत्तलोक लौं जेती गिनती सब काहू में घेरा ।
नारद कोश्रीबृन्दाबनमिलगयेमिटिगयेजन्ममरणकाफेरा

रेखता ॥ पड़ा जगबीच भारीतम कुसंगति बश रहेहर-दम ॥ बिषयरस चाहमें माते कपटनिन्दासेहैं राते । अपनपौ चीन्ह नहिं जाना लगाई रातदिन हमहम ॥ गुरू से नेह नहिं लाते रहन कुछ कहन और गाते । यह हृदय साफ़ हो कैसे कपट सारी समझ हुईकम ॥ गुरु सेवा बड़ी न्यामत ये मन पापीकी है शामत । नहीं बश प्रेमसे धारे इसीसे होरहा यह ग़म ॥ करो अर्पण यह तुम तन मन है सद्गुरु राम बृन्दाबन । सुरत जो नाद सों लावै तभी पावै यह फल शम दम ॥ कर्म और भर्ममें लागै नहीं परकाश कस जागै । दास गुरु शरण की अर्ज़ी क़बूल होवै मिटै भय यम ॥

शब्द ॥ मन तुम श्री बृन्दाबन ध्यावोरे ।
तनधनकुटुंबसर्व दुखदायी इनसँगनेह न लावोरे ॥
घटअन्तरअनहदध्वनिबाजैतामेंसुरतलगावोरे ।
शुद्धरूप श्रीसद्गुरुजी का दर्शनकरसुखपावोरे ॥
सद्गुरु राम सिन्धुकेमाहीं निजमनगोताखावोरे ।
गुरुशरणदासकीचाहयहीहैश्रीबृन्दावनगुणगावोरे॥

ठुमरी ॥ श्री बृन्दाबन के चरण कमल हियमें मोरो बसिगयोरे ॥ पीताम्बर छवि अधिक सुहावै मन मतंग को बश करलावै । मनो घन ऊपर दामिनि चमकै मनहीं मोरो हर्षरे ॥ बिन देखे तलफतहूं रैनिदिन कहो तुम बिन क्योंकर मिलै चैन । नहिं पड़त धीर पल

पल हियरे बिन दर्शन तलफ गयारे ॥ कर्म रेख नहिं मिटत पियारे जो सहस्रयुग बीते भारे । सद्गुरु वचन चित्त नहिं धारे कहो अब का बिधि तरिबैरे ॥ गुरु शरणादास सद्गुरु राम जो ध्यावै वंशीकी तान घट माहिं सुनावै । बजत नाद घन घन घनन पिया के घरजावैरे ॥

मंगल ॥ मैं पापी बिहालहूं सुधि बुधि कुछ नाहीं हो ।
श्रीबृन्दाबन कृपालु होय राखो गहिबाहीं हो ॥
सद्गुरु तुम आधारहो काटो यमफाँसी हो ।
गुरुसेवा कछु ना बनी जग होवत हाँसी हो ॥
अबकी बेर निजपतितको गहि राखो हाथाहो
मन मतंग से बशनहीं करता नितघाता हो
मैं मूरख नादान हूं बुधि साफ़ हिरानी हे.
सद्गुरु रामदयालु होइ दो शब्द ठिकानीहो ॥
गुरुशरणादासशरणसद्गुरुकीनितसुखपाताहो।
श्रीबृन्दाबन सत्यनामसेआवागमननशाताहो॥

दो० श्रीबृन्दाबन आनन्द घन, घटघट जाननहार ।
गुरुशरणादासकुछसुखलह्यो,ताप्रतिकरैजुहार ॥

रेखता ॥ भजो सद्गुरु राम बृन्दाबन मिले नहिं फेर यह नरतन ॥ करौ तुम नाम से प्रीती यही सुख जान लो रीती । जगत झूठा लखो भाई मिले तुझको खरा हरधन ॥ गुरू पूरा जभी पाया चरण से प्रीति नित लाया । हुये कारज मेरे पूरे लखा सो रूप मैं घरबन॥ बिरह का खेल मैं खेला पिया ने बांह गहि मेला। पियारा मिल गया भाई सुखी होवै सभी तन मन ॥

सुनी धुनि गगन में प्यारी जगत सुधि मिटगई सारी ।
मिला सद्गुरु शरणकोप्यारा छके हैं नैन और शरवन॥

दो० श्रीवृन्दावन आनन्दघन, पूरणपरमप्रकाश ।
मनसा वाचा कर्मणा, रहूं आपकी आश॥

चौ० सद्गुरु राम दयानिधिपायो । श्रीवृन्दावन नामलखायो॥
बड़े भाग्य से शरण में आयो । मेरे दुख सब दियो मिटायो ॥
अवगुण मेरे दृष्टि न लायो । शब्द भेद दीन्हा दरशायो ॥
सत्त पुरुष का रूप बखाना । निर्माया निरद्वंद्व लखाना ॥
ममप्रति अलप पार नहिं पायो । सद्गुरु दीन सेवा चितलायो॥

शब्द॥ सद्गुरु राम मिले पितु मातुरी ।
तन धन जेते और सखाई कोई साथ न जातरी ॥
जब यह हंसा निकल जायगा कोई खबर न पातरी ।
जोकुछकरेसोकरलोप्यारेगयासमयनहिंआतरी॥
भजन बन्दगीशब्दसँग मेलासुफलहैयेहीबातरी ।
सद्गुरुरामदासचरणनबलिहारी पाईअमोलकदातरी॥

रेखता ॥ भजो सद्गुरु राम बृन्दाबन नहीं कुछ देर हो हरिजन ॥ जिसे यह बूझ आवेगी उसी की सुरति जागैगी । सभी जग भोग झूठा है पशूवत होगया नर-तन ॥ पड़ा सुख नींद में भूला क्रोध औ कामबश झूला । पड़ी जब मार बचनों की निरोगा होगया तन मन ॥ गुरू कृपा करी मुझ पर सुरति फेरी मेरी ध्वनि पर । लखा जब शब्द का मेला हुआ शुद्ध साफ़ यह बरतन ॥ चरण सेवा मुझे भाई नहीं अब चित कहूं जाई । दास गुरुपरसाद की आशा पुरी जब मिलगया निज धन ॥

श्रीबृन्दाबन तुम अघजारनं ।
सोयमप्रकाश श्रीबृन्दाबन नन्दकिशोर कहावनं ।
शान्तवेदी पण्डिताजन जीवोंपर हुये कृपाल
ध्रुवपद॥ श्रीबृन्दाबन पूरणदयालु अजपा और नादव
सुमिरणबिधि तीनसारजिह्वा से गुरु टहल लाग ।
छल कपट तू करत्याग हृदय सदगुरुरामको॥
गुरुदयालु धनि तेरे भाग्य भजु एक राम है पूरो ।
शब्द ॥ लखाजी सारो भेद सद्गुरु बाजे अनहद तूरो॥
सद्गुरु की आज्ञा नितमानो चरण कमलकी धूरो।
बड़भागी तुम उनको जानो हुआ सब कूरो ॥
कालकलेश मिटे इस मनके दूर सहायेहुये दुखचूरो॥
श्रीबृन्दाबन कृपा कीन्हों राम ले नहाई । इड़
तिल्लाना ॥ मन गंग यमुन सरयू घनघन घनन॥ सद-
पिंगला सुषमन धारा सुनत शब्द सुमिरण माहीं
गुरु राम शरण जो लागे निशिदिन तादिम तनतन
ताल सुरन सरगमगमपाई । तादिम राह मिली है
तनन ॥ श्रीबृन्दाबन चरण सँग पागे धारीम धारीम मन
दाहीं । राम चरण चरणन के दासा
मन मनन ॥
रेखता—श्रीसद्गुरु रामकी संगतिशिरोमणिजानलेप्यारे।
भजो सत्य नाम हृदय से रहो तुम जगत से न्यारे॥
यही जिनके पियारा है कटे यमजाल हैं सारे
कर्म जंजाल से छुटकर शरण सन्तन से होप्यारे ॥
समुझ औ बूझजबआई उतरगयेबोझ सब सारे।
ब्राह्मण ब्रह्म को चीन्हे भर्म सब दूर करडारे ॥
जो गुरुपरसाद बड़भागी सुरतिदे शब्द के लारे।

बचनश्रीवृन्दावनआचार्यके परोहित चित्तमें धारे ॥

ख्याल ॥ वाहगुरू के नाम से आशिक़ जन्म सुफल किये जाते हैं । सद्गुरु शब्दके ध्यान में पगकर आपी में मिल जाते हैं ॥ शरण लई सद्गुरु की आशा आपै को डालदिया । झूठे जग की आशा मेटी साफ़ विलग होजाते हैं ॥ जागना होय तो जागले मूरख सद्गुरु राम को पाना मुश्किल है । अवसर चूके पछतावैगा दिन योंहीं बीते जाते हैं ॥ श्रीवृन्दावन से प्रीति करेगा दयाराम वैश पावेगा । विना भजन इस नाम के प्यारे यमकी फांसी जाते हैं १ सत्तनाम अपार मिला यही श्रीवृन्दावन से पाना है । जिन अमृत रस को पान किया फिर ना कहिं आना जाना है ॥ जब शून्यमँडल में धाम किया तब अपना रूप लखाना है । हो पार तू जगके धन्धे से जिन इसी बचन को माना है ॥ सद्गुरु राम को जापहो रूप हिरम्बर वाहगुरू को ध्याना है । सद्गुरुपरसादकी आशचरणबिच बासयही मुख्य सुमिरणज्ञानाहै ॥ कालकेजालमें जीवफँसे सबजगत रहा उरझाना है । तू मान बचन सद्गुरु राम के जो आप आपन को सुलझाना है ॥ दिन चारके भोग किये फिर आख़िर को मरजाना है । तू चेत समझ असलीयत को फिर सहजे घरको जाना है ॥ सद्गुरुरामको जाप हो रूप हिरम्बर वाहगुरू को ध्याना है । सद्गुरुपरसाद की आशचरणबिच बासयही मुख्य सुमिरणज्ञानाहै ॥

दो० सच्चित आनँद रूपहो, वाहगुरु सद्गुरुराम ।
नाम भेद जिन पाइया, पूरण होये काम ॥

चौ० इस तनमें गुरु पूरा पाया । निजानन्दघरमाहिं लखाया ॥
जबलग अपना रूप न जानै । भूलाभूला फिरे न मानै ॥
बृन्दाबन तुम चरण नमामी । श्रीगुरु परम अन्तर्यामी ॥
मैं कामी क्रोधी बड़ भारी । शरणजान अब लेव उबारी ॥
बिषयिनसे मैं अतिमनलाया । ताने मुझको बहु भरमाया ॥
मुये मुक्ति सबही बतलावै । आशआश जीवन भर्मावै ॥
सन्त वेद परतीत न माने । अपनी ध्वनि निशिदिन वो ताने ॥
मानके हेतु मुक्ति बिसरावै । जगसुखको क्षण क्षणमें धावै ॥
जो कोइ सार भेद बतलावै । जियते मुक्तरूप दिखलावै ॥
कर्मफन्द गल माहीं डारै । विषय आदिको चित्तमें धारै ॥
सद्गुरु जो सतरूप लखावैं । मायाकृत सुख चितनाभावैं ॥
सद्गुरुकर मारग मिलगयऊ । तनमन गुरु अर्पण करदयऊ ॥
शब्दअखण्ड भयो परकाशा । दुख कलेशके होगयो नाशा ॥
गुरुसेवा यह कर्म रहाई । आश कहूकी रही न भाई ॥
नाम रत्न घटघट में चीन्हा । मानसरोवर में सुखलीन्हा ॥
शून्य औ महाशून्य दरशावा । भेद अभेद सभी लखिपावा ॥
अलखअगमअमरापुर पाया । सत्तस्वरूप नहीं वह माया ॥
सद्गुरुराम सबन शिरताजा । जिन जाना पूरण तिनकाजा ॥
गुरुसेवक निज पाया नामा । जायबसा अपने गुरुधामा ॥

दो० सद्गुरुरामानित्यभजमन, जो चाहतसुखलैन ।
चौरासी के छुटेते, लहै सर्वसुख चैन ॥
सद्गुरु राम जिन पाइया, दूसररही न आस ।
सो जन मुक्ता होइगे, पावैंनिजघरबास ॥

झूलना३ इसघरमेंघरकीचाहकरे सतसङ्गकीधारमेंबहनाजी ।
कंजकमल के घाटलगे तब आगे सुरति चलावनाजी ॥

तहां से रास्ता भिन्नहुआ दहिने को तुम चलजानाजी ।
आगे पञ्च शब्द वहां बाजत परखो उनका कहनाजी ॥
हरदममें यह यादरहै एक नाम केसाधकी चाहनाजी ।
वाह वाहकी आवाज तहां आवैबहुत प्रेमसे गहनाजी ॥
गुप्त प्रकट श्रीबृन्दाबन खुलैं बिलोचन नयनाजी ।
दासमुक्तासद्‌गुरुराम पूरण अबजयजयकहतेरहनाजी ॥

दो० वाहगुरु सद्‌गुरु रामजी, तुमहो दीनदयाल ।
भव जल में बहाजातथा, लीन्हामोहिंनिकाल ॥

शब्द ॥ सद्‌गुरुराम नाम सुमिरोंगी । पल पल लगन लगैगी चित सों चरणकमल हिरदय में धरोंगी ॥ दीन जानि अपन करले हैं शरणगये क्षणमाहिं तरोंगी । दर्शन पाय तापतिहुं छूटैं शोक रोग उनसाथ हरोंगी ॥ अधर महल साईं का बासा श्यामकंज में सुरति भरोंगी । मुक्ता दास सद्‌गुरुराम जो मिलि हैं अपना काज बनाय करोंगी ॥

दो० वाहगुरुसद्‌गुरु रामबिन, और जापना कोइ ।
जो नर इनको जपत हैं, चार पदारथ होइ ॥

शब्द ॥ सबजगमातारी माता श्री बृन्दाबन नहिं ध्याता ।
यहकुटुम्ब इक दोदिनकेरा क्षणभरमों नशिजाता ॥
नाहक पड़ा भर्म के माहीं बृथा सुजन्म गवांता ।
मरती बार संग नहिं जावै झूठा जगका नाता ॥
अपने सुखके साथी सबही सुत दारा अरु भ्राता ।
नरतन दुर्लभफिर नहिं पावै नाहक श्वासबिताता ॥
परमारथके सङ्गीइनकोजानोंश्रीबृन्दाबनअरुमाता ।
सद्‌गुरुदाससद्‌गुरुरामको चेरानिजस्वरूपदरशाता ।

होली—भैरवी—सखी सबछोड़ चलनारी॥ आखिर यमकोहि बर-
बहुत बर्ष जीलिये पियारी। मंगल हाय हाय लग पड़-
नारी। गावें सब बिवाहके मंगल हाय हाय लग पड़-
नारी॥ मेरी डोली में चार पुरुष लागे आग में जाइ
जलनारी। होली अब राख की उड़ती देखके हाथ को
मलनारी॥ सद्गुरु रामकी शरण आव ताकी नहीं
कुछ जन्म मरनारी। श्यामदासके गुरु श्रीबृन्दावन अब
कुछजात न बरनारी॥

रेखता॥ लखाजबरंगसद्गुरुका कर्म अवगुण मिटायाहै।
लज़त भूली है शक्करकी मज़ा मिश्रीकापायाहै॥
कर्म ब्योहार के धंधे यही शक्करकी लज़त है।
सुरतने शब्द से मिलकर मज़ा मिश्रीका खायाहै॥
साहबका दूरघरहैगा अलखनाम उसकाकहते हैं।
लखा कोइसन्तजन प्याराआपीमें खुद समायाहै॥
पियापानेकीमोहसद्गुरुअजबमंज़िलदिखायाहै।
अनोखी धुन वहांहैगी श्रवणाकरमन लोभायाहै॥
श्रीबृन्दाबनस्वामीकादामनशिशुलक्ष्मणदासपकड़ाहै।
छुटाने से नहीं छूटै गुरू इस मनको भाया है॥

शब्द॥ सद्गुरु रामसे खेलूंगी होरी॥ नरतन नगर
श्रीबृन्दाबनसतकर संग मिलोरी। प्रेमभक्ति पिचकारी
लीन्ही राम चरण चित जोरी॥ सो केशरीरंग बनोरी॥
ज्ञान बैराग्य की माट भराई ऐसा अबीर उड़ोरी। कुम-
कुम कुमत दूरकर राखी सद्गुरुशब्द सुनोरी॥ उलटीतिल
दृष्टि करोरी॥ सहस कमलदल श्यामकंजमें जहां यह
फाग मचोरी। अधर अवाज़ उठी अनहदकी सुरति

शब्दगाहि पूरी ॥ गरज सुनि मस्त भयोरी ॥ घण्टा शङ्ख मृदङ्ग पखावज बीणा मुहचङ्ग बजोरी। सूरत प्रेम म-गन हो चाली सो जगत् आशको तोरी ॥ चौबे रघुनाथ कहोरी ॥

दो० सद्गुरुरामकी शरणमें, हार पड़ाहूं आइ।
वृद्ध अवस्था आगई, नयननजर न पाइ॥
पुत्र कलत्र ने छोड़िया, सद्गुरु दीना मान।
नहिं माने का मान है, नहिं तानेका तान॥
बेनीदास गरीब के, कोई दूजा नाहिं।
अन्तकी बेर उधारियो, तुमहींसबकेमाहिं॥
निर्गुणजात अजानहूं, सेवा की बड़िचाह।
सद्गुरु रामकी शरणहूं, कोइमुझेबतावेराह॥
चित्त शुद्धके वासते, बरतन साफ करेव।
और नहीं कुछ मांगता, नामदान गुरुदेव॥
बिभूती दास ग़रीब की, अर्ज़ सुनो महराज।
बहुत गरीब अजानहूं, तुमहो राजाधिराज॥

होली—शब्द ॥ तेरे तिलन पर चमके चांदनी भयो चन्द्र-प्रकाशरी ॥ अन्तरतिमिर बिनाशन लागा सोवत उठी मैं जागरी। गगनमँडल मुरलीकी ध्वनि सुनि सखी अनमन हुलासरी ॥ कालीदहके घाटपर कालीनाग लियो नाथरी। ग़रीबदास अनाथ निहालकरिलीना श्रीवृन्दाबन मिले बड़े भाग्यरी ॥

शब्द ॥ सद्गुरु रामदयालु मोपै रंगडारि दियो है ॥
भरिपिचकारी शब्दकी मारी करदियो है निहाल।
वाहवाहमहिमाकहांलोंबरणों मलदियोध्यानगुलाल॥

मैं गरीब अनाथहूं लई चरणकी लार।
सिंह ठाकुरके गुरू श्री बृन्दाबनतिनका रंगअपार॥

शब्द॥ सद्गुरु रामका मैं हूं चेरा॥ सुरति शब्द की रेल बैठिकै किया अलखघर डेरा। सत्यनाम में जाय रहाहूं नहीं तहां जगघेरा॥ झूठा जगत् त्याग दे प्यारे ना कर मेरा तेरा। अयोध्याप्रसादके गुरु श्रीबृन्दावन तिनका मैं हूं चेरा॥

दो० वाहगुरु सद्गुरु रामबिन, दूसर कोई न नाम।
जो नर इनको जपत हैं, पूरण होगये काम॥
नाद की करो उपासना, आचार्यकाकरध्यान।
बार बार ग्रन्थ पढ़न से, उपजै निर्मलज्ञान॥

छन्द॥ बन्दौंगुरुस्वामीसद्गुरुनामी करूंप्रणामीआपपरे।
गतिअपरम्पाराअलख अपाराअनभवसारालक्षकरे॥
बाणीगहितोलीअगमअमोलीसन्तनखोलीबेदकहे
रघुनाथबिचारीगुरूकृपारीसुरतिसिधारीशब्दगहे॥
गुरु अकथकहानी बेदबखानीभेदनजानीनेतिकहे।
योगीअरुमानीपण्डितध्यानीमुण्डितस्यानीहारिरहे॥
जोपदनिरबानासन्तबखानाकालहिरानांप्रेम मिला।
रघुनाथ बिचारी गुरूकृपारीजागिपरारी भानलखा॥
सतसुरतिसहेलीखुलिकैखेलीगर्जघुमेलीघोरसुनी।
घटचटकिचढ़ाईपलपलछाईदलपरआईऐनपुनी॥
घरघरसेगवनी भेंटिभवानीसुनतीश्रवनीछबिछाई।
गुरुसमुद्रलखाई शयनकराईभानमिलाई गुरुपाई॥
गुरुगगनागिराईगांठिखुलाई बाटबताई सुरतिगई।
सुनशब्दसमानीसमुझसुबानीगुरुमगछानीएकमई॥

मैंमानिकरमन्दीसदानिरवन्दीयुगयुगवन्दीभूलरही ।
रघुनाथविचारीगुरूकृपारीसुरतिसम्हारीशब्दगही ॥
सूरति सँगरातीशब्दसुमातीरंगसोसाथीअमरभई ।
सजिकीन्हशृँगारा दुख सुखपारामहलनिहारासत्यसही ॥
निरखापियप्याराभिनाभिनसाराअगमअपाराअलखलखा ।
रघुनाथविचारीगुरूकृपारीसुरतिसम्हारीसत्यअखा ॥
परसतपदमूलाभईअतूला काटै शूला भर्म गई ।
पियसेजसम्हारीरससुखमारीअकहकहारीकहाकही ॥
जोसूरतिधाईशब्दमिलाईसिन्धुसमाईशयन करी ।
रघुनाथविचारीगुरुबलिहारी भर्मनशारीरूपभरी ॥
दलअष्टबखानैमूलसुजानैसुरति समानै तिलदाहैं ।
कमलाकरकंजामनकोमंजामानससंजा धरजां हैं ॥
होतीझनकाराअमृतधाराचातक प्यारा प्रेम भरै ।
रघुनाथविचारीगुरूकृपारीसुरतिसम्हारीभर्म टरै ॥

रागगौरी॥ अनहद ध्वनि झनकारा साधोभाई तिल खिड़की एकद्वारा ॥ टेक ॥ अष्ट कमलदल सूरति लौटी श्यामकंजके न्यारा । दाहै ऐनके अन्दर दोतिल एकै एक बिचारा ॥ घण्टाशङ्ख किंगड़ी बाजै झांझझलक झनकारा। झिलमिल ज्योति प्रकाश दिखावे बिन सूरज उजियारा ॥ बिन बादलजहँ पानीबर्षै बहै अमियरस वारा । गर्जि गगन पर नव ध्वनि गाजै त्रिकुटी महल निहारा ॥ सूरति चली मीन मारग गहि पक्षी खोज बिचारा । सद्गुरु रामकृपा रघुनाथै सोहं नाम बिहारा १ सुरति गहि शब्द सिधारी साधो भइ गुरुचरणन बलिहारी ॥ टेक ॥ दशप्रकार अनहद ध्वनिबाजे

पहिला शब्द चिन्हारी। झिंगाशब्द दूसरा कहिये सुनतरहै अलसारी॥ घण्टाशब्द तीसरा जानौ चौथा शङ्ख सुनारी। पञ्चमशब्द बीणाका बाजै षष्ठम ताल लखारी॥ सातें बजै बांसुरी के सुर अष्टम मृदँग सँभारी नवां नफीरी शब्द बजत है दशवें घन गरजारी॥ दशवां शब्द सुरति जबपावै सर्वबासना जारी। परब्रह्म ॐकार रूप है त्रिकुटी रूप अपारी॥ रंरकार सोहं गुरु धामा भवँर गुफा पटपारी। सद्गुरुरामकृपा रघुनाथै सिन्धु में बुन्द मिलारी॥ सद्गुरुराम अपारी साधो भाई आपवार अरु पारी॥ टेक॥ जीव बिअष्ट समष्टी ईश्वर बन सोइ बृक्ष बिचारी॥ सिंधुतरङ्ग भेद नहिं होई सूरजकिरण पसारी ३॥

होरी--घटघट घट गुरु भेद द्योरी॥ टेक॥ अष्टकमल दल सूरति लोटी दाहै ऐन गह्योरी। दाहै ऐन हिये के अन्दर श्यामकंज पटपौरी॥ घोर अनहद जु मचोरी॥ पचरंगहीरा मोतीझलकैं झिलिमिलि ज्योति झरोरी। बिना नयन जहँ मोती पोह्यो अमृतधार वह्योरी॥ प्रेम नहिं जात कह्योरी॥ सूरति चङ्ग पतङ्ग डोरि गहि ज्यों आकाश चढ्योरी। छायरह्यो पलक्षण नहिं बिछुरै वारसे पारगयोरी॥ पारसोइ वार रह्योरी॥ वह साईं बहुरंगी कहिये सबसब रूपधरोरी। सद्गुरु रामकृपा रघुनाथै एक अनेक भयोरी॥ उलटि घट यह एक रह्योरी॥

छन्द–नमो सद्गुरु रामचरणं जीव कार्य सुधारनं।
निजदासआपनकरियानिश्चल भर्मसंशयनाशनं॥

श्री आचार्य वृन्दावन कृपालु ज्ञानद्युतिपरकाशनं।
चरणमानो कमलके सम मम मन भवँर गुंजारनं॥
दर्श करि नित बढ़त आनँद काल कष्ट निवारनं।
सनकादिगुरुपदरटतनिशिदिनरासगुरुगुणगावनं॥
शेष सुमिरि न पारपावत वेद नेति बखाननं।
गुरुशरणदास तजिमोहनिन्दाभक्तिगुरुपदतारनं॥

आरती॥

आरति श्रीवृन्दावनजीकीसद्गुरुरासनामजपनीकी॥

टेक॥ भाव भक्तिका थाल सजावो। दीपक दृढ़ बैराग्य धरावो॥ घृत सन्तोष प्रेमकी बाती। ज्ञान अग्निपरकाश अमियकी०। शील क्षमा झाड़ी भरलीजे। सूरत उलटि शब्द रसपीजे॥ अनहदघण्टा शङ्खशब्द सुनि विषय भोगरसमत भइफीकी०। सद्गुरु ने दलकंज लखाया। त्रिकुटी ज्योति प्रकाश समाया॥ अलखपुरुष के सम्मुख ठाढ़ीसूरति उलटि भई निजपियकी०। शिव सनकादि आदि मुनिनारद। शेष सहसमुख जपत जो शारद॥ बिन सद्गुरु कोइ भेद न पायो ईर्षा द्वेष मिटी नहिं जियकी०।दासगुरुशरणकहै करजोरी।भक्तिदानदेव करों निहोरी॥ चन्द्रचकोरप्रीति ज्यों लागै यहीलालसा मेरे हियकी। आरतिश्रीबृन्दावनजीकी०॥

आरति सद्गुरुरामजी की कीजे०। सूरत उलटि शब्द रसपीजे॥

टेक॥ सत्यथाल सन्तोष दीप धरि घृत बैराग्य विमल करलीजे। बाती प्रेम फूलफल भक्ती ज्ञान अग्नि परकाश करीजे०। मूल कपूर हृदय परकाशै गुरुमुखहो

सम्मुख चितदीजै । अष्टकमलदल श्यामकंजपर अनहद घण्टा शङ्ख सुनीजै० । सूरत उलटिचली दशद्वारे गर्जत गगन प्रेमरस पीजै ।किंगड़ी झांझ मधुर मुरली ध्वनि ॐ सोहं अलख लखीजै० । ररंकार सोऽहंरामशून्य में सोहं सद्गुरु शब्द कहीजै । श्रीवृन्दावन परकट जानो वारपार नित दर्शन लीजै ॥ कृपा करो रघुनाथ दासपर द्वैतदृष्टि संशय सबछीजै ॥

विहारवृन्दावनीपंथका कुछ २ वृत्तान्त परमार्थियों को विदित होना चाहिये ॥

सो कुछएक तले लिखेहुये खतसे कि जो बीच अवध अख़बार लखनऊ महीने मार्च सन् १८७० ई० में छपाथा विदित होगा उलथा ख़तका कि जिसका वृत्तान्त ऊपर लिखागया ॥

जनाब एडीटर अवध अख़बार सलामत ॥ इबारत नीचे लिखी हुई आपके पास भेजीजाती है और यह इच्छा है कि आप ज्योंकी त्यों अपने अख़बार में छाप दीजिये एक हमारे मित्रों में से ऐसा कहैहैं कि अबकी बर्ष मेला कुंभ प्रयाग का पुलिसवालों अधिक करके कोतवालसाहब प्रयाग की मेहनत और परिश्रम से बहुत अच्छी तरह से हुआ और मालिककी कृपादृष्टि से मरी आदिक से मेलेवाले कुशल में रहे और एक यह नई बात मैंने देखीकि जैसे अखाड़े संन्यासियों, वैरागियों, उदासियों, निर्मले साधुओं आदि के मेलेमें थे उसी भांति अखाड़ा साधुओं विहारवृन्दावनी पन्थ का निशान सहित जिसकी जर्द ध्वजाथी मध्यमेले के था इस अखाड़े में यह एक बड़ी उत्तम बात थी कि

प्रातसमय भजन, पाठ, सुमिरण, वाहगुरू, सद्गुरु रामका और परमार्थी चर्चा होतारहताथा और बहुत करके सब पन्थ के साधु वहां आते थे और अन्न आदि द्रव्य भी बहुत बँटता रहता था और अमावास्याके दिन श्री वृन्दावनजी आचार्यपन्थ भी आगरे से आये उस दिन सायंकाल के समय यह देखा कि आचार्यजी अपने श्रीमहन्त अटल स्वरूप सहित हाथीपर विराजमान थे सहित छत्र आदिक सामग्री के और आगे उनके दश बारह हाथियोंपर अच्छेअच्छे निशानथे और सवारीमें बाजेवाले और बल्लमबरदार भी बहुत थे और लगभग दो हज़ारके निर्मले साधु और आचार्यजीके साधु सवारी के साथ थे उस समय के आनन्दका वर्णन कठिनहै और कहां लौं वर्णनकरों अगणित यात्री आचार्यजी के दर्शनोंसे महाआनन्द को प्राप्त होकर अपने २ भाग्य की सराहना कररहे थे और दूसरेदिन एक महन्त उदासियों के अखाड़े के दोसौ उदासी के क़रीब आचार्यजी को हाथीपर सवार कराकर अपने स्थान पर बड़ी प्रतिष्ठासहित लेगये और जिस भांति आचार्य पन्थसे बर्तना चाहिये उसी रीति और मर्यादासे वर्ते और इसीभांतिभाई महताबसिंहजी श्रीमहन्त निर्मले साधुओं के पन्थको बड़ी प्रीति और आदरसे वर्ततेरहे जहां सुना तहां यही सुना कि आचार्यजी इससमयमें पूरे ज्ञानी और ध्यानी और प्रकाशरूपहैं ऐसे महात्मा सामर्थ्यवान्का सबको आदर करना उचितहै आचार्यजीका यह कैसा अच्छा

स्वभावहै कि ऐसी प्रभुता दोनों लोकोंकी पाकर सबसे नम्रता और प्यार सहित बर्त्ततेहैं यह बात सत्य है कि मेवेहीकी भरी डाली झुकती है और उनकी कृपा से बहुत से साधु शब्दका ध्यान और अद्वैत ज्ञान की प्राप्तिमें लगेरहतेहैं कंगालों की सहायता होतीहै देखो फ़ैज़ाबाद में अपाहिजख़ाना आचार्यजीका कियाहुआ अबतक वर्तमान है बहुतसे जिज्ञासुओंने आचार्यजी से भेषलिया और बहुतसे गृहस्थी बड़ीजातोंके शरण में आये और प्रति समय बड़े बड़े आदमी राजा बाबू और सर्कारी नौकर जिनको परमार्थ की इच्छारही आचार्यजीके पासदेखे बिहारबृन्दावन ग्रन्थ कहाहुआ आचार्यजीके से इतना कुछ जीवों को लाभहुआहै कि जिसका कुछ वर्णन नहीं होसक्ता आचार्यजीने कई जगह पाठशाला नियतकिया है सत्य तो यह है कि आजतक ऐसा आचार्य कोई नहीं हुआ कि जिसने गृहस्थ और नौकरी की अवस्था में ऐसे श्रेष्ठज्ञान को प्राप्तहोकर पन्थचलाया होय ऐसी ईश्वरकी कृपा आचार्यजीहीको मिली है कि जो दोनोंओर ऐसी शोभाके साथ निबाहरहेहैं और एकयह बड़ी सुननेमें आई है कि जो जिस पन्थकाहो उसको उसी पन्थ के अनुसार उपदेश देकर सतज्ञान दृढ़कराते हैं पक्षपात किसी तरह नहीं रखते सत्यहै कि बिना ईश्वर की कृपा कौन पन्थ चला सक्ता है हां ऐसी सामर्थ्य और सिद्धता आचार्य जीही में देखी निस्सन्देह इस समय में उन लोगों के बड़े भाग्य जानने चाहिये कि जो आचार्यजीके प्रीति

सहित दर्शनकरैं ॥ आशा है कि और अखबारों के मालिक भी इस वृत्तान्त को अपने अख़बार में लिखैंगे कि जिससे स्वार्थ परमार्थका भला है ॥

दस्तख़त हक़ीक़तगो अर्थात् सत्यवक्ता ॥

रेखता ॥ बही जब नामकी धारा भया मन मस्त मतवारा । तरङ्गें प्रेमकी उमही मिलीजहँसिन्धु निजसारा ॥ करारे लाज के धाये नहीं है वार औ पारा । बिना सद्गुरु रामके कृपाकरैको आनि निर्वारा ॥ कहैगोबिन्द करजोरी दया कर कीजियेपारा ॥

नक़ल तहरीर कोतवाल साहब इलाहाबाद ॥ बमूजिब आर्डर सरदार नारायणसिंह इन्स्पेक्टर शहर मोहतमिम माघ मेला इलाहाबाद ॥

जोकि अखाड़ा साधुओं विहारवृन्दावनी पन्थका दो साल मेले प्रयागराजमें वास्ते स्नानके आया और दूसरी बार मेला कुम्भ का था चुनांचि अखाड़ा मज़कूर को जगह हर दोबार मुत्तसिल ख़ास चौक बैरागी साधुओं के पास बराबर दियागया व अखाड़ा मज़कूर बरोज़ अमावस मेला कुम्भ में व हमराही अखाड़े निर्मले साधुओं के वास्ते स्नान श्रीबेनीमाधोजी के गयाथा और मैं मोहतमिम मेलमाघ इस तहरीरको इमानन् लिखताहूँ कि चलन इस पन्थका नेकहै व स्वामी अखाड़े विहारवृन्दावनी हज़ारहारुपये परमार्थ अपनी ज़ात से सर्फ़ करते हैं और अपने धर्ममें बड़ा एतक़ाद रखते हैं अगर आयंदह भी अखाड़ा मज़कूर वास्ते स्नानके त्रिबेणीकिनारे आवै तो जगह मुताबिक़

सदरके इनको दियाजावै ॥ गरज़ इस तहरीरसे यहहै कि जो अफसर बंदोबस्तकरै वह मुताबिक इसके करैगा तो कुछ तकलीफ़ वाक़ै न होगी व इसका अज्र मिलैगा॥

मरकूम १५ फ़रवरी सन् १८७० ईसवी

[बक़लम बाबूलाल]

दस्तख़त व मुहर सरदार नारायणसिंह कोतवाल ॥

अब महाराज संक्षेपता से इस समय के अनुसार मुक्तिके साधन कहिये ॥

सुनो – बड़े और सज्जनों और साधु गुरु और अपाहिजकीसेवा और जीवकीरक्षा तन मन धन से बिचार और सन्तोष सहितकरना पहिला साधन है पुरुषको सब चराचरमें परिपूर्ण अन्तर्यामी जानकर निष्कपट वाहगुरू सद्गुरू राम नामका स्मरण बाणी का पाठ और प्रार्थना करना और शब्द अपने अन्दर सुनना दूसरा साधन है ऐसे साधनों से मन शुद्ध और स्थिरहोकर निज पद को जो सर्वदा सुखका समूहहै पावैगा महाराज आपका सिद्धान्त क्याहै मानो सूर्यहै कमल के स्थानापन्न जो मुमुक्षू जनों का हृदय है उसको प्रकाशकरनेवाला है जैसे सूर्यके उदय होनेसे कमल खिलजाता है हां कुमोदिनी मुंदजातीहै सो जिन मनुष्योंका हृदय कुमोदिनीवत् है और विचार से रहित है अर्थात् बुद्धि बिहीन हैं सो आनन्दकी प्राप्तिसे बिमुख रहतेहैं महाराज ! धन्य हौ धन्य हौ आप कासा सिद्धान्त कौन कह सक्ताहै मैंने बहुतसे मतों के साधन और सिद्धान्त सुने परन्तु परस्पर विरुद्धहीपाया और

जो साधन और सिद्धान्त आपके मुखारविन्दसे सुना सो ऐसाहै कि जिसका विरोध किसी मतसे नहीं है सर्व-जीवोंकाकार्य सुगमतासे करनेवालाहै चैतन्य सेवानाम का स्मरण पाठ शब्द का ध्यान क्या असोलक साधन है जिससे विवेकसहित बनै व निस्सन्देह आवागमन से रहितहोकर निजस्वरूप सच्चिदानन्द हो रहैगा ॥

ग्रन्थकर्ताकी प्रार्थना ॥

अब ग्रन्थकर्ता ईश्वर और सन्त महात्माओंसे यह प्रार्थना करताहै कि जो कोई विहारवृन्दावन को प्रीति से निष्काम अर्थात् संसारी और परलोकके सुखआदि की कांक्षा बिनापढ़े और सुने उनके चित्त संसारी का-मना और मिथ्याध्यानोंसे अत्यन्त शुद्धहोकर निश्चल और एकाग्र होजायँ और दिव्य दृष्टि प्राप्तहो ॥

दो० मन के अस्थिर होतही, दर्शय सत्य स्वरूप ।
मिथ्या तमकी हानि है, वृन्दावन लखुरूप ॥

और जो शब्दका अभ्यास करें उनको सुगमता से सत्यशब्दकी प्राप्तिहो और जो सकामपढ़ें उनके लोक परलोककी शुभइच्छा पूर्णहो औरसबक्लेशदूरहों और गुरुसाधु ब्राह्मण और भूखेकी सेवा करनेकी उत्कण्ठा हो जोकि यहबिनय और अभिलाषा सत्यअन्तःकरण से जीवोंको आनन्द और कल्याण के वास्ते की गईहै और जोकि यह प्रकट है जो सच्चेदिलसे पढ़ें सुनेंगे वे निस्सन्देह सज्जन और अच्छेकर्मकर्ता और सबके प्यारेहोंगे इससे मुझे निश्चयहै कि मेरी प्रार्थनास्वीकार

होकर पूरीहोगी आगे गुरु मालिक और हरिइच्छा अवलोकन करनेवालों से यह प्रार्थना है कि जो मेरी भूल चूक दृष्टि पड़े उसे यह क्षमा करके मुझपर कृपा दृष्टिदेखें और आप दयालु कहलावें एकपन्थ दोकार्य॥

भाग पांचवां समाप्त सत्यनामकी होय प्राप्ति ॥

आगरे की पन्नीगली के रहनेवाले महाराज सच्चिदानन्द स्वरूप श्री वृन्दाबनजी आचार्य पन्थ बिहारवृन्दावनी की कही हुई बिहारवृन्दावन शान्तवेद अब गुरुकी कृपा से सातवींबार छपी ॥

इति ॥
